प्रकाशक
श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र,
जैन साहित्योद्धारक फंड-कार्यालय
अमरावती (बरार)



मुद्रक-
टी. एम् पाटील,
मैनेजर
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती (बरार)

THE

ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUṢPADANTA AND BHŪTABALĪ

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

VOL. II

SATPRARŪPAṆĀ

Edited

with introduction, translation, notes and indexes

BY

HIRALAL JAIN, M.A., LL.B.

C. P. Educational Service, King Edward College, Amraoti

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra Siddhānta Shāstri ✻ Pandit Hiralal Siddhānta Shastri, Nyāyatīrtha

With the cooperation of

Pandit Devakinandana Siddhānta Shastri ✻ Dr. A. N. Upadhye, M.A., D.Litt.

Published by

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Kāryālaya

AMRAOTI (Berar)

1940

Price rupees ten only

Published by—
Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya
AMRAOTI (Berar)



Printed by—
T. M. Patil, *Manager*,
Saraswati Printing Press
AMRAOTI (Berar)

विषय सूची

प्राक् कथन

श्रीधवलसिद्धान्त प्रथम विभागके प्रकाशित होनेसे हमें जो आशा थी, उसकी सोलहों आने पूर्ति हुई। हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष और सन्तोष है कि मूडबिद्री मठको भेंट की हुई शास्त्राकार और पुस्तकाकार प्रतियोंके वहां पहुंचनेपर उन्हें विमानमें विराजमान करके जुलूस निकाला गया, श्रुतपूजन किया गया और सभा की गई, जिसमें वहांके प्रमुख सज्जनों और विद्वानोंद्वारा हमारी संशोधन, सम्पादन और प्रकाशन व्यवस्थाकी बहुत प्रशंसा की गई और यह मत प्रगट किया गया कि आगे इस सम्पादन कार्यमें वहांकी मूल प्रतिसे मिलानकी सुविधा दी जाना चाहिये, नहीं तो ज्ञानावरणीय कर्मका बंध होगा। यह सभा मूडबिद्री मठके भट्टारकजी श्री चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्यके ही सभापतित्वमें हुई थी।

उक्त समारंभके पश्चात् स्वयं भट्टारकजीने अपना अभिप्राय हमें सूचित किया और प्रति मिलानकी व्यवस्थादिके लिये हमें वहां आनेके लिये आमंत्रित किया। इसी बीच गोम्मटस्वामीके महामस्तकाभिषेकका सुअवसर आ उपस्थित हुआ। यद्यपि छुट्टिया न होनेके कारण हम उक्त महोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये नहीं जा सके, किंतु हमारे कार्यमें अभिरुचि रखने और सहायता पहुंचानेवाले अनेक श्रीमान् और धीमान् वहां पहुंचे और उनमेंसे कुछने मूडबिद्री जाकर प्रथराज महाधवलकी भी प्रतिलिपि कराकर प्रकाशित करानेके लिये भट्टारकजी व पंचोंकी अनुमति प्राप्त कर ली। समयोचित उदारता और सद्भावनाके लिये मूडबिद्री मठका अधिकारी वर्ग अभिनन्दनीय है और उस दिशामें प्रयत्न करनेवाले सज्जन भी धन्यवादके पात्र हैं। अब हम उस सम्बन्धमें पत्र व्यवहार कर रहे हैं, और यदि सब सुविधाएं मिल सकीं, जिनके लिये हम प्रयत्नशील हैं, तो हम शीघ्र ही मूडबिद्रीके समस्त धवलादि श्रुतोंकी प्रतियोंकी (फोटोस्टाट मशीन या माइक्रो फिल्मिंग मशीन द्वारा) प्रतिलिपियां कराकर ग्रंथराजका चिरस्थायी उद्धार करनेमें सफलीभूत हो सकेंगे। इस महान् कार्यके लिये समस्त धर्मिष्ठ और साहित्यप्रेमी सज्जनोंकी सहानुभूति और क्रियात्मक सहायताकी आवश्यकता है, जिसके लिये हम समाजभर का आह्वान करते हैं।

प्रथम विभागका प्रकाशनोत्सव ४ नवम्बर सन् १९३९ को किया गया था। तबसे आज ठीक आठ मास हुए हैं। इतने अल्पकालमें द्वितीय विभागका संशोधन सम्पादन होकर मुद्रण भी पूरा हो रहा है, यद्यपि कार्यमें कठिनाइयां अनेक उपस्थित होती रहती हैं। इस सफलतामें समाजकी सद्भावना और दैवी प्रेरणा बहुत कुछ कार्यकारी दिखाई देती है। यदि समय अनुकूल रहा तो आगे प्रायः वर्षमें दो भागोंका प्रकाशन करानेका प्रयत्न किया जायगा।

इस विभागके सम्पादनमें भी पूर्वोक्त सहयोग पूर्ववत् ही चलता रहा है, अर्थात्

प फूलचंद्रजी शास्त्री और प हीरालालजी शास्त्री स्थायी रूपसे सम्पादन कार्यमें हमारे साथ सलग्न रहे, तथा प देवकीनन्दनजी शास्त्री और डा आदिनाथजी उपाध्यायसे हमें संशोधनमें यथावसर योचित साहाय्य मिलता रहा। धवलाकी जो प्रशस्तिया इस विभागके साथ प्रकाशित हो रही हैं, उनका सहारनपुरकी प्रतिसे अक्षरश मिलान वीरसेवामंदिरके अधिष्ठाता प जुगलकिशोरजी ने करके भेजनेकी कृपा की। उन्हीं प्रशस्तियोंके कनाडी पाठोंके संशोधनका अत्यन्त कठिन कार्य डा उपाध्येके सहयोगी, राजाराम कालेज, कोल्हापुरमें कनाडीके प्रोफेसर श्रीयुत कुन्दनगारजी द्वारा किया गया है। वीरसेवामंदिरके प परमानन्दजी शास्त्रीने प्रस्तुत विभागमें आई हुई अवतरण-गाथाओंके प्राकृत पचसंग्रहमें होने न होने की हमें सूचना दी। वीनाके प वशीधरजी व्याकरणाचार्यने पृ ४४१-४४३ पर आये हुए व्याकरण सबंधी कठिन प्रकरणपर अपनी सम्मति विस्तारसे हमें लिख भेजनेकी कृपा की। प महेन्द्रकुमारजी न्यायाचार्यने इस भागके प्रथम फार्मका प्रूफ देखकर मुद्रण-सबंधी अनेक सूचनाएं देनेकी कृपा की। इस सब सहायताके लिये हम इन विद्वानोंके बहुत ही अनुगृहीत हैं। और भी अनेक विद्वानोंने अपनी बहुमूल्य सम्मतिया हमें या तो व्यक्तिगत पत्र द्वारा या समालोचनाके रूपमें पत्रोंमें प्रकाशित कराकर देनेकी कृपा की। उन सबसे भी हमने लाभ उठानेका प्रयत्न किया है। अतएव वे सब हमारे धन्यवादके पात्र हैं। उन सम्मतियों आदि परसे जो संशोधन या सूचनाएं प्रथम खडके विषयमें हमें आवश्यक प्रतीत हुई, उनका भी समावेश इस विभागके शुद्धिपत्रमें किया जाता है। पाठक उससे प्रथम खडमें उचित सुधार कर लें।

हमारे अनेक प्रेमी पाठकोंने कुछ सूचनाएं ऐसी भी भेजी थीं जिनका, खेद है, हम पालन करनेमें असमर्थ रहे। इनमें एक सूचना तो प्राकृत अशोंका या उनके कठिन स्थलोंका संस्कृत रूपान्तर देते जानेके सम्बधमें थी। इसको स्वीकार न कर सकने का कारण हम प्रथम जिल्दके प्राक्कथनमें ही दे चुके हैं और हमारा वह मत अब भी कायम है। दूसरी सूचना हमारे वयोवृद्ध पाठकोंकी ओर से यह थी कि भाषान्तरका टाइप छोटा पडता है, उसे और भी बडा कर दिया जाय तो उन्हें पढनेमें सुविधा होगी। हम बहुत चाहते थे कि अपने वृद्ध पाठकोंका इस मूर्तिमान् कठिनाई को दूर करें। किन्तु पाठक देखेंगे कि मूलके टाइपसे अनुवादका टाइप बहुत कुछ छोटा होते हुए भी उसमें मूलसे कहीं अधिक स्थान लगता है। अब हम यदि उसे और भी बडे टाइपमें लें तो हमारी निश्चित की हुई खड-व्यवस्था और व्हाल्यूममें बडी गडबडी उत्पन्न होती है। अतएव विवश होकर हमें अपनी पूर्व पद्धति ही कायम रखना पडी। आशा है हमारे वृद्ध पाठक प्रकाशन सबंधी इस कठिनाईको समझकर हमें क्षमा करेंगे।

इस विभागके संशोधनमें भी हमें अमरावती जैनमंदिरकी प्रतिके अतिरिक्त आराके सिद्धान्त भवन तथा कारंजाके महावीरब्रह्मचर्याश्रमकी प्रतियोंका लाभ मिलता रहा तथा सहारनपुरकी प्रतिके जो कुछ पाठभेद पहलेसे नोट थे उनसे लाभ उठाया गया है। अतएव इन सब प्रतियोंके अधिकारियोंके हम अनुगृहीत हैं।

श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी और जैन साहित्योद्धारक फंडकी ट्रस्ट कमेटीके अन्य सब सदस्योंका इस कार्यको प्रगतिशील बनाये रखनेमें पूरा उत्साह है, और इस कारण हमें व्यवस्थामें किसी विशेष कठिनाईका अनुभव नहीं हुआ, बल्कि आगे सफलताकी पूरी आशा है।

यूरोपीय महासमरके कारण इस खंडके लिये यथेष्ट कागज आदिका प्रबंध करनेमें बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई, जिसको हल करनेमें हमारे निरन्तर सहायक पंडित नाथूरामजी प्रेमीका हमपर बहुत उपकार है।

सत्साहित्यकी कदर करनेवाले मर्मज्ञ पाठकोंने प्रथम जिल्दका जो स्वागत किया है और उसके लिये हमारी ओर जो प्रशंसाके भाव व्यक्त किये हैं, उसके लिये हम उनकी गुणग्राहकताके कृतज्ञ हैं। पर हम यह फिर भी व्यक्त कर देते हैं कि इस महान् कठिन कार्यमें यदि हमें सचमुच कुछ सफलता मिल रही है तो उसका श्रेय हमें नहीं, किन्तु समाजकी उसी सद्भावना और समयकी प्रेरणाको है जो उचित कालमें उचित कार्य किसी न किसीसे करा लेती है। इस सम्बन्धमें हमारी तो, महाकवि कालिदासके शब्दोंमें, यही धारणा है कि —

> सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः सम्भावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम्।
> किं वाऽभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता तं च सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्॥

किंग एडवर्ड कालेज,
अमरावती
१५।७।४०

हीरालाल जैन

प्रस्तावना

INTRODUCTION

1 Age of the palm-leaf manuscript of Dhavala at Mudbidri

In the introduction to Vol 1 we had conjectured that the palm leaf manuscript of Dhavala deposited at Mudbidri was at least five or six hundred years old We are now in a position to throw some more light on the subject of the manuscript tradition At the end of Satprarupana after the colophon we find some text which when reconstructed yields three verses in Kanarese in praise of Padmanandi Kulabhushana and Kulacandra respectively The relation between these three notabilities has not been mentioned here but there is no doubt that they are identical with the teachers of the same names mentioned in the Sravana Belgola inscription No 40 (64) as successively related to each other in a spiritual geneological order There is similarity in the adjectives used for them at both the places The inscription also tells us that the teachers belonged to the brilliant line of Desigana, a branch of the Nandigana of Mula samgha which had owned amongst others, Kundakunda, Umasvati, Samantabhadra Pujyapāda and Akalamka One of the pupils of Padmanandi was Prabhācandra who is said to have been the author of a celebrated work on Logic He, thus, appears to be identical with the author of Prameyakamala-mārtanda and Nyaya-kumuda-candrodaya This inscription is not dated but the line extends upto the third generation beyond Kulacandra and there we find Devakirti Muni who according to inscription No 39 (63) attained heaven in 1163 A D The immediate successor of Kulacandra Muni was Māghanandi whose lay disciple Nimbadeva Samanta has also found mention in the Sukrabara Basti inscription of Kolhapur as a feudatory of the Silāhāra king Gandaradityadeva for whom there are mentions from 1105 to 1136 A D Taking all these factors into consideration we may safely conclude that the persons mentioned in the Satprarupanā Prasasti flourished probably during the eleventh century A D The Kanarese verses being obviously the interpolations of the scribe who may have been the pupil of the last teacher we might infer that a copy of the Dhavala was made about this period

The Prasasti found at the end of the Dhavala Ms throws still more light on the subject The text of this long Prasasti is partly in Kanarese and partly in Sanskrit and the Kanarese portion is very corrupt But the fact that emerges from it prominently is that the Ms of Dhavala was presented to the famous teacher Subhacandra Siddhantadeva of the Banniyakere temple on the occasion of the completion of her Srutapancami vow by Demiyakka who was the aunt of Bhujabalaganga Permadideva of Mandali Nadu Subhacandradeva is said to have belonged to the Desigana His line begins from Kundakunda, and the other names of teachers mentioned are Griddhapiccha, Balakapiccha, Gunanandi Devendra Vasunandi Ravicandra, Dāmanandi, Viranandi, Sridharadeva Maladhāridera Candrakirti, Divakaranandi and, lastly, Subhacandradeva On scrutinizing these facts in the light of epigraphic references that

are available to us we find that the Subhacandradeva to whom the Ms of Dhavala was given is identical with that Subhacandradeva whose death is commemorated in Sravana Belgola inscription No 45 (117) of 1123 A D because the spiritual geneo logy of Subhacandra as given at the two places agrees entirely We even find three verses that are common between our Praśasti and the inscription the numbers of these verses in the inscription being 12 13 and 21 The Banniyakere temple with which Subhacandradeva the recepient of the Ms has been associated was built according to Shimoga inscription No 97 (Ep Carna Vol VII) in 1113 A D In this inscrip tion Bhujabaliganga Permadideva also mentioned in our Praśasti makes a grant to the temple and at the close of the record Subhacandradeva of Desigana is praised Thus the temple of Banniyakere with which Subhacandradeva was associated was built in 1113 A D while he died in 112 A D The Ms of Dhavala was therefore presented to Subhacandradeva by Demiyakka between 1113 and 1123 A D

We also get some light about the donor of the M from epigraphic records Sravana Belgola Inscription No 49(129) is in commemoration of a lady variously named as Demati Demavati Devamati and Demiyakka who is said to have been a pupil of Subhacandradeva of Desigana and to have died by the Jaina form of renunciation on the 11th day of the dark fortnight in Saka 104? (A D 1120) In the inscription the lady is highly eulogised for her four forms of charity which included gifts of shastras or holy book These mentions leave no doubt in our mind that this lady is the same as the donor of the Dhavala Ms The date of the gift is therefore brought within closer limits i e between 1113 and 1120 A D

The upshot of the above discussion is that we are confronted with three facts about Dhavala Ms namely—

1 A copy of the Dhavalā was made probably about three generations prior to the death of Devakirti Muni in 1163 A D i e about 1100 A D

2 A Ms of Dhavalā was presented to Subhacandradeva by lady Demiyakka sometime between 1113 and 1120 A. D

3. A palm leaf Ms of Dhavalā making mention of the above fact and indicating fact No 1 exists at Mudbidri

The probability in my mind is that it was the present palm leaf Ms. at Mudbidri which was copied by a pupil of Kulacandra and presented by Demiyakka to Subhacandradeva But the possibility of the object of Demiyakka's gift being a later copy of the first Ms and the present Ms being a still more subsequent copy of the second mechanically reproducing the eulogistic verses and the Praśastis of the former one cannot be entirely precluded until the present palm-leaf M at Mudbidri is thoroughly examined from all points of view internally as well as externally

2 Is Vargana Khanda included in the available Mss of Dhavala ?

The six main divisions of the present work on account of which it acquired the title of Satkhandāgama, were Jivatthana Khuddabandha Bandhasamitta-vicaya

Vedana, Vaggana and Mahabandha. We had already stated in the previous volume that of these six Khandas the last i e the Mahabandha exists in a separate manuscript and is not included in the Mss of Dhavala which contain all the remaining five Khandas To this an objection was raised from one quarter that the available Mss of Dhavala contain not even five, but only the first four Khandas Vaggana Khanda being also missing from them This view was based upon a misinterpretation of one text and a wrong reading of another text found at the beginning of the Vedana Khanda and then support was sought for the view by a series of wrong co-relations and a number of allegations against the old reporters like Indranandi and the recent copyist from Mudbidri Ms These have been critically examined by me from every possible point of view on the basis of all available material, with the result that my previous statements have been fully confirmed The last word on this subject as well as on others of a similar nature, however could only be said when the Mudbidri Mss have also been thoroughly examined and the whole work has been critically edited

3 Authorship of the Namokara Mantra

Panca namokara Mantra is the most sacred formula of Jaina religion It forms part of the daily prayers of all the Jainas whether Digambara or Svetambara It has been regarded almost as an eternal revelation and the question of its authorship was never raised It is this very formula that forms the benedictory text at the beginning of Jivatthana and the author of Dhavala throws important light upon its authorship He divides sacred writings into two kinds according as their benedictory text forms their integral part or not Now, different benedictory texts are found at the beginning of the Jivatthana Khanda and that of the Vedana Khanda But the author of the Dhavalā places the first Khanda in one category and the other in the second category on the clearly stated ground that at the second place the benedictory text was not an integrel part of the writings because it was not the original composition of the author who had merely borrowed it from elsewhere But he regards the Namokara formula as integrally connected with the Jivatthana This shows that in the opinion of the author of Dhavala the Namokara formula was the original composition of Puspadanta the author of the Satprarupanā which was the first part of Jivatthāna

I tried to pursue the inquiry farther and found that in the Svetāmbara Āgama, Ajja Vaira is credited with having interpolated the formula in one of the Mūlasutras A survey of the Svetāmbara Pattāvalis and equivalent mentions in the Digambara texts revealed a number of points of contact and of difference between them in the names and dates of various notabilities like Ajja Vaira Ajja Mankhu or Mangu and Nāgahatthi, associated with this sacred formula and with the study and preservation of portions of the lost canon. But a clarification of these and ultimate conclusions on the points raised must await further investigation and study

4 A comparative review of the contents of Ditthivada

The twelfth Jaina Srutānga Ditthivada, according to the traditions of both the Digambaras and the Svetambaras, was irretrievably lost. But a brief rèsume of its

contents is found in the literature of both the sects The Digambara work Satkhandā gama of Puspadanta and Bhutabali as well as Kasaya pahuda of Gunadharacārya are claimed to be directly based upon it It would therefore be interesting to take a bird's eye view of the contents of this most important Jaina Srutanga, leading up to the portions that have been preserved

The Ditthivada was divided into five parts Parikamma Sutta Padhamanuoga, Puvvagaya and Culia The Svetambaras place Puvvagaya first and Anuoga with its subdivisions Mulapadhamanuoga and Gandianuoga instead of Padhamanuoga next in the above order The two schools differ entirely in the matter of the subsections of the first part Parikamma The Digambaras name five Pannattis under it namely Canda Sura Jambudiva Divasāyara and Viyaha while the Svetambaras count under it seven Semās namely Siddha Manussa, Puttha Ogādha Uvasampajjana, Vippajahana and Cuacua each of which is again divided into fourteen or eleven sections like Māugapayāim Egatthiapayaim Atthapayaim Padhoamasapayaim Keubhuam Rasibaddham Egagunam Dugunam Tigunam Keubhuam Padiggaho Samsarapadiggaho Nandavattam and Siddhavattam The nature of the subject matter of these is shrouded in mystery The Digambara subdivisions on the other hand are quite intelligible and their contents are also clearly stated There is however one thing remarkable about the Svetambara subdivision that the first six divisions of Parikamma are said to be in accordance with the Jaina view which recognised four Nayas while the seventh was an addition of the Ajivikas who recognised three Rasis or Nayas It appears from this that the Ajivika view-point was also accomodated in the Jaina Agama and that at one time the Jainas recognised only four instead of seven Nayas.

The second division of Ditthivāda was Sutta which according to the Digambaras dealt firstly with the philosophy of the soul according to their own ideas and, secondly with the philosophical theories of others such as Terasiya Niyativada Saddavāda and the like They also speak of eightyeight divisions of Sutta of which they say the names have been forgotten The Svetambaras mention twentytwo subdivisions of Sutta and point out that they may be studied according to four Nayas namely Chinnacheda Achinnacheda Trika and Catuska of which the first and the fourth Nayas are followed by the Jainas while the second and the third are adopted by the Ājivikas In this way Sutta is shown to possess eightyeight subdivisions Here again the mention of the Ajivika view point and its accomodation are remarkable

Padhamānuoga division of Ditthivāda according to the Digambaras deals with Paurānic accounts As mentioned before the Svetāmbaras give the name of this division as Anuoga and subdivide it as Mula padhamānuoga dealing with the lives of the Tirthamkaras and Gandianuoga dealing with the lives of Kulakaras and other distinguished persons in separate sections (Gandikas) Amongst these the account of the Citrāntara Gandikā is very astonishing and staggering

Puvvagaya was the most important division of Ditthivāda because its fourteen subdivisions, known as Purva contained, in fact all the essential wisdom of the

Tirthamkaras. There is no substantial difference in the name or in the nature of the contents of the fourteen Puvvas in the Digambara and the Svetambara accounts of them except that the eleventh Puvva is called Kallana by one and Avanjham by the other, while there is also some difference in the extent (number of padas) of the twelfth Puvva Panavaya. Both schools agree that some studied the entire Sruta while others stopped at the tenth Puvva. This view in a way, show the significance of placing Anuoga or Padhamānuoga before Puvvagaya for, otherwise, those that stopped at the tenth Puvva could have no knowledge of Anuoga.

The fifth and the last division of Ditthivada is Culā which, according to the Digambara school, dealt with the sciences pertaining to Jala Sthala, Maya, Rupa and Akasa. The other school has no account of the Culikas to give except that they were appendexes of the first four Puvvas and that their number was in all, thirtyfour. But if they were appended to the Puvvas it remains unexplained why a separate division for them was thought necessary.

The Puvvas are said to have been divided into Vatthus and each Vatthu was subdivided into twenty Pahudas their total number according to the Digambara school, being 195 and 3900 respectively. The Kammapayadi Pahuda, of which the subject-matter has been preserved with all its twentyfour Adhikaras in the Satkhandagama, was one of the 280 Pahudas included in the second Puvva Aggeniyam. Similarly, the Kasāya-Pahuda of Gunadharacarya is based upon one of the Pahudas included in the fifth Puvva Nānapavāda. Nothing corresponding to these portions in age and subject matter is yet found in the Svetambara literature.

5 Subject-matter, language and style

This volume is entirely devoted to the specification of the various soul qualities under different stages of spiritual advancement and under various conditions of life and existence which have already been dealt with, in a general way in the first volume. It is entirely the work of the commentator Virasena who takes his stand upon the foregone Sutras, but the idea of the twenty categories that form the basis of his treatment here is borrowed from elsewhere. He starts by quoting an old verse which names the twenty categories. The earliest work where we find the treatment of the subject under the same twenty categories is the Tiloya-pannatti. It is, however, still a matter for investigation as to who started the idea of the twenty categories first.

We have tabulated the numerical specifications on each page in order to show the subject at a glance and facilitate reference and the number of tables is in all 546. The various divisions and subdivisions leading to this high number would become clear by a glance at the table of contents.

The language is throughout Prakrit except for a few Sanskrit passages in the beginning and by the very nature of the subject matter which consists mostly of enumeration, the style is very indifferent to grammatical forms. In the enumerations

of the soul qualities words have frequently been used without inflections In fact abbreviated forms with dots are also met with all over in the Mss But since the Mss used by us were not uniform on the point we preferred to give the fuller forms and have also taken the liberty to complete the enumerations where omissions in the Mss were obvious But we have not attempted to make the words inflected for fear of changing the entire character of the author's style which is so natural in its own way under the circumstances

The numb r of older verses found quoted in this volume is thirteen all in Prakrit One of them (No 278 on page 768) is said to have been taken from ' Pusha ' a work which is otherwise unknown

As before I have in this brief survey avoided details which the interested reader would find in the Hindi translation

१ ताड़पत्रीय प्रतिके लेखनकालका निर्णय

सत्प्ररूपणाके अन्तकी प्रशस्ति

धवल सिद्धान्तकी प्राप्त हस्तलिखित प्रतियोंमें सत्प्ररूपणा विवरणके अन्तमें निम्न कनाडी पाठ पाया जाता है[1] —

सततशातभावनद पावनभोगनियोग वाक्रातेय चित्तवृत्तियलर्वि नललदन गरूप सदिद गज [1]परिपोगेन सोनतपद्मगदिसिद्धांतमुनीन्द्रचन्द्रनुदय बुधकैरवपडमडन मतणमेणोसुद्गुणगणक भेदवृद्धि अनन्तनोन्त[2] वाक्रातेय चित्तवल्लीय पम्पिण [3]दपनुधाळि [4]हृत्सरोजातररागरजितदिन कुलभूषण [5]दिव्यसैद्धान्त-मुनींद्रनुज्वलयशोजगमतीथमहार[6] सततकालशायमतिमचरित दिनदिं दिनके वीर्यं तउविद्दुइय वियम-इंमैमेयो लांतवविट्टमोहदाह तने कतु मुन्तुगिदे सच्चरित कुलचन्द्रदेवसैद्धान्तमुनीन्द्ररूजितयशोज्वळजगमतीर्थ महरू[7]

मैंने यह कनाडी पाठ अपने सहयोगी मित्र डाक्टर ए एन् उपाध्याय प्रोफेसर राजाराम कालेज कोल्हापुर, जिनकी मातृभाषा भी कनाडी है, के पास संशोधनार्थ भेजा था। उन्होंने यह कार्य अपने कालेजके कनाडी भाषाके प्रोफेसर श्री के जी कुदनगार महोदयके द्वारा करा कर मेरे पास भेजनेकी कृपा की। इसप्रकार जो संशोधित कनाडी पाठ और उसका अनुवाद मुझे प्राप्त हुआ, वह निम्न प्रकार है। पाठक देखेंगे कि उक्त पाठ परसे निम्न कनाडी पद्य सुसंशोधित-कर निकालनेमें संशोधकोंने कितना अधिक परिश्रम किया है।

१

सततशातभावनेय पावनभोगनियोग (वाणि) वा-
क्रातेय चित्तवृत्तियोळवि नल (थि गड मोहना) गरू-
प तळेद् गड प्रचुरपकनशोभितपद्मणादिसि
द्धान्तमुनीन्द्रचन्द्रनुदय बुधकैरवपडमडनम् ॥ १ ॥

२

भरणमीक्षसद्गुणगणाब्धिय वृद्धिगे चन्द्रनते वा-
क्रातेय चित्तवल्लिपदपन्तद्सुधालिहृत्सरो-
जातररागरंजितमन कुलभूषणदिव्यसैद्धसै-
द्धांतमुनीन्द्ररूर्जितयशोज्वलजगमतर्थिकल्पर ॥ २ ॥

---

१ प्राप्त प्रतियोंमें इस प्रशस्तिमें अनेक पाठभेद पाये जाते हैं। यहां पर सहारनपुरकी प्रतिके अनुसार पाठ रखा गया है जिसका मिलान हमें वीरसेवा मंदिरके अधिष्ठाता प जुगलकिशोरजी मुख्तारके द्वारा प्राप्त हो सका। केवल हमारी अ प्रतिमें जो अधिक पाठ पाये जाते हैं वे टिप्पणमें दिये गये हैं। २ अनन्तब्यनोन्त। ३ पदपिणनदर्प्प। ४ प्रहृत्। ५ दिव्यसैव्य। ६ तीर्थदमङ्गयस्र्थे। ७ मङ्करूहरू।

३

सततकालमायमतिसच्चरित्र इनोदितशक्ति वी
य तवन्दु मिद्ध निर्मलऊात्तुरिवेन्धदा
ह तने कतु मन्युगिद मचरित कुलचन्द्रदेवमै
द्धान्तमुनीन्द्ररूपितयमान्द्रगमनादिरवनम् ॥ ३ ॥

इसका हिंदीमें सारानुवाद हम इसप्रकार करते हैं—

१

श्रीपद्मनन्दि सिद्धान्तमुनीन्द्ररूपी चन्द्रमाका उदय विद्वद्गणरूपी कुमुदिनी समूहका मंडन था। वे प्रफुल्ल कमलके समान सुशोभित थे, तथा उनके मनमें निरंतर शान्त भावना और पावन सुख-भोगमें निमग्न सरस्वती देवीका निवास होनेसे वे सहज ही सुंदर शरीरके अधिकारी हो गये थे।

२

वे दिव्य और सेव्य कुलभूषण सिद्धान्तमुनीन्द्र अपने उन्नत यशसे उज्वल होनेके कारण जगम तीर्थके समान थे। सरण, मोक्ष और सद्गुणोंके समुद्रको वर्णनमें वे चन्द्रके समान थे, तथा सरस्वती देवीके चित्तरूपी वक्षके पदपंकज (के निवास) से गर्वयुक्त विद्वत्समुदायके हृदयकमलके अंतर रागसे उनका मन रंजायमान था।

३

ऊर्जित यशसे उज्वल कुलचन्द्र सैद्धान्तमुनीन्द्रका उद्भव जगमतीर्थके समान था। निरंतर कालमें काय और मनसे सच्चारित्रवान्, इनोदित शक्तिमान् और नियमवान् होते हुए उन्होंने विवेकबुद्धिद्वारा ज्ञान-दोहन करके कामदेवको दूर रखा। यह सच्चारित्र ही कामदेवके क्रोधसे बचनेका एकमात्र मार्ग है।

इसप्रकार इन तीन कनाडी पद्योंकी प्रशस्तिमें क्रमशः पद्मनन्दि सिद्धान्तमुनीन्द्र, कुलभूषण सिद्धान्तमुनीन्द्र और कुलचन्द्र सिद्धान्तमुनीन्द्रकी विद्वत्ता, बुद्धि और चारित्रकी प्रशंसा की गई है। पर उनसे उनके परस्पर सम्बन्ध, समय व ग्रन्थग्रंथ या उसकी प्रतिसे किसी प्रकारके सम्बन्धका कोई ज्ञान नहीं होता। अतएव इन बातोंकी जानकारीके लिए अन्यत्र खोज करना आवश्यक प्रतीत हुआ।

श्रवणबेल्गुलके अनेक शिलालेखोंमें पद्मनंदि मुनिके उल्लेख आये हैं। पर सब जगह एक ही पद्मनंदिसे तात्पर्य नहीं है। उन लेखोंसे ज्ञात होता है कि भिन्न भिन्न कालमें पद्मनन्दि नाम व उपाधिधारी अनेक मुनि आचार्य हुए हैं। किंतु लेख नं. ४० (६४) में हमारे प्रस्तुत पद्मनन्दिसे अभिप्राय रखनेवाला उल्लेख ज्ञात होता है, क्योंकि, उसमें पद्मनन्दि सैद्धान्तिकके

शिष्य कुलभूषण और उनके शिष्य कुलचन्द्रका भी उल्लेख पाया जाता है। वह उल्लेख इसप्रकार है—

> अविद्धकर्णादिकपद्मनन्दी सैद्धान्तिकाख्योऽजनि यस्य लोके ।
> कौमारदेवव्रतिताप्रसिद्धिर्जीयात्तु सो ज्ञाननिधिस्सधीरः ॥
> तच्छिष्यः कुलभूषणाख्ययतिपश्चारित्रवाराशि-
> स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्मो महान् ।
> शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कग्रन्थकारः प्रभा-
> चन्द्राख्यो मुनिराजपण्डितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः ॥
> तस्य श्रीकुलभूषणाख्यमुनेश्शिष्यो विनेयस्तुत-
> सद्वृत्तः कुलचन्द्रदेवमुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधिः ।

यहां पद्मनन्दि, कुलभूषण और कुलचन्द्रके बीच गुरु शिष्य परम्पराका स्पष्ट उल्लेख है। पद्मनन्दिको सैद्धान्तिक ज्ञाननिधि और सधीर कहा है। कुलभूषणको चारित्रवाराशि और सिद्धान्ताम्बुधिपारग, तथा कुलचन्द्रको विनेय, सद्वृत्त और सिद्धान्तविद्यानिधि कहा है। इस परम्परा और इन विशेषणोंसे उनके धवला-प्रतिके अन्तर्गत प्रशस्तिमें उल्लिखित मुनियोंसे अभिन्न होनेमें कोई सन्देह नहीं रहता। शिलालेखद्वारा पद्मनन्दिके गुणोंमें इतना और विशेष जाना जाता है कि वे अविद्धकर्ण थे अर्थात् कर्णच्छेदन संस्कार होनेसे पूर्व ही बहुत बालपनमें वे दीक्षित होगये थे और इसलिए कौमारदेवव्रती भी कहलाते थे। तथा यह भी जाना जाता है कि उनके एक और शिष्य प्रभाचन्द्र थे, जो शब्दाम्भोरुहभास्कर और प्रथित तर्कग्रन्थकार थे।

इसी शिलालेखसे इन मुनियोंके संघ व गण तथा आगे पीछेकी कुछ और गुरु परम्पराका भी ज्ञान हो जाता है। लेखमें गौतमादि, भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्तके पश्चात् उसी अन्वयमें हुए पद्मनन्दि, कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, उनके शिष्य बलाकपिच्छ, उसी आचार्य परम्परामें समन्तभद्र, फिर देवनन्दि जिनेन्द्रबुद्धि पूज्यपाद और फिर अकलंकके उल्लेखके पश्चात् कहा गया है कि उक्त मुनीन्द्र सन्तानिके उत्पन्न करनेवाले मूलसंघमें फिर नन्दिगण और उसमें देशीगण नामका प्रभेद हो गया। इस गणमें गोल्लाचार्य नामके प्रसिद्ध मुनि हुए। ये गोल्लदेशके अधिपति थे। किन्तु, किसी कारण वश संसारसे भयभीत होकर उन्होंने दीक्षा धारण करली थी। उनके शिष्य श्रीमत् त्रैकाल्ययोगी हुए और उनके शिष्य हुए उपर्युक्त अविद्धकर्ण पद्मनन्दि सैद्धान्तिक कौमारदेव, जो इसप्रकार मूलसंघ नन्दिगणान्तर्गत देशीगणके सिद्ध होते हैं।

लेखमें पद्मनन्दि, कुलभूषण और कुलचन्द्रसे आगेकी परम्पराका वर्णन इसप्रकार दिया गया है —

कुलचन्द्रदेवके शिष्य माघनन्दि मुनि हुए, जिन्होंने कोल्लापुर (कोल्हापुर) में तीर्थ स्थापित किया। वे भी राद्धान्तार्णवपारगामी और चारित्रचक्रेश्वर थे, तथा उनके श्रावक शिष्य थे

सामंत केदार नाकरस, सामंत निम्बदेव और सामंत कामदेव। माघनन्दिके शिष्य हुए-गडविमुक्तदेव, जिनके एक छात्र सेनापति भरत थे, व दूसरे शिष्य भानुकीर्ति और देवकीर्ति। गडविमुक्तदेवके सधर्म श्रुतकीर्ति त्रैविद्यमुनि थे, जिन्होंने विद्वानोंको भी चमत्कृत करनेवाले अनुलोम-प्रतिलोम काव्य राघव-पाडवीयकी रचना करके निर्मल कीर्ति प्राप्त की थी और देवेन्द्र जैसे विपक्ष वादियोंको परास्त किया था। श्रुतकीर्तिकी प्रशंसाके ये दोनों पद्य कनाडी काव्य पम्परामायणमें भी पाये जाते हैं। विपक्ष सैद्धांतिकसे संभव है उन्हीं देवेन्द्रसे तात्पर्य हो, जिनके विषयमें श्वेताम्बर ग्रंथ प्रभावकचरितमें कहा गया है कि उन्होंने वि० सं० ११८१ में दि० आचार्य कुमुदचन्द्रको वाद में परास्त किया था। इन्हींके अग्रज (सधर्म) थे कनकनन्दि और देवचन्द्र। कनकनन्दिने बौद्ध, चार्वाक और मीमांसकों को परास्त किया था, और देवचन्द्र भट्टारकोंके अग्रणी तथा वेताल झोटिंग आदि भूत पिशाचोंको वशीभूत करनेवाले बडे मंत्रवादी थे। उनके अन्य सधर्म थे माघनन्दि त्रैविद्यदेव, देवकीर्ति पंडितदेवके शिष्य शुभचन्द्र त्रैविद्यदेव, गडविमुक्त वादिचतुर्मुख रामचन्द्र त्रैविद्यदेव और वादिवज्रांकुश अकलंक त्रैविद्यदेव। गडविमुक्तदेवके अन्य श्रावक शिष्य थे माणिक्य भंडारी मरियाने दंडनायक, महाप्रधान सर्वाधिकारी ज्येष्ठ दंडनायक भरतिमय्य हेगडे बूचिमय्यगलु और जगदेकदानी हेगडे कोरय्य।

इन उल्लेखोंसे हमें पद्मनन्दि कुलभूषणके संघ व गणके अतिरिक्त उनका पूर्वापर सुविख्यात, विचक्षण और प्रभावशाली गुरुपरम्पराका अच्छा ज्ञान हो जाता है। तथा, जो और भी विशेष बात ज्ञात होती है, वह यह कि, हमारे पद्मनन्दिके एक और शिष्य तथा कुलभूषण सिद्धान्तमुनिके सधर्म जो प्रभाचन्द्र 'शब्दाम्भोरुहभास्कर' और प्रथित तर्कग्रन्थकार' पदोंसे विभूषित किये गए हैं, वे समवतः अन्य नहीं, हमारे सुप्रसिद्ध तर्कग्रन्थ प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचन्द्रके कर्ता प्रभाचन्द्राचार्य ही हो।

यह गुरु परम्परा इस प्रकार पाई जाती है —

गौतमादि
(उनकी संतानमें)
भद्रबाहु
|
चन्द्रगुप्त
(उनके अन्वयमें)
पद्मनन्दि कुन्दकुन्द
(उनके अन्वयमें)

उमास्वाति गृद्धपिच्छ
|
बलाकपिच्छ
(उनकी परम्परामें)
समन्तभद्र
(उनके पश्चात्)
देवनन्दि, जिनेन्द्रबुद्धि पूज्यपाद
(उनके पश्चात्)
अकलंक
(उनके पश्चात् मूलसंघ, नन्दिगणके देशीगणमें)
गोल्लाचार्य
त्रकाल्य योगी
|
पद्मनन्दि कौमारदेव
|
- कुलभूषण
  - कुलचन्द्र
    - माघनन्दिमुनि (कोल्लापुरीय)
      - गंडविमुक्तदेव,
        - भानुकीर्ति
        - देवकीर्ति
      - श्रुतकीर्ति
      - कनकनन्दि
      - देवचंद्र, माघनन्दि त्रैविद्यदेव, देवकीर्ति प. दे. के शिष्य शुभचंद्र त्रै. दे., रामचंद्र त्रै. देव
- प्रभाचन्द्र

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि उक्त पद्मनंदि आदि आचार्य किस कालमें उत्पन्न हुए? जिस उपर्युक्त शिलालेखमें उनका उल्लेख आया है, उसमें भी समयका उल्लेख कुछ नहीं पाया जाता। किन्तु वहां उस लेखका यह प्रयोजन अवश्य बतलाया गया है कि महामंडलाचार्य देवकीर्ति पंडितदेवने कोल्लापुरकी रूपनारायण बसदिके अधीन केल्लंगेरेय प्रतापपुरका पुनरुद्धार कराया था, तथा, जिननाथपुरमें एक दानशाला स्थापित की थी। उन्हीं अपने गुरुकी परोक्ष विनयके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भंडारी अभिनव-गंग-दंडनायक श्री हुल्लराजने उनकी निषद्या निर्माण कराई। तथा गुरुके अन्य शिष्य लक्खनंदि, माधव और त्रिभुवनदेवने महादान व पूजाभिषेक करके प्रतिष्ठा की। हुल्लराज अपरनाम हुल्लप वाजिवंशके यक्षराज और

लोकाम्बिकाके पुत्र तथा यदुवंशी राजा नारसिंहके मंत्री कहे गए हैं। इन यादव व होय्सलवंशीय राजा नारसिंह तथा उनके मंत्री हुल्लराज या हुल्लपका उल्लेख अन्य अनेक शिलालेखोंमें भी पाया जाता है, जिनसे उनका जैनधर्म में श्रद्धाका अच्छा परिचय मिलता है। (देखो जैन शिलालेख संग्रह, भू पृ ९४ आदि)। पर उक्त विषय पर प्रकाश डालनेवाला शिलालेख नं० ३९ है जिसमें देवकीर्तिकी प्रशस्तिके अतिरिक्त उनके स्वर्गवासका समय शक १०८५ सुभानु संवत्सर आषाढ शुक्ल ९ बुधवार सूर्योदयकाल बतलाया गया है, और कहा गया है कि उनके शिष्य लक्खनंदि, माधवचन्द्र और त्रिभुवनमल्लने गुरुभक्तिसे उनकी निषद्याकी प्रतिष्ठा कराई।

देवकीर्ति पद्मनंदिसे पांच पीढी, कुलभूषणसे चार और कुलचन्द्रसे तीन पीढी पश्चात् हुए हैं। अतः इन आचार्योंको उक्त समयसे १००-१२५ वर्ष अर्थात् शक ९५० के लगभग हुए मानना अनुचित न होगा। न्यायकुमुदचन्द्रकी प्रस्तावनाके विद्वान् लेखकने बहुत परिश्रमपूर्वक उस ग्रंथके कर्ता प्रभाचन्द्रके समयकी सीमा ईस्वी सन् ९५० और १०२३ अर्थात् शक ८७२ और ९४५ के बीच निर्धारित की है। और, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, ये प्रभाचन्द्र वे ही प्रतीत होते हैं जो लेख नं० ४० में पद्मनंदिके शिष्य और कुलभूषणके सधर्म कहे गए हैं। इससे भी उपर्युक्त कालनिर्णयकी पुष्टि होती है। उक्त आचार्योंके कालनिर्णयमें सहायक एक और प्रमाण मिलता है। कुलचन्द्रमुनि के उत्तराधिकारी माघनंदि कोल्लापुरीय कहे गये हैं। उनके एक गृहस्थ शिष्य निम्बदेव सामंतका उल्लेख मिलता है जो शिलाहार नरेश गंडरादित्यदेवके एक सामंत थे[2]। शिलाहार गंडरादित्यदेवके उल्लेख शक सं १०३० से १०५८ तक के लेखोंमें पाये जाते हैं। इससे भी पूर्वोक्त कालनिर्णयकी पुष्टि होती है।

पद्मनंदि आदि आचार्योंकी प्रशस्तिके सम्बन्धमें अब केवल एक ही प्रश्न रह जाता है, और वह यह कि उसका धवलाकी प्रतिमें दिये जानेका अभिप्राय क्या है? इसमें तो संदेह नहीं कि वे पद्य मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतिमें हैं और उन्हींपरसे प्रचलित प्रतिलिपियोंमें आये हैं। पर वे धवलाके मूल अंश या धवलाकारके लिखे हुए तो हो ही नहीं सकते। अतः यही अनुमान होता है कि वे उस ताडपत्रवाली प्रतिके लिखे जानेके समय या उससे भी पूर्वकी जिस प्रति परसे वह लिखी गई होगी उसके लिखनेके समय प्रक्षिप्त किये गये होंगे। सम्भवतः कुलभूषण या कुलचन्द्र सिद्धान्तमुनिकी देखरेखमें ही वह प्रतिलिपि की गई होगी। यदि विद्यमान ताडपत्र की प्रति लिखनेके समय ही वे पद्य डाले गये हों, तो कहना पडेगा कि वह प्रति शककी दशवीं

१ जैन शिलालेखसंग्रह, लेख नं ४०

२ Sukrabara Basti Inscription of Kolhapur, in Graham's Statistical Report on Kolhapur

न्यायकुमुदचन्द्र, भूमिका पृ ११४ आदि

शताब्दिके मध्य भागके लगभग लिखी गई है। इन्हीं प्रतियोंमेंसे कहीं एक और कहीं दोके प्रशस्त्यात्मक पद्य धवलाकी प्रतिमें और भी बीच बीचमें पाये जाते हैं जिनका परिचय व संग्रह आगे यथावसर देनेका प्रयत्न किया जायगा।

धवलाके अन्तकी प्रशस्ति

मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतिके प्रसगमें हमारी दृष्टि स्वभावत धवलाकी प्राप्त प्रतियोंके अन्तमें पायी जानेवाली प्रशस्ति पर जाती है। धवलाके अन्तमें धवलाकार वीरसेनाचार्यसे सम्बन्ध रखनेवाली वे नौ गाथाएं पाईं जातीं हैं जिनको हम प्रथम भागमें प्रकाशित कर चुके हैं। उन गाथाओंके पश्चात् भिन्न लम्बी प्रशस्ति पाई जाती है, जिसके कनाडी अश पूर्वोक्त प्रो कुंदनगार व प्रो उपाध्याय द्वारा बडे परिश्रमसे संशोधित किये गये हैं।

१

दान्द्रब्रह्मति शान्दिगणधरमुनिरित्येव राद्धान्तविद्भि,
साक्षात्सर्वज्ञ एवे यभिहितमतिभि सूक्ष्मवस्तुप्रणीत।
यो दृष्टो विश्वविद्यानिधिरिति जगति प्राप्तभट्टारकाख्य,
स श्रीमान् वीरसेनो जयति परमतध्वान्तभित्तन्त्रकार ॥ १ ॥

२

श्रीचारित्रसमृद्धिमिक्कविलाय मीकर्मविच्छित्तिपूर्वक ज्ञानावरणीयमूलनिर्नाशन भूचरेश वेसकेय्य सद्भमुनिवृन्दाधीश्वरकुन्दकुन्दाचायश्रुतधर [गयतविने (?)] नाचार्यरोळगयर जितमदविनिर्गतमलर्चतुर गुरुचारणर्द्धिनिरतगणधर [रकेच्चिगे (?)] गुणगणधरर् यतिपतिगणधररेनिसिद कुंन्दकुन्दाचार्यर्। अवरन्वय दोळ् सिद्धान्तविदग्धरेनिसिद पट्टकमप्रवर्णद्धिसिद्धिसमुत्तपरिस्फुतरप्प गृध्रपिच्छाचार्यधैर्यरागद्गांभीर्य- गुणोदधिगळुचितशमदमयमतापरेने गृध्रपिच्छाचार्यर शिष्यवलाकपिच्छाचार्यगुणनन्दिपडितविनुगुणनन्दि पडितनवगळ मेच्चिसि मनुज पेसरेसेवे सिद्धजगतिलकरसंकलमुनीन्द्रशिष्यपदार्थदोळर्थशास्त्रदोळु जिनागम दोळु तत्त्वदोळु मरावरितपुरातनतिगळोळ परमागमदोळ् पेरसम दोरे सरि पाटिपासटि समानमेनल् कृत- विधररेनुत्तिर बुधकोटिमद्भवीतळदोळु। गुणनन्दिपण्डितरार्यविहितविदर्ग्गे सूनुवराशिष्यरोळ् तपश्चरणसिद्धान्तपारायगरेणिकेगोळ्ळवरद्विवतरोविच्छिन्नानगरेबी महिमेयिनेसदेवाधियतनुदाररसेव्यदिनकर- किरणमे बेळगे देवेन्द्रसिद्धान्तर ॥ अन्तुनेगतवेत्तवर शिष्यरप्पवरदोळ् समस्तसिद्धान्तमहापयोनिधियेनिसि तळवरेग तपोबलाक्रान्तमनोरागि मदनरिततरागि पोगतवेत्तराशात नेगद्द कीर्त्ति वसुनन्दिमुनीन्द्ररुदात्तवृत्ति यिनुनियिगे कनाधर पुष्टिनेतवग शिष्यरादर् गुणदोळेद्दडे रविचन्द्रसिद्धान्तदेवरयर् जगद्विशेषचरितर्। अनु दयानवीयरप्पुदेदयनादशशाकनिने शावरि[1] गिर्चु धवलम मत्ते दुर्णयध्वान्तविघातमागिरे वदुद्भविरे सरे पूर्णचन्द्रसिद्धान्तमुनीन्द्र निगदितान्तप्रतिशासनम् जैनशासनम् ॥

---

१ अ प्रतिमें 'शार्वरिस्पराथिगिर्चु' ऐसा पाठ है।

इन्दु शारदद बेळ् गिंगळ् पुदिदुदु देसेदेसेयोळेनिव पसदोळर बाळिद दामनन्दिसिद्धान्तदेवर वरप्रशिष्यराधिगततत्वर ।

शान्ततेवेत्तवित्त जनाळाद विरोधमिदव ? निरुद्दर ।
श्रान्ततवेत्तर्गेरे परमार्थदाळ्गु नग व्र चतिद्रा ॥
मालिन [तिन्मरा (?)] रेवे [न्य ?] विनेन्द्रवीरनन्दिगि
द्दा वमुनीन्द्रर सुचरितक्रमदोदू विपरीत धृतरा ॥
बोधितभव्यरचित नधमान श्रीधरदरवर यशप्रतनूनसादरा ।
श्रीधरर्गादिनिव्यरवरोळ्नेगळ्दर् मल्धारिदेवर श्रीधरदवर ॥
नतनरेन्द्रकिरीटतटार्चितक्रमर अनुवन्ताति यशेनेगळ्दोदोरनाद पूर्विन ।
विनोळे बसक ज्रदत भर जळ्नामननयमीतके ॥
तन मनर * कान्त्रमदोद्धत नत्त रिसज- ।
मननल [शारन्मन ?] नेमिचन्द्रमलधारिदेव [रतरयेत ?] ॥

श्रुतधर [वलितिते ?] मेदयनोमयु तुरिसुवुदिल्ल निद्दवेरमुळ्निद्दुवुदिन्न वागिळ विरळेरे पुदुदिळ गुणदिळ (मह्द्रतु) नेर [जाग ?] वगिसल् गुणगणावळिय मळधारिदेवर ॥

श्रीमलधारिदेवमुनिमुख्यर शिष्यरोळग्रगण्यरभिमहित [कषायगुन ?] नितद्रपायकार्य[1] क्षेभमान मायामदगजतनगद्रिन्दुमरीचिगळ्दर (दि ?) यरा श्री नमिचन्द्रकीर्तिमुनिनायरदात्तचरित्रवृत्तियिं ॥ मळधारिदेवरिंद । नेळगित्तु जिनेन्द्रशासन मुत्त निमळमागि मत्तमीगळ् । बेळगिप्पुदु चन्द्रकीर्तिभट्टारकरिं ॥

बेळगुव कात्तवद्दिके शृङ्गलिसुधारसपूरमूलयो
ब्बुवळ्ळदमळ पोदद सितळोठनमागिरे चन्द्रनदम ॥
सळेद्दुजन मनगोळ्ळे दिगतर विकसिता—
ज्वळगुमचन्द्रकीर्तिमुनिनायरिदें विबुधाभिरधरो ॥

(पयितु ?) प्रसरत्किरणारातायचन्द्रकीर्तिमुताउरासातवत्तिवकीर्त्तगळ मुनिप्पुन्दवदिलराद्दरा शांतविदर शि परान्दिवाकरणदिमिद्धान्तदेवरिद जिनागमराधिंसारगरादरो । इदावुभरिददिळिकेल्दु सिद्धान्तवारिधिय तळदवरेंदोत्तनेन्दुलिसुवेनेनह् दिवाकरणदिमिद्धान्तदत्तरासिळागममत्तरमागमतिम सुधांशुमयुरपूरनिकर व्याख्यानवाप मरचालतलुगतरगवायमेने मिकोदायदि दोपनिमळधर्मामृतदिन ळ्कमिये गभीरतम ताळि भूरलयक पविनरागि नेगळ्दरा सिद्धान्तरत्नाकरर ॥ अवरप्रशिष्यर्

मेरेदुमदोमे सैक्कदगातयनाडद केतगागिल ।
तेळल्न मालुवस्तमितमागिरपोदद मेय्यनाम्मेयु ॥
तुरिसदकुवदुग्गासनके साल्द गल्विमुक्तवृत्तिय ।
मेरेयदपोल्दुश्रुतपयरित मळधारिदेवर ॥ अवरप्रशिष्यर्

९

आद श्रीमणवाधिवधतरश्चन्द्रावदातालनण इनेयाद् श्रीमलधारिदवयमिन पुत्र पवित्रा सुनि ।

---

१ ब प्रतिम यहां 'तवदवमवर' एसा पाठ है ।

२ स प्रतिमें 'पुवजितक्षायकार्य' इतना पाठ नहीं है ।

सद्धर्मैकशिखामणिजिनपतेर्भव्यैकचिन्तामणि स श्रीमान् शुभचन्द्रदेवमुनिप सिद्धान्तविद्यानिधि ॥१॥

२

शब्दाधिष्ठितभूतले परिलसत्साकोल्लसत्तभके (?)
साहित्यस्यधिकाश्मभिधिरुचित्ते (?) ज्योतिर्मये मडले ।
सद्रत्नत्रयमूलरत्नकलशे स्याद्वादहर्म्यं मुदा,
यो (?) देवेन्द्रसुराचितैर्दिविपदैस्सद्भिर्विरेजुस्तु (?) तत् ॥ २ ॥

३

देवेन्द्रसिद्धान्तमुनीन्द्रपादपंकेजभृंग शुभचन्द्रदेवः ।
यदीयनामापि विनेयचेतोजात तमो हर्तुमल समर्थं ॥ ३ ॥

४

परमजिनेश्वरविरचितवरसिद्धान्ताम्बुराशिपारगर्रदी ।
धरे बण्णिसुगु गुणगणधरर शुभचन्द्रदेवसिद्धान्तिकर ॥ ४ ॥

५

श्रीमज्जिनेन्द्रपदपद्मपरागभृङ्ग श्रीजैनशासनसमुद्रवार्धिचन्द्रः ।
सिद्धान्तशास्त्रविहिताङ्कितदिव्यवाणी धर्मप्रबोधमुकुर शुभचन्द्रसूरि ॥ ५ ॥

६

चित्तोद्भूतमदेभकन्ददलनप्रोत्कण्ठकण्ठीरवो भव्याम्भोजकुलप्रबोधनकृते विद्वज्जनानन्दकृत् ।
स्थेयात्कुन्दहिमेन्दुनिमलयशोवल्लीसमालम्बन स्तम्भ श्रीशुभचन्द्रदेवमुनिप सिद्धान्तरत्नाकर ॥ ६ ॥

७

कुवलयकुलबन्धुध्वस्तमोहातमिस्रे विकसितमुनितरवे सज्जनानन्दवृत्ते ।
विदितनिमलनानासत्कलान्विद्धमूर्ति शुभमतिशुभचन्द्रो राजयद्राजतेऽयम् ॥ ७ ॥

८

दिग्दावदन्तान्तरवर्तिकीर्ति रत्नत्रयालङ्कृतचारुमूर्ति ।
जीयाच्चिर श्रीशुभचन्द्रदेवो भव्याब्जिनीराजितराजहस. ॥ ८ ॥

९

श्रीमान् भूपालमौलिस्फुरितमणिगणज्योतिरुद्योतिताघ्रि,
भव्याम्भोजातवजातप्रमदकरनिधिस्त्यक्तमायामयादि ।
दृप्यत्कन्दर्पदपप्रबलितगिलितस्त्पूर्णितश्चार्यशस्य,
जीयाज्जैनाब्जभास्वाननुपमविनयो नोत्तसिद्धान्तदेव (?) ॥ ९ ॥

१०

जीयादसावनुपम शुभचन्द्रदेवो भावोद्भवोद्भवविनाशनमूलमन्त्र ।
निस्तन्द्रसान्द्रविबुधस्तुतिभूरिपात्र त्रैलोक्यगेहमणिदीपसमानकीर्ति ॥१०॥

११

भूविश्रामस्य नियमस्य विनूतपात्र क्षेत्र श्रुतस्य यशसोऽनघजन्मभूमि ।
भूवि श्रुतश्रितवतासुरभोजकल्पानदरायुघाच्चिवसताच्छुभचन्द्रदेव ॥११॥

स्वस्ति श्रीसमस्तगुणगणालंकृतसम्यक्त्वाचारचारित्रसम्पन्नयशीलसंपन्नरु विबुधप्रसन्नेरु आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदरु गुणगणाढ्यरु जिनस्तवनसमयसमुच्चलितदिव्यगंधधुरणपो द्कथविरगाग्रपु गात्रपवित्रेयु सम्यक्त्वचूडामणियु मण्डलिनाड्भुवनमल्लगंगपेर्माडिदेवरधयरमप्प रचिदेयि (?) यक्क श्रुतपंचमियं नोंतुद्धरणेयानाडवलिय रेयुपुगवे मालयदाचार्यर भुवनविख्यातरमनिसिदतम्म गुरुगळु श्रीशुभचन्द्रसिद्धान्तदेवग श्रुतपूजेय माडि बरेसिसि कोट्ट धवलेय पुस्तकं मंगलमहा ॥

श्रीकुरण (कोपण) प्रसिद्धपुरमापुरदोळगे वशवाधि शामाकरमूर्नित निखिलसाक्षरिकास्यविलासदर्पण ।
नाकजनाथवधनिनपादसयोरुहभृङ्गने द्भुलोकमेद बणिपुदु निरुपमन मनुनातिमागन ।

निजपद्मसरोधकसमुपमविनयाङ्कुराशिदानविनोद मनुनीतिमागनमत्तीननदूर लौकिकार्थदानिगनिष्टम ।
वारिनिधियोळगमुत्तम् नरिदुव कोंडु कोरेदु धरग मुददि भारतियम् रळोळिक्कदहारमननुकरिसले सेवरवा जिष्टम् ॥

यह प्रशस्ति बहुत अशुद्ध और समनत स्खलन प्रचुर है। इसमें गद्य और पद्य तथा संस्कृत और कनाडी दोनों पाये जाते हैं। बिना मूडबिद्रीकी प्रतिके मिलान किये सर्वथा शुद्ध पाठ तैयार करना असमभरसा प्रतीत होता है। लिपिकारोंने कहीं कहीं कनाडीको बिना समझे संस्कृतरूप देनेका भी प्रयत्न किया जान पड़ता है जिससे बड़ी गड़बड़ा उत्पन्न होगई है। उदाहरणार्थ—कर्त्ता एक वचनका रूप कुंदकुंदाचार्यर् तृतीयामें परिवर्तित कुंदकुंदाचार्यर् पाया जाता है। ऐसे स्थलोंको विद्वान् महोदयोंने ग्यूव सम्हाला है। पर कई स्खलनोंकी पूर्ति फिर भी नहीं की जा सकी, कनाडी पद्य भी बहुत भ्रष्ट और गद्यके रूपमें परिवर्तित हो गये हैं जिनका अर्थ भी समझना कठिन हो गया है। तथापि उससे निम्न बातें स्पष्ट समझमें आती हैं—

१ धवलाकी प्रति बन्नियकेरे चैत्यालयके सुप्रसिद्ध आचार्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवको समर्पित की गई थी।

२ शुभचन्द्रदेव देशीगणके थे और उनकी गुरुपरंपरामें उनसे पूर्व कुंदकुंद, गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनंदि, देवेन्द्र, वसुनंदि, रविचन्द्र, दामनंदि, श्रीरनंदि, श्रीधरदेव, मलधारिदेव, (नेमि) चन्द्रकीर्ति और दिवाकरनंदि आचार्य हुए।

३ पुस्तक समर्पण कार्य मंडलिनाडुके भुवनैकगंगपेर्माडिदेवकी काकी देमियक्कने श्रुत-पंचमी व्रतके उद्यापनके समय किया था।

शुभचन्द्रदेवकी उक्त गुरुपरंपरा परसे उनका पता लगाना सुलभ हो गया। उक्त परम्परा, एक दो नामोंके कुछ भेदके साथ प्रायः वही है, जो श्रवणबेल्गुलके शिलालेख नं ४३ (११७) में पाई जाती है। यही नहीं, किन्तु धवलाकी प्रशस्तिके तीन पद्य ज्योंके त्यों उक्त शिलालेखमें भी पाये जाते हैं (पद्य नं १२, १३ और २१)। लेखमें शुभचन्द्रदेवके स्वर्गवासका समय निम्न प्रकार दिया गया है—

बाणाम्भोधिनभश्शशाङ्कतुलिते जाते शकाब्दे ततो
वर्षे शोभकृताह्वये व्युपगते मासे पुनः श्रावणे ।
पक्षे कृष्णविपक्षवर्तिनि सिते वारे दशम्यां तिथौ
स्वर्यातः शुभचन्द्रदेवगणभृत् सिद्धान्तवारानिधिः ॥

अर्थात् शुभचन्द्रदेवका स्वर्गवास शक सवत् १०४५ श्रावण शुक्ल १० दिन सितवार (शुक्रवार) को हुआ । उनकी निषद्या पोय्सल नरेश विष्णुवर्धनके मंत्री गंगराजने निर्माण कराई थी ।

शिमोगासे मिले हुए एक दूसरे शिलालेखमें वन्नियकेरे चैत्यालयके निर्माणका समय शक स० १०३५ दिया हुआ है और उसमें मन्दिरके लिये भुजबलगंगपेर्माडिदेवद्वारा दिये गये दानका भी उल्लेख है । अंतमें देशीगणके शुभचन्द्रदेवकी प्रशंसा भी की गई है । (एपीग्राफिआ कर्नाटिका, जिल्द ८, लेख न० ९७)

खोज करनेसे धवला प्रतिका दान करनेवाली श्राविका देमियक्कका पता भी श्रवणबेल्गुलके शिलालेखोंसे चल जाता है । लेख न० ४६ में शुभचन्द्र मुनिकी जयकारके पश्चात् नागले माताकी सन्तति दंडनायकित्ति लक्कले, देमति और बूचिराजका उल्लेख है और बूचिराजकी प्रशंसाके पश्चात् कहा गया है कि वे शक १०३७ वैशाख सुदि १० आदित्यवारको सर्व परिग्रह त्याग पूर्वक स्वर्गवासी हुए और उन्हींकी स्मृतिमें सेनापति गंगने पाषाण स्तम्भ आरोपित कराया । लेखके अन्तमें 'मूलसंघ देशीगण पुस्तक गच्छके शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बूचणकी निषद्या' ऐसा कहा गया है । इस लेखमें जो बूचणकी ज्येष्ठ भगिनी देमतिका उल्लेख आया है, उसका सविस्तर वर्णन लेख न० ४९ (१२९) में पाया जाता है जो उनके सन्यासमरणकी प्रशस्ति है । यहां उनके नाम-देमति, देमवती, देवमती तथा दोबार देमियक्क दिये गये हैं और उन्हें मूलसंघ देशीगण पुस्तक गच्छके शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवकी शिष्या तथा श्रेष्ठिराज चामुण्डकी पत्नी कहा है । उनकी धर्मबुद्धिकी प्रशंसा तो लेखमें खूब ही की गई है । उन्हें शासन देवताका आकार कहा है, तथा उनके आहार, अभय, औषध और शास्त्रदानकी स्तुति की गई है । उस लेखके कुछ पद्य इस प्रकार हैं —

१

आहारं त्रिजगज्जनाय विभयं भीताय दिव्यौषधं,
व्याधिव्यापदुपेतदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागमम् ।
एवं देवमतिस्सदैव ददती प्रक्षये स्वायुषा-
मर्हद्देवमतिं विधाय विधिना दिव्यां वधूः प्रोदभूत् ॥ ४ ॥

२

आसीत्परक्षोभकरप्रतापाशेषावनीपालकृतादरस्य ।
चामुण्डनाम्नो वणिजः प्रिया स्त्री मुख्या सती या भुवि देमतीति ॥ ५ ॥

३

भूलोकचैत्यालयचैत्यपूजाव्यापारकृत्यादरतोऽवतीर्णा ।
स्वर्गात्सुरस्त्रीति विलोक्यमाना पुण्येन लावण्यगुणेन याऽत्र ॥ ६ ॥

४

आहारशास्त्राभयभेषजानां दात्रीयमत्र वर्णचतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रियया मृ[illegible]त स्वस्था[illegible] प्रविवे[illegible] यावे ॥ ७ ॥

५

सद्धर्मशत्रु कलिकालराज जित्वा व्यवस्थापितधर्मवृत्त्या ।
तस्या जयस्तम्भनिभं शिलायां स्तम्भं व्यवस्थापयति स्म हर्म्या ॥ ८ ॥

लेखके अंतमें उनके संन्यासविधिसे देहत्यागका उल्लेख इसप्रकार है—

श्री मूलसंघद देशिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचंद्रसिद्धान्तदेवर् गुड्डि सक वर्ष १०४२ नेय विकारि संवत्सरद फाल्गुण ब ११ बृहवार दंदु संन्यासन विधियिं देमियक मुडिपिदलु ।

अर्थात् मूलसंघ, देशीगण, पुस्तकगच्छके शुभचन्द्रदेवकी शिष्या देमियक्कने शक १०४२ विकारिसंवत्सर फाल्गुन ब ११ बृहस्पतिवारको संन्यासविधिसे शरीरत्याग किया।

उक्त परिचय परसे संभव तो यही जान पड़ता है कि धवलाकी प्रतिका दान करनेवाली धर्मिष्ठा साध्वी देमियक्क ये ही होंगी, जिन्होंने शक १०४२ में समाधिमरण किया। तथा उनके भतीजे भुजबलि× गंगपेर्माडिदेव जिनका धवलाकी प्रशस्तिमें उल्लेख है उनके भ्राता बूचिराजके ही सुपुत्र हों तो आश्चर्य नहीं। उस व्रतोद्यापनके समय बूचिराजका स्वर्गवास हो चुका होगा, इससे उनके पुत्रका उल्लेख किया गया है। यदि यह अनुमान ठीक हो तो धवलाकी प्रति जो संभवतः मूडबिद्रीकी वर्तमान ताड़पत्रीय प्रति ही हो और जो शक ९५० के लगभग लिखाई गई थी, बूचिराजके स्वर्गवासके पश्चात् और देमियक्कके स्वर्गवाससे पूर्व अर्थात् शक १०३७ और १०४२ के बीच शुभचन्द्रदेवके सुपुर्द की गई, ऐसा निष्कर्ष निकलता है। पर यह भी संभव है कि श्रीमती देमियक्कने पुरानी प्रतिकी नवीन लिपि कराकर शुभचन्द्रको प्रदान की और उसमें पूर्व प्रतिके बीच-बीचके पद्य भी लेखकने कापी कर दिये हों।

प्रशस्तिके अंतिम भागमें तीन कनाड़ीके पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम पद्य 'श्री कुरण' आदिमें कोपण नामके प्रसिद्ध पुरकी कीर्ति और शेष दो पद्यों में जिन नामके किसी श्रावकके यशका वर्णन किया गया है। कोपण प्राचीन कालमें जैनियोंका एक बड़ा तीर्थस्थान रहा है।

× भुजबलवीर होय्सल नरेशकी उपाधि पाई जाती है। देखो शिलालेख नं० १३८, १४३, ४९१, ४९४, ४९७

चामुडराय पुराणके ' असिधारा व्रतदिदे ' आदि एक पद्यसे अवगत होता है कि तत्कालीन जैनी कोपणमें सल्लेखना पूर्वक देहत्याग करना विशेष पुण्यप्रद मानते थे। श्रवणबेल्गोलके अनेक लेखोंमें इस पुण्य भूमिका उल्लेख पाया जाता है। लेख नं० ४७ (१२७) शक सवत् १०३७ का है। इसके एक पद्यमें कहा गया है कि सेनापति गगने असंख्य जीर्ण जैनमंदिरोंका उद्धार कराकर तथा उत्तम पात्रोंको उदार दान देकर गगवाडिदेश को 'कोपण' तीर्थ बना दिया। यथा—

> मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण जिनाश्रयकोटिय क्रम
> बेत्तिरे मुन्निनन्तिरनितूर्गलोल् नेरे माडिसुत्तम-
> त्युत्तमपात्रदानदोदव मेरेवुत्तिरे गङ्गवाडितो-
> म्बत्तर सासिर कोपणमादुदु गङ्गणदण्डनाथनि ॥ ३९ ॥

इससे कोपण तीर्थकी भारी महिमाका परिचय मिलता है।

लगभग शक सं० १०८७ के लेख नं १३७ (३४५) में हुल्ल सेनापतिद्वारा कोपण महातीर्थमें जैन मुनिसंघके निश्चिन्त अक्षय दानके लिये बहुत सुवर्ण व्ययसे खरीदकर एक क्षेत्रकी वृत्ति लगाई जानेका उल्लेख है। यथा—

> प्रियदिन्द हुल्लसेनापति कोपणमहातीर्थदोळधात्रियुवा-
> द्वियुमुल्लन्न चतुर्विंशति-जिन-मुनि संघके निश्चिन्तमाग
> क्षय दान सल्व पाङ्गि बहु-कनक-मना-क्षेत्र-जिर्गोंडु सद्वृ-
> त्तियनित्तीलोक मेहम्पोगरे् निडिमिदु पुण्यपुंजैकधाम ॥ २७ ॥

इससे ज्ञात होता है कि यहां मुनि आचार्योंका अच्छा जुटाव रहा करता था और संभवत कोई जैन शिक्षालय भी रहा होगा।

लगभग १०५७ के लेख नं १४४ (३८४) के एक पद्यमें सेनापति एच द्वारा कोपण व अन्य तीर्थस्थानोंमें जिनमंदिर बनवाये जाने का उल्लेख है। यथा—

> माडिसिद जिनेन्द्रभवनङ्गलना कोपणादि तीर्थदलु
> रूढियिनेल्दो-वेचैसेव बेलगोलदलु बहुचित्रभित्तिय।
> नोडिदर मनङ्गोलि पुवेम्बिनमेच-चमूपनल्थि कै-
> गूडे धरित्रिकोण्डु कोनेदाडे जसम्नल्पिनाडे लीलेयिं ॥ १३ ॥

निजाम हैद्राबाद स्टेटके रायचूर जिलेमें एक कोप्पल नामका ग्राम है, यही प्राचीन कोपण सिद्ध होता है। वर्तमानमें वहां एक दुर्ग तथा चहार दीवाली है जो चालुक्य कालीन कलाके द्योतक समझे जाते हैं। इनके निर्माणमें प्राचीन जैन मंदिरोंके चित्रित पाषाण आदिका उपयोग दिखाई दे रहा है। एक जगह दीवालमें कोई बीस शिलालेखोंके टुकडे चुने हुए पाये

जाते हैं। इस स्थानपर व उसके आसपास कोई दस बीस कोसकी इर्दगिर्दमें अशोकके कालसे लगाकर इस तरफके अनेक लेख व अन्य प्राचीन स्मारक पाये जाते हैं।

कोपणके समीप ही पाल्कीगुण्डु नामक पहाडी पर, अशोकके शिलालेखके पास वरांग चरितके कर्ता जटासिंहनन्दि के चरणचिह्न भी, पुराने कनडमें लेखसहित, अंकित हैं। (वरांगचरित, भूमिका पृ. १७ आदि)

इसप्रकार यह स्थान बडा प्राचीन, इतिहास प्रसिद्ध और जैनधर्म के लिये बहुत महत्वपूर्ण रहा है *।

२ सत्प्ररूपणा विभाग

षट्खंडागमका पूर्व प्रकाशित प्रथम पुस्तक तथा अब प्रकाशित होनेवाली द्वितीय पुस्तकको हमने 'सत्प्ररूपणा' के नामसे प्रकट किया है। प्रथम जिल्दके प्रकाशित होनेपर शंका उठाई गई है कि उस ग्रंथको सत्प्ररूपणा न कहकर 'जीवस्थान प्रथम अंश' ऐसा लिखना चाहिये था। इसके उन्होंने दो कारण बतलाये हैं। एक तो यह कि इस विभागके भीतर जो मंगलाचरण है वह केवल सत्प्ररूपणाका नहीं है बल्कि समस्त जीवस्थान खंडका है और दूसरे यह कि इसके आदिमें जो विषय विवरण पाया जाता है वह सत्प्ररूपणाके बाहरका है, सत्प्ररूपणाका अंग नहीं ×। इन दोनों आपत्तियोंपर विचार करके भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हमने जो इस विभागको 'जीवस्थानका प्रथम अंश' न कहकर 'सत्प्ररूपणा' कहा है वही ठीक है। इसके कारण निम्न प्रकार हैं—

१ यह बात ठीक है कि आदिका मंगलाचरण केवल सत्प्ररूपणाका ही नहीं, किन्तु समस्त जीवस्थानका है। पर, अवान्तर विभागोंकी दृष्टिसे सत्प्ररूपणाके भीतर उसे लेनेसे भी वह समस्त जीवस्थानका बना रहता है। सब ग्रंथोंमें मंगलाचरणकी यही व्यवस्था पायी जाती है कि वह ग्रंथके आदिमें किया जाता है और जो भी खंड, स्कंध, सर्ग, अध्याय व विषयविभाग आदिमें हो उसीके अन्तर्गत किये जाने पर भी वह समस्त ग्रंथका समझा जाता है। समस्त ग्रंथपर उसका अधिकार प्रकट करनेके लिये उसका एक स्वतंत्र विभाग नहीं बनाया जाता। अतएव जीवस्थान ही क्यों, जहांतक ग्रंथमें सूत्रकारकृत दूसरा मंगलाचरण न पाया जावे वहांतक उसी मंगलाचरणका अधिकार समझना चाहिये, चाहे विषयकी दृष्टिसे ग्रंथमें कितने ही विभाग क्यों न पड गये हों। स्वयं धवलाकारने आगे वेदनाखंड व कृति अनुयोगद्वारके आदिमें आये हुए मंगलाचरणको शेष दोनों खंडों व तेवीस अधिकारोंका भी मंगलाचरण कहा है। यथा—

---

* देखो जैनमि. भा. ५, २ पृ. ११०

× अनेकान्त, वर्ष ३, कि. ... २०१

उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं ? तिण्णं खंडाणं। × × × कधं वेयणाए आदीए उत्तं मंगलं सेसदोखंडाणं होदि ? ण, कदीए आदिम्हि उत्तस्स एदस्स मंगलस्स सेस तेवीस-अणियोगद्दारेसु पउत्ति दंसणादो।

ऐसी अवस्थामें णमोकार मंत्ररूप मंगलाचरणके सत्प्ररूपणाके आदिमें होते हुए भी उसके समस्त जीवस्थानके मंगलाचरण समझे जानेमें कोई आपत्ति तो नहीं होना चाहिये।

२ यथार्थतः तो वह मंगलाचरण सत्प्ररूपणाका ही है। आचार्य पुष्पदन्तने उस मंगलाचरणको आदि लेकर सत्प्ररूपणा मात्रके ही सूत्रोंकी तो रचना की है। यदि हम इसे भूतबलि आचार्यकी आगेकी रचनासे पृथक् कर लें तो पुष्पदन्तकी रचना उस मंगलसूत्र सहित सत्प्ररूपणा ही तो कहलायगी। जीवस्थानका प्रथम अंश यही सत्प्ररूपणा ही तो है।

३ यदि इस अंशको सत्प्ररूपणा न कह कर जीवस्थानका प्रथम अंश कहते तो पाठक उससे क्या समझते ? इस नामसे उसके विषय पर क्या प्रकाश पडता ? वह एक अज्ञात कुलशील और निरुपयोगी शीर्षक सिद्ध होता।

४ हमने जो ग्रंथका विषय-विभाग किया है वह मूलग्रन्थ पुष्पदन्त और भूतबलिकृत षट्खंडागमकी अपेक्षासे है, और उसमें सत्प्ररूपणासे पूर्व किसी और विषयविभागके लिये स्थान नहीं है। मंगलाचरणके पश्चात् छह सात सूत्रोंमें सत्प्ररूपणाका यथोचित स्थान और कार्य बतलानेके लिये चौदह जीवसमासों और आठ अनुयोगद्वारोंका उल्लेखमात्र करके सत्प्ररूपणाका विवेचन प्रारम्भ कर दिया गया है। धवलाटीकाके कर्ताने उन सूत्रोंकी व्याख्याके प्रसंगसे जीवस्थानकी उत्थानिकाका कुछ विस्तारसे वर्णन कर डाला तो इससे क्या उस विभागको सत्प्ररूपणासे अलग निर्दिष्ट करनेके लिये एक नये शीर्षककी आवश्यकता उत्पन्न होगई ? ऐसा हमें जान नहीं पडता। षट्खंडागमके भीतर जो सूत्रकारद्वारा निर्दिष्ट विषय विभाग हैं उन्हींके अनुसार विभाग रखना हमने उचित समझा है। धवलाकारने भी आदिसे लगाकर १७७ सूत्रोंकी क्रमसंख्या लगातार रखी है और उनकी एक ही सिलसिलेसे टीका की है जिसे उन्होंने 'संतसुत्तविवरण' कहा है जैसा कि प्रस्तुत भागके प्रारंभिक वाक्यसे स्पष्ट है। यथा—

'संपहि संत-सुत्त-विवरण-समत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो'।

३ वर्गणाखंड-विचार

षट्खंडागमके छह खंडोंका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें कराया जा चुका है। वहां यह बतलाया गया है कि उन छह खंडोंमें से प्रथम पांच अर्थात् जीवट्ठाण, खुद्दाबंध, बंधसामित्तविचय, वेदणा और वग्गणा उपलब्ध धवलाकी प्रतियोंमें निबद्ध हैं तथा शेष छठवां अर्थात् महाबंध स्वतंत्र पुस्तकारूढ है, जिसकी प्रतिलिपि अभीतक मूडबिद्री मठके बाहर उपलब्ध नहीं

है। इनमेंसे चार खडोंके सम्बधमें तो कोई मतभेद नहीं है, किन्तु वेदना और वर्गणा खडकी सीमाओंके सम्बधमें एक शका उत्पन्न की गई है जो यह है कि "धवलग्रथ वेदना खडके साथ ही समाप्त हो जाता है-वर्गणाखंड उसके साथमें लगा हुआ नहीं है"। इस मतकी पुष्टिमें जो युक्तियां दी गई हैं वे सक्षेपत निम्न प्रकार हैं—

१ जिस कम्मपयडिपाहुडके चौबीस अधिकारोंका पुष्पदन्त-भूतबलिने उद्धार किया है उसका दूसरा नाम 'वेयणकसिणपाहुड' भी है जिससे उन २४ अधिकारोंका 'वेदनाखड' के ही अन्तर्गत होना सिद्ध होता है।

२ चौबीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार भी नहीं है। एक अवान्तर अनुयोगद्वारके भी अवान्तर भेदान्तर्गत सक्षिप्त वर्गणा प्ररूपणाको 'वर्गणाखड' कैसे कहा जा सकता है?

३ वेदनाखडके आदिके मगलसूत्रोंकी टीकामें वीरसेनाचार्यने उन सूत्रोंको ऊपर कहे हुए वेदना, धवसामित्तविचय और खुद्दाबधका मगलाचरण बतलाया है और यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणाखडके आदिमें तथा महाबधखडके आदिमें पृथक् मगलाचरण किया गया है उपलब्ध धवलाके शेष भागमें सूत्रकारकृत कोई दूसरा मगलाचरण नहीं देखा जाता, इससे यह वर्गणाखडकी कल्पना गलत है।

४ धवलामें जो 'वेयणाखड समत्ता' पद पाया जाता है यह अशुद्ध है। उसमें पडा हुआ 'खड' शब्द असगत है जिसके प्रक्षिप्त होनेमें कोई सन्देह मालूम नहीं होता।

५ इन्द्रनन्दि व विबुधश्रीधर जैसे ग्रथकारोंने जो कुछ लिखा है यह प्राय किंवदन्तियें अथवा सुने सुनाये आधारपर लिखा जान पडता है। उनके सामने मूलग्रथ नहीं थे, अतएव उनकी साक्षीको कोई महत्व नहीं दिया जा सकता।

६ यदि वर्गणाखड धवलाके अन्तर्गत था तो यह भी हो सकता है कि लिपिकारने शीघ्रता वश उसकी कापी न की हो और अधूरी प्रतिपर पुरस्कार न मिल सकने की आशकासे उसने ग्रथकी अन्तिम प्रशस्तिको जोडकर ग्रथको पूरा प्रकट कर दिया हो। ×

अब हम इन युक्तियोंपर क्रमश विचार कर ठीक निष्कर्ष पर पहुचनेका प्रयत्न करेंगे।

१. वेयणकसि[illegible] और [illegible] नहीं हैं।

यह बात सत्य [illegible] नाम वेयणकसिणपाहुड भी है और यह गुण नाम [illegible] और उसका निरवशेषरूपसे जो वर्णन

करता है उसका नाम वेयणकसिणपाहुड (वेदनकृत्स्नप्राभृत) है। किन्तु इससे यह आवश्यक नहीं हो जाता कि समस्त वेयणकसिणपाहुड वेदनाखडके ही अन्तर्गत होना चाहिये, क्योंकि यदि ऐसा माना जावे तब तो छह खडोंकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी और समस्त षट्खड वेदनाखड के ही अन्तर्गत मानना पड़ेंगे चूंकि जीवट्ठाण आदि सभी खडोंमें इसी वेयणकसिणपाहुडके अशों का ही तो सग्रह किया गया है जैसा कि प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये गये मानचित्रों तथा सतपरूवणा पृ ७४ आदिके उल्लेखोंसे स्पष्ट है। यह खड–कल्पना कम्मपयडिपाहुड या वेयण-कसिणपाहुडके अवान्तर भेदोंकी अपेक्षासे की गई है किसी एक खडको समूचे पाहुडका अधिकारी नहीं बनाया गया। स्वय धवलाकारने वेदनाखडको महाकम्मपयडिपाहुड समझ लेनेके विरुद्ध पाठकोंको सतर्क कर दिया है। वेदनाखडके आदिमें मगलके निबद्ध अनिबद्धका विवेक करते समय वे कहते हैं—

'ण च वेयणाखड महाकम्मपयडिपाहुड, अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो'

अर्थात् वेदनाखड महाकर्मप्रकृतिप्राभृत नहीं है, क्योंकि अवयवको अवयवी मान लेनेमें विरोध उत्पन्न होता है। यदि महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके चौवीसों अनुयोगद्वार वेदनाखडके अन्तर्गत होते तो धवलाकार उन सबके सग्रहको उसका एक अवयव क्यों मानते? इससे बिलकुल स्पष्ट है कि वेदनाखडके अन्तर्गत उक्त चौवीसों अनुयोगद्वार नहीं हैं।

२. क्या वर्गणा नामका कोई पृथक् अनुयोगद्वार न होनेसे उसके नामपर खंड सज्ञा नहीं हो सकती?

कम्मपयडिपाहुडके चौवीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार नहीं है, यह बिलकुल सत्य है, किन्तु किसी उपभेदके नामसे वर्गणाखड नाम पडना कोई असाधारण घटना तो नहीं कही जा सकती। यथार्थत अन्य खडोंमें एक वेदनाखंडको छोडकर अन्य शेष सब खडोंके नाम या तो विषयानुसार कल्पित हैं, जैसे जीवट्ठाण, खुद्दाबंध, व महाबध। या किसी अनुयोगद्वारके, उपभेदके नामानुसार है, जैसे बधसामित्तविचय। उसीप्रकार यदि वर्गणा नामक उपविभाग पदसे उसके महत्वके कारण एक विभागका नाम वर्गणाखड रखा गया हो तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। चोवीस अधिकारोंमेंसे जिस अधिकार या उपभेदका प्रधानत्व पाया गया उसीके नामसे तो खड सज्ञा की गई है, जैसा कि धवलाकारने स्वय प्रश्न उठाकर कहा है कि कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृतिका भी यहां प्ररूपण होनेपर भी उनकी खडग्रथ सज्ञा न करके केवल तीन ही खड कहे जाते हैं क्योंकि शेषमें कोई प्रधानता नहीं है और यह उनके संक्षेप प्ररूपणसे जाना जाता है ×। इसी सक्षेप प्ररूपणका प्रमाण देकर वर्गणाको भी खड सज्ञासे

× देखो सतपरूपणा, जिल्द १, भूमिका पृ. ६५ टिप्पणी

च्युत करनेका प्रयत्न किया जाता है। पर संक्षेप और विस्तार आपेक्षिक शब्द हैं, अतएव वर्गणाका प्ररूपण धवलामें संक्षेपसे किया गया है या विस्तारसे यह उसके विस्तारका अन्य अधिकारोंके विस्तारसे मिलान द्वारा ही जाना जा सकता है। अतएव उक्त अधिकारोंके प्ररूपण विस्तार को देखिये। बंधसामित्तविचयखंड अमरावती प्रतिके पत्र ६६७ पर समाप्त हुआ है। उसके पश्चात् मंगलाचरण व श्रुतावतार आदि विवरण ७१३ पत्र तक चलकर कृतिका प्रारंभ होता है जिसका ७५६ तक ४३ पत्रोंमें, वेदनाका ७५६ से ११०६ तक ३५० पत्रोंमें, स्पर्शका ११०६ से १११४ तक ८ पत्रोंमें, कर्मका १११४ से ११५९ तक ४५ पत्रोंमें, प्रकृतिका ११५९ से १२०९ तक ५० पत्रोंमें और बंधन के बंध और बंधनीयका १२०९ से १३३२ तक १२३ पत्रोंमें प्ररूपण पाया जाता है। इन १२३ पत्रोंमेंसे बंधका प्ररूपण प्रथम १० पत्रोंमें ही समाप्त करदिया गया है, यह कहकर कि—

'एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारस अणियोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा'।

इसके आगे कहा गया है कि—

'तेण बंधणिज्जपरूवणे कीरमाणे वग्गणपरूवणा णिच्छएण कायव्वा, अण्णहा तेवीस वग्गणासु इमा चेव वग्गणा बंधपाओग्गा अण्णाओ बंधपाओग्गाओ ण होंति त्ति अवगमाणुववत्तीदो। वग्गणाणमणु मग्गणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति' इत्यादि।

अर्थात् बंधनीयके प्ररूपण करनेमें वर्गणा की प्ररूपणा निश्चयतः करना चाहिये, अन्यथा तेईस वर्गणाओंमें ये ही वर्गणाएं बंधके योग्य हैं अन्य वर्गणाएं बंधके योग्य नहीं हैं, ऐसा ज्ञान नहीं हो सकता। उन वर्गणाओंकी मार्गणाके लिये ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। इत्यादि।

इस प्रकार पत्र १२१९ से वर्गणाका प्ररूपण प्रारंभ होकर पत्र १३३२ पर समाप्त होता है, जहां कहा गया है कि—

'एवं विस्ससोवचयपरूवणाए समत्ताए बाहिरियवग्गणा समत्ता होदि'।

इसप्रकार वर्गणाका विस्तार ११३ पत्रोंमें पाया जाता है, जो उपर्युक्त पांच अधिकारोंमेंसे वेदनाको छोड़कर शेष सबमें कोई दुगुना व उससे भी अधिक पाया जाता है। पूरा खुद्दाबंधखंड ४७५ से ५७६ तक १०१ पत्रोंमें तथा बंधसामित्तविचयखंड ५७६ से ६६७ तक ९१ पत्रोंमें पाया जाता है। किंतु एक अनुयोगद्वारके अवान्तरके भी अवान्तर भेद वर्गणाका विस्तार इन दोनों खंडोंसे अधिक है। ऐसी अवस्थामें उसका प्ररूपण संक्षिप्त कहना चाहिये या विस्तृत और उससे उसे खंड संज्ञा प्राप्त करने योग्य प्रमाणत्व प्राप्त होसका या नहीं, यह पाठक विचार करें।

३. वेदनाखंडके आदिका मंगलाचरण और कौन कौन खंडोंका है ?

वेदनाखंडके आदिमें मंगलसूत्र पाये जाते हैं। उनकी टीकामें धवलाकारने खंडविभाग व उनमें मंगलाचरणकी व्यवस्था संबंधी जो सूचना दी है उसको निम्न प्रकार उद्धृत किया जाता है—

'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं ? तिण्णं खंडाणं। कुदो ? वग्गणा महाबंधाणमादीए मंगलकरणादो। ण च मंगलेण विणा भूदबलिभडारओ गंथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तप्पसंगादो×× कदि–पास–कम्म–पयडि–अणियोगद्दाराणि वि एत्थ परूविदाणि, तेसिं खंडगंथसण्णमकाऊण तिण्णि चेव खंडाणि त्ति किमट्ठं उच्चदे ? ण, तेसिं पहाणत्ताभावादो। तं पि कुदो णव्वदे ? संखेवेण परूवणादो'।

वर्गणाखंडको धवलान्तर्गत स्वीकार न करनेवाले विद्वान् इस अवतरणको देकर उसका यह अभिप्राय निकालते हैं कि–" वीरसेनाचार्यने उक्त मंगलसूत्रोंको ऊपर कहे हुए तीनों खंडों वेदना, बंधसामित्तविचओ और खुद्दाबंधो–का मंगलाचरण बतलाते हुए यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणा-खंडके आदिमें तथा महाबंधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है, मंगलाचरणके विना भूतबलि आचार्य ग्रंथका प्रारंभ ही नहीं करते हैं। साथ ही यह भी बतलाया है कि जिन कदि, फास, कम्म, पयडि (बंधण) अनुयोगद्वारोंका भी यहां (एत्थ)–इस वेदनाखंडमें प्ररूपण किया गया है उन्हें खंडग्रंथ संज्ञा न देनेका कारण उनके प्रधानताका अभाव है, जो कि उनके संक्षेप कथनसे जाना जाता है। उक्त फास आदि अनुयोगद्वारोंमेंसे किसीके भी शुरूमें मंगलाचरण नहीं है और इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखंडमें की गई है, तथा इनमेंसे किसीको खंडग्रंथकी संज्ञा नहीं दी गई यह बात ऊपरके शंका समाधानसे स्पष्ट है।"

अब इस कथनपर विचार कीजिये। 'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु' का अर्थ किया गया है 'ऊपर कहे हुए तीन खंड, अर्थात् वेदना, बंधसामित्त और खुद्दाबंध'। हमें यहांपर यह याद रखना चाहिये कि खुद्दाबंध और बंधसामित्त खंड दूसरे और तीसरे हैं जिनका प्ररूपण हो चुका है, और अभी वेदनाखंडके केवल मंगलाचरणका ही विषय चल रहा है, खंडका विषय आगे कहा जायगा। 'उवरि उच्चमाण' की संस्कृत छाया, जहांतक मैं समझता हूं 'उपरि उच्यमान' ही हो सकती है, जिसका अर्थ 'ऊपर कहे हुए' कदापि नहीं हो सकता। 'उच्यमान' का तात्पर्य केवल प्रस्तुत या आगे कहे जानेवालेसे ही हो सकता है। फिर भी यदि 'ऊपर कहे हुए' ही मानलें तो उससे ऊपरके दो और आगेके एक का समुच्चय कैसे हो सकता है? ऊपर कहे हुए तीन खंड तो जीवट्ठाण आदि तीन हैं, बाकी तीन आगे कहे जानेवाले हैं। इसप्रकार उपर्युक्त वाक्यका जो अर्थ लगाया गया है वह बिल्कुल ही असंगत है।

अब आगेका शंका समाधान देखिये। प्रश्न है यह कैसे जाना कि यह मंगल 'उवरि

उच्यमाण' तीनों खडोंका है? इसका उत्तर दिया जाता है 'क्योंकि वर्गणा और महाबंध के आदिमें मगल किया गया है'। यदि यहां जिन खडोंमें मगल किया गया है उनको अलग निर्दिष्ट कर देना आचार्यका अभिप्राय था तो उनमें जीवट्ठाणका भी नाम क्यों नहीं लिया, क्योंकि तभी तो तीन खड शेष रहते, केवल वर्गणा और महाबंधको अलग कर देनेसे तो चार खड शेष रह गये। फिर आगे कहा गया है कि मगल किये बिना भूतबलि भट्टारक ग्रथ प्रारभ ही नहीं करते, क्योंकि उससे अनाचार्यत्वका प्रसग आ जाता है। पर उक्त व्यवस्थाके अनुसार तो यहा एक नहीं, दो दो खड मगलके बिना, केवल प्रारभ ही नहीं, समाप्त भी किये जा चुके, जिनके मगलाचरणका प्रबंध अब किया जा रहा है, जहां स्वय टीकाकार कह रहे हैं कि मगलाचरण आदिमें ही किया जाना है, नहीं तो अनाचार्यत्वका दोष आ जाता है। इससे तो धवलाकारका मत स्पष्ट है कि प्रस्तुत ग्रथरचनामें आदि मगलका अनिवार्य रूपसे पालन किया गया है। हमने आदिमगलके अतिरिक्त मध्यमगल और अतमगलका भी विधान पढ़ा है। किंतु इन प्रकारोंमेंसे किसी भी प्रकार द्वारा वेदनाखडके आदिका मगल खुद्दाबधका भी मगल सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसप्रकार यह शका समाधान विषयको समझानेकी अपेक्षा अधिक उलझनमें ही डालने वाला है।

आगेके शका समाधानकी और भी दुर्दशा की गई है। प्रश्न है कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहां प्ररूपित हैं, उनका खडसज्ञा न करके केवल तीन ही खड क्यों कहे जाते हैं? यहां स्वभावत यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यहा कौनसे तीन खडोंका अभिप्राय है? यदि यहा भी उन्हीं खुद्दाबध, बधसामित्त और वेदनाका अभिप्राय है तो यह बतलानेकी आवश्यकता है कि प्रस्तुतमें उनका क्या अपेक्षा है। यदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे उत्पत्तिका यहां अपेक्षा है तो जीवस्थान, वर्गणा और महाबध भी तो वहींसे उत्पन्न हुए हैं, फिर उन्हें किस विचारसे अलग किया गया? और यदि वेदना, वर्गणा और महाबधसे ही यहा अभिप्राय है तो एक तो उक्त क्रममें भग पड़ता है और दूसरे वर्गणाखडके भी इन्हीं अनुयोगद्वारोंमें अतर्भावका प्रसग आता है। जिन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे खड सज्ञा प्राप्त न होनेकी शिकायत उठायी गई है उनमें वेदनाका नाम नहीं है। इससे जाना जाता है कि इसी वेदना अनुयोगद्वार परसे वेदनाखड सज्ञा प्राप्त हुई है। पर यदि 'एत्थ' का तात्पर्य "इस वेदनाखडमें" ऐसा लिया जाता है तब तो यह भी मानना पड़ेगा कि वे तीनों खड जिनका उल्लेख किया गया है, वेदनाखडके अतर्गत हैं। पयडिके आगे 'बधन' और क्यों अपनी तरफसे जोड़ा गया जबकि वह मूलमें नहीं है, यह भी कुछ समझमें नहीं आता। इसप्रकार यह प्रश्न भी बड़ी गड़बड़ी उत्पन्न करनेवाला सिद्ध होता है।

अत वेदनाखडके आदिमें आये हुए मगलाचरणको खुद्दाबध और बधसामित्तका भी सिद्ध

करना तथा कृति आदि चोवीसों अनुयोगद्वारोंको वेदनाखंडान्तर्गत बतलाना बडा बेतुका, बे आधार और सारे प्रसंगको गडबडमें डालनेवाला है। यह सब कल्पना किन भूलोंका परिणाम है और उक्त अवतरणोंका सच्चा रहस्य क्या है यह आगे चलकर बतलाया जायगा। उससे पूर्व शेष तीन युक्तियोंपर और विचार करलेना ठीक होगा।

४ वेदनाखंड समाप्तिकी पुष्पिका

धवलामें जहां वेदनाका प्ररूपण समाप्त हुआ है वहां यह वाक्य पाया जाता है—

एवं वेयण-अप्पाबहुगाणिओगद्दारे समत्ते वेयणाखंड समत्ता।

इसके आगे कुछ नमस्कार वाक्योंके पश्चात् पुन लिखा मिलता है 'वेदनाखंड समाप्तम्'। ये नमस्कार वाक्य और उनकी पुष्पिका तो स्पष्टत मूलग्रंथके अंग नहीं हैं, वे लिपिकार द्वारा जोडे गये जान पडते हैं। प्रश्न है प्रथम पुष्पिकाका जो मूल ग्रंथका आवश्यक अंग है। पर उसमें भी 'वेयणाखंड समत्ता' वाक्य व्याकरण की दृष्टिसे अशुद्ध है। वहा या तो 'वेयणाखंडो समत्तो' या 'वेयणाखंड समत्त' वाक्य होना चाहिये था। समालोचकका यह भी अनुमान गलत नहीं कहा जा सकता कि इस वाक्यमें खंड शब्द संभवत प्रक्षिप्त है, उस शब्दको निकाल देनेसे 'वेयणा समत्ता' वाक्य भी ठीक बैठ जाता है। हो सकता है वह लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त हुआ हो। पर विचारणीय बात यह है कि वह कब और किस लिये प्रक्षिप्त किया गया होगा। इस प्रक्षेपको आधुनिक लिपिकारकृत तो समालोचक भी नहीं कहते। यदि वह प्रक्षिप्त है तो उसी लिपिकारकृत हो सकता है जिसने मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रति लिखी। हम अन्यत्र बतला चुके हैं कि यह प्रति संभवत शककी ९ वीं १० वीं शताब्दिकी, अर्थात् आजसे कोई हजार आठसौ वर्ष पुरानी है। उस प्रक्षिप्त वाक्यसे उस समयके कमसे कम एक व्यक्तिका यह मत तो मिलता ही है कि यह वहा वेदनाखंडकी समाप्ति समझता था। उससे यह भी ज्ञात हो जाता है कि उस लेखककी जानकारीमें वहींसे दूसराखंड अर्थात् वर्गणाखंड प्रारंभ हो जाता था, नहीं तो वह वहां वेदनाखंडके समाप्त होनेकी विश्वासपूर्वक दो दो बार सूचना देने की धृष्टता न करता। यदि वहां खंडसमाप्ति होनेका इसके पास कोई आधार न होता तो उसे जबर्दस्ती वहां खंड शब्द डालनेकी प्रवृत्ति ही क्यों होती? समालोचक लिपिकारकी प्रक्षेपक-प्रवृत्ति को दिखलाते हुए कहते हैं कि अनेक अन्य स्थलोंपर भी नानाप्रकारके वाक्य प्रक्षिप्त पाये जाते हैं। यह बात सच है, पर जो उदाहरण उन्होंने बतलाया है वहां, और जहांतक मैं अन्य स्थल ऐसे देख पाया हूं वहां सर्वत्र यही पाया जाता है कि लेखकने अधिकारोंकी संधि आदि पाकर अपने गुरु या देवता का नमस्कार या उनकी प्रशस्ति संबंधी वाक्य या पद्य इधर उधर डाले हैं। यह पुराने [illegible] रही है। पर ऐसा स्थल

एक भी देखनेमें नहीं आता जहां पर लेखकने अधिकार सम्बंधी सूचना गलत सलत अपनी ओरसे जोड या घटा दी हो। अतएव चाहे यह खंड शब्द मौलिक हो और चाहे किसी लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त, उससे वेदना खंडके वहां समाप्त होने की एक पुरानी मान्यता तो प्रमाणित होती ही है।

५ इन्द्रनन्दिकी प्रामाणिकता

इन्द्रनन्दि और विबुध श्रीधरने अपने अपने श्रुतावतार कथानकोंमें षट्खंडागमकी रचना व धवलादि टीकाओंके निर्माणका विवरण दिया है। विबुध श्रीधरका कथानक तो बहुत कुछ काल्पनिक है, पर उसमें भी धवलान्तर्गत पांच या छह खंडोंवाली वार्तामें कुछ अविश्वसनीयता नहीं दिखती। इन्द्रनन्दिने प्रकृत विषयसे सबंध रखनेवाली जो वार्ता दी है उसको हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें पृ ३० पर लिख चुके हैं। उसका संक्षेप यह है कि वीरसेनने उपरितन निबन्धनादि अठारह अधिकार लिखे और उन्हें ही सत्कर्मनाम छठवां खंड संक्षेपरूप बनाकर छह खंडोंकी बहत्तर हजार ग्रंथप्रमाण, प्राकृत संस्कृत भाषा मिश्रित धवलाटीका बनाई। उनके शब्दोंका धवलाकारके उन शब्दोंसे मिलान कीजिये जो इसी संबंधमें उनके द्वारा कहे गये हैं। निबन्धनादि विभागको वहां भी 'उवरिम ग्रंथ' कहा है और अठारह अनुयोगद्वारोंको संक्षेपमें प्ररूपण करनेकी प्रतिज्ञा की गई है। धरसेन गुरुद्वारा श्रुतोद्धारका जो विवरण इन्द्रनन्दिने दिया है वह प्राय ज्यों का त्यों धवलाकार के वृत्तान्त से मिलता है। यह बात सच है कि इन्द्रनन्दि द्वारा कही गयी कुछ बातें धवलान्तर्गत वार्तासे किंचित् भेद रखती हैं। किंतु उनपरसे इन्द्रनन्दिको सर्वथा अप्रामाणिक नहीं ठहराया जा सकता, विशेषत खंडविभाग जैसे स्थूल विषयपर। यद्यपि इन्द्रनन्दिका समय निर्णीत नहीं है, पर उनके संबंधमें प नाथूरामजी प्रेमीका मत है कि ये वे ही इन्द्रनन्दि हैं जिनका उल्लेख आचार्य नेमिचन्द्रने गोम्मटसार कर्मकाण्डकी ३९६ वीं गाथामें गुरुरूपसे किया है जिससे वे विक्रमकी ११ हवीं शताब्दिके आचार्य ठहरते हैं *। इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं है। वीरसेन व धवलाकी रचनाका इतिहास उन्होंने ऐसा दिया है जैसे मानो वे उससे अच्छी तरह निकटतासे सुपरिचित हों। उनके गुरु एलाचार्य कहां रहते थे, वीरसेनने उनके पास सिद्धान्त पढकर कहां कहां जाकर, किस मंदिरमें बैठकर, कौनसा ग्रंथ साम्हने रखकर अपनी टीका लिखी यह सब इन्द्रनन्दिने अच्छी तरह बतलाया है जिसमें कोई बनावट व कृत्रिमता दृष्टिगोचर नहीं होती, बल्कि बहुत ही प्रामाणिक इतिहास जचता है। उन्होंने कदाचित् धवला जयधवलाका सूक्ष्मावलोकन भले ही न किया हो और शायद नोट्स के रखनेका भी उस समय रिवाज न हो, पर उनकी सूचनाओंपरसे यह बात सिद्ध नहीं होती कि धवल

* मा दि जै ग्रंथमाला नं १३, भूमिका पृ २

जयधवल ग्रंथ उनके साम्हने मौजूद ही नहीं थे। उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं लिखी जिसकी इन ग्रंथोंकी वार्तासे इतनी विषमता हो जो पटकर पीछे स्मृतिके सहारे लिखनेवाले द्वारा न की जा सकती हो। इसके अतिरिक्त उनका ग्रंथ अभीतक प्राचीन प्रतियोंपरसे सुसपादित भी नहीं हुआ है। किसी एकाध प्रतिपरसे कभी छाप दिया गया था, उसीकी कापी हमारे साम्हने प्रस्तुत है। उन्होंने जो वार्ता किंवदन्तियों व सुने सुनाये आधारपरसे लिखी हो वह भी उन्होंने बहुत सुव्यवस्थित करके, भरसक जाच पटतालके पश्चात्, लिखी है और इसीतरह वे बहुतसी ऐसी बातोंपर प्रकाश डाल सके जो धवलादिमें भी व्यवस्थित नहीं पायी जाती, जैसे धवलासे पूर्वकी टीकायें व टीकाकार आदि। वे कैसे प्रामाणिक और निर्भीक तथा अपनी कमजोरियों को स्वीकार करलेनेवाले निष्पक्ष ऐतिहासिक थे यह उनके उस वाक्य परसे सहज ही जाना जा सकता है जहां उन्होंने साफ साफ कह दिया है कि गुणधर और धरसेन गुरुओंकी पूर्वापर आचार्य परम्परा हम नहीं जानते क्योंकि न तो हमें वह बात बतलानेवाला कोई आगम मिला और न कोई मुनिजन ×। कितनी स्पष्टवादिता, साहित्यिक सचाई ओर नैतिकबल इस अज्ञानकी स्वीकारतामें भरी हुई है? क्या इन वाक्योंको लिखनेवालेकी प्रामाणिकतामें सहज ही अविश्वास किया जा सकता है?

६. मूडविद्रीसे प्रतिलिपि करनेवाले लेखककी प्रामाणिकता

जिस परिस्थितिमें और जिस प्रकारसे धवला और जयधवलाकी प्रतियां मूडबिद्रीसे बाहर निकली है उसका हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें विवरण दे आये हैं। उस परसे उपलब्ध प्रतियोंकी प्रामाणिकतामें नाना प्रकारके सन्देह करना स्वाभाविक है। अतएव जो धवलाके भीतर वर्गणाखडका होना नहीं मानते उन्हें यह भी कहनेको मिल जाता है कि यदि मूल धवलामें वर्गणाखड रहा भी हो तो उक्त लिपिकारने उसे अपना परिश्रम बचानेके लिये जानबूझकर छोड दिया होगा और अतिम प्रशस्ति आदि जोडकर अपने ग्रंथको पूरा प्रकट कर दिया होगा ताकि उसके पुरस्कारादिमें फरक न पड़े। इस कल्पनाकी सचाई झुठाई का पूरा निर्णय तो तभी हो सकता है जब यह ग्रंथ ताडपत्रीय प्रतिसे मिलाया जा सके। पर उसके अभावमें भी हम इसकी सभावनाकी जांच दो प्रकारसे कर सकते हैं। एक तो उस लेखकके कार्यकी परीक्षा द्वारा और दूसरे विद्यमान धवलाकी रचना की परीक्षा द्वारा। धवलाके सशोधन सपादन सबधी कार्यमें हमें इस बातका बहुत कुछ परिचय मिला है कि उक्त लेखकने अपना कार्य कहांतक ईमानदारीसे किया है। हमें जो प्रतियां उपलब्ध हुई हैं वे मूडबिद्रीसे आई हुई कनाडी प्रतिलिपिकी नागरी प्रतिकी कापी की भी कापियां हैं। वे बहुत कुछ स्खलन–प्रचुर और अनेक प्रकारसे दोष पूर्ण हैं।

× सतपरूवणा, जिल्द १, भूमिका पृ २५

पर तो भी तीन प्रतियोंके मिलानसे ही पूरा और ठीक पाठ बैठा लेना सभव हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जो स्खलन इन आगेकी प्रतियोंमें पाये जाते हैं वे उस कनाडी प्रतिलिपिमें नहीं हैं। यद्यपि कुछ स्थल इन सब प्रतियोंके मिलानसे भी पूर्ण या निस्सदेह निर्णीत नहीं हो पाते और इसलिये सभव है वे स्खलन उसी प्रथम प्रतिलिपिकार द्वारा हुए हों, पर इस ग्रथकी लिपि, भाषा और विषय सबधी कठिनाइयोंको देखते हुए हमें आश्चर्य इस बातका नहीं है कि वे स्खलन हु, किंतु आश्चर्य इस बातका है कि वे बहुत ही थोडे और मामूली हैं, जो किसी भी लेखकके द्वारा अपनी शक्तिभर सावधानी रखनेपर भी, हो सकते हैं। जो लेखक एक खडके खडको छोडकर प्रशस्ति आदि मिलाकर ग्रथको पूरा प्रकट करनेका दु साहस कर सकता है, उसके द्वारा शेष लिखाई भी ईमानदारीके साथ किये जानेकी आशा नहीं की जा सकती। पर उक्त लेखकका अभी तक हम जो परिचय धवलापर परिश्रम करके प्राप्त कर सके हैं, उसपरसे हम दृढताके साथ कह सकते हैं कि उसने अपना कार्य भरसक ईमानदारी और परिश्रमसे किया है। उसपरसे उसके द्वारा एक खडको छोडकर ग्रथको पूरा प्रकट कर देने जैसे छल कपट किये जानेकी शका करनेको हमारा जी बिलकुल नहीं चाहता।

पर यदि ऐसा छल कपट हुआ है तो धवलाकी जाच द्वारा उसका पता लगाना भी कठिन नहीं होना चाहिये। धवलाकी कुल टीकाका प्रमाण इन्द्रनन्दिने बहत्तर हजार और ब्रह्महेमने सत्तर हजार बतलाया है। हमारे सन्मुख धवलाकी तीन प्रतियां मौजूद हैं, जिनकी श्लोक सख्याकी हमने पूरी कठोरतासे जाच की। अमरावतीकी प्रतिमें १४६५ पत्र अर्थात् २९३० पृष्ठ हैं और प्रत्येक पृष्ठपर १२ पक्तिया लिखी गई हैं। प्रत्येक पक्तिमें ६२ से ६८ तक अक्षर पाये जाते हैं जिससे औसत ६५ अक्षरोंकी ली जा सकती है। तदनुसार कुल ग्रथमें २९३० × १२ × ६५ × = २२८५४०० अक्षर पाये जाते हैं जिनकी श्लोकसख्या ३२ का भाग देकर ७१,४१५ आई। इसे सामान्य लेखेमें चाहे आप सत्तर हजार कहिये, चाहे बहत्तर हजार। कारजा व आराकी प्रतियोंका भी उक्त प्रकारसे जाच द्वारा प्राय यही निष्कर्ष निकलता है। इससे तो अनुमान होता है कि प्रतियोंमेंसे एक खडका खड गायब होना असभवसा है, क्योंकि उस खडका प्रमाण और सब खडोंका देखते हुए कमसे कम पाच सात हजार तो अवश्य रहा होगा। यह कमी प्रस्तुत प्रतियोंमें दिखाई दिये बिना नहीं रह सकती थी।

विषयके तारतम्यकी दृष्टिसे भी धवला अपने प्रस्तुत रूपमें अपूर्ण कहीं नजर नहीं आती। प्रथम तीन खड तो पूरे हैं ही। चौथे वेदना खडके आदिसे कृति आदि अनुयोगद्वार प्रारम्भ हो जाते हैं। इनमें प्रथम छह कृति, वेदना, फास, कम्म, पयडि और बधन स्वय भगवान् भूतबलि-द्वारा प्ररूपित हैं। इनके अतमें धवलाकारने कहा है—

¹ भूदबलिभडारएण जेणेद सुत्तं देसामासियभावेण लिहिद तेणेदेण सूचिद-सेस-अट्ठारस-अणियोगद्दाराण किंचि सखेवेण परूवण करस्सामो (धवला अ पत्र १३३२)।

इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आचार्य भूतवलिकी रचना यहीं तक है। किन्तु उक्त प्रतिज्ञा वाक्यके अनुसार शेष निवन्धनादि अठारह अधिकारोंका वर्णन धवलाकारने स्वय किया है और अपनी इस रचनाको उन्होंने चूलिका कहा है—

एत्तो उवरिमगथो चूलिया णाम।

इन्हीं अठारह अनुयोगद्वारोंकी वीरसेनद्वारा रचनाका विशद इतिहास इन्द्रनन्दिने अपने श्रुतावतारमें दिया है *। इसी चूलिका विभागको उन्होंने छठवा खड भी कहा है। इसप्रकार चोवीसों अनुयोगद्वारोंके कथनके साथ ग्रथ अपने स्वाभाविक रूपसे समाप्त होता है। अब यदि इन्हीं अनुयोगद्वारोंके भीतर वर्गणाखड नहीं माना जाता तो उसके लिये कौनसा विषय व अधिकार शेष रहा और वह कहासे छूट गया होगा? लेखकद्वारा उसके छोड दिये जानेकी आशकाको तो इस रचनामें बिलकुल ही गुजाइश नहीं रही।

वेदनाखडके आदि अवतरणोंका ठीक अर्थ

वेदनाखडके आदि मगलाचरणकी व्यवस्था सबधी सूचनाका जो अर्थ लगाया जाता है और उससे जो गडवडी उत्पन्न होती है उसका हम ऊपर परिचय करा चुके हैं। अब हमें यह देखना आवश्यक है कि उक्त भूलोंका क्या कारण है और उन अवतरणोंका ठीक अर्थ क्या है। 'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खडेसु' का अर्थ 'ऊपर कहे हुए तीन खड' तो हो ही नहीं सकता। पर ऐसा अर्थ किये जानेके दो कारण मालूम होते हैं। प्रथम तो 'उवरि' से सामान्य ऊपर अर्थात् पूर्वोक्त का अर्थ ले लिया गया है और दूसरे उसकी आवश्यकता भी यों प्रतीत हुई क्योंकि आगे वर्गणा और महाबधमें अलग मगल करनेका उल्लेख पाया जाता है। पर खोज और विचारसे देखा जाता है कि 'उवरि' शब्दका धवलाकारने पूर्वोक्तके अर्थमें कहीं उपयोग नहीं किया। उन्होंने उस शब्दका प्रयोग सर्वत्र 'आगे' के अर्थमें किया है और पूर्वोक्तके लिये 'पुव्व' या पुव्वुत्त का। उदाहरणार्थ, सतपरूवणा, पृष्ठ १३० पर उन्होंने कहा है—

सपहि पुव्व उत्त पयडिसमुक्कित्तणा .... एण्हं पचण्हमुवरि सपहि पुव्वुत्त-जहण्णट्ठिदि च पक्खित्ते चूलियाए णव अहियारा भवंति।

अर्थात् पूर्वोक्त प्रकृति समुत्कीर्तनादि पाचोंके ऊपर अभी कहे गये जघन्यस्थिति आदि जोड देनेपर चूलिकाके नौ अधिकार हो जाते हैं। यहा ऊपर कहे जा चुकेके लिये 'पुव्व उत्त' व 'पुव्वुत्त' शब्द प्रयुक्त हुए हैं और 'उवरि' से आगेका तात्पर्य है।

पृ ७३ पर 'उवरि' से बने हुए उवरीदो (उपरित) अव्ययका प्रयोग देखिये। आचार्य कहते हैं—

* स प भू पृ ३८, ६७

पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी जत्थतत्थाणुपुव्वी चेदि तिविहा आणुपुव्वी। जं मूलादो परिवाडीए उच्चदि सा पुव्वाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं 'उसहमजियं च वंदे'। इच्चेवमादि। जं उवरीदो हेट्ठा परिवाडीए उच्चदि सा पच्छाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं—एस करेमि य पणमं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स। सेसाणं च जिणाणं सिवसुहकंखा विलोमेण॥

यहां यह बतलाया है कि जहां पूर्वसे पश्चात्की ओर क्रमसे गणना की जाती है उसे पूर्वानुपूर्वी कहते हैं, जैसे 'ऋषभ और अजितनाथको नमस्कार'। पर जहां नीचे या पश्चात्से ऊपर या पूर्वकी ओर अर्थात् विलोमक्रमसे गणना की जाती है वह पश्चादानुपूर्वी कहलाती है जैसे मैं वर्द्धमान जिनेशको प्रणाम करता हूं और शेष (पार्श्वनाथ, नेमिनाथ आदि) तीर्थंकरोंको भी। यहां 'उवरीदो' से तात्पर्य 'आगे' से है और पीछे की ओरके लिये हेट्ठा (अधः) शब्दका प्रयोग किया गया है।

धवलामें आगे बंधन अनुयोगद्वारकी समाप्तिके पश्चात् कहा गया है 'एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम'। अर्थात् यहांसे ऊपरके ग्रंथका नाम चूलिका है। यहां भी 'उवरिम' से तात्पर्य आगे आनेवाले ग्रंथविभागसे है न कि पूर्वोक्त विभागसे।

और भी धवलामें सैकड़ों जगह 'उवरि' शब्दका प्रयोग हमारी दृष्टिमें इसप्रकार आया है "उवरि भण्णमाणचुण्णिसुत्तादो," 'उवरिमसुत्तं भणदि' आदि। इनमें प्रत्येक स्थलपर निर्दिष्ट सूत्र आगे दिया गया पाया जाता है। उवरिका पूर्वोक्तके अर्थमें प्रयोग हमारी दृष्टिमें नहीं आया

इन उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि उवरिका अर्थ आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है, पूर्वोक्तसे नहीं। और फिर प्रकृतमें तो 'उच्चमाण' पद इस अर्थको अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है क्योंकि उसका अभिप्राय केवल प्रस्तुत और आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है। पर यदि आगे कहे जानेवाले तीन खंडोंका यह मंगल है तो इस बातका वर्गणा और महाबंधके आदिमें मंगलाचरणकी सूचनासे कैसे सामंजस्य बैठ सकता है? यही एक विकट स्थल है जिसने उपर्युक्त सारी गड़बड़ी विशेषरूपसे उत्पन्न की है। समस्त प्रकरणपर सब दृष्टियोंसे विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि धवलाकी उपलब्ध प्रतियोंमें यहां पाठ की अशुद्धि है। मेरे विचारसे 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगलकरणादो' की जगह 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगलाकरणादो' पाठ होना चाहिये। दीर्घ 'आ' के स्थानपर ह्रस्व 'अ' की मात्रा की अशुद्धियां तथा अन्य स्वरोंमें भी ह्रस्व दीर्घका व्यत्यय इन प्रतियोंमें भरे पड़े हैं। हमें अपने संशोधनमें इसप्रकारके सुधार सैकड़ों जगह करना पड़े हैं। यथार्थतः प्राचीन कनाड लिपिमें ह्रस्व और दीर्घ स्वरोंमें बहुधा विवेक नहीं किया जाता था ×। हमारे अनुमान किये हुए सुधारके साथ पढ़नेसे पूर्वोक्त

× डा उपाध्ये, परमात्मप्रकाश, भूमिका, पृ ८३

समस्त प्रकरण व शका-समाधानक्रम ठीक बेठ जाता है। उससे उक्त दो अवतरणोंके बीचमें आये हुए उन शका समाधानोंका अर्थ भी सुलझ जाता है जिनका पूर्वकथित अर्थसे बिलकुल ही सामञ्जस्य नहीं बैठता बल्कि विरोध उत्पन्न होता है। वह पूरा प्रकरण इस प्रकार है—

उवरि उच्चमाणेसु तिसु खडेसु कस्सेद मगल ? तिण्ण खडाण। कुदो ? वग्गणा-महाबधाणमादीए मगलाकरणादो। ण च मगलेण विणा भूतबलिभडारओ गथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तप्पसगादो। कध वेयणाए आदीए उत्त मगल सेस दो खडाण होदि? ण, कदीए आदिम्हि उत्तस्स एदस्सेव मगलस्स सेसतेवीस अणियोगद्दारेसु पउत्तिदसणादो। महाकम्मपयडिपाहुडत्तणेण चउवीसण्हमणियोगद्दाराण भेदाभावादो एगत्त, तदो एगस्स एय मगल तत्थ ण विरुज्झदे। ण च एदेसि तिण्ह खडाणमेयत्तमेगखडत्तप्पसगादो त्ति, ण एस दोसो, महाकम्मपयडिपाहुडत्तणेण एदेसि पि एगत्तदसणादो। कदि पास कम्म पयडि-अणियोगद्दाराणि वि एत्थ परूविदाणि, तेसिं खडगथसण्णमकाऊण तिण्णि चेव खडाणि त्ति किमट्ठ उच्चदे? ण, तेसिं पहाणत्ताभावादो। त पि कुदो णव्वदे ? सखेवेण परूवणादो।

इसका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शका—आगे कहे जाने वाले तीन खडों (वेदना वर्गणा और महाबध) में से किस खड का यह मगलाचरण है?

समाधान—तीनों खडोंका।

शका—कैसे जाना?

समाधान—वर्गणाखड और महाबध खडके आदिमें मगल न किये जानेसे। मगल-किये बिना तो भूतबलि भट्टारक ग्रथका प्रारभ ही नहीं करते क्योंकि इससे अनाचार्यत्वका प्रसग आ जाता है।

शका—वेदनाके आदिमें कहा गया मगल शेष दो खडोंका भी कैसे हो जाता है?

समाधान—क्योंकि कृतिके आदिमें किये गये इस मगलकी शेष तेवीस अनुयोगद्वारोंमें भी प्रवृत्ति देखी जाती है।

शका—महाकर्मप्रकृतिपाहुडत्वकी अपेक्षासे चौवीसों अनुयोगद्वारोंमें भेद न होनेसे उनमें एकत्व है, इसलिये एकका यह मगल शेष तेवीसोंमें विरोधको प्राप्त नहीं होता। परतु इन तीनों खडोंमें तो एकत्व है नहीं, क्योंकि तीनोंमें एकत्व मान लेनेपर तीनोंके एक खडत्वका प्रसग आजाता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि-महाकर्मप्रकृतिपाहुडत्वकी अपेक्षासे इनमें भी एकत्व देखा जाता है।

शका—कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहां (ग्रथके इस भागमें) प्ररूपित किये गये हैं, उनकी भी खड ग्रथ सज्ञा न करके तीन ही खड क्यों कहे जाते हैं?

समाधान—क्योंकि इनमें प्रधानताका अभाव है।

शंका—यह कैसे जाना ?

समाधान—उनका संक्षेपमें प्ररूपण किया गया है इससे जाना।

इस परसे यह बात स्पष्ट समझमें आ जाती है कि उक्त मंगलाचरणका सम्बंध बंधसामित्त और खुद्दाबंध खंडोंसे बैठाना बिलकुल निर्मूल, अस्वाभाविक, अनावश्यक और धवलाकारके मतसे सर्वथा विरुद्ध है। हम यह भी जान जाते हैं कि वर्गणाखंड और महाबंधके आदिमें कोई मंगलाचरण नहीं है, इसी मंगलाचरणका अधिकार उनपर चालू रहेगा। और हमें यह भी सूचना मिल जाती है कि उक्त मंगलके अधिकारान्तर्गत तीनों खंड अर्थात् वेदना, वर्गणा और महाबंध प्रस्तुत अनुयोगद्वारोंसे बाहर नहीं हैं। वे किन अनुयोगद्वारोंके भीतर गर्भित हैं यह भी संकेत धवलाकार यहां स्पष्ट दे रहे हैं। खंड संज्ञा प्राप्त न होनेकी शिकायत किन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे उठाई गई ? कदि, पास, कम्म और पयडि अनुयोगद्वारोंकी ओरसे। वेदणा अनुयोगद्वारका यहां उल्लेख नहीं है क्योंकि उसे खंड संज्ञा प्राप्त है। धवलाकारने बंधन अनुयोगद्वारका उल्लेख यहां जान बूझकर छोड़ा है क्योंकि बंधनके ही एक अवान्तर भेद वर्गणासे वर्गणाखंड संज्ञा प्राप्त हुई है और उसके एक दूसरे उपभेद बंधविधानपर महाबंधकी एक भव्य इमारत खड़ी है। जीवट्ठाण, खुद्दाबंध और बंधसामित्तविचय भी इसीके ही भेद प्रभेदोंके सुफल हैं। इसलिये उन सबमें भाग्यवान पांच पांच यशस्वी संतानके जनयिता बंधनको खंड संज्ञा प्राप्त न होनेकी कोई शिकायत नहीं थी। शेष अठारह अनुयोगद्वारोंका उल्लेख न करनेका कारण यह है कि भूतबलि भट्टारकने उनका प्ररूपण ही नहीं किया। भूतबलिकी रचना तो बंधन अनुयोगद्वारके साथ ही, महाबंध पूर्ण होने पर, समाप्त हो जाती है जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं।

इसी अवतरणसे ऊपर धवलाकारने जो कुछ कहा है उससे प्रकृत विषयपर और भी बहुत विशद प्रकाश पड़ता है। वह प्रकरण इसप्रकार है—

तत्थेदं किं णिबद्धमाहो अणिबद्धमिदि ? ण ताव णिबद्धमंगलमिदं महाकम्मपयडीपाहुडस्स कदियादिचउवीसअणियोगावयवस्स आदीए गोदमसामिणा परूविदस्स भूदबलिभडारएण वेयणाखंडस्स आदीए मंगलट्ठं तत्तो आणेदूण ठविदस्स णिबद्धत्तविरोहादो। ण च वेयणाखंडं महाकम्मपयडीपाहुडं, अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो। ण च भूदबली गोदमो, विगलसुदधारयस्स धरसेणाइरियसीसस्स भूदबलिस्स सयलसुदधारयवड्ढमाणंतेवासिगोदमत्तविरोहादो। ण चाण्णो पयारो णिबद्धमंगलत्तस्स हेदुभूदो अत्थि। तम्हा अणिबद्धमंगलमिदं। अधवा होदु णिबद्धमंगलं। कधं वेयणाखंडादिउवरिमगंथस्स महाकम्मपयडिपाहुडत्तं ? ण, कदिया(दि) चउवीस अणियोगद्दारेहिंतो एयत्तेण पुधभूदमहाकम्मपयडिपाहुडस्साभावादो। एदेसिमणियोगद्दाराणं कम्मपयडिपाहुडत्ते संते पाहुड-बहुत्तं पसज्जदे ? ण एस दोसो, कधंचि इच्छिज्जमाणत्तादो। कधं वेयणाए

महापरिमाणाए उवसहारस्स इमस्स वेयणाखडस्स वेयणा भावो? ण, अवयवेहिंतो एयंतेण पुधभूदस्स अवयविस्स अणुवलभादो। ण च वेयणाए बहुत्तमणिट्ठमिच्छिज्जमाणत्तादो। कध भूदबलिस्स गोदमत्त? किं तस्स गोदमत्तेण? कधमण्णहा मगलस्स णिबद्धत्त? ण, भूदबलिस्स खड-गथ पडि कत्तारत्ताभावादो। ण च अण्णेण कय-गथा हियाराण एगदेसस्स पुव्विल्ला (पुव्विल्ल) सद्दत्थ-सदब्भस्स परूवओ कत्तारो होदि, अइप्पसगादो। अथवा भूदबली गोदमो चेव एगाहिप्पायत्तादो। तदो सिद्ध णिबद्धमगलत्त पि। उवरि उच्चमाणेसु तिसु खडेसु इच्चादि।

१ शंका– इनमें से, अर्थात् निबद्ध और अनिबद्ध मगलोंमेंसे, यह मगल निबद्ध है या अनिबद्ध?

समाधान—यह निबद्ध मगल नहीं है, क्योंकि कृति आदि चौवीस अवयवोंवाले महाकर्मप्रकृतिपाहुडके आदिमें गौतमस्वामीद्वारा इसका प्ररूपण किया गया है। भूतबलि स्वामीने उसे वहांसे लाकर वेदनाखडके आदिमें मगलके निमित्त रख दिया है। इसलिये उसमें निबद्धत्वका विरोध है। वेदनाखड कुछ महाकर्मप्रकृतिपाहुड तो है नहीं, क्योंकि अवयवको ही अवयवी माननेमें विरोध आता है। और भूतबलि गौतमस्वामी हो नहीं सकते, क्योंकि विकल श्रुतके धारक और धरसेनाचार्यके शिष्य ऐसे भूतबलिमें सकलश्रुतके धारक और वर्धमान-स्वामीके शिष्य ऐसे गौतमपनेका विरोध है। और कोई प्रकार निबद्ध मंगलपनेका हेतु होता नहीं है, इसलिये यह मगल अनिबद्ध मगल है। अथवा, यह निबद्ध मगल भी हो सकता है।

२ शंका—वेदनाखड आदि खडोंमें समाविष्ट (ग्रथ) को महाकर्मप्रकृतिपाहुडपना कैसे प्राप्त हो सकता है?

समाधान—क्योंकि कृति आदि चौवीस अनुयोगद्वारों से सर्वथा पृथक्भूत महाकर्मप्रकृति-पाहुडकी कोई सत्ता नहीं है।

३ शका—इन अनुयोगद्वारोंमें कर्मप्रकृतिपाहुडत्व मान लेनेसे तो बहुतसे पाहुड माननेका प्रसग आ जाता है?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यह बात कथचित् अर्थात् एक दृष्टिसे अभीष्ट है।

४ शका—महापरिमाणवाली वेदनाके उपसहाररूप इस वेदनाखडको **वेदना** अनुयोगद्वार कैसे माना जाय?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि अवयवोंसे एकान्तत पृथक्भूत अवयवी तो पाया नहीं जाता। और इससे यदि एकसे अधिक वेदना माननेका प्रसग आता है तो वेदनाके बहुत्वसे कोई अनिष्ट भी नहीं, क्योंकि यह बात इष्ट ही है।

५ शका—भूतबलिको गौतम कैसे मान लिया जाय?

समाधान— भूतबलिको गौतम माननेका प्रयोजन ही क्या है ?

६ शंका— यदि भूतबलिको गौतम न माना जाय तो मंगलको निबद्धपना कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान— क्योंकि भूतबलिके खंडग्रंथके प्रति कर्तापनेका अभाव है। कुछ दूसरे के द्वारा रचे गये ग्रंथाधिकारोंमेंसे एक देशका पूर्व प्रकारसे ही शब्दार्थ और सदर्भका प्ररूपण करनेवाला ग्रंथकर्ता नहीं हो सकता क्योंकि इससे तो अतिप्रसंग दोष अर्थात् एक ग्रंथके अनेक कर्ता होनेका प्रसंग आ जायगा। अथवा, दोनोंका एक ही अभिप्राय होनेसे भूतबलि गौतम ही हैं। इसप्रकार यहां निबद्ध मंगलत्व भी सिद्ध हो जाता है।

वेदना और वर्गणा-खंडोंकी सीमाओंका निर्णय

यहांपर प्रथम शंका समाधानमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि वेदनाखंडके अन्तर्गत पूरा महाकम्मपयडिपाहुडका विषय नहीं है— वह उस पाहुडका एक अवयव मात्र है, अर्थात् उसमें उक्त पाहुडके चौवीसों अनुयोगद्वारोंका अन्तर्भाव नहीं किया जा सकता। महाकमप्रकृतिपाहुड अवयवी है और वेदनाखंड उसका एक अवयव।

दूसरे शंका समाधानसे यह सूचना मिलती है कि कृति आदि चौवीस अनुयोगद्वारोंमें अकेला वेदनाखंड नहीं फैला है, वेदना आदि खंड हैं अर्थात् वर्गणा और महाबंधका भी अन्तर्भाव वहीं है। तीसरे शंका समाधानमें कर्मप्रकृतिपाहुड के कृति आदि अवयवोंमें भी एक दृष्टिसे पाहुडपना स्थापित करके चौथेमें स्पष्ट निर्देश किया गया है कि वेदनाखंडमें गौतमस्वामीकृत बड़े विस्तारवाले वेदना अधिकारका ही उपसंहार अर्थात् संक्षेप है। यह वेदना धवलाकी अ प्रतिमें पृ ७५६ पर प्रारम्भ होता है जहां कहा गया है—

> कम्मट्ठपयियवेयण उवहि समुत्तिण्णए जिणे णमिउ।
> वेयणमहाहियार विविहहियारं परूवेमो॥

और यह उक्त प्रतिके ११०६ वें पत्रपर समाप्त होती है जहां लिखा मिलता है—

' एवं वेयण-अप्पाबहुगाणिओगद्दारे समत्ते वयणाखंड समत्ता।

इसप्रकार इस पुष्पिकावाक्यमें अशुद्धि होते हुए भी यहां वेदनाखंडकी समाप्तिमें कोई शंका नहीं रह जाती।

पांचवें और छठवें शंका समाधानमें भूतबलि और गौतममें ग्रंथकर्ता व अभिप्रायकी अपेक्षा एकत्व स्थापित किया गया है जो सहज ही समझमें आजाता है। इसप्रकार उक्त मंगल निबद्ध भी सिद्ध करके बता दिया गया है।

इसप्रकार उक्त शका समाधानसे वेदनाखडकी दोनों सीमायें निश्चित हो जाती हैं। कृति तो वेदनाखडके अन्तर्गत है ही क्योंकि उक्त शका समाधानकी सूचनाके अतिरिक्त मगला-चरणके साथ ही वेदनाखडका प्रारभ माना ही गया है।

वेदनाखडके विस्तारका एक और प्रमाण उपलब्ध है। टीकाकारने उसका परिमाण सोलह हजार पद बतलाया है। यथा, 'खडगथ पडुच्च वेयणाए सोलसपदसहस्साणि'। यह पद-सख्या भूतबलिकृत सूत्र-ग्रथकी अपेक्षासे ही होना चाहिये। अतएव जबतक यह न ज्ञात हो जाने कि पदसे यहा धवलाकारका क्या तात्पर्य है तथा वेदनादि खडोंके सूत्र अलग करके उन पर वह माप न लगाया जाने तबतक इस सूचनाका हम अपनी जांचमें विशेष उपयोग नहीं कर सकते। तो भी चूंकि टीकाकारने एक अन्य खडकी भी इसप्रकार पद सख्या दी है और उस खडकी सीमादिके विषयमें कोई विवाद नहीं है इसलिये हमें उनकी तुलनासे कुछ आपेक्षिक ज्ञान अवश्य हो जायगा। धवलाकारने जीवट्ठाण खडकी पद सख्या अठारह हजार बतलाई है—'पद पडुच्च अट्ठारहपदसहस्स' (सत प पृ ६०) इससे यह ज्ञात हुआ कि वेदनाखडका परिमाण जीवट्ठाणसे नवमांश कम है। जीवट्ठाण के ४७५ पत्रोंका नवमांश लगभग ५३ होता है, अत साधारणतया वेदनाखडकी पत्र सख्या ४७५-५३=४२२ के लगभग होना चाहिये। ऊपर निर्धारित सीमाके अनुसार वेदनाकी पत्र सख्या प्रत्यक्षमें ६६७ से ११०६ तक अर्थात् ४३८ है जो आपेक्षिक अनुमानके बहुत नजदीक पडती है। समस्त चौवीस अनुयोगद्वारोंको वेदनाके भीतर मान लेनेसे तो जीवट्ठाणकी अपेक्षा वेदनाखड धवला के तिगुनेसे भी अधिक बडा हो जाता है।

वर्गणा निर्णय

जब वेदनाखडका उपसहार वेदनानुयोगद्वारके साथ हो गया तब प्रश्न उठता है कि उसके आगेके फास आदि अनुयोगद्वार किस खडके अग रहे? ऊपर वेदनादि तीन खडोंके उल्लेखोंके विवेचन से यह स्पष्ट ही है कि वेदनाके पश्चात् वर्गणा और उसके पश्चात् महाबधकी रचना है। महाबधकी सीमा निश्चितरूपसे निर्दिष्ट है क्योंकि धवलामें स्पष्ट कर दिया गया है कि बधन अनुयोगद्वारके चौथे प्रभेद बन्धविधानके चार प्रकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशबधका विधान भूतबलि भट्टारकने महाबधमें विस्तारसे लिखा है, इसलिये वह धवलाके भीतर नहीं लिखा गया। अत यहींतक वर्गणाखडकी सीमा समझना चाहिये। यहांसे आगेके निबन्धनादि अठारह अधिकार टीकाकी सूचनानुसार चूलिका रूप हैं। वे टीकाकार कृत हैं भूतबलिकी रचना नहीं हैं।

उक्त खड विभागको सर्वथा प्रामाणिक सिद्ध करनेके लिये अब केवल उस प्रकारके किसी प्राचीन विश्वसनीय स्पष्ट उल्लेखमात्रकी अपेक्षा और रह जाती है। सौभाग्यसे ऐसा एक

उल्लेख भी हमें प्राप्त हो गया है। मूडबिद्रीके पं. लोकनाथजी शास्त्रीने वीरवाणीविलास जैन सिद्धान्तभवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में मूडबिद्रीका ताडपत्रीय प्रतिपरसे महाधवल (महाबंध) का कुछ परिचय अवतरणों सहित दिया है। इससे प्रथम बात तो यह जानी जाती है कि पंडितजीको उस प्रतिमें कोई मंगलाचरण देखनेको नहीं मिला। वे रिपोर्ट में लिखते हैं "इसमें मंगलाचरण श्लोक, ग्रंथकी प्रशस्ति वगैरह कुछ भी नहीं है।" पं. लोकनाथजी की यह रिपोर्ट महत्वपूर्ण है क्योंकि पंडितजीने ग्रंथको केवल ऊपर नीचे ही नहीं देखा–उन्होंने कोई चार वर्षतक परिश्रम करके पूरे महाधवल ग्रंथकी नागरी प्रतिलिपि तैयार की है जैसा कि हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें बतला आये हैं। अतएव उस ग्रंथका एक एक शब्द उनकी दृष्टि और कलमसे गुजर चुका है। उनके मतसे पूर्वोक्त 'मंगलकरणादो' पदमें हमारे 'मंगलाकरणादो' रूप सुधार की पुष्टि होती है–

दूसरी बात जो महाधवलके अवतरणोंमें हमें मिलती है वह खंडविभागसे संबंध रखती है। महाबंधपर कोई पंचिका भी उस प्रतिमें ग्रथित है जैसा कि अवतरणकी प्रथम पंक्तिसे ज्ञात होता है–

'वोच्छामि संतकम्मे पंचियरूवेण विवरणं सुमहत्थं'

इसी पंचिकाकारने आगे चलकर कहा है–

'महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणाओ(दि) चउवीसमणियोगद्दारेसु तत्थ कदि वेदणा त्ति अणियोगद्दाराणि वेदणाखण्डम्हि, पुणो पास (कम्म पयडि बंधणाणि) चत्तारि अणियोगद्दारेसु तत्थ बंध बंधणिज्जणामणियोगेहि सह वग्गणाखण्डम्हि, पुणो बंधविधाणणामणियोगो खुद्दाबंधम्मि सप्पवंचेण परूविदाणि। पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसणियोगद्दाराणि संतकम्मे सव्वाणि परूविदाणि। तो वि तस्सइगंभीरत्तादो अत्थविसम पदाणमत्थे थारुद्धएण पंचियसरूवेण भणिस्सामो' ×।

इस अवतरणमें शब्दोंमें अशुद्धियां हैं। कोष्ठकके भीतरके सुधार या जोड़े हुए पाठ मेरे हैं। पर उसपरसे तथा इससे आगे जो कुछ कहा गया है उसमें यह स्पष्ट जान पड़ा कि यहां निबंधनादि अठारह अधिकारोंकी पंजिका दी गई है। उन अठारह अधिकारोंका नाम 'संतकम्म' था, जिससे इंद्रनंदिके सत्कर्मसंबंधी उल्लेखकी पूरी पुष्टि होती है। प्राप्त अवतरण परसे महाधवलकी प्रति व उसके विषय आदिक संबंधमें अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं, और प्रतिकी परीक्षाकी बड़ी अभिलाषा उत्पन्न होती है, किंतु उस सबका नियंत्रण करके प्रकृत विषय-पर आनेसे उक्त अवतरणमें प्रस्तुतोपयोगी यह बात स्पष्ट रूपसे मालूम हो जाता है, कि वृत्ति

× यह अवतरण प. प. जिल्द १ की भूमिका पृ. ६८ पर दिया जा चुका है। 'पर वहां मूलमें 'पुणो तेहिंतो' आदि वाक्य छूट गया है। अतः प्रस्तावयोगी उस अवतरणको यहां फिर पूरा दे दिया है।

और वेदना अनुयोगद्वार वेदनाखडके तथा फास, कम्म, पयडि और बधनके बध और बधनीय भेद वर्गणाखडके भीतर है। इससे हमारे विषयका निर्विवादरूपसे निर्णय हो जाता है।

प्रथम जिल्दकी भूमिकामें ठीक इसीप्रकार खडविभागका परिचय कराया जा चुका है उस परिचयकी ओर पाठकोंका ध्यान पुन आकर्षित किया जाता है।

४. णमोकार मंत्रके आदिकर्ता.

१

जो ख्याति और प्रचार हिन्दुओंमें गायत्री मन्त्रका है तथा बौद्धोंमें त्रिसरण मन्त्रका था, वही जैनियोंमें णमोकार मन्त्रका है। धार्मिक तथा सामाजिक सभी कृत्यों व विधानोंके आरम्भमें जैनी इस मन्त्रका उच्चारण करते हैं। यही उनका दैनिक जपमन्त्र है। इसकी प्रख्यातिका एक पद्य निम्न प्रकार है, जो नित्य पूजनविधान में उच्चारण किया जाता है—

णमो पच-णमोयारो सव्वपापप्पणासणो। मगलाण च सव्वेसि पढम होइ मगल ॥

अर्थात् यह पच नमस्कार मन्त्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलोंमें प्रथम [श्रेष्ठ] मगल है।

इस मन्त्रका प्रचार जैनियोंके तीनों सम्प्रदायों–दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानकवासियोंमें समानरूपसे पाया जाता है। तीनों सम्प्रदायोंके प्राचीनतम साहित्यमें भी इसका उल्लेख मिलता है। किंतु अभी तक यह निश्चय नहीं हुआ कि इस मत्रके आदिकर्ता कौन हैं। यथार्थत यह प्रश्न ही अभी तक किसी ने नहीं उठाया और इस कारण इस मन्त्रको अनादि-निधन जैसा पद प्राप्त हो गया है।

किन्तु षट्खडागम और उसकी टीका धवलाके अवलोकनसे इस णमोकार मन्त्रके कर्तृत्वके सम्बन्धमें कुछ प्रकाश पडता है, और इसीका यहा परिचय कराया जाता है।

षट्खडागमका प्रथम खण्ड जीवट्ठाण है और इस खडके प्रारम्भमें यही सुप्रसिद्ध मन्त्र पाया जाता है। टीकाकार वीरसेनाचार्यके अनुसार यही उक्त ग्रथका सूत्रकारकृत मगलाचरण है। वे लिखते हैं कि—

मगल-णिमित्त-हेऊ-परिमाण णाम तह य कत्तार। वागरिय छप्पि पच्छा वक्खाणउ सत्थमाइरियो॥
इदि णायमाइरिय-परपरागय मणेणावहारिय पुव्वाइरियायाराणुसरण तिरयणहेउ त्ति पुप्फदताइ-रियो मगलादीण छण्ण सकारणाण परूवणट्ठ सुत्तमाह—

णमो अरिहताण, णमो सिद्धाण, णमो आइरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए सव्वसाहूण॥
(स० प० १, पृ० ७)

अर्थात् ' मगल, निमित्त, हेतु परिमाण, नाम और कर्ता इन छहों का प्ररूपण करके

पश्चात् आचार्यको शास्त्रका व्याख्यान करना चाहिये । ' इस आचार्य परम्परागत न्याय को मनमें धारण करके पुष्पदन्ताचार्य मंगलादि छहोंके सकारण प्ररूपणेके लिये सूत्र कहते हैं, ' णमो अरिहंताणं ' आदि ।

इसके आगे धवलाकारने इसी मंगलसूत्रको ' तालपलंब ' सूत्रके समान देशामर्षक बतलाकर पूर्वोक्त मंगल, निमित्त आदि छहों का प्ररूपक सिद्ध किया है । तत्पश्चात् मंगल शब्दकी व्युत्पत्ति व अनेक दृष्टियोंसे भेद प्रभेद बतलाते हुए मंगलके दो भेद इसप्रकार किये हैं—

तच्च मंगलं दुविहं णिबद्धमणिबद्धमिदि । तत्थ णिबद्धं णाम जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण णिबद्ध-देवदा-णमोक्कारो तं णिबद्धमंगलं । जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण कयदेवदाणमोक्कारो तमणिबद्धमंगलं । इदं पुण जीवट्ठाणं णिबद्धमंगलं, यत्तो ' इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं ' इदि एदस्स सुत्तस्सादीए णिबद्ध ' णमो अरिहंताणं ' इच्चादिदेवदा-णमोक्कारदंसणादो ।

(सं० प० १, पृ० ४१)

अर्थात् मंगल दो प्रकारका है, निबद्ध और अनिबद्ध । सूत्रके आदिमें सूत्रकर्त्ता द्वारा जो देवता-नमस्कार निबद्ध किया जाय वह निबद्ध मंगल है और जो सूत्रके आदिमें सूत्रकर्त्ता द्वारा देवताको नमस्कार किया जाता है (किंतु वह नमस्कार लिपिबद्ध नहीं किया जाता) वह अनिबद्ध मंगल है । यह जीवट्ठाण निबद्ध मंगल है, क्योंकि इसके ' इमेसिं चोद्दसण्हं ' आदिसूत्रके पूर्व ' णमो अरिहंताणं ' इत्यादि देवतानमस्कार पाया जाता है ।

इससे यह सिद्ध हुआ कि जीवट्ठाणके आदिमें जो यह णमोकार मंत्र पाया जाता है वह सूत्रकार पुष्पदन्त आचार्य द्वारा ही वहां रखा गया है और इससे उस शास्त्रको निबद्ध मंगल संज्ञा प्राप्त हो जाती है । किंतु इससे यह स्पष्ट ज्ञात नहीं होता कि यह मंगलसूत्र स्वयं पुष्पदन्ताचार्यने रचकर यहां निबद्ध किया है, या कहीं अन्यत्र से लेकर यहां रख दिया है । पर अन्यत्र धवलाकार ने इसका भी निर्णय किया है ।

वेदनाखंडके आदिमें ' णमो जिणाणं ' आदि मंगलसूत्र पाये जाते हैं, जिनकी टीका करते हुए धवलाकारने उनके निबद्ध अनिबद्ध स्वरूप का विवेचन किया है । वे लिखते हैं—

इदं पुण मंगलं किं णिबद्धमाहो अणिबद्धमिदि ? ण ताव णिबद्धमंगलमिदं, महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदियादि चउवीस अणियोगावयवस्स आदीए गोदमसामिणा परूविदस्स भूदबलिभडारएण वेयणाखंडस्स आदीए मंगलट्ठं तत्तो आणेदूण ठविदस्स णिबद्धत्तविरोहादो । ण च वेयणाखंडं महाकम्मपयडिपाहुडं अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो । ण च भूदबली गोदमो, विगलसुदधारयस्स धरसेणाइरियसीसस्स भूदबलिस्स सयलसुदधारयवड्ढमाणंतेवासि गोदमत्तविरोहादो । ण चाण्णो पयारो णिबद्धमंगलत्तस्स हेदुभूदो अत्थि ।

अर्थात् यह मंगल (णमो जिणाणं, आदि) निबद्ध है या अनिबद्ध ? यह निबद्ध-मंगल तो नहीं है क्योंकि महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंके आदिमें गौतमस्वामीने इस

मंगलका प्ररूपण किया है और भूतबलि भट्टारकने उसे वहांसे उठाकर मंगलार्थ यहां वेदनाखंडके आदिमें रख दिया है, इससे इसके निबद्ध-मंगल होनेमें विरोध आता है। न तो वेदनाखंड महाकर्मप्रकृतिपाहुड है, क्योंकि अवयवको अवयवी माननेमें विरोध आता है। और न भूतबली ही गोतम हैं क्योंकि विकलश्रुतके धारक और धरसेनाचार्यके शिष्य भूतबलिको सकलश्रुतके धारक और वर्धमानस्वामीके शिष्य गौतम माननेमें विरोध उत्पन्न होता है। और कोई प्रकार निबद्ध मंगलत्वका हेतु हो नहीं सकता।

आगे टीकाकारने इस मंगलको निबद्धमंगल भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है, पर इसके लिये उन्हें प्रस्तुत ग्रन्थका महाकर्मप्रकृतिपाहुड़से तथा भूतबलिस्वामीका गौतमस्वामीसे बड़ी खींचातानी द्वारा एकत्व स्थापित करना पड़ा है। इससे धवलाकारका यह मत बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि दूसरेके बनाये हुए मंगलको अपने ग्रन्थमें जोड़ देनेसे वह शास्त्र निबद्ध-मंगल नहीं कहला सकता, निबद्ध-मंगलत्वकी प्राप्तिके लिये मंगल ग्रन्थकारकी ही मौलिक रचना होना चाहिये। अतएव जब कि धवलाकार जीवट्ठाणको णमोकार मन्त्ररूप मंगलके होनेसे निबद्ध-मंगल मानते हैं तब वे स्पष्टतः उस मंगलसूत्रको सूत्रकार पुष्पदन्तकी ही मौलिक रचना स्वीकार करते हैं, वे यह नहीं मानते कि उस मंगलको उन्होंने अन्यत्र कहीं से लिया है। इससे धवलाकार आचार्य वीरसेनका यह मत सिद्ध हुआ कि इस सुप्रसिद्ध णमोकार मन्त्रके आदिकर्ता प्रातःस्मरणीय आचार्य पुष्पदन्त ही हैं।

०

णमोकार मंत्रके सम्बन्धमें श्वेताम्बर सम्प्रदायकी क्या मान्यता है और उसका पूर्वोक्त मतसे कहां तक सामञ्जस्य या वैषम्य है, इस पर भी यहां कुछ विचार किया जाता है। श्वेताम्बर आगमके अन्तर्गत छह छेदसूत्रोंमेंसे द्वितीय सूत्र 'महानिशीथ' नामका है। इस सूत्रमें णमोकार मन्त्रके विषयमें निम्न वार्ता पायी जाती है—

> एयं तु जं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स वक्खाणं तं महया पबंधेण अणंतगमपज्जवेहिं सुत्तस्स य पियभूयाहिं णिज्जुत्ति-भास-चुण्णीहिं जहेव अणंत-नाण-दंसणधरेहिं तित्थयरेहिं वक्खाणियं तहेव समासओ वक्खाणिज्जंतं आसि। अहऽन्नया कालपरिहाणिदोसेण ताओ णिज्जुत्ति-भास-चुण्णीओ वुच्छिन्नाओ। इओ य वच्चंतेणं कालेणं समएणं महिड्ढिपत्ते पयाणुसारी वइरसामी नाम दुवालसंगसुअहरे समुप्पन्ने। तेण य पंच मंगल-महासुयक्खंधस्स उद्धारो मूलसुत्तस्स मज्झे लिहिओ। मूलसुत्तं पुण सुत्तत्ताए गणहरेहिं अत्थत्ताए अरिहंतेहिं भगवंतेहिं धम्मतित्थयरेहिं तिलोगमहिएहिं वीरजिणिंदेहिं पन्नवियं त्ति एस वुड्ढसंपयाओ।
>
> (महानिशीथ सूत्र, अध्याय ५)

इसका अर्थ यह है कि इस पंचमंगल महाश्रुतस्कन्धका व्याख्यान महान् प्रबंधसे, अनन्त गम और पर्यायों सहित, सूत्रकी प्रियभूत निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णियों द्वारा जैसा अनन्त ज्ञान-दर्शनके

धारक तीर्थंकरोंने किया था उसीप्रकार संक्षेपमें व्याख्यान करने योग्य था। किन्तु आगे काल परिहानिके दोषसे वे निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णियां विच्छिन्न हो गई। फिर कुछ काल जानेपर यथासमय महाऋद्धिको प्राप्त पदानुसारी वइरसामी (वैरस्वामी या वज्रस्वामी) नामके द्वादशांग श्रुतके धारक उत्पन्न हुए। उन्होंने पंचमंगल महाश्रुतस्कंधका उद्धार मूलसूत्रके मध्य लिखा। यह मूलसूत्र सूत्रकी अपेक्षा गणधरों द्वारा तथा अर्थकी अपेक्षासे अरहंत भगवान, धर्मतीर्थंकर त्रिलोकमहित वीरजिनेंद्रके द्वारा प्रज्ञापित है, ऐसा वृद्धसम्प्रदाय है।

यद्यपि महानिशीथसूत्रकी रचना श्वेताम्बर सम्प्रदायमें बहुत कुछ पीछेकी अनुमान की जाती है,× तथापि उसके रचयिताने एक प्राचीन मान्यताका उल्लेख किया है जिसका अभिप्राय यह है कि इस पंचमंगलरूप श्रुतस्कंधके अर्थकर्ता भगवान् महावीर हैं और सूत्ररूप ग्रंथकर्ता गौतमादि गणधर हैं। इसका तीर्थंकर कथित जो व्याख्यान था वह कालदोषसे विच्छिन्न हो गया। तब द्वादशांग श्रुतधारी वज्रस्वामीने इस श्रुतस्कंधका उद्धार करके उसे मूल सूत्रके मध्यमें लिख दिया। श्वेताम्बर आगममें चार मूल सूत्र माने गये हैं—आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन और पिंडनिर्युक्ति। इनमें से कोई भी सूत्र वज्रसूरिके नामसे सम्बद्ध नहीं है। उनकी चूर्णियां भद्रबाहुकृत कही जाती हैं। उन मूल सूत्रोंमें प्रथम सूत्र आवश्यकके मध्यमें णमोकार मंत्र पाया जाता है। अतएव उक्त मान्यताके अनुसार संभवतः यही वह मूलसूत्र है जिसमें वज्रसूरिने उक्त मंत्रको प्रक्षिप्त किया।

कल्पसूत्र स्थविरावलीमें 'वइर' नामके दो आचार्योंका उल्लेख मिलता है जो एक दूसरेके गुरु शिष्य थे। यथा—

थेरस्स णं अज्ज सीहगिरिस्स जाइस्सरस्स कोसियगुत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगुत्ते। थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरसेणे उक्कोसियगुत्ते*।

अर्थात् कौशिक गोत्रीय स्थविर आर्य सिंहगिरिके शिष्य स्थविर आर्य वइर गौतम गोत्रीय हुए, तथा स्थविर आर्य वइर गौतम गोत्रीयके शिष्य स्थविर आर्य वइरसेन उक्कोसिय गोत्रीय हुए।

विक्रमसंवत् १६४६ में संगृहीत तपागच्छ पट्टावलीमें वइरस्वामीका कुछ विशेष परिचय पाया जाता है। यथा—

तेरसमो वयरसामि गुरू।

व्याख्या—तेरसमो त्ति श्रीसीहगिरिपट्टे त्रयोदशः श्रीवज्रस्वामी यो बाल्यादपि जातिस्मृतिभाग्, नभोगमनविद्यया संघरक्षाकृद्, दक्षिणस्यां बौद्धराज्ये जिनेंद्रपूजानिमित्तं पुष्पानयनेन प्रवचनप्रभावनाकृद्,

× Winternitz Hist Ind Lit II, P 465

* पट्टावली समुच्चय, (पृ ३)

देवाभिवन्दितो दशपूर्वविदामपश्चिमो वज्रशाखोत्पत्तिमूलम्। तथा स भगवान् षण्णवत्यधिकचतुःशत ४९६ वर्षान्ते जात सन् अष्टौ ८ वर्षाणि गृहे, चतुश्चत्वारिंशत ४४ वर्षाणि व्रते, षट्त्रिंशत् ३६ वर्षाणि युगप्र० सर्वायुरष्टाशीति ८८ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् चतुरशीत्यधिकपंचशत ५८४ वर्षान्ते स्वर्गभाक्। श्रीवज्र स्वामिनो दशपूर्व चतुर्थ संहननसंस्थानानां व्युच्छेद ।

चतुष्कुलसमुत्पत्तिपितामहमहं विभुम् ।
दशपूर्वविधिं वन्दे वज्रस्वामिमुनीश्वरम् ॥

इस उल्लेखपरसे वइरस्वामीके सम्बन्धमें हमें जो बातें ज्ञात होती हैं वे ये हैं कि उनका जन्म वीरनिर्वाण से ४९६ वर्ष पश्चात् हुआ था और स्वर्गवास ५८४ वर्ष पश्चात्। उन्होंने दक्षिण दिशामें भी विहार किया था तथा वे दशपूर्वियोंमें अपश्चिम थे। वीरवंशावलीमें भी उनके उत्तरदिशासे दक्षिणापथको विहार करनेका उल्लेख किया गया है,× और यह भी कहा गया है कि वहाके 'तुंगिया' नामक नगरमें उन्होंने चातुर्मास व्यतीत किया था। वहासे उन्होंने अपने एक शिष्यको सोपारक पत्तन (गुजरात) में विहार करनेकी भी आज्ञा दी थी। इन उल्लेखोंपरसे उनके पुष्पदन्ताचार्यकी विहारभूमिसे सम्बन्ध होनेकी सूचना मिलती है।

तपागच्छ पट्टावलीमें वइरस्वामीसे पूर्व आर्यमंगुका उल्लेख आया है जिनका समय नि स ४६७ बतलाया गया है। यथा—

सप्तषष्ट्यधिकचतुःशतवर्ष ४६७ आर्यमंगु ।

आर्यमंगुका कुछ विशेष परिचय नन्दीसूत्र पट्टावलीमें इसप्रकार आया है‡ —

भणगं करगं झरगं पभावगं णाण दंसण गुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥ २८ ॥

अर्थात् ज्ञान और दर्शन रूपी गुणोंके वाचक, कारक, धारक और प्रभावक, तथा श्रुतसागरके पारगामी धीर आर्यमंगुको मैं वन्दना करता हू। इसके अनन्तर अज्जधम्म और भद्दगुत्तके उल्लेखके पश्चात् अज्जवयरका उल्लेख है। इन उल्लेखोंपरसे जान पड़ता है कि ये आर्यमंगु अन्य कोई नहीं, धवला जयधवलामें उल्लिखित आर्यमंखु ही हैं, जिनके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने और उनके सहपाठी नागहस्तीने गुणधराचार्य द्वारा पंचमपूर्व ज्ञानप्रवादसे उद्धार किये हुए कसायपाहुडका अध्ययन किया था और उसे जइवसह (यतिवृषभाचार्य) को सिखाया था। उक्त नन्दीसूत्र पट्टावलीमें अज्जवयरके अनन्तर अज्जरक्खिअ और अज्ज नन्दिलखमणके पश्चात् अज्ज नागहत्थी का भी उल्लेख इसप्रकार आया है—

* पट्टावली समुच्चय, पृ ४७

× जैन साहित्य संशोधक १, २, परिशिष्ट, पृ १४

‡ पट्टावली समुच्चय, पृ १२

वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्ज-नागहत्थीण ।
वागरण-करणभंगिय-कम्मपयडी-पहाणाणं ॥ ३० ॥

अर्थात् व्याकरण, करणभंगी व कर्मप्रकृतिमें प्रधान आर्य नागहस्तीका यशस्वी वाचक वंश वृद्धिशील होवे ।

इसमें संदेहको स्थान नहीं कि ये ही वे नागहस्ती हैं जो धवलादि ग्रंथोंमें आर्यमंक्षु के सहपाठी कहे गये हैं । उनके व्याकरणादिके अतिरिक्त 'कम्मपयडी' में प्रधानताका उल्लेख तो बड़ा ही मार्मिक है । श्वेताम्बर साहित्यमें कम्मपयडी नामका एक ग्रंथ शिवशर्मसूरि कृत पाया जाता है जिसका रचनाकाल अनिश्चित है । एक अनुमान उसके वि. सं. ५०० के लगभगका लगाया जाता है । अतएव यह ग्रंथ तो नागहस्ती के अध्ययनका विषय हो नहीं सकता । फिर या तो यहां कम्मपयडीसे विषयसामान्य का तात्पर्य समझना चाहिये, अथवा, यदि किसी ग्रंथ विशेष से ही उसका अभिप्राय हो तो वह उसी कम्मपयडी या महाकम्मपयडिपाहुड से हो सकता है जिसका उद्धार पुष्पदंत और भूतबलि आचार्योंने षट्खंडागम रूपसे किया है ।

तपागच्छ पट्टावलीसे कोई सवा तीनसौ वर्ष पूर्व वि. सं. १३२७ के लगभग श्री धर्मघोष सूरि द्वारा संगृहीत 'सिरि-दुसमाकाल-समणसंघ थय' नामक पट्टावलीमें तो 'वइर' के पश्चात् ही नागहत्थिका उल्लेख किया गया है । यथा–

तीए तिवीस वइर च नागहत्थिं च रेवइमित्त ।
सीह नागज्जुण भइदिन्निय कालय वंदे× ॥ १३ ॥

ये वइर, वइर द्वितीय या कल्पसूत्र पट्टावलीके उक्कोसिय गोत्रीय वइरसेन हैं जिनका समय इसी पट्टावलीकी अवचूरीमें राजगणनासे तुलना करते हुए वि. सं. ६१७ के पश्चात् बतलाया गया है । यथा–

पुष्पमित्र (दुर्बलिका पुष्पमित्र) २० ॥ तथा राजा नाहड ॥१०॥ (एव) ६०५ शाकसंवत्सर ॥ अत्रान्तरे वाहिका निगता । इति ६१७ ॥ प्रथमोदयः । वयरसेण ३ नागहस्ति ६९ रेवतिमित्र ५९ बंभदीवगसिंह ७८ नागार्जुन ७८

पणसयरी सयाइं तिन्नि सय समन्निआइं अइक्कमऊ ।
विक्कमकालाओ तओ वहुली (वल्लभी) भंगो समुप्पन्नो ॥१॥

इसके अनुसार वीरसंवत्के ६१७ वर्ष पश्चात् वयरसेनका काल तीन वर्ष और उनके अनन्तर नागहस्तिका काल ६९ वर्ष पाया जाता है ।

पूर्वोक्त उल्लेखोंका मथितार्थ इस प्रकार निकलता है– श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें 'वइर' नामक दो आचार्योंका उल्लेख पाया जाता है जिनके नाममें कहीं कहीं 'अज्ज वइर' और 'अज्ज वइरसेन'

× पट्टावली समुच्चय, पृ. १६

इसप्रकार भेद किया गया है। कल्पसूत्र स्थविरावलीमें एकको गोतम गोत्रीय और दूसरेको उक्कोसिय गोत्रीय कहा है और उन्हें गुरु शिष्य बतलाया है। किन्तु अन्य पीछेकी पट्टावलियोंमें उनके बीच कहीं कहीं एक दो नाम और जुड़े हुए पाये जाते हैं। प्रथम अज्जवइरके समयका उल्लेख उनके वीरनिर्वाणके ५८४ वर्षतक जीवित रहनेका मिलता है व अज्ज वइरसेनका उल्लेख वीर-निर्वाणसे ६१७ वर्ष पश्चात्का पाया जाता है। इन दोनों आचार्योंसे पूर्व अज्जमगुका उल्लेख है, तथा उनके अनन्तर नागहत्थिका। अत इन चारों आचार्योंका समय निम्न प्रकार पड़ता है—

वीर निर्वाण संवत्

अज्ज मगु	४६७
अज्ज वइर	४९६–५८४
अज्ज वइरसेन	६१७–६२०
अज्ज नागहत्थी	६२०–६८९

अज्ज वइर दक्षिणापथको गये, वे दशपूर्वोके पाठी हुए और पदानुसारी थे तथा उन्होंने पंच णमोकार मन्त्र का उद्धार किया। नागहत्थी कम्मपयडिमें प्रधान हुए।

दिगम्बर साहित्योल्लेखोंके अनुसार आचार्य पुष्पदन्तने पहले पहले 'कम्मपयडी' का उद्धार कर सूत्ररचना प्रारंभ की और उसीके प्रारम्भमें णमोकार मन्त्र रूपी मंगल निबद्ध किया, जो धवलाटीकाके कर्ता वीरसेनाचार्यके मतानुसार उनकी मौलिक रचना प्रतीत होती है। अज्जमखु और नागहत्थि–दोनोंने गुणधराचार्य रचित कसायपाहुडको आचार्य परंपरासे प्राप्तकर यति-वृषभाचार्यको पढ़ाया, और यतिवृषभाचार्यने उसपर चूर्णिसूत्र रचे, ऐसा उल्लेख धवलादि ग्रंथोंमें मिलता है। यतिवृषभकृत 'तिलोयपण्णत्ति' में 'वइरजस' नामके आचार्यका उल्लेख मिलता है जो प्रज्ञाश्रमणोंमें अन्तिम कहे गये हैं। यथा—

पण्हसमणेसु चरिमो वइरजसो णाम। ×

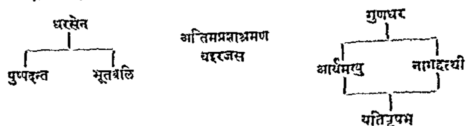
आश्चर्य नहीं जो ये अन्तिम प्रज्ञाश्रमण वइरजस (वज्रयश) श्वेताम्बर पट्टावलियोंके पदानुसारी वइर (वज्रस्वामी) ही हों। पदानुसारित्व और प्रज्ञाश्रमणत्व दोनों ऋद्धियोंके नाम हैं और ये दोनों ऋद्धियां एक ही बुद्धि ऋद्धिके उपभेद हैं*। धवलान्तर्गत वेदनाखण्डमें निबद्ध गोतम-स्वामीकृत मंगलाचरणमें इन दोनों ऋद्धियोंके धारक आचार्योंको नमस्कार किया गया है, यथा—

णमो पदाणुसारीणं ॥ ८ ॥ णमो पण्हसमणाणं ॥ १८ ॥

× संतपरूवणा १, भूमिका पृ १०, फुटनोट

* राजवार्तिक पृ १४२

इसप्रकार इन आचार्योकी दिगम्बर मान्यताका क्रम निम्न प्रकार सूचित होता है—



वइरजसका नाम यतिवृषभसे पूर्व ठीक कहां आता है इसका निश्चय नहीं। आर्यमंक्षु और नागहस्तीके समकालीन होनेकी स्पष्ट सूचना पाइ जाती है क्योंकि उन दोनोंने क्रमसे यतिवृषभको कसायपाहुड पढ़ाया था। क्रमसे पढ़ानेसे तथा आर्यमंक्षुका नाम सदैव पहले लिये जानेसे इतना ही अनुमान होता है कि दोनोंमें आर्यमंक्षु सम्भवतः जेठे थे। ये दोनों नाम श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें कोई १३० वर्षके अन्तरसे दूर पड़ जाते हैं जिससे उनका समकालीनत्व नहीं बनता। किन्तु यह बात विचारणीय है कि श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें ये दोनों नाम कहीं पाये जाते हैं और कहीं छोड़ दिये जाते हैं, तथा कहीं उनमेंसे एकका नाम मिलता है दूसरेका नहीं। उदाहरणार्थ, सबसे प्राचीन 'कल्पसूत्र स्थविरावली' तथा 'पट्टावली सारोद्धार' में ये दोनों नाम नहीं हैं, और 'गुरु पट्टावली' में आर्यमंक्षुका नाम है पर नागहस्तीका नहीं है×। फिर आर्यमंक्षु और नागहस्तीने जिनका रचा हुआ कसायपाहुड आचार्य परंपरासे प्राप्त किया था वे गुणधराचार्य दिगम्बर उल्लेखोंके अनुसार महावीर स्वामीसे आचार्य-परम्पराकी अट्ठाईस पीढ़ी पश्चात् निर्वाण संवत्की सातवीं शताब्दिमें हुए सूचित होते हैं जब कि श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें उन दोनोंमें से एक पांचवीं और दूसरे सातवीं शताब्दिमें पड़ते हैं। इसप्रकार इन सब उल्लेखों परसे निम्न प्रश्न उपस्थित होते हैं—

१ क्या 'तिलोय पण्णत्ति' में उल्लिखित 'वइरजस' और महानिशीथसूत्रके पट्टानुसारी 'वइरसामी' तथा श्वेतांबर पट्टावलियोंके 'अज्ज वइर' एक ही हैं?

२ 'वइरस्वामीने मूलसूत्रके मध्य पंचमंगलश्रुतस्कंधका उद्धार लिख दिया' इस महानिशीथसूत्रकी सूचनाका तात्पर्य क्या है? क्या उनकी दक्षिण यात्राका और उनके पंचमंगलसूत्रकी प्राप्तिका कोई सम्बन्ध है? क्या धवलाकारद्वारा सूचित णमोकार मंत्रके कर्तृत्वका इससे सामञ्जस्य बैठ सकता है?

३ क्या धवलादिश्रुतमें उल्लिखित आर्यमंक्षु और नागहस्ती तथा श्वेताम्बर पट्टावलियोंके अज्जमंगु और नागहत्थी एक ही हैं? यदि एक ही हैं, तो एक जगह दोनोंकी समसामयिकता

× देखो पट्टावली समुच्चय।

प्रकट होने और दूसरी जगह उनके बीच एकसो तीस वर्षका अन्तर पडनेका क्या कारण हो सकता है ? पट्टावलियोंमें भी कहीं उनके नाम देने और कहीं छोड दिये जानेका भी कारण क्या है ?

४ जिस कम्मपयडीमें नागहस्तीने प्रधानता प्राप्त की थी क्या वह पुष्पदन्त भूतबलि द्वारा उद्धारित कम्मपयडिपाहुड हो सकता है ?

५ दिगम्बर और श्वेताम्बर पट्टावलियों आदिमें उक्त आचार्योंके कालनिर्देशोंमें वैषम्य पडनेका कारण क्या है ?

इन प्रश्नोंमेंसे अनेकके उत्तर पूर्वोक्त विवेचनमें सूचित या ध्वनित पाये जावेंगे, फिर भी उन सबका प्रामाणिकतासे उत्तर देना बिना और भी विशेष खोज और विचारके सभव नहीं है । इस कार्यके लिये जितने समयकी आवश्यकता है उसकी भी अभी गुजाइश नहीं है । अत यहा इतना ही कहकर यह प्रसग छोडा जाता है कि उक्त आचार्यों सबधी दोनों परम्पराओंके उल्लेखोंका भारी रहस्य अवश्य है, जिसके उद्घाटनसे दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन इतिहास और उनके बीच साहित्यिक आदान प्रदानके विषय पर विशेष प्रकाश पडनेकी आशा की जा सकती है ।

इस प्रकरणको समाप्त करनेसे पूर्व यहा यह भी प्रकट कर देना उचित प्रतीत होता है कि श्वेताम्बर आगमके अन्तर्गत भगवतीसूत्रमें जो पच नमोकार-मगल पाया जाता है उसमें पचम पद अर्थात् ' णमो लोए सव्वसाहूण ' के स्थानपर ' णमो बभीए लिवीए ' (ब्राह्मी लिपिको नमस्कार) ऐसा पद दिया गया है । उडीसाकी हाथीगुफामें जो कलिंग नरेश खारवेलका शिलालेख पाया जाता है और जिसका समय ईस्वी पूर्व अनुमान किया जाता है, उसमें आदि मगल इसप्रकार पाया जाता है—

णमो अरहताण । णमो सव सिधाण ।

ये पाठभेद प्रासगिक हैं या किसी परिपाटीको लिये हुए हैं, यह विषय विचारणीय है । श्वेताम्बर सम्प्रदायमें किसी किसीके मतसे णमोकार सूत्र अनार्ष है × ।

५ बारहवें श्रुताङ्ग दृष्टिवादका परिचय

हम सत्प्ररूपणा प्रथम जिल्दकी भूमिकामें कह आये हैं कि बारहवा श्रुताग दृष्टिवाद श्वेताम्बर मान्यताके अनुसार भी विच्छिन्न होगया, तथा दिगम्बर मान्यतानुसार उसके कुछ अशोंका

× ' य तु वदति नमस्कारपाठ एव नार्ष ' इत्यादि । देखो अभिधानराजेन्द्र–णमोकार, पृ १८३५

उद्धार षट्खंडागम और कषायप्राभृतमें पाया जाता है। किन्तु शेष भागोंके प्रकरणों व विषय आदिका संक्षिप्त परिचय दोनों सम्प्रदायोंके साहित्यमें बिखरा हुआ पाया जाता है। अतः लुप्त हुए श्रुतांगके इस परिचयको हम दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन प्रमाणभूत ग्रंथोंके आधारपर यहां तुलनात्मकरूपमें प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक इस महत्त्वपूर्ण विषयमें रुचि दिखला सकें और दोनों सम्प्रदायोंकी मान्यताओंमें समानता और विषमता तथा दोनोंकी परस्पर परिपूरकताकी ओर ध्यान दे सकें। इस परिचयका मूलाधार श्वेताम्बर सम्प्रदायके नन्दीसूत्र और समवायांगसूत्र हैं तथा दिगम्बर सम्प्रदायके धवल और जयधवल ग्रंथ।

धवलामें दृष्टिवादका स्वरूप इसप्रकार बतलाया है—

तस्स दृष्टिवादस्स स्वरूपं निरूप्यते । कौत्कल काणेविद्धि कौशिक हरिश्मश्रु मांद्धपिक रोमश हारीत मुण्ड अश्वलायनादीनां क्रियावाददृष्टीनामशीतिशतम्, मरीचि कपिलोलूक गार्ग्य-व्याघ्रभूति वाद्वलि माठर मौद्गलायनादीनामक्रियावाददृष्टीनां चतुरशीतिः, शाकल्य वल्कल कुथुमि सात्यमुग्रि नारायण कण्व माध्यंदिन मोद पैप्पलाद बादरायण स्वष्टकृद्‌ ऐतिकायन वसु जैमिन्यादीनामज्ञानिकदृष्टीनां सप्तषष्टिः, वशिष्ठ पाराशर जतु-कर्ण वाल्मीकि-रोमहर्षणि सत्यदत्त व्यासैलापुत्रौपमन्यवैन्द्रदत्तायस्थूणादीनां वैनयिकदृष्टीनां द्वात्रिंशत्। एषां दृष्टिशतानां त्रयाणां त्रिषष्ट्युत्तराणां प्ररूपणं निग्रहश्च दृष्टिवादे क्रियते। (स. प., पृ० १०७)

इसका अभिप्राय यह है कि दृष्टिवाद अंगमें १८० क्रियावाद, ८४ अक्रियावाद, ६७ अज्ञानिकवाद और ३२ वैनयिकवाद, इसप्रकार कुल ३६३ दृष्टियोंका प्ररूपण और उनका निग्रह अर्थात् खंडन किया गया है। इन वादों और दृष्टियोंके कर्ताओंके जो नाम दिये गये हैं, उनमेंसे अनेक नाम वैदिक धर्मके भिन्न भिन्न साहित्यांगोंसे सम्बद्ध पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ, हारीत, वशिष्ठ, पाराशर सुप्रसिद्ध स्मृतिकारोंके नाम हैं। व्यासकृत स्मृति भी प्रसिद्ध है और वे महाभारत के कर्ता कहे जाते हैं। वाल्मीकि कृत रामायण सुविख्यात है, पर धर्मशास्त्रसंबंधी उनका बनाया ग्रंथ नहीं पाया जाता। आश्वलायन श्रौतसूत्र भी प्रसिद्ध है। गर्गका नाम एक ज्योतिषसंहितासे सम्बद्ध है। कण्व ऋषिका नाम भी वैदिकसाहित्यसे सम्बन्ध रखता है। माध्यंदिन एक वैदिक शाखाका नाम है। बादरायण वेदान्तशास्त्रके और जैमिनि पूर्वमीमांसाके सुप्रसिद्ध संस्थापक हैं। किन्तु शेष अधिकांश नाम बहुत कुछ अपरिचितसे हैं। इन नामोंके साथ उन उन दृष्टियोंका संबंध किन्हीं ग्रंथोंपरसे चला है या उनकी चढ़ाई कोई अलिखित विचारपरम्पराओंपरसे कहा गया है यह जानना कठिन है। पर तात्पर्य यह स्पष्ट है कि दृष्टिवादमें अनेक दार्शनिक मत मतान्तरोंका परिचय और विवेक कराया गया था। दृष्टिवादके जो भेद आगे बतलाये गये हैं उनमें सूत्र और पूर्वोंके भीतर ही इन वादोंके परिशीलनका गुंजाइश दिखाई देती है।

श्वेताम्बर मान्यता	दिगम्बर मान्यता
दिट्ठिवाद[1] के ५ भेद	दिट्ठिवाद[1] के ५ भेद
१ परिकम्म[2]	१ परिकम्म[2]
२ सुत्त	२ सुत्त
३ पुव्वगय	३ पढमाणिओग
४ अणुओग	४ पुव्वगय
५ चूलिया	५ चूलिया

दोनों सम्प्रदायोंमें दृष्टिवादके इन पांच भेदोंके नामोंमें कोई भेद नहीं है, केवल अणियोगकी जगह दिगम्बर नाम पढमाणियोग पाया जाता है। इसका रहस्य आगे बताये हुए प्रभेदोंसे जाना जायगा। दूसरा कुछ अन्तर पुव्वगय और अणियोगके क्रममें है। श्वेताम्बर पुव्वगयको पहले और अणियोगको उसके पश्चात् गिनाते हैं, जब कि दिगम्बर पढमाणियोगको पहले और पुव्वगयको उसके अनन्तर रखते हैं। यह भेद या तो आकस्मिक हो, या दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन पठनक्रमके भेदका द्योतक हो। दिगम्बरीय क्रमकी सार्थकता आगे पूर्वोंके विवेचनमें दिखायी जावेगी।

परिकर्मके ७ भेद	परिकर्मके ५ भेद
१ सिद्धसेणिआ	१ चंदपण्णत्ती
२ मणुस्ससेणिआ	२ सूरपण्णत्ती
३ पुट्ठसेणिआ	३ जम्बूदीवपण्णत्ती
४ ओगाढसेणिआ	४ दीवसायरपण्णत्ती
५ उवसंपज्जणसेणिआ	५ वियाहपण्णत्ती
६ विप्पजहणसेणिआ	
७ चुआचुअसेणिआ	

श्वेताम्बर:

१ अथ कोऽयं दृष्टिवाद ? दृष्टयो दर्शनानि, वदनं वाद । दृष्टीनां वादो दृष्टिवाद । अथवा पतनं पात, दृष्टीनां पातो यत्र स दृष्टिपात । (नंदीसूत्र टीका)

२ तत्र परिकर्म नाम योग्यतापादनम्। तद्धेतु शास्त्रमपि परिकर्म। ××× तथा चोक्तं चूर्णा—परिकम्मे त्ति योग्यताकरण। जह गणियस्स सोलस परिकम्मा तग्गहियसुत्तत्थो सेस गणियस्स जोग्गो भवइ, एवं गहियपरिकम्मसुत्तत्थो सेस सुत्ताइ दिट्ठिवायस्स जोग्गो भवइ त्ति। (नंदीसूत्र टीका)

दिगम्बर:

१ दृष्टीनां त्रिषष्ट्युत्तरत्रिशतसंख्यानां मिथ्यादर्शनानां वादोऽनुवाद, तन्निराकरणं च यस्मिन् क्रियते तत् दृष्टिवाद नाम। (गोम्मटसार टीका)

२ परित सर्वत कर्माणि गणितकरणसूत्राणि यस्मिन् तत् परिकर्म। (गोम्मटसार टीका)

ये परिकर्मके भेद दोनों सम्प्रदायोंमें संख्या और नाम दोनों बातोंमें एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न हैं। सिद्धश्रेणिकादि भेदोंका क्या रहस्य था, यह ज्ञात नहीं रहा। समवायांगके टीकाकार कहते हैं—

'एतच्च सर्वं समूलोत्तरभेदं सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नं'

अर्थात् यह सब परिकर्मशास्त्र अपने मूल और (आगे बतलाये जानेवाले) उत्तर भेदोंसहित सूत्र और अर्थ दोनों प्रकारसे नष्ट होगया। किंतु सूत्रकार व टीकाकारने इन सात भेदोंके सम्बन्धमें कुछ बातें ऐसी बतलायी हैं जो बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। परिकर्मके सात भेदोंके सम्बन्धमें वे लिखते हैं—

इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं, छ चउक्कणइयाइं, सत्त तेरासियाइं। (समवायांगसूत्र)

एतेषां च परिकर्मणां षड् आदिमानि परिकर्माणि स्वसामयिकान्येव। गोशालकप्रवर्तिताजीविकपाषण्डिकसिद्धान्तमतेन पुनः च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते। इदानीं परिकर्मसु नयचिन्ता। तत्र नैगमो द्विविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च। तत्र सांग्राहिकः संग्रहं प्रविष्टोऽसांग्राहिकश्च व्यवहारम्। तस्मात्संग्रहो व्यवहार ऋजुसूत्रः शब्दादयश्चैक एवेत्येवं चत्वारो नयाः। एतैश्चतुर्भिर्नयैः षट् स्वसामयिकानि परिकर्माणि चिन्त्यन्ते, अतो भणितं 'छ चउक्कणयाइं' ति भवति। त एव चाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः। कस्मात्? उच्यते, यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मकमिच्छन्ति, यथा जीवोऽजीवो जीवाजीवः, लोकोऽलोको लोकालोकः, सत् असत् सदसत् इत्येवमादि। नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छन्ति। तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिक उभयार्थिकः। अतो भणितं 'सत्त तेरासिय' त्ति। सप्त परिकर्माणि त्रैराशिकपाखण्डिकास्त्रिविधया नयचिन्तया चिन्तयन्तीत्यर्थः। (समवायांग टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि परिकर्मके जो सात भेद ऊपर गिनाये गये हैं उनमेंसे प्रथम छह भेद तो स्वसमय अर्थात् अपने सिद्धान्तके अनुसार हैं, और सातवां भेद आजीविक सम्प्रदायकी मान्यताके अनुसार है। जैनियोंके सात नयोंमेंसे प्रथम अर्थात् नैगम नयका तो संग्रह और व्यवहारमें अन्तर्भाव हो जाता है, तथा अन्तिम दो अर्थात् समभिरूढ और एवंभूत शब्दनयमें प्रविष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार मुख्यतासे उनके चार ही नय रहते हैं, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र और शब्द। इस अपेक्षासे जैनी चउक्कणइक अर्थात् चतुष्कनयिक कहलाते हैं। आजीविक सम्प्रदायवाले सब वस्तुओंको त्रि-आत्मक मानते हैं, जैसे जीव, अजीव और जीवाजीव, लोक, अलोक और लोकालोक, सत्, असत् और सदसत्, इत्यादि। नयका चिन्तन भी वे तीन प्रकारसे करते हैं–द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक और उभयार्थिक। अतः आजीविक तेरासिय अर्थात् त्रैराशिक भी कहलाते हैं। उन्हींकी मान्यतानुसार परिकर्मका सातवां भेद 'चुआचुअसेणिआ' जोड़ा गया है।

इस सूचनासे जैन और आजीवक सम्प्रदायोंके परस्पर सम्पर्कपर बहुत प्रकाश पड़ता है। मक्खलिगोशाल महावीरस्वामी व बुद्धदेवके समसामयिक धर्मोपदेशक थे। उनके द्वारा स्थापित

आजीविक सम्प्रदायके बहुत उल्लेख प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रन्थोंमें पाये जाते हैं। प्रस्तुत सूचना पर से जाना जाता है कि उनका शास्त्र और सिद्धान्त जैनियोंके शास्त्र और सिद्धान्तके बहुत ही निकटवर्ती था, केवल कुछ कुछ भेद प्रभेदों ओर दृष्टिकोणोंमें अन्तर था। भूमिका जैनियों और आजीविकोंकी प्रायः एक ही थी। आगे चलकर, जान पड़ता है, जैनियोंने आजीविकोंकी मान्यताओं को अपने शास्त्रमें भी संग्रह कर लिया और इसप्रकार धीरे धीरे समस्त आजीविक पंथको अपने ही समाजमें अन्तर्भाव कर लिया। ऊपरकी सूचनामें यद्यपि टीकाकारने आजीविकोंको पाखंडी कहा है, पर उनकी मान्यताको वे अपने शास्त्रमें स्वीकार कर रहे हैं।

परिकर्मके पूर्वोक्त सात भेद दिगम्बर मान्यतामें नहीं पाये जाते। पर इस मान्यताके जो पांच भेद चंदपण्णत्ति आदि हैं, उनमें से प्रथम तीन तो श्वेताम्बर आगमके उपांगोंमें गिनाये हुए मिलते है, तथा चौथा दीवसायरपण्णत्ती व जंबूदीवपण्णत्ती और चंदपण्णत्तीके नाम नंदीसूत्रमें अंगबाह्य श्रुतके आवश्यकव्यतिरिक्त भेदके अन्तर्गत पाये जाते हैं। किन्तु पांचवा भेद वियाहपण्णत्तिका नाम पांचवें श्रुतांगके अतिरिक्त और नहीं पाया जाता।

सिद्धसेणिआ परिकम्मके १४ उपभेद

१ माउगापयाइं
२ एगट्ठिअपयाइं
३ अट्ठ या पादोट्ठ[1]पयाइं
४ पाटोआमास या आगास[1] पयाइं
५ केउभूअं
६ रासिबद्धं
७ एगगुणं
८. दुगुणं
९. तिगुणं
१० केउभूअं
११ पडिग्गहो
१२ संसारपडिग्गहो
१३ नंदावत्तं
१४ सिद्धावत्तं

मणुस्ससेणिआ परिकम्मके भी १४ भेद हैं जिनमें प्रथम १३ भेद उपर्युक्त ही हैं। १४

१ चंदपण्णत्ती– छत्तीसलक्खपंचपदसहस्सेहि (३६०५०००) चंदायु-परिवारिद्धि-गइ-बिंबुस्सेह-वण्णणं कुणइ।

२ सूरपण्णत्ती–पंचलक्खतिण्णिसहस्सेहि पदेहि (५०३०००) सूरस्सायु-भोगोवभोग-परिवारिद्धि-गइ-बिंबुस्सेह-दिणकिरणुज्जोव-वण्णणं कुणइ।

३ जंबूदीवपण्णत्ती–तिण्णिलक्खपंचवीस-पदसहस्सेहि (३२५०००) जंबूदीवे णाणाविहमणुयाणं भोग-कम्मभूमियाणं अण्णेसिं च पव्वद-दह-णइ-वेइयाण वस्सावासाकट्टिमजिणहरादीणं वण्णणं कुणइ।

४ दीवसायरपण्णत्ती– बावण्णलक्खछत्तीस-पदसहस्सेहि (५२३६०००) उद्धार-

[1] ये पाठभेद नंदीसूत्र और समवायांगके हैं।

वां भेद 'मनुस्सावत्त' नामका है।

पुट्ठसेणिआदि शेष पांच परिकर्मोंमें प्रत्येकके ११ उपभेद हैं जो प्रथम तीनको छोड़ कर शेष पूर्वोक्तही हैं। अंतिम भेदके स्थानमें स्वनामसूचक भेद है, जैसे पुट्ठावत्त, ओगाढावत्त, उवसंपज्जणावत्त, विप्पजहणावत्त और चुयाचुयावत्त। इसप्रकार ये सब मिलकर ८३ प्रभेद होते हैं[1]।

पलुपमाणेण दीवसायरपमाणं अण्णं पि दीवसायरंतब्भूदत्थं बहुभेयं वण्णेदि।

५. वियाहपण्णत्ती– चउरासीदिलक्खछत्तीस-पदसहस्सेहि (८४३६०००) रूवि-अजीवदव्वं अरूवि अजीवदव्वं भवसिद्धिय-अभवसिद्धियरासिं च वण्णेदि।

परिकर्मके इन माउगापया' आदि उपभेदोंका कोई विवरण हमें उपलब्ध नहीं है। किंतु मातृकापदसे जान पड़ता है उसमें लिपि विद्याका विवरण था। इसप्रकार अन्य भेदोंमें शिक्षाके मूलविषय गणित, न्याय आदिका विवरण रहा जान पड़ता है।

सुत्तके ८८ भेद

१ उज्जुसुय या उजुग
२ परिणयापरिणय
३ बहुभंगिअ
४ विनयचरिय, विप्पचइय या विनयचरिय
५ अणंतर
६ परंपर
७ मासाण (समाण स अ)
८ संजूह (मासाण ,,)
९ संभिण्ण
१० आहच्चाय (अहाच्चाय स अ)
११ सोवत्थियावत्त
१२ नंदावत्त
१३ बहुल
१४ पुट्ठापुट्ठ
१५ वियावत्त

सुत्तके अन्तर्गत विषय

सुत्तं अट्ठासीदिलक्खपदेहि (८८०००००) अबंधओ, अवलेवओ, अकत्ता, अभोत्ता, णिग्गुणो, सव्वगओ, अणुमेत्तो, णत्थि जीवो, जीवो चेव अत्थि, पुढवियादीणं समुदएण जीवो उप्पज्जइ, णिच्चेयणो, णाणेण विणा, सचेयणो, णिच्चो, अणिच्चो अप्पेत्ति वण्णेदि। तेरासियं, णियदिवादं, विण्णाणवादं, सद्दवादं, पहाणवादं, दव्ववादं, पुरिसवादं च वण्णेदि। उत्तं च–

अट्ठासी अहियारेसु चउण्हमहियाराणमत्थि णिद्देसो। पढमो अबंधयाणं, विदियो तेरासियाण बोद्धव्वो॥ तदियो य णियइपक्खे हवइ चउत्थो ससमयम्मि। (धवला स प, पृ ११०)

---

[1] सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्म मूलभेदतः सप्तविधं, उत्तरभेदतस्तु त्र्यशीतिविधं मातृकापदादि। (समवायांग टीका)

१६. एवभूअ
१७ दुयावत्त
१८ वत्तमाणप्पय
१९ समभिरूढ
२० सव्वओभद्द
२१ पस्सास (पणाम स अ)
२२ दुप्पडिग्गह

सुत्ते अट्ठासीदि अत्थाहियारा, ण तेसिं णामाणि जाणिज्जंति, सपहि विसिट्ठुवएसाभावादो (जयधवला)

ये ही २२ सूत्र चार प्रकारसे प्ररूपित है—

१ छिण्णछेअ णइयाणि
२ अछिण्णछेअ णइयाणि
३ तिक-णइयाणि
४ चउक्क णइयाणि

इसप्रकार सूत्रोंकी सख्या २२ × ४ = ८८ हो जाती है।

श्वेताम्बर सम्प्रदायमें सूत्रके मुख्य भेद बाईस है। उनके अठासी भेदोंकी सूचना समवायांगमें इस प्रकार दी गई है—

इच्चेयाइ वावीस सुत्ताइ छिण्णछेअणइआइ ससमय सुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइ वावीस सुत्ताइ अछिन्नछेयनइयाइ आजीवियसुत्तपरिवाडीए। इच्चेआइ वावीस सुत्ताइ तिक णइयाइ तेरासियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइ वावीस सुत्ताइ चउक्कणइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए। एवमेव सपुव्वावरेण अट्ठासीदि सुत्ताइ भवतीति मक्खयाइ।

यहा जिन चार नयोंकी अपेक्षासे बाईस सूत्रोंके अठासी भेद हो जाते हैं, उनका स्पष्टीकरण टीकामें इसप्रकार पाया जाता है—

एतानि किल ऋजुकादीनि द्वाविंशति सूत्राणि, तान्येव विभागतोऽष्टाशीतिर्भवन्ति। कथम्? उच्यते—'इच्चेइयाइ बावीस सुत्ताइ छिन्नछेयनइयाइ ससमयसुत्तपरिवाडीए' त्ति। इह यो नय सूत्र छिन्न छेदेनेच्छति स छिन्नच्छेदनयो, यथा 'धम्मो मगलमुक्किट्ठ' इत्यादि श्लोक सूत्रार्थत प्रत्येकछेदेन स्थितो न द्वितीयादिश्लोकमपेक्षते, प्रत्येककल्पितपर्यन्त इत्यर्थ। एतान्येव द्वाविंशति स्वसमयसूत्रपरिपाट्या सूत्राणि स्थितानि। तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिकान्याजीविकसूत्रपरिपाट्येति, अयमर्थ — इह यो नय सूत्रमच्छिन्न छेदेनेच्छति सोऽछिन्नछेदनयो यथा, 'धम्मो मगलमुक्किट्ठ,' इत्यादि श्लोक एवार्थतो द्वितीयादिश्लोकमपेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योऽन्यसापेक्षा इत्यर्थ। एतानि द्वाविंशतिराजीविकगोशालकप्रवर्तितपाखडसूत्रपरिपाट्या अक्षररचनाविभागस्थितान्यप्यर्थतोऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति। 'इच्चेयाइ' इत्यादिसूत्रम्। तत्र तिकणइयाइ ति नयत्रिकाभिप्रायतश्चिन्त्यन्त इत्यर्थ- त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति। तथा 'इच्चेयाइ' इत्यादिसूत्र। तत्र 'चउक्कणइयाइ' ति

प्रकार सात पूर्वोंके अतर्गत वस्तुओंकी सख्यामें दोनों सम्प्रदायोंमे मतभेद है। शेष सात पूर्वोंकी वस्तु-सख्यामें कोई भेद नहीं है। श्वेताम्बर मान्यतामें प्रथम चार पूर्वोंके अतर्गत वस्तुओंके अतिरिक्त चूलिकाओंकी सख्या भी दी गई है, और दृष्टिवादके पचमभेद चूलिकाके वर्णनमें कहा है कि वहा उन्हीं चार पूर्वोकी चूलिकाओंसे अभिप्राय है। यदि ये चूलिकाए पूर्वोके अन्तर्गत थीं, तो यह समझमें नहीं आता कि उनका फिर एक स्वतत्र विभाग क्यों रखा गया। दिगम्बरीय मान्यतामें पूर्वोके भीतर कोई चूलिकाए नहीं गिनाया गई और चूलिका विभागके भीतर जो पाच चूलिकाए बतलायी हैं उनका प्रथम चार पूर्वोंसे कोई सबध भी ज्ञात नहीं होता।

समवायाग और नन्दीसूत्रमें पूर्वोंके अतर्गत वस्तुओं और चूलिकाओंकी सख्या-सूचक निम्न तीन गाथाए पाई जाती हैं—

दस चोद्दस अट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि।
सोलस तीसा वीसा पण्णरस अणुप्पवायम्मि ॥ १ ॥
बारस एक्कारसमे बारसमे तेरसेव वत्थूणि।
तीसा पुण तेरसमे चउदसमे पण्णवीसाओ ॥ २ ॥
चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि।
आइल्लाण चउण्ह सेसाण चूलिया णत्थि ॥ ३ ॥

धवलामें (वेदनाखडके आदिमें) पूर्वोंके अतर्गत वस्तुओं और वस्तुओंके अतर्गत पाहुडोंकी सख्याकी द्योतक निम्न तीन गाथाए पाई जाती हैं—

दस चोद्दस अट्ठारस (अट्ठारस) बारस य दोसु पुव्वेसु।
सोलस वीस तीस दसमम्मि य पण्णरस वत्थू ॥ १ ॥
एदेसिं पुव्वाण एवदिओ वत्थुसगहो भणिदो।
सेसाण पुव्वाण दस दस वत्थू पणिवयामि ॥ २ ॥
एक्केक्कम्हि य वत्थू वीस वीस च पाहुडा भणिदा।
विसम समा हि य वत्थू स वे पुण पाहुडहि समा ॥ ३ ॥

इनके अक भी धवलामें दिये हुए हैं जिन्हें हम निम्न तालिकाद्वारा अच्छीतरह प्रकट कर सकते हैं।

पूर्व	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	कुल
वत्थू	१०	१४	८	१८	१२	१२	१६	२	३०	१५	१०	१०	१०	१०	१९५
पाहुड	२००	२८०	१६०	३६०	२४	२४०	३२०	४०	६००	३००	२००	२००	२००	२००	३९००

सव्व-वत्थु-समासो पचाणउदिसदमेत्तो १९५।
सव्व पाहुड-समासो तिण्णिसहस्स-णव-सद-मेत्तो ३९०० ।

जयधवलामें यह भी बतलाया गया है कि एक एक पाहुडके अन्तर्गत पुन चौवीस चौवीस अनुयोगद्वार थे। यथा—

एदेसु अत्थाहियारेसु एक्केक्कस्स अत्थाहियारस्स वा पाहुडसण्णिदा वीस वीस अत्थाहियारा। तेसिं पि अत्थाहियाराण एक्केक्कस्स अत्थाहियारस्स चउवीस चउवीस अणिओगद्दाराणि सण्णिदा अत्थाहियारा।

इससे स्पष्ट है कि पूर्वोके अन्तर्गत वस्तु अधिकार थे, जिनकी सख्या किसी विशेष नियमसे नहीं निश्चित थी। किन्तु प्रत्येक वस्तुके अवान्तर अधिकार पाहुड कहलाते थे और उनकी सख्या प्रत्येक वस्तुके भीतर नियमत बीस बीस रहती थी और फिर एक एक पाहुडके भीतर चौवीस चौवीस अनुयोगद्वार थे। यह विभाग अब हमारे लिये केवल पूर्वोकी विशालता मात्रका द्योतक है क्योंकि उन वस्तुओं और उनके अन्तर्गत पाहुडोंके अब नाम तक भी उपलब्ध नहीं है। पर इन्हीं ३९०० पाहुडोंमेंसे केवल दो पाहुडोंका उद्धार षट्खडागम और कसायपाहुड (धवला और जयधवला) में पाया जाता है जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा। उनसे और उनकी उपलब्ध टीकाओंसे इस साहित्यकी रचनाशैली व कथनोपकथन पद्धतिका बहुत कुछ परिचय मिलता है।

चौदह पूर्वोका विषय व परिमाण	चौदह पूर्वोका विषय व पदसंख्या
१ उप्पादपुव्व–तत्र च सर्वद्रव्याणा पर्यायाणा चोत्पादभावमगीकृत्य प्रज्ञापना कृता। (१०००००००)	१ उप्पादपुव्वं जीव-काल-पोग्गलाणमुप्पाद-वय धुवत्त वण्णेइ। (१०००००००)
२ अग्गेणीय–तत्रापि सर्वेषा द्रव्याणा पर्यवाणा जीवविशेषाणा चाग्र परिमाण वर्ण्यते। (९६०००००)	२ अग्गेणिय अगाणमग्ग वण्णेइ। अगाणमग्ग-पद वण्णेदि त्ति अग्गेणिय गुणणाम। (९६०००००)
३ वीरियं–तत्राप्यजीवानां जीवाना च सकर्मेतराणा वीर्यं प्रोच्यते। (७००००००)	३ वीरियाणुपवाद अप्पविरिय परविरिय उभयविरिय खेत्तविरिय भवविरिय तवविरिय वण्णेइ। (७००००००)
४ अत्थिणत्थिपवादं–यद्यल्लोके यथास्ति यथा वा नास्ति, अथवा स्याद्वादाभिप्रायत तदेवास्ति तदेव नास्तीत्येव प्रवदति। (६००००००)	४ अत्थिणत्थिपवाद जीवाजीवाण अत्थि-णत्थित्त वण्णेदि। (६००००००)
५ णाणपवादं–तस्मिन् मतिज्ञानादिपचकस्य भेदप्ररूपणा यस्मात्कृता तस्मात् ज्ञानप्रवाद। (९९९९९९९)	५ णाणपवादं पच णाणाणि तिण्णि अण्णाणाणि वण्णेदि। (९९९९९९९)

६ सच्चपवाद–सत्यं संयमं सत्यवचनं वा यत्र सभेदं सप्रतिपक्षं च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवादम्। (१०००००६)

६ सच्चपवाद–वाग्गुप्ति वाक्संस्कारकारण प्रयोगो द्वादशधा भाषावक्तारश्च अनेकप्रकारं मृषाभिधानं दशप्रकारश्च सत्यसद्भावो यत्र निरूपितस्तत्सत्यप्रवादम्। (१०००००६)

७ आदपवाद–आत्मा अनेकधा यत्र नयदर्शनैर्वर्ण्यते तदात्मप्रवादं। (२६०००००००)

७ आदपवाद आदं वण्णेदि वेदेत्ति वा विण्हुत्ति वा भोत्तेत्ति वा बुद्धेत्ति वा इच्चादिसरूवेण। (२६०००००००)

८ कम्मपवाद–ज्ञानावरणादिकमष्टविधं कर्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभिर्भेदैः यथोत्तरोत्तरभेदैश्च वर्ण्यते तत्कर्मप्रवादम्। (१८००००००)

८ कम्मपवाद अट्ठविहं कम्मं वण्णेदि। (१८००००००)

९ पच्चक्खाण–तत्र सर्वं प्रत्याख्यानस्वरूपं वर्ण्यते। (८४०००००)

९ पच्चक्खाण दव्व–भाव–परिमियापरिमियपच्चक्खाणं उववासविहिं पंच समिदीओ तिण्णि गुत्तीओ च परूवेदि। (८४०००००)

१० विज्जाणुवाद–तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता। (११००००००)

१० विज्जाणुवाद अंगुष्ठप्रसेनादीनां अल्पविद्यानां सप्तशतानि रोहिण्यादीनां महाविद्यानां पञ्चशतानि अन्तरिक्ष-भौमाङ्गस्वर-स्वप्न-लक्षण-व्यञ्जनच्छिन्नान्यष्टौ महानिमित्तानि च कथयति। (११००००००)

११ अवञ्झ–वन्ध्यं नाम निष्फलम्, न वन्ध्यम् अवन्ध्यं सफलमित्यर्थः। तत्र हि सर्वे ज्ञानतपःसंयमयोगाः शुभफलेन सफला वर्ण्यन्ते, अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ण्यन्ते, अतोऽवन्ध्यम्। (२६०००००००)

११ कल्लाण रवि–शशि–नक्षत्र–तारागणानां चारोपपाद–गति–विपर्ययफलानि शकुनव्याहरणमर्हद्बलदेव–वासुदेव–चक्रधरादीनां गर्भावतरणादिमहाकल्याणानि च कथयति। (२६०००००००)

१२ पाणावाय–तत्रायुः प्राणविधानं सर्वं सभेदमन्ये च प्राणा वर्णिता। (१५६०००००)

१२ पाणावाय कायचिकित्साद्यष्टाङ्गमायुर्वेदं भूतिकर्म जाङ्गुलिप्रक्रमं प्राणापानविभागं च विस्तरेण कथयति। (१३००००००)

१३ **किरियाविसाल**-तत्र कायिक्यादय क्रिया विशाल त्ति सभेदा सयमक्रिया छन्दक्रिया-विधानानि च वर्ण्यन्ते । (९००००००००)

१३ **किरियाविसाल** लेखादिका द्वासप्ततिकला स्त्रैणाश्चतु षष्टिगुणान् शिल्पानि काव्यगुण-दोषक्रिया छन्दोविचितिक्रिया च कथयति । (९००००००००)

१४ **लोकबिंदुसारं**-तच्चास्मिन् लोके श्रुतलोके वा बिन्दुरिवाक्षरस्य सर्वोत्तममिति, सर्वाक्षर-सन्निपातप्रतिष्ठितत्वेन च लोकबिन्दुसार भणितम् । (१२५००००००)

१४ **लोकबिंदुसारं** अष्टौ व्यवहारान् चत्वारि बीजानि मोक्षगमनक्रिया मोक्षसुख च कथयति । (१२५००००००)

पूर्वोके अन्तर्गत विषयोंकी सूचना समवायाग व नन्दीसूत्रोंमें नहीं पायी जाती, वहां केवल नाम ही दिये गये हैं। विषयकी सूचना उनकी टीकाओंमें पायी जाती है। उपर्युक्त श्वेताम्बर मान्यताका विषय समवायाग टीकासे दिया गया है। उस परसे ऐसा ज्ञात होता है कि वहां विषयका अन्दाज बहुत कुछ नामकी व्युत्पत्ति द्वारा लगाया गया है। धवलान्तर्गत विषय-सूचना कुछ विशेष है। पर विषयनिर्देशमें शब्दभेदको छोड कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। अवन्ध्य और कल्याणवादमें जो नामभेद है, उसीप्रकार विषयसूचनामें भी कुछ विशेष है। धवलामें उसके अन्तर्गत फलित ज्योतिष और शकुनशास्त्रका स्पष्ट उल्लेख है जो अवन्ध्यके विषयमें नहीं पाया जाता। उसी प्रकार बारहवें प्राणावाय पूर्वके भीतर धवलामें कायचिकित्सादि अष्टांगायुर्वेदकी सूचना स्पष्ट दी गई है, जैसी समवायाग टीकामें नहीं पायी जाती। वहां केवल 'आयुप्राणविधान' कहकर छोड दिया गया है। तेरहवें क्रियाविशालमें भी धवलामें स्पष्ट कहा है कि उसके अन्तर्गत लेखादि बहत्तर कलाओं, चौसठ स्त्री कलाओं और शिल्पोंका भी वर्णन है। यह समवायाग टीकामें नहीं पाया जाता।

पदप्रमाण दोनों मान्यताओंमें तेरह पूर्वोका तो ठीक एकसा ही पाया जाता है, केवल बारहवें पूर्व प्राणावायकी पदसंख्या दोनोंमें भिन्न पाई जाती है। धवलाके अनुसार उसका पदप्रमाण तेरह कोटि है जब कि समवायाग और नन्दीसूत्रकी टीकाओंमें एक कोटि छप्पन लाख (एका कोटी षट्पञ्चाशच्च पदलक्षाणि) पाया जाता है।

प्रथम नौ पूर्वोका विषय तो अध्यात्मविद्या और नीति सदाचारसे सबध रखता है किन्तु आगेके विद्यानुवादादि पाच पूर्वोमें मत्र तत्र व कला कौशल शिल्प आदि लौकिक विद्याओंका वर्णन था, ऐसा प्रतीत होता है। इसी विशेष भेदको लेकर **दशपूर्वी** और **चौदहपूर्वी** का अलग अलग उल्लेख पाया जाता है। धवलाके वेदनाखंडके आदिमें जो मगलाचरण है वह स्वय इन्द्रभूति गौतम गणधरकृत और महाकम्मपयडिपाहुडके आदिमें उनके द्वारा निबद्ध कहा गया है। वहींसे

इसका तात्पर्य यह है कि जो सम्यग्दृष्टि होता है वह तो दश पूर्वोका अध्ययन कर लेता है और आगे भी बढ़ता जाता है, किन्तु जो मिथ्यादृष्टि होता है वह कुछ कम दश पूर्वोतक तो पढ़ता जाता है, किन्तु वह दशमेको भी पूरा नहीं कर पाता। इसका उदाहरण उन्होंने एक अभव्यका दिया है जो किसी ग्रंथि देशपर आजानेसे उस ग्रंथिका भेदन नहीं कर पाता। पर टीकाकारने यह नहीं बतलाया कि कुछ कम दशवें पूर्वमें श्रुतपाठी कौनसी ग्रंथि पाकर रुक जाता है और उसका भेदन क्यों नहीं कर पाता।

अनुयोगके दो भेद

१ मूलपढमाणुओग
२ गंडिआणुओग

मूलप्रथमानुयोगका विषय

अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवगमणाइं आउं चवणाइं जम्मणाइं अभिसेआ रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ तवा य उग्गा केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि सीसा गणा गणहरा अज्जपवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं जिण मण पज्जव ओहिनाणी सम्मत्त सुअनाणिणो वाई अणुत्तरगई उत्तरवेउव्विणो मुणिणो जत्तिआ सिद्धा सिद्धीपहो जहदेसिओ जच्चिरं च कालं पाओवगया जे जेहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेइत्ता अंतगडे मुणिवरुत्तमे तमरओघविप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते एवमन्ने अ एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिआ।

गंडिआणुओग

गंडिआणुओगे कुलगर तित्थयर चक्कवट्टि-दसार बलदेव-वासुदेव गणधर भद्दबाहु-तवोकम्म हरिवंस-उस्सप्पिणी चित्तंतर अमर नर तिरिय-निरय-गइगमण विविहपरियट्टणेसु एवमाइआओ गंडिआओ आघविज्जंति पण्णविज्जंति।

प्रथमानुयोगका विषय

पढमाणिओए चउवीस अत्थाहियारा तित्थयरपुराणेसु सव्वपुराणाणमेत्थ भावादो (जयधवला)

पढमाणियोगो पंच-सहस्सपदेहि (५०००) पुराणं वण्णेदि। उत्तं च-

बारसविहं पुराणं जं दिट्ठं जिणवरेहि सव्वेहिं।
तं सव्वं वण्णेदि हु जिणवंसे रायवंसे य ॥ १ ॥
पढमो अरहंताणं विदियो पुण चक्कवट्टिवंसो दु। विज्जाहराण तदियो चउत्थओ वासुदेवाणं ॥२॥ चारणवंसो तह पंचमो दु छट्ठो य पण्णसमणाणं। सत्तमओ कुरुवंसो अट्ठमओ तह य हरिवंसो ॥३॥ णवमो य इक्खयाणं दसमो वि य कासियाण बोद्धव्वो। वाईणेक्कारसमो बारसमो णाहवंसो दु ॥ ४ ॥

श्वेताम्बर सम्प्रदायमें दृष्टिवादके चौथे भेदका नाम अणुयोग है जिसके पुनः दो प्रभेद होते हैं, मूलप्रथमानुयोग और गंडिकानुयोग। दिगम्बर सम्प्रदायमें प्रथमानुयोग ही दृष्टिवादका तीसरा भेद है। अनुयोगका अर्थ समवायांग टीकामें इसप्रकार दिया है—

अनुरूपोऽनुकूलो वा योगोऽनुयोग सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्द्धमनुरूप सम्बन्ध इत्यर्थ ।

अर्थात्—सूत्रद्वारा प्रतिपादित अर्थके अनुकूल सबन्धका नाम ही अनुयोग है । तात्पर्य यह कि जिसमे सूत्र कथित सिद्धात या नियमोंके अनुकूल दृष्टान्त और उदाहरण पाये जावें वह अनुयोग है । उसके दो भेद करनेका अभिप्राय नदीसूत्रकी टीकामें यह बतलाया गया है कि—

इह मूल धर्मप्रणयनात् तीर्थकरास्तेषा प्रथम सम्यक्त्वाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरोऽनुयोगो मूलप्रथमानुयोग । इक्ष्वादीना पूर्वापरपर्वपरिच्छिन्नो मध्यभागो गण्डिका, गण्डिकेव गण्डिका, एकार्थाधिकारा ग्रन्थपद्धतिरित्यर्थ । तस्या अनुयोगो गण्डिकानुयोग ।

इसका अभिप्राय यह है कि धर्मके प्रवर्तक होनेसे तीर्थंकर ही मूल पुरुष है, अतएव उनका प्रथम अर्थात् सम्यक्त्वप्राप्तिलक्षण पूर्वभव आदिका वर्णन करनेवाला अनुयोग मूलप्रथमानुयोग है। और जैसे गन्ने आदिकी गडेरी आजू बाजूकी गाठोंसे सीमित रहती है ऐसे ही जिसमें एक एक अधिकार अलग अलग हो उसे गडिकानुयोग कहते हैं, जैसे कुलकरगडिका आदि । किन्तु यह विभाग कोई विशेष महत्व नहीं रखता क्योंकि दोनोंमें विषयका पुनरावृत्ति पायी जाती है। जैसे तीर्थंकर और उनके गणधरोंका वर्णन दोनों विभागोंमें आता है । दिगम्बरोंमें ऐसा कोई विभाग नहीं किया गया और साफ सीधे तोरसे बतलाया गया है कि दृष्टिवादके प्रथमानुयोगमें चोबीस अधिकारोद्वारा बारह जिनवशों और राजवशोंका वर्णन किया गया है

दिगम्बर सम्प्रदायमें प्रथमानुयोगका अर्थ इसप्रकार किया गया है—

प्रथम मिथ्यादृष्टिमव्रतिकमव्युत्पन्न वा प्रतिपाद्यमाश्रित्य प्रवृत्तोऽनुयोगोऽधिकार प्रथमानुयोग
(गोम्मटसार टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि 'प्रथम' का तात्पर्य अव्रती और अव्युत्पन्न मिथ्यादृष्टि शिष्यसे है और उसके लिये जिस अनुयोग की प्रवृत्ति होती है वह प्रथमानुयोग कहलाता है । इसीके भीतर सब पुराणोंका अतर्भाव हो जाता है। किन्तु इसका पद-प्रमाण केवल पाच हजार बतलाया गया है । इससे जान पडता है कि दृष्टिवादके अन्तर्गत प्रथमानुयोगमें सब कथावर्णन बहुत सक्षेपमें किया गया था। पुराणवादका विस्तार पीछे पीछे किया गया होगा ।

नन्दिसूत्रकी टीकामें गडिकानुयोगके अन्तर्गत चित्रान्तरगण्डिकाका बडा ही विचित्र और विस्तृत परिचय दिया है । पहले उन्होंने बतलाया है कि—

'कुलकराणा गण्डिका कुलकरगण्डिका, तत्र कुलकराणा विमलवाहनादीना पूर्वभवजन्मादीनि सम्पूर्णमुपवर्ण्यन्ते । एव तीर्थकरगण्डिकादिष्वभिधानवशतो भावनीय 'जाव चित्ततरगडिआउ' त्ति ।

अर्थात् कुलकरगण्डिकामें विमलवाहनादि कुलकरोंके पूर्वभव जन्मादिका सविस्तर वर्णन किया गया है । इसीप्रकार तीर्थंकरादि गडिकाओंमें उनके नामानुसार विषय वर्णन समझ लेना चाहिये

ज्ञात होता है कि चित्रा तरंगडिका नहीं आता। फिर चित्रा तरंगडिकाका परिचय इस प्रकार प्रारंभ किया गया है—

'चित्रा अन्तकथा, अन्तरे ऋषभाजितनाथतीर्थकरयोरन्तरे गण्डिका चित्रान्तरगण्डिका। एतदुक्तं भवति—ऋषभाजितनाथयोरन्तरे ऋषभवंशसमुद्भूतभूपतीनां शेषगतिगमनव्युदासेन शिवगतिगमनानुत्तरोपपातप्राप्तिप्रतिपादिका गण्डिकाधिकारा चित्रान्तरगण्डिका। तासां च प्ररूपणा पूर्वाचार्यैरेवमकारि—इह सुबुद्धिनामा सगरचक्रवर्तिनो महामात्योऽष्टापदपर्वते सगरचक्रवर्तिसुतेभ्य आदित्ययशःप्रभृतीनां भगवदृषभवंशजानां भूपतीनामेवं संख्यामाख्यातुमुपक्रमते स्म। आह च—

" ऋषभादुत्पन्नानां उसभस्स परंपरानरिन्दाणं।
सगरसुयाणं सुबुद्धी णामो मरु परिकहेइ ॥ १ ॥"

आदित्ययशःप्रभृतयो भगवन्नाभेयवंशजास्त्रिखण्डभरतार्धमनुपाल्य पर्यन्ते पारमेश्वरीं दीक्षामभिगृह्य तत्प्रभावात् सकलकर्मक्षयं कृत्वा चतुर्दश लक्षा निरन्तरं सिद्धिमगमन्। ततः एकः सर्वार्थसिद्धौ, ततो भूयोऽपि चतुर्दश लक्षा निरन्तरं निर्वाणे, ततोऽप्येकः सर्वार्थसिद्धे महाविमाने। एवं चतुर्दशलक्षान्तरित सर्वार्थसिद्धावेकैकस्तावद् निरन्तरं निर्वाण, ततो द्वौ सर्वार्थसिद्धौ यावत्तेऽप्येकैका असंख्येया भवन्ति। ततो भूयश्चतुर्दश लक्षा नरपतीनां निरन्तरं निर्वाणे, ततो भूयोऽपि द्वौ सर्वार्थसिद्धे। एवं चतुर्दश सर्वार्थसिद्धे। ततः पुनरपि चतुर्दश लक्षा निरन्तरं निर्वाणे। ततो भूयोऽपि द्वौ सर्वार्थसिद्धे। एवं चतुर्दश लक्षा २ लक्षान्तरिता द्वौ २ सर्वार्थसिद्धे तावद्वक्तव्या यावत्तेऽपि द्विक २ संख्यया असंख्येया भवन्ति। एवं त्रिक २ संख्यादयोऽपि प्रत्येकमसंख्येयास्तावद्वक्तव्या यावन्निरन्तरं चतुर्दश लक्षा निर्वाणे। ततः पञ्चाशत्सर्वार्थसिद्धे। ततो भूयोऽपि चतुर्दश लक्षा निर्वाणे। ततः पुनरपि पञ्चाशत् सर्वार्थसिद्धे। एवं पञ्चाशत्संख्या अपि चतुर्दश २ लक्षान्तरितास्तावद्वक्तव्या यावत्तेऽप्यसंख्या भवन्ति। उक्तं च—

" चोद्दस लक्खा सिद्धा निवईणेक्को य होइ सव्वट्ठे।
एवेक्कट्ठाण पुरिसजुगा होतिऽसंखेज्जा ॥ १ ॥
पुणरवि चोद्दस लक्खा सिद्धा निव्वाण दो वि सव्वट्ठे।
दुगठाणे वि असंखा पुरिसजुगा होंत नायव्वा ॥ २ ॥
जाव य लक्खा चोद्दस सिद्धा पण्णास होंत सव्वट्ठे।
पञ्चासट्ठाणे वि उ पुरिसजुगा होंतिऽसंखेज्जा ॥ ३ ॥
एगुत्तरा उ ठाणा सव्वट्ठे चेव जाव पण्णासा।
एक्केक्कट्ठाणे पुरिसजुगा होंति असंखेज्जा ॥ ४ ॥"
इत्यादि।

इसका तात्पर्य यह है कि ऋषभ और अजित तीर्थकरोंके अन्तराल कालमें ऋषभ वंशके जो राजा हुए उनकी और गतियोंको छोड़कर केवल शिवगति और अनुत्तरोपपातकी प्राप्तिका प्रतिपादन करनेवाली गण्डिका चित्रा तरंगडिका कहलाती है। इसका पूर्वाचार्योंने ऐसा प्ररूपण किया है कि सगरचक्रवर्तीके सुबुद्धिनामक महामात्यने अष्टापद पर्वतपर सगरचक्रीके पुत्रोंको भगवान् ऋषभके वंशज आदित्ययश आदि राजाओंकी संख्या इस प्रकार बताई—उक्त आदित्ययश आदि नाभेयवंशज राजा त्रिखंड भरतार्धका पालन करके अंत समय पारमेश्वरी दीक्षा धारण कर उसके प्रभावसे सब कर्मोंका क्षय करके चौदह लाख निरन्तर क्रमसे सिद्धिको प्राप्त हुए और

अनन्तर एक सर्वार्थसिद्धिको गया। फिर चौदह लाख निरन्तर मोक्षको गये और पश्चात् एक फिर सर्वार्थसिद्धिको गया। इसीप्रकार क्रमसे वे मोक्ष और सर्वार्थसिद्धिको तबतक जाते रहे जबतक कि सर्वार्थसिद्धिमें एक एक करके असंख्य होगये। इसके पश्चात् पुनः निरंतर चौदह चौदह लाख मोक्षको और दो दो सर्वार्थसिद्धिको तबतक गये जबतक कि ये दो दो भी सर्वार्थसिद्धिमें असंख्य होगये। इसीप्रकार क्रमसे फिर चौदह लाख मोक्षगामियोंके अनन्तर तीन तीन, फिर चार चार करके पचास पचास तक सर्वार्थसिद्धिको गये और सभी असंख्य होते गये। इसके पश्चात् क्रम बदल गया और चौदह लाख सर्वार्थसिद्धिको जाने के पश्चात् एक एक मोक्षको जाने लगा और पूर्वोक्त प्रकारसे दो दो फिर तीन तीन करके पचास तक गये और सब असंख्य होते गये। फिर दो लाख निर्वाणको, फिर दो लाख सर्वार्थसिद्धिको, फिर तीन तीन लाख। इस प्रकारसे दोनों ओर यह संख्या भी असंख्य तक पहुंच गई। यह सब चित्रान्तरगंडिकामें दिखाया गया था। उसके आगे चार प्रकारकी और चित्रान्तरगंडिकायें थीं—एकादिका एकोत्तरा, एकादिका द्व्युत्तरा, एकादिका त्र्युत्तरा और द्व्यादिका द्व्यादिविषमोत्तरा, जिनमें भी और और प्रकारसे मोक्ष और सर्वार्थसिद्धिको जानेवालोंकी संख्याएं बतायी गई थीं।

जान पड़ता है, इन सब संख्याओंका उपयोग अनुयोगके विषयकी अपेक्षा गणितकी भिन्न-भिन्न धाराओंके समझानेमें ही अधिक होता होगा।

चूलिका

प्रथम चार पूर्वोंकी चूलिकाएं ही इसके अंतर्गत हैं। इन चूलिकाओंकी संख्या ४+१२+८+१०=३४ है

पांच चूलिकाओंके अन्तर्गत विषय

१ **जलगया**—जलगमण—जलत्थंभण—कारण—मंत—तंत—तवच्छरणाणि वण्णेदि।

२ **थलगया**—भूमिगमणकारण—मंत—तंत—तवच्छरणाणि वत्थुविज्ज भूमिसंबंधमण्णं पि सुहासुहकारणं वण्णेदि।

३ **मायागया**—इन्दजालं वण्णेदि

४ **रूवगया**—सीह—हय—हरिणादि—रूवायारेण परिणमणहेदु—मंत तंत—तवच्छरणाणि चित्त—कट्ठ—लेप्प—लेणकम्मादि लक्खणं च वण्णेदि।

५ **आयासगया**—आगासगमणणिमित्त—मंत—तंत—तवच्छरणाणि वण्णेदि।

श्वेताम्बर ग्रंथोंमें यद्यपि चूलिका नामका दृष्टिवादका पांचवां भेद गिना गया है, किंतु उसके भीतर न तो कोई ग्रंथ बताये गये और न कोई विषय, केवल इतना कह दिया गया है कि—

सा ओ ता चूलिआओ ? चूलिआओ आइल्लाण चउण्ह पुव्वाण चूलिआ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलिआइं, एसा संचूलिआ।

अर्थात् प्रथम चार पूर्वोंकी जो चूलिकाएं बता आये हैं वे ही चूलिकाएं यहां गिन लेना चाहिये। किन्तु, यदि ऐसा है तो चूलिकाओंको पूर्वोंका ही भेद रहना था, दृष्टिवादका एक अलग भेद बताकर उसका एक दूसरे भेदके अन्तर्गत निर्देश करनेसे क्या विशेषता आई ? फिर भी टीकाकार यह तो स्पष्ट बतलाते हैं कि दृष्टिवादका जो विषय परिकर्म, सूत्र, पूर्व और अनुयोगमें अनुक्त रहा वह चूलिकाओंमें संग्रह किया गया—

'इह चूला शिखरमुच्यते, यथा मेरौ चूला। तत्र चूला इव चूला। दृष्टिवादे परिकर्म सूत्र पूर्वानुयोगे अनुक्तार्थसंग्रहपरा ग्रन्थपद्धतयः। × × × एताश्च सर्वस्यापि दृष्टिवादस्योपरि किल स्थापितास्तथैव च पठ्यन्ते।' (नन्दीसूत्र टीका)

इससे तो जान पड़ता है कि उन्हें पूर्वोंके भीतर बतलानेमें कुछ गड़बड़ी हुई है।

दिगम्बर मान्यतामें पूर्वोंके भीतर कोई चूलिकाएं नहीं गिनाई गईं। उनके जो पांच प्रभेद बतलाये गये हैं उनका प्रथम चार पूर्वोंसे विषयका भी कोई सम्बन्ध नहीं है। वे जल, थल, माया, रूप और आकाश सम्बन्धी इन्द्रजाल और मंत्र तंत्रात्मक चमत्कारका प्ररूपण करती हैं, तथा अंतिम पांच पूर्वोंके मंत्रतंत्रात्मक विषयका सारांश लिये हुए हैं। प्रत्येक चूलिकाकी पदसंख्या २०९८९२०० बतलाई है, जिससे उनके भारी विस्तारका पता चलता है।

अब यहां पूर्वोंके उन अर्थोंका विशेष परिचय कराया जाता है जो धवला जयधवलाके भीतर ग्रथित हैं और जिनकी तुलनाका कोई साधन श्वेताम्बरीय उपयुक्त आगमोंमें नहीं पाया जाता। इनकी रचना आदिका इतिहास सत्प्ररूपणा प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिया जा चुका है जिसका मतलब यह है कि भगवान् महावीरके पश्चात् क्रमशः अट्ठाईस आचार्य हुए जिनका श्रुतज्ञान धीरे धीरे कम होता गया। ऐसे समयमें दो भिन्न भिन्न आचार्योंने दो भिन्न भिन्न पूर्वोंके अन्तर्गत एक एक पाहुडका उद्धार किया। धरसेनाचार्यने पुष्पदन्त और भूतबलिको जो श्रुत पढ़ाया उसपरसे उन्होंने द्वितीय पूर्व आग्रायणीके एक पाहुडका उद्धार सूत्ररूपसे किया। आग्रायणीपूर्वके अन्तर्गत निम्न चौदह 'वस्तु' नामक अधिकार थे—पुव्वंत, अवरंत, धुव, अधुव, चयणलद्धी, अद्धुवम, पणिधिकप्प, अट्ठ, भौम्म, वयादिय, सव्वट्ठ, कप्पणिज्जाण, अतीद सिद्ध बद्ध और अणागय सिद्ध-बद्ध।

हम ऊपर बतला ही आये हैं कि पूर्वोंकी प्रत्येक वस्तुमें नियमसे बीस बीस पाहुड रहते थे। अग्रायणी पूर्वकी पंचम वस्तु चयनलब्धिके बीस पाहुडोंमें चौथे पाहुडका नाम **कम्मपयडी** या **महाकम्मपयडी** अथवा वेयणकसिणपाहुड × था। इसीका उद्धार पुष्पदन्त और भूतबलिने

× कम्माणं पयडिसरूवं वण्णेदि, तेण कम्मपयडिपाहुडे त्ति गुणणामं। वेयणकसिणपाहुडे त्ति वि तस्स बिदियं णाममत्थि। वेयणा कम्माणमुदयं, तं कसिणं णिरवसेसं वण्णेदि अदो वेयणकसिणपाहुडमिदि एदमवि गुणणामं (ध प १, पृ १२४, १२५)

सत्ररूपसे षट्खण्डागमके भीतर किया। इस पाहुडके जो चौबीस अवान्तर अधिकार थे, उनके विषयका संक्षेप परिचय धवलाकारने वेदनाखण्डके आदिमें कराया है जो इस प्रकार है—

१ **कदि**—कदीए ओरालिय-वेउव्विय-तेजाहार-कम्मइयसरीराणं संघादण-परिसादणकदी ओ भवपढमापढम-चरिमम्मि ट्ठिदजीवाणं कदि-णोकदि-अवत्तव्वसखाओ च परूविज्जंति।

१ **कृति**—कृति अर्थाधिकारमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस, आहारक और कार्मण, इन पाचों शरीरोंकी संघातन और परिशातनरूप कृतिका तथा भवके प्रथम, अप्रथम और चरम समयमें स्थित जीवोंके कृति, नोकृति और अवक्तव्यरूप संख्याओंका वर्णन है।

२ **वेदणा**—वेदणाए कम्म-पोग्गलाणं वेदणासण्णिदाणं वेदण-णिक्खेवादि-सोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

२ **वेदना**—वेदना अर्थाधिकारमें वेदनासंज्ञिक कर्मपुद्गलोंका वेदनानिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा वर्णन किया गया है।

३ **फास**—फासणिओगद्दारम्मि कम्म-पोग्गलाणं णाणावरणादिभेएण अट्ठभेदमुवगयाणं फास-गुणसंबंधेण पत्त-फासणामाणं फासणिक्खेवादिसोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

३ **स्पर्श**—स्पर्श अर्थाधिकारमें स्पर्श गुणके सम्बन्धसे प्राप्त हुए स्पर्शनिर्माण, स्पर्शनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादिके भेदसे आठ भेदको प्राप्त हुए कर्मपुद्गलोंका वर्णन किया गया है।

४ **कम्म**—कम्मेत्ति अणिओगद्दारे पोग्गलाणं णाणावरणादिकम्मकरणक्खमत्तणेण पत्त-कम्मसण्णाणं कम्मणिक्खेवादिसोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

४ **कर्म**—कर्म अर्थाधिकारमें कर्मनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादि कर्मकरणमें समर्थ होनेसे जिन्हें कर्मसंज्ञा प्राप्त हो गई है, ऐसे पुद्गलोंका वर्णन किया गया है।

५ **पयडि**—पयडि त्ति अणियोगद्दारम्हि पोग्गलाणं कदिम्हि परूविद-संघादाणं वेदणाए पण्णविदावत्थाविसेस-पच्चयादीणं फासम्मि णिरूविद-सबंधाणं पयडिणिक्खेवादि-सोलस-अणियोगद्दारेहि सहावपरूवणा कीरदे।

५ **प्रकृति**—प्रकृति अर्थाधिकारमें कृति अधिकारमें कहे गये संघातनरूप, वेदना अधिकारमें कहे गये अवस्थाविशेष प्रत्ययादिरूप, स्पर्शमें कहे गये जीवसे सम्बद्ध और जीवके साथ सम्बद्ध होनेसे उत्पन्न हुए गुणके द्वारा कर्म अधिकारमें कथित रूपसे व्यापार करनेवाले पुद्गलोंके स्वभाव

का निरूपण प्रकृतिनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा किया गया है।

६ **बंधण**-जं तं बंधणं तं चउव्विहं-बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविहाणमिदि। तत्थ बंधो जीवकम्मपदेसाणं सादियमणादियं च बंधं वण्णदि। बंधगाहियारो अट्ठविहकम्म बंधगे परूवेदि, सो च खुद्दाबंधे परूविदो। बंधणिज्जं बंधपाओग्गं तदपाओग्गं पोग्गल दव्वं परूवेदि। बंधविहाणं पयडिबंध ट्ठिदिबंध अणुभागबंध पदेसबंधं च परूवेदि।

६ **बन्धन**-बंध, बंधक, बंधनीय और बंधविधान, इसप्रकार बंधन अर्थाधिकारके चार भेद हैं। उनमेंसे बन्ध अधिकार जीव और कर्मप्रदेशोंका सादि और अनादिरूप बंधका वर्णन करता है। बंधक अधिकार आठ प्रकारके कर्मोंके बंधकका प्रतिपादन करता है जिसका कथन क्षुल्लकबंधमें किया जा चुका है। बंधके योग्य पुद्गलद्रव्यका कथन बंधनीय अधिकार करता है। बंधविधान अधिकार प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुभागबंध और प्रदेशबंध, इन चार बंधके भेदोंका कथन करता है।

७ **णिबंधण**-णिबंधणं मूलुत्तरपयडीणं णिबंधणं वण्णेदि। जहा चक्खिंदियं रूवम्मि णिबद्धं, सोदिंदियं सद्दम्मि णिबद्धं, घाणिंदियं गंधम्मि णिबद्धं, जिब्भिंदियं रसम्मि णिबद्धं, पासिंदियं कक्खडादिफासेसु णिबद्धं, तहा इमाओ पयडीओ एदेसु अत्थेसु णिबद्धाओ त्ति णिबंधणं परूवेदि, एसो भावत्थो।

७ **निबन्धन**-निबंधन अधिकार मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृतियोंके निबंधनका कथन करता है। जैसे, चक्षुरिन्द्रिय रूपमें निबद्ध है। श्रोत्रेन्द्रिय शब्दमें निबद्ध है। घ्राणेन्द्रिय गंधमें निबद्ध है। जिह्वा इन्द्रिय रसमें निबद्ध है और स्पर्शनेन्द्रिय कर्कश आदि स्पर्शोंमें निबद्ध है। उसीप्रकार ये मूलप्रकृतियां और उत्तरप्रकृतियां इन विषयोंमें निबद्ध हैं, इसप्रकार निबंधन अर्थाधिकार प्ररूपण करता है यह भावार्थ जानना चाहिये।

८ **पक्कम**-पक्कमेत्ति अणियोगद्दारं अकम्मसरूवेण ट्ठिदाणं कम्मइयवग्गणाखंधाणं मूलुत्तर पयडिसरूवेण परिणममाणाणं पयडि ट्ठिदि-अणुभागविसेसेण विसिट्ठाणं पदेसपरूवणं

८ **प्रक्रम**-प्रक्रम अर्थाधिकार जो वर्गणास्कंध अभी कर्मरूपसे स्थित नहीं हैं, किंतु जो मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृतिरूपसे परिणमन करनेवाले हैं और जो प्रकृति, स्थिति और

कुणदि।

अनुभागकी विशेषतासे वैशिष्ट्यको प्राप्त हैं ऐसे कर्मवर्गणास्कन्धोंके प्रदेशोंका प्ररूपण करता है।

९ उवक्कम--उवक्कमत्ति अणियोगद्दारस्स चत्तारि अहियारा--बंधणोवक्कमो उदीरणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि। तत्थ बंधोवक्कमो बंधविदियसमयप्पहुडि अट्ठण्ण कम्माण पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसाण बंधणणं कुणदि। उदीरणोवक्कमो पयडि ट्ठिदि-अणुभागपदेसाणमुदीरणं परूवेदि। उवसामणोवक्कमो पसत्थोवसामणमप्पसत्थोवसामणाण च पयडि-ट्ठिदि अणुभाग-पदेसभेदाभिण्ण परूवेदि। विपरिणामवुवक्कमो पयडि ट्ठिदि अणुभाग पदेसाण देसणिज्जर सयलणिज्जर च परूवेदि।

९ उपक्रम--उपक्रम अर्थाधिकारके चार अधिकार हैं बन्धनोपक्रम, उदीरणोपक्रम, उपशामनोपक्रम और विपरिणामोपक्रम। उनमेंसे बन्धनोपक्रम अधिकार बन्ध होनेके दूसरे समयसे लेकर प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशरूप ज्ञानावरणादि आठों कर्मोंके बन्धका वर्णन करता है। उदीरणोपक्रम अधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी उदीरणाका कथन करता है। उपशामनोपक्रम अधिकार, प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए प्रशस्तोपशमना और अप्रशस्तोपशमनाका कथन करता है। विपरिणामोपक्रम अधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी देशनिर्जरा और सकलनिर्जराका कथन करता है।

१० उदय--उदयाणियोगद्दार पयडि ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसुदय परूवेदि।

१० उदय--उदय अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंके उदयका कथन करता है।

११ मोक्ख--मोक्खो पुण देस सयलणिज्जराहि परपयडिसकमोकड्डणुक्कड्डण--अद्धट्ठिदिगलणेहि पयडि ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसभिण्ण मोक्ख वण्णेदि त्ति अत्थभेदो।

११ मोक्ष--मोक्ष अर्थाधिकार देशनिर्जरा और सकलनिर्जराकेद्वारा परप्रकृतिसंक्रमण, उत्कर्षण अपकर्षण और स्थितिगलनसे प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्धका आत्मासे भिन्न होना मोक्ष है, इसका वर्णन करता है।

१२ संकम--सकमेत्ति अणियोगद्दार पयडि ट्ठिदि-अणुभाग-पदेससकमे परूवेदि।

१२ संक्रम--संक्रम अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंके संक्रमणका प्ररूपण करता है।

१३ लेस्सा-लेस्सेत्ति अणिओगद्दारं छल्लेस्साओ परूवेदि ।

१४ लेस्सायम्म-लेस्सापरिणामेत्ति अणियोगद्दारमनरग-छलेस्सा परिणयजीवाण वण्ण फज्जपरूवण कुणदि ।

१५ लेस्सापरिणाम-लेस्सापरिणामेत्ति अणियोगद्दारं जीव-पोग्गलाण दव्व भावलेस्सादि परिणमणविहाणं परूवेदि ।

१६ सादमसाद-सादमसादेत्ति अणियोगद्दारमनसाद-असाददाण (१) गदियादि मग्गणाओ अस्सिदूण परूवणं कुणइ ।

१७ दीहरहस्स-दीहरहस्सेत्ति अणियोगद्दार पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग पदेसे अस्सिदूण दीहरहस्सत्त परूवदि ।

१८ भवधारणीय-भवधारणीए त्ति अणियोग दार केण कम्मेण णारइय तिरिक्ख-मणुस देवभवा धरिज्जंति त्ति परूवेदि ।

१९ पोग्गलत्त-पोग्गलत्तेत्ति अणिओगद्दार गह णादो अत्ता पोग्गला परिणामदो अत्ता पोग्गला उवभोगदो अत्ता पोग्गला आहारदो अत्ता पोग्गला ममत्तादो अत्ता पोग्गला परिग्गहादो अत्ता पोग्गला त्ति अप्पणिज्जाणप्पणिज्ज पोग्गलाण पोग्गलाणं सरूवं पोग्गलत्त पत्तजीवाण च परूवण कुणदि ।

१३ लेश्या– [illegible] लेश्याओंका [illegible] करता है ।

१४ लेश्याकर्म–[illegible] लेश्याओंसे [illegible] करता है ।

१५ लेश्यापरिणाम–[illegible] पुद्गलोंके द्रव्य और भावलेश्या [illegible] करता है ।

१६ सातासात–[illegible] अनुयोगद्वार [illegible], [illegible] अनेकान्त [illegible] आदि [illegible] आश्रय [illegible] करता है ।

१७ दीर्घ-ह्रस्व–[illegible] अनुयोगद्वार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंका आश्रय लेकर दीर्घता और ह्रस्वताका कथन करता है ।

१८ भवधारणीय–भवधारणीय अनुयोगद्वार, किस कर्मसे नरकभव प्राप्त होता है, किससे तिर्यंचभव, किससे मनुष्यभव और किससे देवभव प्राप्त होता है, इसका कथन करता है ।

१९ पुद्गलात्त–पुद्गलात्त अनुयोगद्वार ग्रहणकी अपेक्षा आत्त पुद्गलोंका, मिथ्यात्वादि परिणामोंसे आत्त पुद्गलोंका, उपभोगसे आत्त पुद्गलोंका, आहारसे आत्त पुद्गलोंका, ममत्वसे आत्त पुद्गलोंका और परिग्रहसे आत्त पुद्गलोंका, इसप्रकार आत्मसात् किये हुए और नहीं किये हु[illegible]

पुद्गलोंका तथा पुद्गलके संबन्धसे पुद्गलत्वको प्राप्त हुए जीवोंका वर्णन करता है।

२० **णिधत्तमणिधत्त**— णिधत्तमणिधत्तमिदि अणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि-अणुभागाणं णिधत्तमणिधत्तं च परूवेदि। णिधत्तमिदि किं? जं पदेसग्गं ण सक्कमुदए दादुं अण्णपयडिं वा संकामेदुं तं णिधत्तं णाम। तव्विवरीयमणिधत्तं।

२० **निधत्तानिधत्त**–निधत्तानिधत्त अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनुभागके निधत्त और अनिधत्तका प्रतिपादन करता है। जिसमें प्रदेशाग्र उदय अर्थात् उदीरणामें नहीं दिया जा सकता है और अन्य प्रकृतिरूप संक्रमणको भी प्राप्त नहीं कराया जा सकता है, उसे निधत्त कहते है। अनिधत्त इससे विपरीत होता है।

२१ **णिकाचिदमणिकाचिद**--णिकाचिदमणिकाचिदमिदि अणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि-अणुभागाणं णिकाचणं परूवेदि। णिकाचणमिदि किं? जं पदेसग्गं ण सक्कमोकड्डिदुमण्णपयडिं संकामेदुमुदए दादुं वा तण्णिकाचिदं णाम। तव्विवरीदमणिकाचिदं।

२१ **निकाचितानिकाचित**–निकाचितानिकाचित अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनुभागके निकाचित और अनिकाचितका वर्णन करता है। जिसमें प्रदेशाग्रका उत्कर्पण, अपकर्पण, परप्रकृतिसंक्रमण नहीं हो सकता और न वह उदय अथवा उदीरणा में ही दिया जा सकता है उसे निकाचित कहते है। अनिकाचित इससे विपरीत होता है।

२२ **कम्मट्ठिदि**–कम्मट्ठिदि त्ति अणियोगद्दारं सव्वकम्माणं सत्तिकम्मट्ठिदिमुक्कड्डणोकड्डणजणिदट्ठिदिं च परूवेदि।

२२ **कर्मस्थिति**–कर्मस्थिति अनुयोगद्वार संपूर्ण कर्मोंकी शक्तिरूप कर्मस्थितिका और उत्कर्पण तथा अपकर्पणसे उत्पन्न हुई कर्मस्थितिका वर्णन करता है।

२३ **पच्छिमक्खंध**-पच्छिमक्खंधेति अणिओगद्दारं दंड-कवाट-पदर-लोगपूरणाणि तत्थ ट्ठिदि-अणुभागखंडयघादणविहाणं जोगकिट्टीओ काऊण जोगणिरोहसरूवं कम्मक्खवणविहाणं च परूवेदि।

२३ **पश्चिमस्कन्ध**–पश्चिमस्कन्ध अर्थाधिकार दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरणरूप समुद्घातका, इस समुद्घातमें होनेवाले स्थितिकाण्डकघात और अनुभागकाण्डकघातके विधानका, योगोंकी कृष्टि करके होनेवाले योगनिरोधके स्वरूपका और कर्मक्षपणके विधानका वर्णन करता है।

२४ अप्पाबहुग— अप्पाबहुगाणिओगद्दारं अदीदसव्वाणिओगद्दारेसु अप्पाबहुगं परूवेदि।	२४ अल्पबहुत्व—अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार अतीत सम्पूर्ण अनुयोगद्वारोंमें अल्पबहुत्वका प्रतिपादन करता है।

इन चौबीस अधिकारोंके विषयका प्रतिपादन पुष्पदन्त और भूतबलिने कुछ अपने स्वतंत्र विभाग से किया है जिसके कारण उनकी कृति षट्खंडागम कहलाती है। उक्त चौबीस अधिकारोंमें पांचवां बंधन विषयकी दृष्टिसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। इसीके कुछ अवान्तर अधिकारोंको लेकर प्रथम तीन खंडों अर्थात् जीवट्ठाण, खुद्दाबंध और बंधसामित्तविचयकी रचना हुई है। इन तीन खंडोंमें समानता यह है कि उनमें जीवकी बंधकर्त्ताकी प्रधानतासे प्रतिपादन किया गया है। उनका मंगलाचरण भी एक है। इन्हीं तीन खंडोंपर कुन्दकुन्दद्वारा परिकर्म नामक टीका लिखी कही गयी है। इन्हीं तीन खंडोंके पारगत होनेसे अनुमानतः त्रैविद्यदेवकी उपाधि प्राप्त होती थी। इन्हीं तीन खंडोंका संक्षेप सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमिचन्द्रकृत गोम्मटसारके प्रथम विभाग जीवकांडमें पाया जाता है।

इन तीन खंडोंके पश्चात् उक्त चौबीस अधिकारोंका प्ररूपण कृति वेदनादि क्रमसे किया गया है और प्रथम छह अर्थात् बंधन तकके प्ररूपणको अधिकार व अवान्तर अधिकारकी प्रधानतानुसार अगले तीन खंडों वेदना, वर्गणा और महाबंधमें विभाजित कर दिया गया है। इन तीन खंडोंके विषय विवेचनकी समानता यह है कि यहां बंधनीय कर्मकी प्रधानतासे विवेचन किया गया है। इनमें अंतिम महाबंध सबसे बड़ा है और स्वतंत्र पुस्तकारूढ़ है। जो उपर्युक्त तीन खंडोंके अतिरिक्त इन तीनोंमें भी पारगत हो जाते थे, वे सिद्धान्तचक्रवर्ती पदके अधिकारी होते थे। सि. च. नेमिचन्द्रने इनका संक्षेप गोम्मटसार कर्मकांडमें किया है।

भूतबलि रचित सूत्रग्रंथ छठवें बंधन अधिकारके साथही समाप्त हो जाता है। शेष निबंधनादि अठारह अधिकारोंका प्ररूपण धवला टीकाके रचयिता वीरसेनाचार्यकृत है, जिसे उन्होंने चूलिका कहकर पृथक् निर्देश कर दिया है।

उपर्युक्त खंडविभागादिका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये हुए मानचित्रोंसे स्पष्टतया समझमें आजाता है। उन चित्रोंमें बतलायी हुई जीवट्ठाणकी नवमीं चूलिका गति आगतिकी उत्पत्तिके विषयमें एक सूचना कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। वह चूलिका धवलामें वियाहपण्णत्ति से उत्पन्न हुई कही गयी है। मानचित्रमें व्याख्याप्रज्ञप्तिके आगे (पांचवां अंग) ऐसा लिख दिया गया है, क्योंकि यह नाम पांचवें अंगका पाया जाता है। किंतु दृष्टिवादके प्रथम विभाग परिकर्मके पांच भेदोंमें भी पांचवां भेद वियाहपण्णत्ति नामका पाया जाता है। अतएव संभव है कि गति-आगति चूलिकाकी उत्पादक वियाहपण्णत्तिसे इसीका अभिप्राय हो।

पाचवें पूर्व णाणपवाद (ज्ञानप्रवाद) के एक पाहुडका उद्धार गुणधराचार्यद्वारा गाथारूपमें किया गया। णाणपवादकी बारह वस्तुओंमेंसे दशम वस्तुके तीसरे पाहुडका नाम 'पेज्ज' या 'पेज्जदोस' या 'कसाय' पाहुड था। इसीका गुणधराचार्यने १८० गाथाओं (और ५३ विवरण-गाथाओंमें) उद्धार किया, जिसका नाम कसायपाहुड है। इसका परिचय स्वयं सूत्रकार व टीकाकारके शब्दोंमें संक्षेपतः इसप्रकार है—

पुव्वम्मि पंचमम्मि दु दसमे वत्थुम्मि पाहुडे तदिये।
पेज्जं ति पाहुडम्मि दु हवदि कसायाण पाहुडं णाम ॥ १ ॥

* * *

गाहासदे असीदे अत्थे पण्णरसधा विहत्तम्मि।
वोच्छामि सुत्तगाहा जइ गाहा जम्मि अत्थम्मि ॥

टीका—सोलसपदसहस्सेहि बे कोडाकोडिएगसट्ठिलक्ख-सत्तावण्णसहस्स बेसद बाणउदिकोडि-बासट्ठिलक्ख अट्ठसहस्सक्खरुप्पण्णेहि जं भणिदं गणहरदेवेण इंदभूदिणा कसायपाहुडं तमसीदि-सदगाहाहि चेव जाणाविमि त्ति गाहासदे असीदे त्ति पढमपइज्जा कदा। तत्थ अणेगेहि अत्थाहियारेहि परूविदं कसाय-पाहुडमेत्थ पण्णारसेहि चेव अत्थाहियारेहि परूवेमि त्ति जाणावणट्ठं अत्थे पण्णारसधा विहत्तम्मि त्ति बिदियपइज्जा कदा। × × ×।

* * *

संपहि कसायपाहुडस्स पण्णारस अत्थाहियार परूवणट्ठं गुणहरभडारओ दो सुत्तगाहाओ पढदि—

पेज्जदोस विहत्ती ट्ठिदि अणुभागे च बंधगे चेय।
वेदगउवजोगे वि य चउट्ठाण वियंजणे चेय ॥
सम्मत्त देसविरयी संजम उवसामणा च खवणा च।
दंसण चरित्तमोहे अद्धापरिमाणणिद्देसो ॥

इसका तात्पर्य यह है कि यह कसायपाहुड पंचम पूर्वकी दसम वस्तुके पेज्जनामक तृतीय पाहुडसे उत्पन्न हुआ है। इन्द्रभूति गौतमकृत उस मूलग्रंथका परिमाण बहुत भारी था और अधिकार भी अनेक थे। प्रस्तुत कसायपाहुडमें १८० गाथाएं १५ अधिकारोंमें विभक्त हैं। गाथाओंमें सूचित पन्द्रह अधिकार जयधवलाकारने तीन प्रकारसे बतलाये हैं। इनमेंसे जो विभाग उन्होंने चूर्णिकार यतिवृषभके आधारसे दिये हैं, वे निम्नप्रकार हैं—

१ पेज्जदोस	५ उदय (कर्मोदय) } वेदग
२ विहत्ती-ट्ठिदि अणुभाग	६ उदीरणा (अकर्मोदय) } वेदग
३ बंधग (अकर्मबंध) } बंधग	७ उवजोग
४ संकम (कर्मबंध) } बंधग	८ चउट्ठाण

९. [illegible]
१० [illegible] }
११ ,, , [illegible] } [illegible]
१२ [illegible]
१३ [illegible] }
१४ — — [illegible] } [illegible]
१५ [illegible]

इस [illegible] है—

' [illegible] । [illegible] । [illegible] तथा [illegible] । [illegible] । [illegible] × × [illegible] ।

[illegible] आचार्य-[illegible] । [illegible] आर्यमंक्षु और नागहस्ती [illegible], जिन्होंने [illegible] उसका [illegible] किया । [illegible] ।

[illegible] और जिनसेना [illegible] है जिसका [illegible] ६० हजार [illegible] है । इस टीकामें आर्यमंक्षु और नागहस्ति, [illegible] तथा [illegible] वृत्तिसूत्रके भी अनेक उल्लेख [illegible] हैं । [illegible] चूर्णिसूत्रोंकी संख्या छह हजार और वृत्तिसूत्रोंकी बारह हजार [illegible] है ।

[illegible] प्रसंगोंमें पाहुडों और पाहुडिकाओंका भी निम्नप्रकार उल्लेख है, किंतु [illegible] नहीं पाया जाता—

' [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] पाहुडियाओ, [illegible] पाहुडपाहुडियाओ [illegible], [illegible] ' आदि

६. ग्रंथका विषय

[illegible] और मार्गणास्थानोंका विवरण, [illegible] धवलाकार वीरसेन स्वामी उन्होंका [illegible] —

[illegible] (पृ [illegible])

किन्तु इस विशेष प्ररूपणमे उन्होंने गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति आदि बीस प्ररूपणाओं द्वारा जीवोंकी परीक्षा की है। यह बीस प्ररूपणाओंका विभाग पूर्वोक्त सत्प्ररूपणाके सूत्रोंमें नहीं पाया जाता, और इसलिये टीकाकारने एक शका उठाकर यह बतला दिया है कि सूत्रोंमें स्पष्टत उल्लिखित न होने पर भी इन बीस प्ररूपणाओंका सूत्रकारकृत गुणस्थान और मार्गणास्थानोंके भेदोंमे अन्तर्भाव हो जाता है, अत ये प्ररूपणाए सूत्रोक्त नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता (पृ ४१४)।

'सूत्रेण सूचितार्थाना स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणाच्यते'। 'न पौनरुक्त्यमपि कथचित्तेभ्यो भेदात्'। (पृ ४१५)

इससे यह तो स्पष्ट है कि यह बीस प्ररूपणारूप विभाग पुष्पदन्ताचार्यकृत नहीं है। वह स्वय टीकाकारकृत भी नहीं है, क्योंकि उन्होंने उन प्ररूपणाओंका नामनिर्देश करनेवाली एक प्राचीन गाथाको 'उक्त च' रूपमे उद्धृत किया है। इस विभागका प्राचीनतम निरूपण हमें यतिवृषभाचार्य कृत तिलोयपण्णत्तिमें मिलता है। यथा–

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो।
उवजोगा कहिदव्वा णारइयाण जहाजोग्गं ॥२७३॥

* *

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो।
उवजोगा कहिदव्वा एदाण कुमारदेवाण ॥१८३॥

आदि

किन्तु यह अभी निश्चयत नहीं कहा जा सकता कि इस बीस प्ररूपणारूप विभागका आदिकर्ता कौन है? यह विषय अन्वेषणीय है।

गुणस्थानो व मार्गणास्थानके अनेक भेद प्रभेदोंका विशिष्ट जीवोंकी अपेक्षासे सामान्य, पर्याप्त व अपर्याप्त रूप प्ररूपण करनेसे आलापोंकी सख्या कई सो पर पहुच जाती है। इस आलाप विभागका परिचय विषय–सूचीको देखनेसे मिल सकता है। अत उस सम्बन्धमें यहा विशेष कथनकी आवश्यकता नहीं है। प्रथम भागकी भूमिकामें गुणस्थानों और मार्गणाओंका सामान्य परिचय देकर यह सूचित किया गया था कि अगले खडमें विषयका विशेष विवेचन किया जायगा। किन्तु इस भागका कलेवर अपेक्षासे अधिक बढ गया है और प्रस्तावना भी अन्य उपयोगी विषयोंकी चर्चासे यथेष्ट विस्तृत हो चुकी है। अत हम उक्त विषयके विशेष विवेचन करनेकी आकाक्षाका अभी फिर भी नियत्रण करते हैं।

७ रचना और भाषाशैली

प्रस्तुत ग्रंथविभागमें सूत्र नहीं हैं। सत्प्ररूपणाका जो विषय ओघ और आदेश अर्थात् गुणस्थान और मार्गणास्थानोंद्वारा प्रथम १७७ सूत्रोंमें प्रतिपादित हो चुका है उसीका यहां बीस प्ररूपणाओं द्वारा निर्देश किया गया है।

इस खास प्रकारका प्ररूपणाके आदिमें टीकाकारने 'ओघेण अत्थि मिच्छाइट्टी० सिद्धा चेदि' इस प्रकारसे सूत्र दिया है और उसे ओघसूत्र कहा है। हमारी अ प्रतिमें इसपर ७४, आ में १७४, तथा स में १७५ का संख्या पायी जाती है जो उन प्रतियोंकी पूर्व सूत्रगणनाके क्रमसे है। पर स्पष्टत यह सूत्र पृथक् नहीं है, धवलाकारने पूर्वोक्त ९ से २३ तकके ओघ सूत्रोंका प्रस्तुत विषयका वहांसे उत्पत्ति बतलाने के लिये सामासिकरूपसे उल्लेख मात्र किया है।

इस भागमें गाथाएं भी बहुत थो। पायी जाती है, जिसका कारण यहां प्रतिपादित विषयकी विशेषता है। अवतरण गाथाओंकी संख्या यहां केवल १३ है जिनमेंसे एक (न २२०) कुंद कुंदके बोधपाहुडमें और दो (२२३, २२४) प्राकृत पंचसंग्रहमें* भी पाया जाता हैं। गाथा न (२२८) 'उत्त च पिंडियाए' ऐसा कहकर उद्धृत की गई है। हमने इस गाथाकी खोज कराई, पर वीरसेवामंदिरके प परमानन्दजी शास्त्रीने हमें सूचित किया कि यह गाथा न तो प्राकृत पंचसंग्रह में है न तिलोयपण्णत्तिमें और न श्वेताम्बरीय कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह, जीवसमास विशेषावश्यक आदि ग्रंथोंमें है। जान पड़ता है 'पिंडिका' नामका कोई प्राचीन ग्रंथ रहा है जो अवतक अज्ञात है। इन तीन गाथाओंको छोड़कर शेष सब कहीं जैसी की तैसी और कहीं किंचित् पाठभेद को लिये हुए गोम्मटसार जीवकांडमें भी संगृहीत हैं।

इस विभागमें संस्कृत केवल प्रारंभमें थोड़ी सी पायी जाती है। शेष समस्त रचना प्राकृतमें हुा है। पर यहां विषयकी विशेषता ऐसी है कि उसमें प्रतिपादन और विवेचनकी गुंजा इश कम है। अतएव जैसा साहित्यिक वाक्यशैली प्रथम विभागमें पायी जाती है वैसा यहां बहुत कम है। जहां कहीं शंका समाधानका प्रसंग आ गया है, वहीं साहित्यिक शैली पाया जाता है। ऐसे शंका समाधान इस विभागमें ३३ पाये जाते हैं। शेष भागमें तो गुणस्थान और मार्गणास्थानकी अपेक्षा जीवविशेषोंमें गुणस्थान आदि बीस प्ररूपणाओंकी संख्या मात्र गिनायी गया है, जिसमें वाक्य रचनाकी व्याकरणात्मक शुद्धिपर ध्यान नहीं दिया गया। पद कहीं सविभक्तिक हैं और कहीं विभक्ति रहित अपनेप्रातिपदिक रूपमें। समास-बंधन भी शिथिलसा पाया जाता है, उदाहरणार्थ 'आहारभयमेहुणसण्णा चेदि' (पृ ४१२)। चेदि से पूर्वके पद समास

* यह ग्रंथ अभी अभी 'वारसेवा मन्दिर सरसावा' द्वारा प्रकाशमें लाया जा रहा है। उसमें उक्त गाथा आदि होनेकी सूचना हमें वहांके पं परमानन्दजी शास्त्री द्वारा मिला।

युक्त समझे जाय, या अलग अलग ? यदि अलग अलग लें तो वे सब विभक्तिहीन रह जाते हैं, यदि समासरूप लें तो 'च' की कोई सार्थकता नहीं रह जाती। संशोधनमें यह प्रयत्न किया गया है कि यथाशक्ति प्रतियोंके पाठको सुरक्षित रखते हुए जितने कम सुधारसे काम चल सके उतना कम सुधार करना। किंतु अविभक्तिक पदोंको जानबूझकर विना यथेष्ट कारणके सविभक्तिक बनानेका प्रयत्न नहीं किया गया। इस कारण प्ररूपणाओंमें बहुतायतसे विभक्तिहीन पद पाये जायगे।

इन प्ररूपणाओंमें आलापोंके नामनिर्देश स्वभावत पुन पुन आये हैं। प्रतियोंमें इन्हें प्राय संक्षेपत आदिके अक्षर देकर विन्दु रखकर ही सूचित किया है, जैसे 'गुणट्ठाण' के स्थानपर गुण०, 'पज्जत्ताओ' के स्थानपर प० आदि। यदि सब प्रतियोंमें ये संक्षिप्त रूप एकसे होते, तो समझा जाता कि वे मूलादर्श प्रतिके अनुसार हैं, अत मुद्रितरूपमें भी उन्हें वैसे ही रखना कदाचित् उपयुक्त होता। किन्तु किसी प्रतिमें एक अक्षर लिखकर, किसीमें दो अक्षर लिखकर आदि भिन्नरूपसे संक्षेप बनाये गये हैं और किसी प्रतिमें वे पूरे रूपमें भी लिखे हैं। इसप्रकार विन्दुसहित संक्षिप्तरूप कारंजाकी प्रतिमें सबसे अधिक और आराकी प्रतिमें सबसे कम हैं। इस अव्यवस्थाको देखते हुए आदर्श प्रतिमें विन्दु हैं या नहीं, इस विषयमें शका हो जानेके कारण हमने इन संक्षिप्त रूपोंका उपयोग न करके पूरे शब्द लिखना ही उचित समझा।

प्रत्येक आलापमें बीस बीस प्ररूपणाएं हैं। पर कहीं कहीं प्रतियोंमें एक शब्दसे लगाकर पूरे आलाप तक भी छूटे हुए पाये जाते हैं। इनकी पूर्ति एक दूसरी प्रतियोंसे हो गई है, किन्तु कहीं कहीं उपलब्ध सभी प्रतियोंमें पाठ छूटे हुए हैं जैसा कि पाठ टिप्पण व प्रति-मिलान और छूटे हुए पाठोंकी तालिकासे ज्ञात हो सकेगा। इन पाठोंकी पूर्ति विषयको देख समझकर कर्ताकी शैलीमें ही उन्हींके अन्यत्र आये हुए शब्दोंद्वारा करदी गई है। जहा ऐसे जोड़े हुए पाठ एक दो शब्दोंसे अधिक बड़े हैं वहा वे कोष्ठकके भीतर रख दिये गये हैं।

मूलमें जहां कोई विवाद नहीं है वहा प्ररूपणाओंकी प्रत्येक स्थानमें संख्या मात्र दी गई है। अनुवादमें सर्वत्र उन प्ररूपणाओंकी स्पष्ट सूचना कर देनेका प्रयत्न किया गया है और मूलका सावधानीसे अनुसरण करते हुए भी वाक्यरचना यथाशक्ति मुहावरेके अनुसार और सरल रखी गई है।

मूलमें जो आलाप आये हैं उनको और भी स्पष्ट करने तथा दृष्टिपातमात्रसे ज्ञेय बनानेके लिये प्रत्येक आलापका नकशा भी बनाकर उसी पृष्ठपर नीचे दे दिया गया है। इनमें संख्याएं अंकित करनेमें सावधानी तो पूरी रखी गई है, फिर भी संभव है दृष्टिदोषसे दो चार जगह एकाध अंक अशुद्ध छप गया हो। पर मूल और अनुवाद साम्हने होनेसे उनके कारण पाठकोंको कोई भ्रम न हो सकेगा। नकशोंका मिलान गोम्मटसारके प्रस्तुत प्रकरणमें भी कर लिया गया है।

सत्प्ररूपणा-आलापसूची



सिरि-भगवत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदे

छक्खंडागमे

जीवट्ठाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइया टीका

धवला

सपहि सत-सुत्त-विवरण-समत्ताणंतर तेसिं परूवणं भणिस्सामो। परूवणा णाम किं उत्तं होदि? ओघादेसेहि गुणेसु जीवसमासेसु पज्जत्तीसु पाणेसु सण्णासु गदीसु इंदिएसु काएसु जोगेसु वेदेसु कसाएसु णाणेसु संजमेसु दंसणेसु लेस्सासु भविएसु अभविएसु सम्मत्तेसु सण्णि असण्णीसु आहारि-अणाहारीसु उवजोगेसु च पज्जत्तापज्जत्त-विसेसणेहि विसेसिऊण जा जीव-परिक्खा सा परूवणा णाम। उत्तं च—

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।
उवजोगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिया ॥२१७॥[1]

सत्प्ररूपणाके सूत्रोंका विवरण समाप्त हो जानेके अनन्तर अब उनकी प्ररूपणाका वर्णन करते हैं—

शंका—प्ररूपणा किसे कहते हैं?

समाधान—सामान्य और विशेषकी अपेक्षा गुणस्थानोंमें, जीवसमासोंमें, पर्याप्तियोंमें, प्राणोंमें, संज्ञाओंमें, गतियोंमें, इन्द्रियोंमें, कायोंमें, योगोंमें, वेदोंमें, कषायोंमें, ज्ञानोंमें, संयमोंमें, दर्शनोंमें, लेश्याओंमें, भव्योंमें, अभव्योंमें, सम्यक्त्वोंमें, संज्ञी असंज्ञियोंमें, आहारी अनाहारियोंमें और उपयोगोंमें पर्याप्त और अपर्याप्त विशेषणोंसे विशेषित करके जो जीवोंकी परीक्षा की जाती है, उसे प्ररूपणा कहते हैं। कहा भी है—

गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौदह मार्गणाएं और उपयोग, इस प्रकार क्रमसे वीस प्ररूपणाएं कही गई हैं ॥ २१७ ॥

१ गो. जी २

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो । पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे । प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः । के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति । नैतेषामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः, चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रियाणामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः; चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियाणां क्षयोपशमापेक्षया बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति, मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति, आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नायाः भाषावर्गणास्कन्धानां श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति, वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वाभावात्। तयोरुच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादा-

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं, अतः यहां पर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका—वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान—पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रियोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमके निमित्तसे उत्पन्न हुई इन्द्रियोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उसीप्रकार उक्त पांचों इन्द्रियोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रियोंको और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक मान लेनेमें विरोध आता है। उसीप्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक माननेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई भाषावर्गणाके स्कन्धोंका श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमकी और खल रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयकी एकता नहीं पाई जाती है। इसीप्रकार उच्छ्वासनिश्वास प्राण कार्य है और आत्मोपादानकारणक है तथा उच्छ्वासनिश्वासपर्याप्ति कारण है और पुद्गलोपा-

नयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउव्विहा आहार-भय मेहुण-परिग्गह सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिबन्धनमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेपलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति, लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञामादधानतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः । न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति, ज्ञानदृगावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता उत नोक्तेति ? किं चातः ? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति, सूत्रानुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्या-

दाननिमित्तक है, अतएव इन दोनोंमें भेद समझ लेना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है, आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ।

शंका—मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय विशेष स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है । इसीप्रकार परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदय रूप सामान्य लोभका भेद है । अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रहसंज्ञा कहते हैं, और लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं ।

शंका—यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है ।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं । वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है ।

शंका—यह वीस प्रकारकी प्ररूपणा रही आओ, किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं ?

प्रतिशंका—इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है ?

शंका—यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है, क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है । और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति, उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें

प्युपयोगसंज्ञानां मार्गणासु यथान्तर्भावो भवति तथा वक्तव्यमिति । न द्वितीयपक्षोक्तदोषोऽनभ्युपगमात् । प्रथमपक्षेऽन्तर्भावो वक्तव्यश्चेदुच्यते । पर्याप्तिजीवसमासाः कायेन्द्रियमार्गणयोर्निलीनाः, एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदानां तत्र प्रतिपादितत्वात् । उच्छ्वासभाषामनोबलप्राणाश्च तत्रैव निलीनाः, तेषां पर्याप्तिकार्यत्वात् । कायबलप्राणोऽपि योगमार्गणातो निर्गतः, बललक्षणत्वाद्योगस्य । आयुःप्राणो गतौ निलीनः, द्वयोरन्योन्याविनाभावित्वात् । इन्द्रियप्राणा ज्ञानमार्गणायां निलीनाः, भावेन्द्रियस्य ज्ञानावरणक्षयोपशमरूपत्वात्[1] । आहारे या तृष्णा कांक्षा साहारसंज्ञा । सा च रतिरूपत्वान्मोहपर्यायः । रतिरपि रागरूपत्वान्मायालोभयोरन्तर्भवति । ततः कषायमार्गणायामाहारसंज्ञा द्रष्टव्या । भयसंज्ञा भयात्मिका । भयञ्च क्रोधमानयोरन्तर्लीनम्, द्वेषरूपत्वात् । ततो भयसंज्ञापि कषायमार्गणाप्रभवा । मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाप्रभेदः, स्त्रीपुंनपुंसकवेदानां तीव्रोदयरूपत्वात् । परिग्रहसंज्ञापि कषायमार्गणोद्भूता, बाह्यार्थालीढलोभरूपत्वात्[2] । साका-

---

जिसप्रकार अन्तर्भाव होता है उसप्रकार कथन करना चाहिये ?

समाधान—दूसरे पक्षमें दिया गया दूषण तो यहां पर आता नहीं है, क्योंकि, वैसा माना नहीं गया है । तथा प्रथम पक्षमें जो जीवसमास आदिके चौदह मार्गणाओंमें अन्तर्भाव करनेकी बात कही है, सो कहा जाता है । पर्याप्ति और जीवसमास प्ररूपणा काय और इन्द्रिय मार्गणामें अन्तर्भूत हो जाती हैं, क्योंकि, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्तरूप भेदोंका उक्त दोनों मार्गणाओंमें प्रतिपादन किया गया है । उच्छ्वासनिःश्वास, वचनबल और मनोबल, इन तीन प्राणोंका भी उक्त दोनों मार्गणाओंमें अन्तर्भाव होता है, क्योंकि, ये तीनों प्राण पर्याप्तियोंके कार्य हैं । कायबलप्राण भी योगमार्गणासे निकला है, क्योंकि, योग काय, वचन और मनोबलस्वरूप होता है । आयुप्राण गति मार्गणामें अन्तर्भूत है, क्योंकि, आयु और गति ये दोनों परस्पर अविनाभावी हैं । अर्थात् विवक्षित गतिके उदय होने पर तज्जातीय आयुका उदय होता है और विवक्षित आयुके उदय होने पर तज्जातीय गतिका उदय होता है । इन्द्रियप्राण ज्ञानमार्गणामें अन्तर्लीन हो जाते हैं, क्योंकि, भावेन्द्रियां ज्ञानावरणके क्षयोपशमरूप होती हैं । आहारके विषयमें जो तृष्णा या आकांक्षा होती है उसे आहारसंज्ञा कहते हैं । वह रतिस्वरूप होनेसे मोहकी पर्याय (भेद) है । रति भी रागरूप होनेके कारण माया और लोभमें अन्तर्भूत होती है । इसलिये कषायमार्गणामें आहार संज्ञा समझना चाहिये । भयसंज्ञा भयरूप है और भय द्वेषरूप होनेके कारण क्रोध और मानमें अन्तर्भूत है, इसलिये भयसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई समझना चाहिये । मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाका प्रभेद है, क्योंकि, वह मैथुनसंज्ञा स्त्रीवेद पुरुषवेद और नपुंसकवेदके तीव्र उदयरूप है । परिग्रहसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई है, क्योंकि, यह संज्ञा बाह्य पदार्थोंमें व्याप्त लोभरूप है । साकार उपयोग ज्ञानमार्गणामें और अनाकार उपयोग दर्शनमार्गणामें

---

१ इंदियकाए लीणा जीवा पज्जत्ति आणभासमणो । जोगे काओ णाणे अक्खा गदिमग्गणे आऊ ॥ गो. जी. ५.

२ मायालोहे रदिपुव्वाहारं कोहमाणगम्हि भयं । वेदे मेहुणसण्णा लोहम्हि परिग्गहे सण्णा ॥ गो. जी. ६.

रोपयोगो ज्ञानमार्गणायामनाकारोपयोगो दर्शनमार्गणाया (अन्तर्भवति) तयोर्ज्ञानदर्शनरूपत्वात्[1]। न पौनरुक्त्यमपि, कथञ्चित्तेभ्यो भेदात्। प्ररूपणायां किं प्रयोजनमिति चदुच्यते, सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणोच्यते।

तत्थ 'ओघेण अत्थि मिच्छाइट्ठी सिद्धा० चेदि'[2] एदस्स ओघ-सुत्तस्स ताव परूवणा वुच्चदे। तं जहा– *अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि चोद्दस-गुणट्ठाणादीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि। अत्थि चोद्दस जीवसमासा। के ते? एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा।

अन्तर्भूत होते हैं, क्योंकि, वे दोनों ज्ञान और दर्शनरूप ही हैं। ऐसा होते हुए भी उक्त प्ररूपणाओंके स्वतन्त्र कथन करनेमें पुनरुक्ति दोष भी नहीं आता है, क्योंकि, मार्गणाओंसे उक्त प्ररूपणाएं कथंचित् भिन्न हैं।

शंका— प्ररूपणा करनेमें क्या प्रयोजन है?

समाधान— सूत्रके द्वारा सूचित पदार्थोंके स्पष्टीकरण करनेके लिये बीस प्रकारसे प्ररूपणा कही जाती है।

'सामान्यसे मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरणप्रविष्ट शुद्धि संयतोंमें उपशमक और क्षपक, अनिवृत्तिकरण प्रविष्ट शुद्धि संयतोंमें उपशमक और क्षपक, सूक्ष्मसांपराय प्रविष्ट शुद्धि संयतोंमें उपशमक और क्षपक, उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ, क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ, सयोगकेवली और अयोगकेवली जीव होते हैं। तथा सिद्ध भी होते हैं।' पहले इस सामान्य सूत्रकी प्ररूपणा कहते हैं। वह इसप्रकार है–चौदहों गुणस्थान हैं और चौदह गुणस्थानोंसे अतीतगुणस्थान भी है। चौदहों जीवसमास हैं।

शंका— वे चौदहों जीवसमास कौनसे हैं?

१ सागारो उवजोगो णाणे मग्गम्हि दंसणे मग्गे। अणगारो उवजोगो लीणो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥ गो. जी. ७
२ जी. सं. सू. ९-२३

* सामान्य जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	द	ले	भ	स	सं	आ	उ
१४ अ. गु.	१४ अ जी.	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ प अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२ १ अ प्रा	४ क्षीण सं	४ सि ग	५ अ नि	६ अ का	१५ अ यो	३ अपग वे	४ अकषा	८	७ अनु	४	द्र ६ भा ६ अले	२ भ अ अनु	६	२ सं. अस अनु	२ आहा अना	२ साका अना तथा यु उ

बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। बीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। तीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो। सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि[1]। एदे चोद्दस जीवसमासा अदीद-जीवसमासा वि अत्थि। अत्थि छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीद-पज्जत्ती वि अत्थि। आहारपज्जत्ती सरीरपज्जत्ती इंदियपज्जत्ती आणापाणपज्जत्ती भासापज्जत्ती मणपज्जत्ती चेदि। एदाओ छ पज्जत्तीओ सण्णिपज्जत्ताणं। एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असमत्ताओ छ अपज्जत्तीओ भवंति। मणपज्जत्तीए विणा एदाओ चेव पंच पज्जत्तीओ असण्णि पंचिंदिय पज्जत्तप्पहुडि जाव बीइंदिय पज्जत्ताणं भवंति। तेसिं चेव अपज्जत्ताणं एदाओ चेव अणिप्पण्णाओ पंच अपज्जत्तीओ वुच्चंति। एदाओ चेव भासा मणपज्जत्तीहि विणा चत्तारि पज्जत्तीओ एइंदिय पज्जत्ताणं भवंति। एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असपुण्णाओ चत्तारि अपज्जत्तीओ भवंति। एदासिं छण्हम-

समाधान—'एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, सञ्ज्ञी और असञ्ज्ञी। सञ्ज्ञी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। असञ्ज्ञी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त'। इसप्रकार ये चौदह जीवसमास होते हैं।

अतीत जीवसमास भी जीव होते हैं। छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां और चार अपर्याप्तियां हैं। तथा अतीतपर्याप्ति भी है। आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, आनापानपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति और मन पर्याप्ति ये छह पर्याप्तियां हैं। ये छहों पर्याप्तियां सञ्ज्ञी पर्याप्तके होती हैं। इन्हीं सञ्ज्ञी जीवोंके अपर्याप्त कालमें पूर्णताको प्राप्त नहीं हुई ये ही छह अपर्याप्तियां होती हैं। मन पर्याप्तिके विना उक्त पांचों ही पर्याप्तियां असञ्ज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तोंसे लेकर द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंतक होती हैं। अपर्याप्तक अवस्थाको प्राप्त उन्हीं जीवोंके अपूर्णताको प्राप्त ये ही पांच अपर्याप्तियां होती हैं। भाषापर्याप्ति और मन पर्याप्तिके विना ये ही चार पर्याप्तियां एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके होती हैं। इन्हीं एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालमें अपूर्णताको प्राप्त ये ही चार अपर्याप्तियां होती हैं। तथा इन छह पर्याप्तियोंके अभावको अतीतपर्याप्ति

१ जी सं. प्र. १४ ३५

भावो अदीद-पज्जत्ती णाम । उत्तं च—

> आहार-सरीरिंदिय-पज्जत्ती आणपाण-भास मणो ।
> चत्तारि पंच छप्पि य एइंदिय-विगल-सण्णीणं[1] ॥२१८॥
>
> जह पुण्णापुण्णाइं गिह-घड-वत्थाइयाइं दव्वाइं ।
> तह पुण्णापुण्णाओ पज्जत्तियरा मुणेयव्वा[2] ॥ २१९ ॥

अत्थि दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छप्पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दोण्णि पाण एक्क पाण अदीद-पाणो वि अत्थि । चक्खु सोद-घाण-जिब्भ-फासमिदि पंचिंदियाणि, मणबल वचिबल कायबल इदि तिण्णि बला, आणापाणो आऊ चेदि एदे दस पाणा । उत्तं च—

> पंच वि इंदिय-पाणा मण-वचि-काएण तिण्णि बलपाणा ।
> आणप्पाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा[3] ॥ २२० ॥

कहते हैं । कहा भी है—

आहार, शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मन ये छह पर्याप्तियां हैं । उनमेंसे एकेन्द्रिय जीवोंके चार, विकलत्रय और असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके पांच और संज्ञी जीवोंके छह पर्याप्तियां होती हैं ॥ २१८ ॥

जिसप्रकार गृह, घट और वस्त्र आदि द्रव्य पूर्ण और अपूर्ण दोनों प्रकारके होते हैं, उसीप्रकार जीव भी पूर्ण और अपूर्ण दो प्रकारके होते हैं उनमेंसे पूर्ण जीव पर्याप्तक और अपूर्ण जीव अपर्याप्तक कहलाते हैं ॥ २१९ ॥

दश प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण होते हैं तथा अतीतप्राणस्थान भी है । चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ये पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल ये तीन बल, श्वासोच्छ्वास और आयु ये दश प्राण होते हैं । कहा भी है—

पांचों इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल और कायबल श्वासोच्छ्वास और आयु ये दश प्राण हैं ॥ २२० ॥

---

१ गो जी ११९
२ गो जी ११८
३ गो जी १३०

एदे दस पाणा पंचिंदिय सण्णिपज्जत्ताणं। आणापाण-भासा मणेहि विणा सण्णि पंचिंदिय अपज्जत्ताणं सत्त पाणा भवंति। दसण्हं पाणाणं मज्झे मणेण विणा णव पाणा असण्णि पंचिंदिय पज्जत्ताणं भवंति। एदेसिं चेव अपज्जत्ताणं भासा-आणापाण पाणेहि विणा सत्त पाणा भवंति। पुव्विल्ल णव पाणेसु सोदिंदिय पाणे अवणिदे चदुरिंदिय पज्जत्तस्स अट्ठ पाणा भवंति। एदेसिं चेव चदुरिंदिय अपज्जत्ताणं आणापाण-भासाहि विणा छप्पाणा भवंति। पुव्विल्ल अट्ठण्हं पाणाणं मज्झे चक्खिंदिए अवणिदे तीइंदिय पज्जत्तयस्स सत्त पाणा भवंति। तेसु सत्तसु आणापाण भासापाणे अवणिदे तीइंदिय अपज्जत्तयस्स पंच पाणा भवंति। तीइंदियस्स वुत्त सत्तण्हं पाणाणं मज्झे घाणिंदिए अवणिदे बीइंदिय-पज्जत्तयस्स छप्पाणा भवंति। तेसु छसु आणापाण-भासाहि विणा बीइंदिय अपज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति। बीइंदिय पज्जत्तयस्स वुत्त छण्हं पाणाणं मज्झे जिब्भिंदियपाणे भासापाणे अवणिदे एइंदिय पज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति। तेसु आणापाणपाणे अवणिदे एइंदिय अपज्जत्तयस्स तिण्णि पाणा भवंति[1]। उत्तं च—

दस सण्णीणं पाणा सेसेगूणंतिमस्स बे ऊणा।
पज्जत्तेसिदरेसु य सत्त दुगे सेसगेगूणा[2] ॥ २२१ ॥

पूर्वोक्त दश प्राण पंचेन्द्रिय सञी पर्याप्तकोंके होते हैं। आनापान, वचनबल और मनोबल इन तीन प्राणोंके विना शेष सात प्राण संज्ञी पचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके होते हैं। दश प्राणोंमेंसे मनोबलके विना शेष नौ प्राण असंज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके होते हैं। और अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त इन्हीं जीवोंके वचनबल और आनापान प्राणके विना शेष सात प्राण होते हैं। पूर्वोक्त नौ प्राणोंमेंसे श्रोत्रेन्द्रिय प्राणको कम कर देने पर शेष आठ प्राण चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं। इन्हीं चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आनापान और वचनबलके विना शेष छह प्राण होते हैं। पूर्वोक्त आठ प्राणोंमेंसे चक्षु इन्द्रियके कम कर देने पर शेष सात प्राण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं। उन सात प्राणोंमेंसे आनापान और वचनबल प्राणके कम कर देने पर शेष पांच प्राण त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके होते हैं। त्रीन्द्रिय जीवोंके कहे गये सात प्राणोंमेंसे घ्राणेन्द्रियके कम कर देने पर शेष छह प्राण द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके होते हैं। उन छह प्राणोंमेंसे आनापान और वचनबलके कम कर देने पर शेष चार प्राण द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके होते हैं। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके कहे गये छह प्राणोंमेंसे रसनेन्द्रिय प्राण और वचनबल प्राणके कम कर देने पर शेष चार प्राण एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके होते हैं। उनमेंसे आनापान प्राणके कम कर देने पर शेष तीन प्राण एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके होते हैं। कहा भी है—

संज्ञी जीवोंके दश प्राण होते हैं। शेष जीवोंके एक एक प्राण कम करना चाहिये।

१ इंदियकायाऊणि य पुण्णापुण्णेसु पुण्णगे आणा। बीइंदियादिपुण्णे वचीमणो सण्णिपुण्णेव ॥ गो. जी. १३२.
२ गो. जी. १३३.

दसण्हं पाणाणमभावो अदीदपाणो णाम। अत्थि चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि। काओ चत्तारि सण्णाओ इदि चे ? वुच्चदे–आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा चेदि। एदासिं चउण्हं सण्णाणं अभावो खीणसण्णा णाम। अत्थि चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी वि अत्थि। एइंदियादी पंच जादीओ, अदीद-जादी वि अत्थि। अत्थि पुढविकायादी छक्काया, अदीदकाओ वि अत्थि। अत्थि पण्णरह जोगा, अजोगो वि अत्थि। अत्थि तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि। अत्थि चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि। अत्थि अट्ठ णाणाणि। अत्थि सत्त संजमा, णेव संजमो णेव संजमासंजमो णेव असंजमो वि अत्थि। अत्थि चत्तारि दंसणाणि। दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि। भवसिद्धिया वि अत्थि, अभवसिद्धिया वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि। छ सम्मत्ताणि अत्थि। सण्णिणो वि अत्थि, असण्णिणो वि अत्थि, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि। आहारिणो

किन्तु अन्तिम अर्थात् एकेन्द्रिय जीवोंके दो प्राण कम होते हैं। यह क्रम पर्याप्तकोंका है। किन्तु अपर्याप्तक जीवोंमें संज्ञी और असंज्ञी पचेन्द्रियोंके सात, सात प्राण होते हैं। तथा शेष जीवोंके उत्तरोत्तर एक एक कम प्राण होते हैं॥ २२१॥

विशेषार्थ—केवली भगवान्‌के पांच इन्द्रियां और मनोबलको छोड़कर शेष चार प्राण होते हैं। तथा योग निरोधके समय वचनबलका अभाव हो जाने पर कायबल आनापान और आयु ये तीन प्राण होते हैं और अन्तमें कायबल और आयु ये दो प्राण होते हैं। तथा चौदहवें गुणस्थानमें केवल एक आयुप्राण होता है।

इन दशों प्राणोंके अभावको अतीत प्राण कहते हैं। चारों संज्ञाएं होती हैं और क्षीण संज्ञा भी होती है।

शंका—वे चार संज्ञाएं कौनसी हैं ?

समाधान—आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ये चार संज्ञाएं हैं। इन चारों संज्ञाओंके अभावको क्षीणसंज्ञा कहते हैं।

चार गतियां होती हैं और सिद्धगति भी है। एकेन्द्रियादि पांच जातियां होती हैं और अतीत-जातिरूप स्थान भी है। पृथिवीकाय आदि छह काय होते हैं और अतीतकाय स्थान भी है। पन्द्रह योग होते हैं और अयोग स्थान भी है। तीन वेद होते हैं और अपगतवेद स्थान भी है। चार कषायें होती हैं और अकषाय स्थान भी है। आठ ज्ञान होते हैं। सात संयम होते हैं और संयम, संयमासंयम और असंयम रहित भी स्थान है। चार दर्शन होते हैं। द्रव्य और भावके भेदसे छह लेश्याएं होती हैं और अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक जीव होते हैं, अभव्य-सिद्धिक जीव होते हैं और भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। छह सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी भी होते हैं, असंज्ञी भी होते हैं और संज्ञी तथा, असंज्ञी

वि अत्थि, अणाहारिणो वि अत्थि। सागारुवजुत्ता वि अत्थि, अणागारुवजुत्ता वि अत्थि, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि।

पज्जत्त त्तिमिद्दे जीवे भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, अदीदगुणट्ठाणं णत्थि, पज्जत्तेसु तस्स सभवाभावादो। सत्त जीवसमासा, अदीदजीवसमासो णत्थि, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, अदीदपज्जत्ती णत्थि, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, अदीदपाणो णत्थि, चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी णत्थि; एइंदियादी पंच जादीओ अत्थि, अदीदजादी णत्थि, पुढवीकायादी छक्काया अत्थि, अकाओ णत्थि, ओरालिय-वेउव्विय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेहि विणा एगारह जोग, अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो णत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि

विकल्प रहित भी स्थान होता है। आहारक भी होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगसे युक्त भी होते हैं, अनाकार उपयोगसे भी युक्त होते हैं और साकार उपयोग तथा अनाकार उपयोग इन दोनोंसे युगपत् युक्त भी होते हैं।

पर्याप्त अवस्थासे युक्त जीवोंके ओघालाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान होते हैं। अतीत-गुणस्थानरूप स्थान नहीं होता है, क्योंकि, पर्याप्तकोंमें अतीत गुणस्थान अर्थात् सिद्ध अवस्थाकी संभावना नहीं है। पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास होते हैं, किन्तु अतीत जीवसमास (सिद्ध अवस्था) रूप स्थान नहीं है। संज्ञी जीवोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां और एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां होती हैं, किंतु अतीत पर्याप्तिरूप स्थान नहीं होता है। संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, और एकेन्द्रियके चार प्राण होते हैं, किंतु अतीत प्राणरूप स्थान नहीं है। चारों संज्ञाएं होती हैं और क्षीणसंज्ञारूप स्थान भी होता है। चारों गतियां होती हैं, किंतु सिद्धगति नहीं होती है। एकेन्द्रियादि पांचों जातियां होती हैं, किन्तु अतीत जातिरूप स्थान नहीं होता है। पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं, किंतु अकायरूप स्थान नहीं होता है। औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोगके विना ग्यारह योग होते हैं और अयोग-स्थान भी होता है। तीनों वेद होते हैं और अपगतवेद स्थान भी होता है। चारों कषायें होती हैं और अकषाय स्थान भी होता है। आठों ज्ञान होते हैं। सातों संयम होते हैं किंतु संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान नहीं होता है। चारों दर्शन होते हैं। द्रव्य और भावके भेदसे छहों लेश्याएं होती

छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि, दव्वेण छ लेस्सेत्ति भणिदे सरीरस्स वण्णणा घेत्तव्वा×। भावेण छ लेस्सा त्ति भणिदे जोग-कसाया छब्भेद-ट्ठिदा घेत्तव्वा*। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया णत्थि; छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि; आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा, सागारणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि¹।

संपहि अपज्जत्ति-पज्जाय-विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी पमत्तसंजदा सजोगिकेवलि त्ति पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण

है और अलेश्यास्थान भी होता है। द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर शरीरसंबन्धी छह वर्णोंका ग्रहण करना चाहिये। भावसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर योग और कषायोंकी छह भेदोंको प्राप्त मिश्रित अवस्थाका ग्रहण करना चाहिये। भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक होते हैं, किंतु भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान नहीं होता है। छहों सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी होते हैं, असंज्ञी भी होते हैं, तथा तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानकी अपेक्षा संज्ञी और असंज्ञी विकल्प रहित भी जीव होते हैं। आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अब अपर्याप्ति पर्यायसे युक्त अपर्याप्तक जीवोंके, ओघालाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान होते हैं। अपर्याप्तरूप सात जीवसमास होते हैं। अपर्याप्त संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, अपर्याप्त असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां और अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवोंके चार अपर्याप्तियां होती हैं। संज्ञी, असंज्ञी, चतुरिन्द्रिय,

× वण्णोदयेण जणिदो सरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा ॥ गो. जी. ४९४.

* जोगपउत्ती लेस्सा कसायउदयाणुरंजिया होइ ॥ गो. जी. ४९०.

नं. १   पर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	७	६प.	१०।९	४	४	[illegible]	६	११	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	२	२
	प.	५प.	८।७					औ. मि.	अपग.	अक.				भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
		४प.	६।४					वै. मि.							अभ.		असं.	अना.	अनाका.
								आ. मि.											यु. उ.
								काम. के विना											

छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, अदीदसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेत्ति चत्तारि जोगा, तिण्णि वेद, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-विभंगणाणेहि विणा छण्णाण, चत्तारि संजम सामाइय-छेदोवट्ठावण-जहाक्खादासंजमेहि, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, जम्हा सव्व-कम्मस्स विस्ससोवचओ सुक्किलो भवदि तम्हा विग्गहगदीए वट्टमाण-सव्व-जीवाणं सरीरस्स सुक्कलेस्सा भवदि। पुणो सरीरं घेत्तूण जाव पज्जत्तीओ समाणेदि ताव छव्वण्ण-परमाणु-पुंज-णिप्पज्जमाण-सरीरत्तादो तस्स सरीरस्स लेस्सा काउलेस्सेत्ति भण्णदे[1], एवं दो सरीर-लेस्साओ भवंति। भावेण छ लेस्सेत्ति वुत्ते णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवाणमपज्जत्तकाले किण्ह-णील-काउलेस्साओ भवंति। सोधम्मादि-उवरिम-

---

त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी अपेक्षा क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं होती हैं और अतीत-संज्ञारूप स्थान भी होता है। चारों गतियां होती हैं। एकेन्द्रिय जाति आदि पांचों जातियां होती हैं। पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं। औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाय इसप्रकार चार योग होते हैं। तीनों वेद होते हैं और अपगतवेदरूप भी स्थान होता है। चारों कषाय होती हैं और कषायरहित भी स्थान होता है। मनःपर्यय और विभंगज्ञानके विना छह ज्ञान होते हैं। सूक्ष्मसांपराय, परिहारविशुद्धि और संयमासंयमके विना सामायिक, छेदोपस्थापना, यथाख्यात और असंयम ये चार संयम होते हैं। चारों दर्शन होते हैं। द्रव्यलेश्याकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या होती हैं और भावलेश्याकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं। अपर्याप्त अवस्थामें द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं ही क्यों होती हैं आगे इसीका समाधान करते हैं कि जिस कारणसे संपूर्ण कर्मोंका विस्रसोपचय शुक्ल ही होता है, इसलिये विग्रहगतिमें विद्यमान संपूर्ण जीवोंके शरीरकी शुक्ललेश्या होती है। तदनन्तर शरीरको ग्रहण करके जबतक पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है तबतक छह वर्णवाले परमाणुओंके पुंजसे शरीरकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उस शरीरकी कापोत लेश्या कही जाती है। इसप्रकार अपर्याप्त अवस्थामें शरीर सम्बन्धी दो लेश्याएं होती हैं। भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर नारकी, तिर्यंच, भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके अपर्याप्त कालमें कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं होती हैं। तथा सौधर्मादि ऊपरके देवोंके अपर्याप्त कालमें पीत, पद्म और

---

१ × सव्व विग्गह सुक्का। सुक्का विग्गह देहा कवोदवण्णा हवे णियमा ॥ गो. जी. ४९८

देवाणमपज्जत्तकाले तेउ पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि[1]।

संपहि मिच्छाइट्ठीणं ओघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, आहार-दुगेण विणा तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

शुक्ल लेश्याएं होती हैं ऐसा जानना चाहिये। भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक भी होते हैं। सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी होते हैं, असंज्ञी होते हैं और संज्ञी, असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी होते हैं। आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और युगपत् उन दोनों उपयोगोंसे युक्त भी होते हैं।

अब मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञीके दश प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रियके सात प्राण, पांच प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, चार प्राण; एकेन्द्रियके चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, आहारकद्विक अर्थात् आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. २   अपर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा अवि प्र सयो	७ अप	६ अप ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४ क्षीणसं. [?]	४	५	६	४ औ मि वै ,, आ ,, कार्म ,,	३ अपग [?]	४ अक [?]	६ मन विभं विना [?]	४ सामा छे यथा अस	४	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ सम्य विना [?]	२ सं असं अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

तेसिं चेव मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी

द्रव्य और भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक और असंज्ञिक; आहारक और अनाहारक; साकार (ज्ञान) उपयोगी और अनाकार (दर्शन) उपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञीके दश प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, एकेन्द्रियके चार प्राण, चारों

नं. ३ मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६ प ६ अप ५ प ५ अप ४ प ४ अप	१०।७ ९।७ ८।६ ७।५ ६।४ ४।३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	६ द्र ६ भा	२ भ अभ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ४ मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ प. ५ ,, ४ ,,	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	६ द्र ६ भा	२ भ अभ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

तेसिं चेव अपज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंग-णाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो

संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्य सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण, एकेन्द्रियोंके तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगावधिज्ञानके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या, भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ५　　　　मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६ अप. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अभ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति।

सासणसम्माइट्ठीणमोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वि अत्थि ।

तेसिं चेव सासणसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदिय जादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसम्बन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसम्बन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. ६

सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंच.	१ त्रस	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

वजुत्ता वि होंति अणागारुवजुत्ता वि ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी णिरयगदीए विणा, पंचिंदियजादी तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विहंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

और अनाकारोपयोगी होते है ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि जीवके अपर्याप्त कालसम्बन्धी ओघालाप कहने पर—एक दूसरा गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रके विना अपर्याप्त सम्बन्धी तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना दो अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है ।

न ७　　सासादन सम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ स प	६ प	१०	८	४	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	द्र ६ भा ६	१ भ,	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना

न ८　　सासादन सम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ स अ	६ अप	७ अप	४	३ न विना	१ पंच	१ त्रस	३ औ मि वै ,, कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

सम्मामिच्छाइट्ठीणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, अण्णाण-मिस्साणि तिण्णि णाणाणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंजदसम्माइट्ठीणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक तीसरा गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, अज्ञान मिश्रित आदिके तीनों ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेष—मिश्रगुणस्थानवाले जीव पर्याप्तक ही होते हैं इसलिये मिश्रगुणस्थानके उक्त सामान्यालाप ही पर्याप्तकके समझना चाहिये।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीन ज्ञान, असंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन

नं. ९

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंच.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान. अज्ञा. मिश्र.	१ अस.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंजदसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त एक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसम्बन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीन ज्ञान, असंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १० असंयतसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ मति. श्रु. अव.	१ असं.	३ के. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ११ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६ प.	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रु. अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणमोघपरूवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, णिरयादो आगंतूण मणुस्सेसुप्पण्ण-असंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले किण्ह-णील-काउलेस्साओ लब्भंति। भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, अणादिय-मिच्छाइट्ठी वा सादिय-मिच्छाइट्ठी वा चदुसु वि गदीसु उवसमसम्मत्तं घेत्तूण ट्ठिदजीवा ण कालं करेंति। तं कधं णव्वदि त्ति वुत्ते आइरिय-वयणादो वक्खाणादो य णव्वदि। चारित्तमोह-उवसामगा मदा देवेसु उववज्जंति ते अस्सिदूण अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। वेदगसम्मत्तं पुण देव-मणुस्सेसु अपज्जत्तकाले लब्भदि, वेदगसम्मत्तेण सह गद-देव-मणुस्साणमण्णोण्ण-गमणागमण-विरोहाभावादो। कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं तिरिक्ख-णेरइयाणमपज्जत्तकाले लब्भदि। खइयसम्मत्तं पि चदुसु वि गदीसु पुव्वाउबंधं पडुच्च अपज्जत्तकाले

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालसंबन्धी ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और आनापानके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, मति श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु, अचक्षु और अवधि ये तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। छहों लेश्याएं होनेका यह कारण है कि नरकगतिसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले असंयत सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालमें कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं पायी जाती हैं। लेश्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व होते हैं, क्योंकि, अनादि मिथ्यादृष्टि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि जीव चारों ही गतियोंमें उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करके पाये जाते हैं किन्तु मरणको प्राप्त नहीं होते हैं।

शंका—यह कैसे जाना जाता है कि उपशम सम्यग्दृष्टि जीव मरण नहीं करते हैं?

समाधान—आचार्योंके वचनसे और (सूत्र) व्याख्यानसे जाना जाता है कि उपशम सम्यग्दृष्टि जीव मरते नहीं हैं। किन्तु चारित्रमोहके उपशम करने वाले जीव मरते हैं और देवोंमें उत्पन्न होते हैं, अतः उनकी अपेक्षा अपर्याप्तकालमें उपशमसम्यक्त्व पाया जाता है। वेदक सम्यक्त्व तो देव और मनुष्योंके अपर्याप्तकालमें पाया ही जाता है, क्योंकि, वेदकसम्यक्त्वके साथ मरणको प्राप्त हुए देव और मनुष्योंके परस्पर गमनागमनमें कोई विरोध नहीं पाया जाता है। कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा तो वेदकसम्यक्त्व तिर्यंच और नारकी जीवोंके अपर्याप्त कालमें भी पाया जाता है। क्षायिक सम्यक्त्व भी सम्यग्दर्शनके पहले बांधी गई आयुके बंधकी अपेक्षासे चारों ही गतियोंके अपर्याप्तकालमें पाया जाता है, इसलिये असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके अपर्याप्तकालमें तीनों ही सम्यक्त्व होते हैं।

लब्भदि तेण तिण्णि सम्मत्ताणि अपज्जत्तकाले भवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[^1] ।

संजदासंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; केह सरीर-णिव्वत्तणट्ठमागद-परमाणु-वण्णं घेत्तूण संजदासंजदादीणं भावलेस्सं परूवयंति । तण्ण घडदे, कुदो ? दव्व-भावलेस्साणं भेदाभावादो 'लिम्पतीति लेश्या' इति वचनव्याघाताच्च । कम्म-लेव-हेदूदो जोग-कसाया चेव भावलेस्सा त्ति गेण्हिदव्वं । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि,

सम्यक्त्वके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

संयतासंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक पांचवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाय ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भावकी अपेक्षा तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं होती हैं ।

कितने ही आचार्य, शरीर रचनाके लिये आये हुए परमाणुओंके वर्णको लेकर संयता संयतादि गुणस्थानवर्ती जीवोंके भावलेश्याका वर्णन करते हैं । किन्तु यह उनका कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, वैसा माननेपर द्रव्य और भावलेश्यामें फिर कोई भेद ही नहीं रह जाता है और 'जो लिम्पन करती है उसे लेश्या कहते हैं' इस आगम वचनका व्याघात भी होता है । इसलिये 'कर्मलेपका कारण होनेसे योग और कषायसे अनुरंजित प्रवृत्ति ही भावलेश्या है' ऐसा अर्थ ग्रहण करना चाहिये ।

लेश्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और

नं. १२   असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अप.	७ अप.	४	४	१ पं.	१ त्रस.	३ औ.मि. १ वै.मि. १ कार्म. १	२ स्त्री. विना	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एक्कारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक गुणस्थान, दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दश प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ—यद्यपि टीकाकारने प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ गुणस्थानके सामान्या

नं. १३

संयतासंयतोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ म ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ संयमा	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. १४

प्रमत्तसंयत-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	२ सं प सं अ	६ प ६ अप	१० प ७ अप	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ १ आहा २	३	४	४ के विना	३ सा छे परि	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

अप्पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, असादावेदणीयस्स उदीरणाभावादो आहार-सण्णा अप्पमत्तसंजदस्स णत्थि । कारणभूद-कम्मोदय-संभवादो उवयारेण भय-मेहुण-परिग्गहसण्णा अत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद,

लापोंके अतिरिक्त उनके पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका स्वतन्त्ररूपसे कथन किया है फिर भी छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका स्वतन्त्र कथन न करके केवल ओघालाप ही कहा गया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि धवलाकारकी दृष्टि विग्रह-गतिसंबन्धी गुणस्थानोंमें ही पृथक् रूपसे आलापोंके दिखानेकी रही है अन्य अपर्याप्त संबन्धी गुणस्थानोंमें नहीं। गोम्मटसार जीवकाण्डकी टीकामें भी अन्तमें आलापोंका कथन करते हुए टीकाकारने इसी सरणीको ग्रहण किया है। अतएव मूलमें छठे गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्त संबन्धी आलापोंका पृथक् रूपसे नहीं पाया जाना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। फिर भी सर्व साधारण पाठकोंके परिज्ञानार्थ वे यहां लिखे जाते हैं।

प्रमत्तसंयतके पर्याप्तसंबन्धी ओघालापके कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति त्रसकाय, वैक्रियककाय और अपर्याप्तसंबन्धी चारों योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे पीत, पद्म और शुक्ल, ये तीन लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त उन्हीं प्रमत्तसंयतोंके ओघालाप कहनेपर—एक छठा गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास छहों अपर्याप्तियां, मन, वचनबल और श्वासो-च्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, एक आहार-मिश्रकाययोग, एक पुरुष वेद चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यग्दर्शन, संज्ञी, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक सातवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार भय और मैथुन ये तीन संज्ञाएं, होती हैं, क्योंकि, असातावेदनीय कर्मकी उदीरणाका अभाव हो जानेसे अप्रमत्तसंयतके आहारसंज्ञा नहीं होती है। किन्तु भय आदि संज्ञाओंके कारणभूत कर्मोंका उदय संभव है, इसलिये उपचारसे भय, मैथुन और परिग्रहसंज्ञाएं हैं। संज्ञाके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनो-योग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके

चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अपुव्वकरणाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, ज्झाणणिमग्गापुव्वकरणाणं भवदु णाम वचिबलस्स अत्थित्तं भासापज्जत्ति-सण्णिद-पोग्गलखंध-जणिद-सत्ति-सब्भावादो । ण पुण वचिजोगो कायजोगो वा इदि ? न, अन्तर्जल्पप्रयत्नस्य कायगतसूक्ष्मप्रयत्नस्य च तत्र सत्त्वात् । तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, परिहारसुद्धिसंजमेण विणा दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ,

विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक आठवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग, एक औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं।

शंका—ध्यानमें लीन अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंके वचनबलका सद्भाव भले ही रहा आवे, क्योंकि, भाषापर्याप्तिनामक पौद्गलिक स्कन्धोंसे उत्पन्न हुई शक्तिका उनके सद्भाव पाया जाता है किन्तु उनके वचनयोग या काययोगका सद्भाव नहीं मानना चाहिए?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्यान अवस्थामें भी अन्तर्जल्पके लिये प्रयत्नरूप वचनयोग और कायगत सूक्ष्म प्रयत्नरूप काययोगका सत्त्व अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके पाया ही जाता है इसलिये वहां वचनयोग और काययोग भी संभव है।

योगोंके आगे तीनों वेद, चारों कषायें केवलज्ञानके विना शेष चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

नं. १०

अप्रमत्तसंयतोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	३	३	६	१	३	१	१	२
अप्र	सं प			आहा विना	म	पं	त्रस	म ४ व ४ औ १			के विना	सा छे परि	के विना	द्र ६ भा ३ शुभ	भ	औ क्षा क्षायो	सं	आहा	साका अना

भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, अपुव्वकरणस्स चरिम-समए भयस्स उदीरणोदयो णट्ठो तेण भयसण्णा णत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

केवल शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं होती हैं। दो संज्ञाएं होने का कारण यह है कि अपूर्वकरण गुणस्थानके अन्तिम समयमें भयकी उदीरणा तथा उदय नष्ट हो गया है, इसलिये यहांपर भय-संज्ञा नहीं है । उसके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६ अपूर्वकरण-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अपू	१ सप	६	१०	३ आहा विना	१ म	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ के विना	२ सा छे	३ के विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ औ क्षा	१	१ आहा	२ साका अना

नं. १७ अनिवृत्तिकरण-प्रथमभाग-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनि प्र भा	१ सप	६	१०	२ मै परि	१ म	१ पंच	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ के विना	२ सा छे	३ के द विना	द्र ६ भा १	१ भ	२ औ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका. अना

विदिय ट्ठाण ट्ठिद अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, अंतरकरणं काऊण पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण वेदोदओ णट्ठो तेण मेहुणसण्णा णत्थि। मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तदिय ट्ठाण ट्ठिद अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, तिण्णि कसाय, वेदेसु खीणेसु पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण कोधोदयो णस्सदि तेण कोधकसाओ णत्थि। चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्ती जीवोंके आलाप कहने पर—एक गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा होती है। एक परिग्रह संज्ञाके होनेका यह कारण है कि अन्तरकरण करनेके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त जाकर वेदका उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये द्वितीय भागवर्ती जीवके मैथुनसंज्ञा नहीं रहती है। संज्ञा आलापके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीयभागवर्ती जीवोंके आलाप कहनेपर—एक गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग क्रोधकषायके विना तीन कषायें होती हैं। तीन कषायोंके होनेका यह कारण है कि तीनों वेदोंके क्षय हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त जाकर क्रोधकषायका उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये इस भागमें क्रोधकषाय नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और

नं. १८

अनिवृत्तिकरण-द्वितीयभाग-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. द्वि. भा.	१ सं. प.	६	१०	१ परि.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	४	४ के. विना.	२ सा. छे.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९]।

चउत्थ-ट्ठाण-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, कोधोदए णिणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण माणोदओ वि णस्सदि तेण माणकसाओ तत्थ णत्थि। चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०]।

छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थभागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, *मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो* कषायें होती हैं। दो कषायोंके होनेका यह कारण है कि क्रोधकषायके उदय नष्ट होने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त आगे जाकर मानकषायका उदय भी नष्ट हो जाता है इसलिये मानकषाय इस भागवर्ती जीवोंके नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९ अनिवृत्तिकरण-तृतीयभाग-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनि तृ भा	१ सं प	६	१	१ परि	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	३ मान माया लोभ	४ के विना	२ सा छे	३ के द विना	६ द्र १ भा	१ भ	२ औ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २० अनिवृत्तिकरण चतुर्थभाग-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनि चतु भा	१ सं प	६	१०	१ प	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	२ माया लोभ	४ के विना	२ सा छे	३ के द विना	६ द्र १ भा	१ भ	२ औ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

पंचम-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, माणोदये विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण मायोदओ वि णस्सदि तेण मायाकसाओ तत्थ णत्थि। चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सुहुमसांपराइयाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त,

---

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, लोभकषाय है। लोभकषाय होनेका यह कारण है कि मानकषायके उदयके नष्ट हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त आगे जाकर माया कषायका उदय भी नष्ट हो जाता है, इसलिए मायाकषाय इस भागमें नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक दशवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक काययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धि संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक,

---

नं. २१

अनिवृत्तिकरण-पंचमभाग-आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. पंच. भा.	१ सं. प.	६	१०	१ प.	१	१ पं.	१ त्रस	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	१	४ के. विना	२ सा. छे.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. १	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

उवसंतकसायाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, केण कारणेण सुक्कलेस्सा? कम्म-णोकम्म-लेव-णिमित्त जोगो अत्थि त्ति । भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-

औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक ग्यारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा होती है । संज्ञाके उपशान्त होने का यह कारण है कि यहांपर मोहनीय कर्मका पूर्ण उपशम रहता है, इसलिये उसके निमित्तसे होनेवाली संज्ञाएं भी उपशान्त ही रहती हैं, अतएव यहां उपशान्तसंज्ञा कही । आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, यथाख्यातशुद्धिसंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल लेश्या होती है ।

शंका—जब कि इस गुणस्थानमें कषायोंका उदय नहीं पाया जाता है, तो फिर यहां शुक्ललेश्या किस कारणसे कही?

समाधान—यहां पर कर्म और नोकर्मके लेपके निमित्तभूत योगका सद्भाव पाया जाता है, इसलिये शुक्ललेश्या कही है ।

लेश्याके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ७७   सूक्ष्मसाम्पराय-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१	१	१	१	१	९	०	१	४	१	३	६	१	२	१	१	२
सू.	सं प.			सू प	म	पं	त्र	म ४ व ४ औ १		सू. लो	के विना	सूक्ष्म	के द विना	द्र. १ भा शु	भ	औ क्षा	सं	आहा	साका अना

वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेद, खीणकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ,

---

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक बारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा होती है। क्षीणसंज्ञाके होनेका यह कारण है कि कषायोंका यहां पर सर्वथा क्षय हो जाता है, इसलिये संज्ञाओंका क्षीण हो जाना स्वाभाविक ही है। आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्षीणकषाय, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, यथाख्यातशुद्धिसंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सयोगिकेवलियोंके ओघालाप कहने पर—एक तेरहवां गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां होती हैं।

नं. २३

उपशान्तकषाय-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ उप	१ सं प	६	१०	० क्षी	१ म	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	० उप	४ के वि	१ यथा	३ के द विना	द्र ६ भा शु	१ भ	२ औ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २४

क्षीणकषाय-आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ क्षी	१ सं प	६	१०	० क्षी	१ म	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	० अपग	० क्षीण	४ केव विना	१ यथा	३ के द विना	द्र ६ भा शु	१ भ	१ क्षा	१ स	१ आ	२ साका अना

छ अपज्जत्तीओ, केवली कवाड-पदर-लोगपूरणगओ पज्जत्तो अपज्जत्तो वा ? ण ताव पज्जत्तो, 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं'[1] इच्चेदेण सुत्तेण तस्स अपज्जत्तसिद्धीदो। सजोगिं मोत्तूण अण्णे ओरालियमिस्सकायजोगिणो अपज्जत्ता 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता[2]' त्ति सुत्त-णिद्देसादो। ण, आहारमिस्सकायजोग-पमत्तसंजदाणं पि पज्जत्तयत्तप्पसंगादो। ण च एवं, 'आहारमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं[3]' त्ति सुत्तेण तस्स अपज्जत्तभाव-सिद्धीदो। अणवगासत्तादो[4] एदेण सुत्तेण

शंका—कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवली पर्याप्त है या अपर्याप्त ?

समाधान—उन्हें पर्याप्त तो माना नहीं जा सकता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे उनके अपर्याप्तपना सिद्ध है, इसलिये वे अपर्याप्तक ही हैं।

शंका—'सम्यग्मिथ्यादृष्टि, संयतासंयत और संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, इसप्रकार सूत्र निर्देश होनेके कारण यही सिद्ध होता है कि सयोगीको छोड़कर अन्य औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक हैं। यहां शंकाकारका यह अभिप्राय है कि औदारिकमिश्रयोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं यह सामान्य विधि है और सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयत जीव पर्याप्तक होते हैं यह विशेष विधि है और संयतोंमें सयोगियोंका अन्तर्भाव हो ही जाता है अतएव 'विशेषविधिना सामान्यविधिर्बाध्यते' इस नियमके अनुसार उक्त विशेष विधिसे सामान्य विधि बाधित हो जाती है जिससे कपाटादि समुद्घातगत केवलीको अपर्याप्त सिद्ध करना असंभव है ?

समाधान—ऐसा नहीं है क्योंकि, यदि 'विशेष विधिसे सामान्य विधि बाधित होती है' इस नियमके अनुसार 'औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं' यह सामान्य-विधि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि पर्याप्तक होते हैं' इससे बाधी जाती है तो आहारमिश्रकाययोगवाले प्रमत्तसंयतोंको भी पर्याप्तक ही मानना पड़ेगा, क्योंकि, वे भी संयत हैं। किंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, 'आहारकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे वे अपर्याप्तक ही सिद्ध होते हैं।

शंका—'आहारमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र अनवकाश है,

१ जी. सं. सू. ७६. २ जी. सं. सू. ९०. ३ जी. सं. सू. ७८.

४ अन्तरङ्गादप्यपवादो बलीयान्। परि. शे. पृ. ३७८. येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति। येन नाप्राप्ते इत्यस्य यत्कर्तृकावश्यकप्राप्तावित्यर्थो नञ्द्वयस्य प्रकृतार्थदार्ढ्यबोधकत्वात्। एवं च विशेषशास्त्रोद्देश्यविशेषधर्मावच्छिन्नवृत्तिसामान्यधर्मावच्छिन्नोद्देश्यकशास्त्रस्य विशेषशास्त्रेण बाधः। तदप्राप्तियोग्येऽचारितार्थ्यमेतस्य बाधकत्वे बीजम्। परि. शे. ५७, ३६८.

'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता'[1] त्ति एदं सुत्तं बाहिज्जदि, 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं'[2] ति एदेण ण बाहिज्जदि सावगासत्तेण बलाभावादो[3]। ण, 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदस्स वि सुत्तस्स सावगासत्तदंसणादो। सजोगिट्ठाणं दोसु वि सुत्तेसु सावगासेसु जुगवं ढुक्केसु 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदेण सुत्तेण 'ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं' ति एदं सुत्तं बाहिज्जदि परत्तादो[4]। ण, परसद्दो इट्ठवाचओ[5] त्ति घेप्पमाणे पुव्वेण बाहिज्जदि त्ति अणेयंतियादो। णियम-सद्दो

अर्थात् इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये कोई दूसरा स्थल नहीं है, अतः इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र बाधा जाता है। किंतु 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र नहीं बाधा जाता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र सावकाश होनेके कारण, अर्थात्, इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये सयोगियोंको छोड़कर अन्य स्थल भी होनेके कारण, निर्बल है, अतः आहारकसमुद्घातगत जीवोंके जिसप्रकार अपर्याप्तपना सिद्ध किया जा सकता है उसप्रकार समुद्घातगत केवलियोंके नहीं किया जा सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होता है' यह सूत्र भी सावकाश देखा जाता है, अर्थात्, सयोगीको छोड़कर अन्य स्थलमें भी इस सूत्रकी प्रवृत्ति देखी जाती है, अतः निर्बल है और इसलिये 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रकी प्रवृत्तिको नहीं रोक सकता है।

शंका—पूर्वोक्त समाधानसे यद्यपि यह सिद्ध हो गया कि पूर्वोक्त दोनों सूत्र सावकाश होते हुए भी सयोगी गुणस्थानमें युगपत् प्राप्त हैं, फिर भी 'परो विधिर्बाधको भवति' अर्थात्, पर विधि बाधक होती है, इस नियमके अनुसार 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रके द्वारा 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र बाधा जाता है, क्योंकि, यह सूत्र पर है?

समाधान—नहीं, क्योंकि 'परो विधिर्बाधको भवति' इस नियममें पर शब्द इष्ट अर्थात् अभिमत अर्थका वाचक है, पर शब्दका ऐसा अर्थ लेनेपर जिसप्रकार 'संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रसे 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता

१ जी. सं. सू. ९०. २ जी. सं. सू. ७८.

३ अपवादो यद्यन्यत्र चरितार्थस्तर्हि अन्तरङ्गेण बाध्यते निरवकाशत्वरूपस्य बाधकत्वबीजस्याभावात्। परि.

४ ... [illegible] (विप्रतिषेधे परं कार्यमिति सूत्रात्) पूर्वस्य परं बाधकमिति यावत्।

५ परि. शे. पृ. २४१.

सप्पओजणो णिप्पओजणो ? ण विदिय पक्खो, पुप्फयंत-वयण-णिग्गियस्स णिप्फलत्त-विरोहादो। ण चेदस्स सुत्तस्स णिच्चत्त-पयासण-फलं, णियम-सद्द-वदिरित्त-सुत्ताणमणिच्चत्त-प्पसंगादो। ण च एवं, 'ओरालियकायजोगो पज्जत्ताणं'[2] त्ति सुत्ते णियमाभावेण अपज्जत्तेसु वि ओरालियकायजोगस्स अत्थित्त-प्पसंगादो। तदो णियम-सद्दो णावओ। अण्णहा अणत्थयत्त-प्पसंगादो। किमेदेण णाणाविज्जदि ? 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता'[3] त्ति एदं सुत्तमणिच्चमिदि तेण[4] उत्तरसरीरमुट्ठाविद-सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजदाणं कवाड-पदर-लोगपूरण-गद-सजोगीणं च सिद्धम-

है' यह सूत्र बाधा जाता है, उसीप्रकार पूर्व अर्थात् 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, यह सूत्र भी बाधा जाता है, अतः शंकाकारके पूर्वोक्त कथनमें अनेकान्त दोष आ जाता है।

शंका—जब कि कपाट समुद्घातगत केवली अवस्थामें अभिमत होनेके कारण 'औदारिक-मिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र पर है तो 'संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, इस सूत्रमें आये हुए नियम शब्दकी क्या सार्थकता रह गई ? और ऐसी अवस्थामें यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि उक्त सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द सप्रयोजन है कि निष्प्रयोजन ?

समाधान—इन दोनों विकल्पोंमेंसे दूसरा विकल्प तो माना नहीं जा सकता है, क्योंकि, पुष्पदन्तके वचनसे निकले हुए तत्वमें निरर्थकताका होना विरुद्ध है। और सूत्रकी नित्यताका प्रकाशन करना भी नियम शब्दका फल नहीं हो सकता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर जिन सूत्रोंमें नियम शब्द नहीं पाया जाता है उन्हें अनित्यताका प्रसंग आ जायगा। परंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि ऐसा माननेपर 'औदारिककाययोग पर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रमें नियम शब्दका अभाव होनेसे अपर्याप्तकोंमें भी औदारिककाययोगके अस्तित्वका प्रसंग प्राप्त होगा, जो कि इष्ट नहीं है। अतः सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द ज्ञापक है नियामक नहीं। यदि ऐसा न माना जाय तो उसको अनर्थकपनेका प्रसंग आ जायगा।

शंका—इस नियम शब्दके द्वारा क्या ज्ञापित होता है ?

समाधान—इससे यह ज्ञापित होता है कि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' यह सूत्र अनित्य है। अपने विषयमें सर्वत्र समान प्रवृत्तिका नाम नित्यता है और अपने विषयमें ही कहीं प्रवृत्ति हो और कहीं न हो इसका नाम अनित्यता है। इससे उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि, और संयतासंयतोंके तथा कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवलियोंके अपर्याप्तपना

१ इतोऽद्यतप्रमाणि नित्य तद्विपरीतमनित्यम्। परि. शे. पृ. २५०

२ जी. सं. सू. ७६   ३ जी. सं. सू. ९०

४ प्रतिषु 'सि तेण' इति पाठः।

पज्जत्ता ।

अद्धारद्ध सरीरी अपज्जत्तो णाम । ण च सजोगम्मि सरीर पट्ठवणमत्थि, तदो ण तस्स अपज्जत्तमिदि ण, छ पज्जत्ति सत्ति-वज्जियस्स अपज्जत्त-ववएसादो । एहि इंदि-एहि विणा चत्तारि पाणा दो वा । दव्वेंदियाणं णिप्पत्तिं पडुच्च के वि दस पाणे भणंति । तण्ण घडदे । कुदो ? भाविंदियामावादो । भाविंदियं णाम पंचण्हमिंदियाणं खओवसमो । ण सो खीणावरणे अत्थि । अध दव्विंदियस्स जदि गहणं कीरदि तो सण्णीणमपज्जत्त-काले सत्त पाणा पिंडिदूण दो चेव पाणा भवंति, पंचण्हं दव्वेंदियाणमभावादो । तम्हा

सिद्ध हो जाता है ।

विशेषार्थ — सम्मामिच्छाइट्ठि संजदासंजद संजद ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता ' इस सूत्रको अनित्य बतलाकर उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतोंको भी जो अपर्याप्तक सिद्ध किया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इस वचनसे टीकाकारका यह अभिप्राय होगा कि तीसरे गुणस्थानमें उत्तरवैक्रियिक और उत्तर औदारिक तथा पांचवे गुण स्थानमें उत्तर औदारिकको उत्पन्न करनेवाले जीव जबतक उस उत्तर शरीरकी पूर्णता नहीं कर लेते हैं तबतक अपर्याप्तक कहे गये हैं। जिसप्रकार तेरहवे गुणस्थानमें पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए और शरीरकी पूर्णता होते हुए भी योगकी अपूर्णतासे जीव अपर्याप्तक कहा जाता है, उसीप्रकार यहांपर भी पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए योगकी पूर्णता रहते हुए और मूल शरीरकी भी पूर्णता रहते हुए केवल उत्तर शरीरकी अपूर्णतासे अपर्याप्तक कहा गया है।

शंका — जिसका आरंभ किया हुआ शरीर अर्ध अर्थात् अपूर्ण है उसे अपर्याप्त कहते हैं। परंतु सयोगी अवस्थामें शरीरका आरंभ तो होता नहीं, अतः सयोगीके अपर्याप्तपना नहीं बन सकता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, कपाटादि समुद्घात अवस्थामें सयोगी छह पर्याप्तिरूप शक्तिसे रहित होते हैं, अतएव उन्हें अपर्याप्त कहा है।

सयोगी जिनके पांच भावेन्द्रियां और भावमन नहीं रहता है, अतः इन छहके विना चार प्राण पाये जाते हैं। तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें वचनबल और श्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमें आयु और काय ये दो ही प्राण पाये जाते हैं। परंतु कितने ही आचार्य द्रव्येन्द्रियोंकी पूर्णताकी अपेक्षा दश प्राण कहते हैं। परंतु उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि, सयोगी जिनके भावेन्द्रियां नहीं पाई जाती हैं। पांचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमको भावेन्द्रिय कहते हैं। परंतु जिनका आवरणकर्म समूल नष्ट हो गया है उनके वह क्षयोपशम नहीं होता है। और यदि प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका ही ग्रहण किया जावे तो संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त कालमें सात प्राणोंके स्थानपर कुल दो ही प्राण कहे जायगे, क्योंकि, उनके द्रव्येन्द्रियोंका अभाव होता है। अतः यह सिद्ध हुआ कि सयोगी जिनके चार

१ प्रतिषु ' सरीरादवण ' इति पाठः ।　　२ प्रतिषु ' दव्वदियाणि　भवति ' इति पाठः ।

सजोगिकेवलिस्स चत्तारि पाणा दो पाणा वा। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सत्त जोग, सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो कवाडगदस्स ओरालियमिस्सकायजोगो पदर-लोग-पूरणेसु कम्मइयकायजोगो, एव सजोगिकेवलिस्स सत्त जोगा भवंति। अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता होंति ।

अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, पुव्विल्ल पज्जत्तीओ तहा चेव ट्ठिदाओ त्ति छ पज्जत्तीओ भणिदाओ। ण पुण पज्जत्ती-जणिद-कज्जमत्थि। आउअ-पाणो एक्को चेव। केण कारणेण ? ण ताव णाणा-

अथवा दो ही प्राण होते है। प्राण आलापके आगे क्षीण सज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सात योग होते हैं। वे सात योग कौनसे हैं ? आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— सत्यमनोयोग, अनुभय मनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, कपाट-समुद्घातगत केवलीके औदारिकमिश्रकाययोग और प्रतर तथा लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके कार्मणकाययोग इस प्रकार सयोगिकेवलीके सात योग होते हैं। योग आलापके आगे अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातशुद्धि सयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, और भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, सज्ञी और असज्ञी विकल्पसे रहित, आहारी, अनाहारी, साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगिकेवली गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक चौदहवा गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया होती है। छहों पर्याप्तियोंके होनेका यह कारण है कि पूर्वमें आई हुई पर्याप्तिया तथैव स्थित रहती है, इसलिये यहापर छहा पर्याप्तिया कही गई हैं। किन्तु यहापर पर्याप्तिजनित कोई कार्य नहीं होता है, अत आयुनामक एक ही प्राण होता है।

शंका—एक आयुप्राणके होनेका क्या कारण है ?

समाधान—ज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमस्वरूप पाच इन्द्रिय प्राण तो अयोगिकेवलीके

न २५ सयोगिकेवलीके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ.	उ
१	२	६	४|२	०	१	१	१	७	०	०	१	१	१	द्र ६	१	१	०	२	२
सयो.	स प म अ	प ६ अप		क्षीणसं.	म	पचे	त्रस	म २ व. २ औ २ का १	अपग	अक	के.	यथा	के द	भा. १ शु	भ	क्षा	अनु	आहा अना	साका अना यु उ

वरण-खओवसम लक्खण पंचिंदियपाणा तत्थ संति, खीणावरणे खओवसमाभावादो। आणा-
पाण भासा-मणपाणा वि णत्थि, पज्जत्ति-जणिद-पाण सण्णिद-सत्ति-अभावादो। ण सरीर
बलपाणो वि अत्थि, सरीरोदय जणिद कम्म णोकम्मागमाभावादो। तदो एक्को चेव
पाणो। उवयारमस्सिऊण एक्को वा छ वा सत्त वा पाणा भवंति। एवं पाणो पुण

हैं नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि कर्मोंके क्षय हो जानेपर क्षयोपशमका अभाव पाया जाता है। इसीप्रकार आनापान, भाषा, और मन प्राण भी उनके नहीं है, क्योंकि, पर्याप्तिजनित प्राण संज्ञावाली शक्तिका उनके अभाव है। उसीप्रकार उनके कायबल नामका भी प्राण नहीं है, क्योंकि, उनके शरीर नामकर्मके उदय जनित कर्म और नोकर्मोंके आगमनका अभाव है। इस लिये अयोगकेवलीके एक आयुप्राण ही होता है ऐसा समझना चाहिये। किन्तु उपचारका आश्रय लेकर उनके एक प्राण, छह प्राण अथवा सात प्राण भी होते हैं।

विशेषार्थ—वास्तवमें अयोगी जिनके एक आयु प्राण ही होता है फिर भी उपचारसे उनके यहां पर एक या छह या सात प्राण बतलाये हैं। 'जहां मुख्यका तो अभाव हो किंतु उसके कथन करनेका प्रयोजन या निमित्त हो वहां पर उपचारकी प्रवृत्ति होती है' उपचारकी इस व्याख्याके अनुसार यहां चौदहवें गुणस्थानमें क्षयोपशमरूप मुख्य इन्द्रियोंका तो अभाव है। फिर भी अयोगी जिनके पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदय पाया जाता है और वह जीवविपाकी है, इस निमित्तसे उन्हें पंचेन्द्रिय कहना बन जाता है। इसलिये उनके पांच इन्द्रिय प्राणोंका कथन करना भी सप्रयोजन है। इसप्रकार पांच इन्द्रियोंमें आयुको मिला देने पर छह प्राण हो जाते हैं। यहां पर इन्द्रियोंसे अभिप्राय उस शक्तिसे है जिससे अयोगी जिनमें पंचेन्द्रिय पनेका व्यवहार होता है। परंतु उस शक्तिके सम्पादनका या पांच इन्द्रियोंका आधार शरीर है, अतः इस निमित्तसे अयोगी जिनके कायबलका कथन करना भी सप्रयोजन है। इसप्रकार पूर्वोक्त छह प्राणोंमें कायबलके और मिला देने पर सात प्राण हो जाते हैं। यद्यपि उनके पहलेकी छह पर्याप्तियां उसीप्रकारसे स्थित हैं, अतः वे पर्याप्तक कहे जाते हैं। तथा पर्याप्तक अवस्थामें मन प्राण भी होता है, इसलिये उनके मन प्राणका भी कथन करना चाहिये था। परंतु उसके कथन नहीं करनेका यह कारण प्रतीत होता है कि उनमें संज्ञीव्यवहार लुप्त हो गया है। औपचारिक संज्ञीव्यवहार भी उनमें नहीं माना गया है अतः अयोगियोंके मन प्राण नहीं कहा। इसीप्रकार वचनबल और श्वासोच्छ्वासके अभावका भी कारण समझ लेना चाहिये। ऊपर सयोगी जिनके जो पांच इंद्रियां और एक मन इसप्रकार छह प्राणोंका निषेध करके केवल चार ही प्राण बतलाये हैं यह मुख्य कथन है। अतः जिस उपचारकी अपेक्षा यहां छह अथवा सात प्राण कहे हैं वही उपचार वहां भी लागू होता है। आयु प्राण तो अयोगियोंके मुख्य प्राण है फिर भी उसे भी उपचारमें ले लिया है, इसलिये इसे कथनका विवक्षाभेद ही समझना चाहिये। यहां उपचारका प्रयोजन ऐसा प्रतीत होता है कि विवक्षित पर्यायमें रखना जो आयुका काम है

अप्पपाणो। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा, लेव-कारण जोग कसायाभावादो। भवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति।

सिद्धाणं ति भण्णमाणे अत्थि एयं अदीद गुणट्ठाणं, अदीद-जीवसमासो, अदीद-पज्जत्तीओ, अदीद पाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अणिंदिया, अकाया, अजोगिणो, अवगदवेदा, खीणकसाया, केवलणाणिणो, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा, केवलदंसण, दव्व-भावेहिं अलेस्सिया, णेव भवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो

यह यहां भी पाया जाता है, इसलिये तो वह मुख्य प्राण है। फिर भी जीवनका अवस्थान अल्प है। और अवस्थानके कारणभूत नये कर्मोंका आना, योगप्रवृत्ति आदि भी नष्ट हो गये हैं, अत आयु भी इस अपेक्षासे औपचारिक प्राण कहा जाता है। इसप्रकार अयोगियोंके उपचारसे एक या छह या सात प्राण कहे गये हैं।

प्राण आलापके आगे क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पञ्चेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे लेश्यारहितस्थान होता है। लेश्याके नहीं होनेका यह कारण है कि कर्म लेपके कारणभूत योग और कषाय, इन दोनोंका ही उनके अभाव है। लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, अनाहारक, साकारोपयोग तथा अनाकारोपयोग इन दोनों ही उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

सिद्धपरमेष्ठीके ओघालाप कहनेपर—एक अतीत गुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत प्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अनिन्द्रिय, अकाय, अयोगी, अवेदी, क्षीणकषाय, केवलज्ञानी, संयत, असंयत और संयतासंयत विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शनी, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिद्धिक विकल्पातीत, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों

नं. २६   अयोगिकेवलीके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अयो	१ प	६	१ आयु	१	१ म	१ पंचे	१ त्रस	० अयो	० अपग	० अक	१ के	१ यथा	१ के द	६ द्र ० भा अले	१ भ	१ क्षा	१ अनु	१ अना	२ साका अना यु उ

णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति ।

एवं मूलोघालावा समत्ता ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय ओरालियमिस्स आहार आहारमिस्सेहिं विणा एगारह जोग, णवुंसयवेदो, णेरइया दव्व-भावेहिं णवुंसयवेदा चेव भवंति त्ति । चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास काउ सुक्कलेस्साओ, दव्वलेस्सा कालाकालाभासा सुट्ठुकण्हेत्ति' जं वुत्तं होदि । एसो णेरइयाणं

विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसप्रकार मूल ओघालाप समाप्त हुए।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंके आलाप कहनेपर– आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालकी अपेक्षा दस प्राण और अपर्याप्तकालकी अपेक्षा सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग आहारककाययोग, आहारकमिश्रकाययोग, इन चारों योगोंके विना ग्यारह योग, नपुंसकवेद होता है। एक नपुंसकवेदके होनेका यह कारण है कि नारकी जीव द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षा नपुंसकवेदी होते हैं। वेद आलापके आगे चारों कषायें, तीनों अज्ञान और तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्तत्वकी अपेक्षा कालाकालाभास लेश्या, और अपर्याप्तत्वकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्या होती है। पर्याप्त अवस्थामें जो कालाकालाभास लेश्या कही है उसके कहनेका यह तात्पर्य है कि पर्याप्त अवस्थामें कालाकालाभास अर्थात् अतिकृष्ण लेश्या होती है। नारकियोंकी पर्याप्त अवस्थामें यह

१ प्रतिषु 'करणत्ति' इति पाठः ।

नं. २७

सिद्धोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	१	०	१	०	०	१	०	१	२
अ ग	अ जी	अ प	क्षे	क्षीणसं	सि	अनि	अका	अयो	अपग	क्षीणक	के	अनु	के द	अले	अनु	क्षा	अनु	अना	साका अना यु उ

पज्जत्तकाले सरीरलेस्सा भवदि। विग्गहगदीए पुण णेरइयादि-सव्व-जीवाणं दव्वलेस्सा सुक्का चेव भवदि, कम्म-विस्ससोवचयस्स धवलवण्णं मोत्तूण अण्ण-वण्णाभावादो। सरीर-गहिद-पढम-समय-प्पहुडि जाव अपज्जत्त-काल-चरिम-समओ त्ति ताव सरीरस्स काउलेस्सा चेव, सवलिद-सयल-वण्णादो। भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाय, छण्णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काला-कालाभासलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ

शरीरलेश्या होती है। किन्तु विग्रहगतिमें नारकी आदि सभी जीवोंकी द्रव्यलेश्या शुक्ल ही होती है, क्योंकि, कर्मोंके विस्रसोपचयका धवलवर्ण छोड़कर अन्यवर्ण नहीं होता है, तथा शरीर-ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर अपर्याप्तकालके चरम समयतक शरीरकी कापोतलेश्या ही होती है, क्योंकि, उस समय शरीर सवलित सकल वर्णवाला होता है। भावकी अपेक्षा तो कृष्ण, नील और कापोतलेश्या होती है। लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकियोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी ओघालाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या और भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. २८ नारकसामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ न	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै २ कार्म १	१ नं	४	६ अज्ञा ३ ज्ञा ३	१ असं	३ के द विना	द्र ३ कृ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	६	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं खइयसम्मत्तं मिच्छत्तं च । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना कुमति और कुश्रुति ये दो अज्ञान तथा मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। इनमें वेदकसम्यक्त्व तो कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा होता है और उसमें क्षायिक और मिथ्यात्वके मिला देने पर नारकियोंके अपर्याप्त अवस्थामें तीन सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रथमायां पृथिव्यां पर्याप्तापर्याप्तकानां क्षायिकं क्षायोपशमिकं चास्ति । स. सि. १, ७.

नं. २९. नारकसामान्य पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा स अ	१ सं प	६ प	१०	४	१ न	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	१ न	४	६ अज्ञा ३ ज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र १ कृ भा ३ अशु	२ भ अ	६	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३०. नारकसामान्य अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ मि अवि	१ सं अ	६ अप	७	४	१ न	१ पं	१ त्र	२ वै मि काम	१ न	४	५ कुम कुश्रु, ज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	३ मि क्षा क्षाया	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

णयपहि णेरइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकाला-

अब नारकी मिथ्यादृष्टिजीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभासलेश्या और अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और कार्मणकाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासकृष्ण

नं. ३१   नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ म प म अ	६ प ६ अ	१० प ७ अ	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ कार्म १	१ न	४	३ अज्ञा	१ अस	२ च अ	द्र ३ कृ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मिथ्या	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

भावलेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दोण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[3]।

लेश्या, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ न.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३३ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अप.	७ अप.	४	१ न.	१ पं.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउकाउभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तिहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउकाउभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया,

नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतकापोतभास लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतकापोतभास लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक

नं. ३४ नारकसामान्य-सासादन आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	१ न	१ पंच	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ नपुं	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ का भा ३ अशु	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३५ नारकसामान्य-सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ ज्ञान मिश्र अज्ञा.	१ अस.	२ च. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३६ नारकसामान्य-असंयत सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ कार्म.	१ नपुं.	४	३ मति श्रुत अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ३ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण

उन्हीं नारकी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारो सज्ञाए, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारो मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

उन्हीं नारकी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारो सज्ञाए, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुसकवेद चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक उपशमसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व

न ३७ नारकसामान्य-असयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	३	द्र १	१	३	१	१	२
अवि	स प				न	पचे	त्रस	म ४ व ४ वै १	न		मति श्रुत अव	अस	के द विना	कृ भा ३ अशु	भ	औ क्षा क्षायो	स	आहा	साका अना

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम पृथिवीगत नारकोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर—मिथ्यादृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८०

प्रथमपृथिवी-नारक पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	६	१	३	१	२	६	१	१	२
मि. सा. स. अ.	सं. प.				न.	पं.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. १	नपुं.		ज्ञा. ३ अज्ञा. ३	अस.	विना के. द.	द्र. ६ भा. १ का.	भ. अभ.		सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ८१

प्रथमपृथिवी-नारक अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	५	१	३	द्र. २	२	३	१	२	२
मि. अवि.	सं. अ.	अप.			न.	पंच.	त्रस.	वै. मि. कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु. ज्ञा. ३	अस.	के. द. विना	का. शु. भा. १ का.	भ. अभ.	मि. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

संपहि पढम-पुढवि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउ-लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण

अब प्रथम पृथिवी गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास लेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम पृथिवी गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. ४२	प्रथमपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६	१०, ७	४	१	१	१	११	१	४	३	१	२	द्र. ३	२	१	१	२	२
मि.	सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	७		न.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ वै. २ का. १	न.		अज्ञा.	असं.	च. अच.	क. का. शु. भा. १ का.	भ. अ.	मि.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[।]

द्रव्यसे कालाकालभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्य-सिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

उन्हीं प्रथम पृथिवी गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' अभवसिद्धिया ' इति पाठो नास्ति

न ४३

प्रथमपृथिवी–नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ न	४	३ अज्ञा	१ अस	२ च अच	द्र १ कृ भा १ का	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

न ४४

प्रथमपृथिवी–नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अ	६	७	४	१ न	१ पं	१ त्रस	२ वै मि काम	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ च अच	द्र २ का शु भा १ का	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया,

प्रथम पृथिवीगत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रथम पृथिवी-गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व,

नं. ४७ प्रथमपृथिवी-नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	२	द्र. १	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.				न.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. १	न.		अज्ञा.	अस.	चक्षु. अच.	कृ. भा. १ का.	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभास काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रथम पृथिवीगत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४९

प्रथमपृथिवी-नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ नपुं	४	३ ज्ञान अज्ञा मिश्र	१ अस	२ च अ	द्र १ कृ भा १ का	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ५०

प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ न	१ पं	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ का १	१ नपुं	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ३ कृ का शु भा १ का	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो

उन्हीं प्रथम पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं प्रथम पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ४८　　　　प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै, १	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र. १ कृ भा. १ का	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

विदियाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिम काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय पृथिवी गत नारकोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८९ प्रथमपृथिवी-नारक असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	६ अप	७	४	१ न	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा १ का	१ भ	२ क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ९० द्वितीयपृथिवी-नारक सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा सम्य अ	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ न	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ वै २ का १	१ न	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान ३	१ अस	३ के द विना	द्र २ कृ शु भा १ का	२ भ अ	५ औ क्षायो मि सासा सम्य	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काला-कालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्म-त्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण मज्झिम-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं द्वितीय पृथिवी-गत नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं द्वितीय पृथिवी-गत नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्य-सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और

नं. ५१ द्वितीयपृथिवी-नारक पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नं.	४	६ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. १ कृ. भा. १ का.	२ भ. अ.	५ मि. सासा. सम्य. औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभास-काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [2]।

अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय पृथिवी गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

न [illegible]

द्वितीयपृथिवी-नारक अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं. अ.	६ अ	७	४	१ न	१ प	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ का	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

न ५२

द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं. प. सं. अ.	६ प ६ अ	१० ७	४	१ न	१ प	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ का १	१ न	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ३ कृ का शु भा १ का	२ भ अ	१ मि	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काला-कालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं द्वितीय पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि नारकोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं द्वितीय पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि नारकोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्य

नं. ७३   द्वितीयपृथिवी-नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	१ न	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	१ न	४	३ अज्ञा	१ असं	२ च अच	द्र १ कृ भा १ का	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो

द्वितीय पृथिवी गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पञ्चेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानमिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

द्वितीय पृथिवी गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण चारों संज्ञाएं, नरकगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक,

नं. ५७ द्वितीय पृथिवी-नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	१ न	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	१ नपुं	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ कृ भा १ का	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अनाका

वजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगई, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छण्णाण, दो संजम,

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंचोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञी पर्याप्त पचेन्द्रिय तिर्यंचोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी-पर्याप्त पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय तिर्यंचोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंचोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञी पचेन्द्रियोंके दशों प्राण, असंज्ञी पचेन्द्रियोंके नौ प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियादि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्य

नं ७९

सामान्य तिर्यंचोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा म अ देश	१४	६ प ६ अ ५ प ५ अ ४ प ४ अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७, ६,४ ४,३	४	१ ति	५	६	११ म ४ व ४ औ २ कार्म १	३	४	६ ज्ञा ३ अ ३	२ अस देश	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस	२ आ अना	२ साका अना

नं ८०

सामान्य तिर्यंचोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा सम्य अवि. देश	७ पया	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	१ ति	५	६	९ म ४ व ४ औ १	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	२ असं देश	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अभ	६	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काया, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंग-णाणेण विणा पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ । किं कारणं ? जेण तेउ-पम्मलेस्सिया वि देवा तिरिक्खे-सुप्पज्जमाणा णियमेण णट्ठलेस्सा भवंति त्ति । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासणसम्मत्त खइयसम्मत्त कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं एव चत्तारि सम्मत्त,

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामान्य तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सातों जीव-समास, संज्ञी पचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पचेन्द्रियों और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पचेन्द्रियोंके सात प्राण, असंज्ञी पचेन्द्रियोंके सात प्राण चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण होते हैं । चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याएं, होती हैं ।

शंका—सामान्य तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालमें तीनों अशुभ लेश्याएं ही क्यों होती हैं ?

समाधान—क्योंकि, तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले भी देव यदि तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हैं तो नियमसे उनकी शुभलेश्याएं नष्ट हो जाती हैं, इसलिये तिर्यंचोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन अशुभ लेश्याएं ही होती हैं ।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व इस प्रकार चार सम्यक्त्व, संज्ञिक,

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव तिरिक्खमिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ

असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अब तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण और सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण, एकेन्द्रियोंके चार प्राण और तीन प्राण क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ६१

सामान्य तिर्यंचोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा अवि	७ अप	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति	५	६	३ औ मि कार्म	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ अस	३ के द	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	४ मि सा क्षा क्षायो	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ६२

सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	१ ति	५	६	११ म ४ व ४ औ २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ च अच	द्र ६ भा ६	२ भ अभ	१ मि	२ सं अस	२ आहा अना	२ साका अना

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छप्पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पर्याप्तसम्बन्धी सातों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तसम्बन्धी सातों जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां,

नं. ९३ सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	७	६	१०	४	१	५	६	९	३	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	१	२
मि.	पर्या.	५	९		ति.			म. ४			अज्ञा.	अस.	चक्षु.	भा. ६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
		४	८					व. ४					अच.		अ.		असं.		अना.
			७					औ. १											
			६																
			४																

अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तिरिक्ख सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

---

असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और

नं. ६४

सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त [illegible]

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.
१	७	६ अप.	७	४	१	५	६	२	३	४	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि.	अप.	५ ,,	७		ति.			औ. मि.			कुम.			
		४ ,,	६					कार्म.			कुश्रु.			
			५											
			४											
			३											

असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ९५ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६प	१०	४	१	१	१	११	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	२	२
सा	सं प,	६अ	७		ति	पंचे	त्रस	म ४			अज्ञा	असं	चक्षु	भा ६	भ	सासा	सं	आहा	साका
	सं अ							व ४					अच					अना	अना
								औ २											
								का १											

नं. ९६ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सा	सं प				ति	पंचे	त्रस	म ४			अज्ञा	असं	चक्षु	भा ६	भ	सासा	सं	आहा	साका
								व ४					अच						अना
								औ १											

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो,

---

उन्हीं सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व

नं. ६७ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	३	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं.अ.	अप.			ति.	पं.	त्र.	औ.मि. कार्म.			कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ६८ सामान्य तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ च अ	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ६९ सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि [illegible]
पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी [illegible]
जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, [illegible]
छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, [illegible]
अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि [illegible]
अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी [illegible]
जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, [illegible]
सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, [illegible]

उन्हीं सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि [illegible]
पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक [illegible]
दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रिय [illegible]
वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, [illegible]
असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे [illegible]
क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व [illegible]
पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि [illegible]
पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक [illegible]
सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रिय [illegible]
और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, [illegible]
आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और [illegible]
सिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके विना क्षायिक [illegible]

नं. ७० सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि [illegible]

| गु | जी | प | प्रा | सं | ग | इं | का | यो | वे | क | [illegible]

सम्मत्तं । मणुस्सा पुव्वबद्ध-तिरिक्खयुगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्माइट्ठी होदूण असंखेज्ज-वस्सायुगेसु तिरिक्खेसु उप्पज्जंति ण अण्णत्थ, तेण भोगभूमि-तिरिक्खेसुप्पज्जमाणं पेक्खिऊण असंजदसम्माइट्ठि-अपज्जत्तकाले खइयसम्मत्तं लब्भदि । तत्थ उप्पज्जमाण-कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लब्भदि । एवं तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठिस्स अपज्जत्तकाले दो सम्मत्ताणि हवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

तिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण

पूर्वोक्त दो सम्यक्त्वोके होनेका यह कारण है कि जिन मनुष्योंने सम्यग्दर्शन होनेके पहले तिर्यंच आयुको बांध लिया है वे पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण कर और दर्शनमोहनीयको क्षपण करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि होकर असंख्यात वर्षकी आयुवाले भोगभूमिके तिर्यंचोंमें ही उत्पन्न होते हैं अन्यत्र नहीं । इस कारण भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षासे असंयतसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें क्षायिकसम्यक्त्व पाया जाता है । और उन्हीं भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व भी पाया जाता है । इसप्रकार तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालमें दो सम्यक्त्व होते हैं । सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके

१ प्रतिषु 'ठ्ठिप्पहुडि' इति पाठः ।

नं. ८१ सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जा	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र २	१	२	१	२	२
अवि	सं अ	अप	अप		ति	पंचे	त्रस	औ मि कार्म	पु		मति श्रुत अव	अस	के द विना	का शु भा १ का	भ	क्षा क्षायो	सं	आहा अना	साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो

उन्हीं सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व होते हैं।

नं. ७०

सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
अवि.	सं प				ति	पंचे.	त्रस.	म ४ व ४ औ १			मति श्रुत अव	अस	क द विना	भा ६	भ	औ क्षा क्षायो	स	आहा	साका अना

सम्मत्तं । मणुस्सा पुव्वबद्ध-तिरिक्खाउगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्माइट्ठी होदूण असंखेज्ज-वस्साउगेसु तिरिक्खेसु उप्पज्जंति ण अण्णत्थ, तेण भोगभूमि-तिरिक्खेसुप्पज्जमाणं पेक्खिऊण असंजदसम्माइट्ठि-अपज्जत्तकाले खइयसम्मत्तं लब्भदि । तत्थ उप्पज्जमाण-कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लब्भदि । एवं तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठिस्स अपज्जत्तकाले दो सम्मत्ताणि हवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

तिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण

पूर्वोक्त दो सम्यक्त्वोंके होनेका यह कारण है कि जिन मनुष्योंने सम्यग्दर्शन होनेके पहले तिर्यंच आयुको बांध लिया है वे पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण कर और दर्शनमोहनीयको क्षपण करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि होकर असंख्यात वर्षकी आयुवाले भोगभूमिके तिर्यंचोंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र नहीं। इस कारण भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षासे असंयतसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें क्षायिकसम्यक्त्व पाया जाता है। और उन्हीं भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व भी पाया जाता है। इसप्रकार तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालमें दो सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके

१ प्रतिषु 'ट्ठिस्सट्ठि' इति पाठः ।

नं. ७१ सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र. २	१	२	१	२	२
अवि.	सं. अ.	अप.	अप.		ति.	पंचे.	त्रस.	औ. मि. कार्म.	पु.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. शु. भा. १ का.	भ.	क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं । केण कारणेण ? तिरिक्ख-संजदासंजदा दंसणमोहणीयं कम्मं ण खवेंति, तत्थ जिणाणमभावादो । मणुस्सा पुव्वं बद्ध-तिरिक्खायुगा खइयसम्माइट्ठिणो कम्मभूमीसु ण उप्पज्जंति किंतु भोगभूमीसु । भोगभूमीसुप्पण्णा वि ण संजमासंजमं पडिवज्जंति, तेण तिरिक्ख-संजदासंजदट्ठाणे खइयसम्मत्तं णत्थि । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[ ] ।

पंचिंदिय-तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह

बिना दो सम्यक्त्व होते हैं। क्षायिकसम्यक्त्वके नहीं होनेका कारण यह है कि संयतासंयत तिर्यंच दर्शनमोहनीय कर्मका क्षपण नहीं करते हैं, क्योंकि, वहांपर जिन अर्थात् केवली या श्रुतकेवलीका अभाव है। और पूर्वमें तिर्यंच आयुको बांधकर पीछे क्षायिकसम्यग्दृष्टि होनेवाले मनुष्य कर्मभूमियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं, किन्तु भोगभूमियोंमें ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु भोगभूमियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच संयमासंयमको प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिये तिर्यंचोंके संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिकसम्यक्त्व नहीं होता है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद,

नं. ८२

सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

[२]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि

चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्य सिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, संज्ञीके दश प्राण और असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रिय-जाति त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम

नं. ७३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५	४	६ प	१०	४	१	१	१	११	३	४	६	२	३	द्र ६	२	६	२	२	२
मि	स प	६ अ	७		ति	पं	त्र	म ४			ज्ञान ३	अस	के द	भा ६	भ		सं	आहा	साका
सा	स अ	५ प	९					व ४			अज्ञा ३	देश	विना		अ		असं	अना	अना
सम्य	अप	५ अ	७					औ २											
अवि	अअ							का १											
देश																			

नं. ७४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
५	२	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	६	२	३	द्र ६	२	६	२	१	२
मि	स प	५	९		ति	पं	त्र	म ४			ज्ञान ३	अस	के द	भा ६	भ अ		सं	आहा	साका
सा	असं							व ४			अज्ञा ३	देश	विना				असं		अना
सम्य	प							औ १											
अवि																			
देश																			

दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त उवसमसम्मत्त णत्थि, मिच्छत्त सासणसम्मत्त खइयसम्मत्त कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तमिदि चत्तारि सम्मत्त । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक होते हैं। इनके सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, किन्तु मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व ये चार सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ७१   पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके अपर्या

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.
३	२	६अ	७	४	१	१	१	२	३	४	५
मि. सा. अ.	सं.अप. अस. ,,	५ ,,	७		ति.	पं.	त्रस	ओ.मि. कार्म.			कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.

पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

---

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो

नं. ७८　　पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४ सं प ,, अ असं प ,, अ	६ प ६ अ ५ प ५ अ	१० ७ ९ ७	४	१ ति	१ पंचें.	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण और असंज्ञीके सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ७७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं प असं प	६ ५	१ ९	४	१ ति	१ पंच	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	[illegible]	४	३ अज्ञा	१ अस	[illegible] चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	१ आ	२ साका अना

नं. ७८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं अ असं ,,	६ अ ५ अ	७ ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

पंचिंदियतिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहिं

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु

नं. ७९　पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८०   पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ८१   पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस.	२ औ. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अनाका.

पंचिंदियतिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त,

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक

नं. ८२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तम्हि चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ८४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिंदियतिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व,

नं. ८९   पचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	६ अ	७	४	१ ति	१ पं	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा १ का	१ भ	२ क्षायो क्षा	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

णिणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति पंचिंदियतिरिक्ख-भंगो । णवरि विसेसो पुरिस-णउंसयवेदा दो चेव भवंति, इत्थिवेदो णत्थि । अथवा तिण्णि वेदा भवंति ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं

संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच सामान्यके आलापोंके समान ही आलाप समझना चाहिये। विशेष बात यह है कि इनके वेद स्थानपर पुरुष और नपुंसक ये दो ही वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है। अथवा तीनों ही वेद होते हैं।

विशेषार्थ—पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके दो ही वेद बतलानेका यह अभिप्राय है कि योनिमती जीवोंका पर्याप्तक भेदमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, योनिमतियोंका स्वतंत्र भेद गिनाया है। अथवा पर्याप्त और योनिमती तिर्यंच इन दोनों भेदोंको गौण करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सभी पर्याप्तकोंका ग्रहण किया जावे तो पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके आलापमें तीनों वेदोंका भी सद्भाव सिद्ध हो जाता है।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त, असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ८६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	१ ति	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	२ औप क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्तं, सण्णिणीओ, असण्णिणीओ, आहारिणी, अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तासिं चेव पज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त,

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी

नं. ८७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. स. अ. देश.	४ सं. प. सं. अ. असं. प. असं. अ.	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ.	१० ७ ९ ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. २ कार्म. १	१ स्त्री.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञा. ३	२ असं. देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	५ क्षा. विना.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ८८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. स. अ. देश.	२ सं. प. असं. प.	६ प. ५ प.	१० ९	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान ३	२ असं. देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	५ क्षा. विना.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्त, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि

आहारक, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी और असंज्ञीके सात सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीव

नं. ८९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	२ सं.अ. असं. ,,	६ अ. ५ ,,	७ ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	२ मि. सा.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणिणी मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजम, दो दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

समास, सज्ञिनीके छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, असज्ञिनीके पाच पर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया, सज्ञिनीके दशों प्राण, सात प्राण, असज्ञिनीके नौ प्राण, सात प्राण, चारों सज्ञाए, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सज्ञिनी, असज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त और असज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, सज्ञीके छहों पर्याप्तिया, और असज्ञीके पाच पर्याप्तिया, सज्ञीके दशों प्राण, और असज्ञीके नौ प्राण; चारों सज्ञाए, तिर्यचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक,

नं. ९०   पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	४	६प	१०	४	१	१	१	११	१	४	३	१	२	द्र ६	२	१	२	२	२
मि.	स प	६अ	७		ति.	पचे.	त्रस.	म ४	स्त्री.		अज्ञा.	अस.	चक्षु.	भा ६	भ.	मि.	स.	आहा.	साका.
	स अ	५प	९					व ४					अच.		अ.		अस.	अना.	अना.
	अस प	५अ	७					औ २											
	अस अ							का १											

मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

तासिमपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणी असण्णिणी, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञिनीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञिनीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञिनी अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञिनी अपर्याप्तके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

म ९१ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं प असं प	६ ५	१ [illegible]	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

नं ९२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं अप असं ,,	६अ ५ ,,	७ ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा [१]।

[२]तासिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

पचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं. ९३ पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ २ का १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ९४ पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	१ ति	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ च अ	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना

जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तासिमपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्क लेस्साओ, भावेण किण्ण णील काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदिय

और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं,

नं. ९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादनसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	२ औ. मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

जादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होती हैं।

पचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि योनिमतितिर्यंचोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. ९६ पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ स प	६	१०	४	१ ति	१ पचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ९७ पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ स प	६	१०	४	१ ति	१ पचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	२ औप क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिणी संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइय सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

पंचिंदिय तिरिक्ख लद्धि अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउ

पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत योनिमतियोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञी अपर्याप्तके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, और कापोत लेश्याएं; भव्य

नं. ९८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती संयतासंयतोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१	४	१ ति	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	२ औप क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८४]।

एवं तिरिक्खगदी समत्ता ।

मणुसा चउव्विहा हवंति मणुस्सा मणुस-पज्जत्ता मणुसिणीओ मणुस-अपज्जत्ता चेदि । तत्थ मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो,

सिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इस प्रकार तिर्यंचगतिके आलाप समाप्त हुए।

मनुष्य चार प्रकारके होते हैं—मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त, मनुष्यिनी और लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य। उनमेंसे मनुष्यसामान्यके आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएं, और क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तथा अयोग स्थान भी होता है, तीनों वेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी होता है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या स्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, अनाहारक, साकारो-

नं. ९९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. अ. असं. ,,	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[१] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग ओरालिय-आहार मिस्स कम्मइएहिं विणा दस वा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो

पयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; अथवा पूर्वोक्त दो और औदारिकमिश्रकाययोग आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग इन पांच योगोंके विना दशयोग तथा अयोग स्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगतवेद स्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्या स्थान भी है; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित

नं. १०० सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	२ म. प. म. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ वै. द्वि. विना अयो.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	१ स. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, अजोगि-भयवंतम्मि सरीर-णिमित्तमागच्छमाण-परमाणूणमभावं पेक्खिऊण पज्जत्ताणमणाहारित्तं लब्भदि । सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

भी स्थान है। आहारक, और अनाहारक भी होते हैं। मनुष्योंके पर्याप्त अवस्थामें अनाहारक होनेका कारण यह है कि अयोगिकेवली भगवान्‌के शरीरके निमित्तभूत आनेवाले परमाणुओंका अभाव देखकर पर्याप्तक मनुष्योंके भी अनाहारकपना बन जाता है। साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर योग आलापका कथन करते हुए वैक्रियिकद्विक, आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगके विना दश अथवा केवल वैक्रियिकद्विकके विना तेरह योग बतलाये हैं। दश योग तो मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें होते ही हैं, परंतु अपर्याप्त अवस्थामें होनेवाले औदारिकमिश्र आहारकमिश्र और कार्मणकाययोगको मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें बतानेका यह कारण है कि यद्यपि तेरहवें गुणस्थानमें समुद्धातके समय योगोंकी अपूर्णता रहती है फिर भी उस समय पर्याप्त नामकर्मका उदय विद्यमान रहता है और शरीरकी पूर्णता भी रहती है, इसलिये पर्याप्त नामकर्मके उदय और शरीरकी पूर्णताकी अपेक्षा कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्धातगत केवली भी पर्याप्त हैं और इसप्रकार पर्याप्त अवस्थामें औदारिकमिश्र तथा कार्मणकाययोग बन जाते हैं। इसीप्रकार छठवें गुणस्थानमें आहारमिश्रकाययोगके समय भी पर्याप्त-नामकर्मका उदय रहता है, इसलिये ऐसा निर्वृत्तिसे अपर्याप्त होता हुआ भी जीव पर्याप्त-नामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त ही है, अतः आहारमिश्रकाययोग भी पर्याप्त अवस्थामें बन जाता है। इसप्रकार उपर्युक्त तीनों योग विवक्षा भेदसे पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं इसलिये मनुष्योंकी पर्याप्त अवस्थामें तेरह योग भी गिनाये हैं।

नं. १०१　　सामान्य मनुष्योंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	१	६	१०	४	१	१	१	१३	३	४	८	७	४	द्र ६	२	६	१	२	२
	प. म.			क्षीणसं.	म.	पं.	त्रस.	वै २ विना १० । म ४ व ४ औ १ अ १	अपग.	अकषा.				भा ६ अले.	भ. अ.		सं. अनु.	आहा. अना.	साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ अदीदसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सेण सह तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, पंच णाण केवलणाणेण छ णाण, असंजम सामाइय छेदोवट्ठावण जहाक्खादेहि चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त-उवसमसम्मत्तेण विणा चत्तारि सम्मत्तं, सण्णिणो अणुभओ वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा ।

वहीं सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारमिश्रकाययोगके साथ औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेद स्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है, कुमति, कुश्रुत तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान और केवलज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्वके विना चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, और अनुभय अर्थात् संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

नं. १०२

सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५	१	६अ.	७	४	१	१	१	३	३	४	६	४	४	द्र. २	२	४	१	२	२
मि. सा. अ. प्र. स.	सं. अ.			क्षीणसं.	म.	पं.	त्रस.	औ. मि. आ. मि. कार्म.	अपग.	अकषा.	विभं. मनः. विना	असं. सामा. छेदो. यथा.		का. शु. भा. ६	भ. अ.	मि. सा. क्षा. क्षायो.	सं. अनु.	आहा. अना.	साका. अना. यु. उ.

मणुस-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक,

नं. १०३   सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुस्स-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुण

नं. १०७ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ च. अ.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १०८ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

"मणुस असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम,

स्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. १०९　　सामान्य मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सम्य.	सं प.				म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १			ज्ञान ३ मि. मिश्र	अस.	चक्षु अच.	भा. ६	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. ११०　　सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६प	१०	४	१	१	१	११	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	२	२
अवि.	सं प. सं अ.	६अ	७		म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. २ का. १			मति श्रुत अव.	अस.	केद. विना	भा. ६	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद । देव-णेरइय-मणुस-असंजदसम्माइट्ठिणो जदि मणुस्सेसु उप्पज्जंति तो

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमा[illegible] प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारि[illegible] काययोग ये दो योग, एक पुरुषवेद होता है। केवल एक [illegible] कि देव, नारकी और मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि [illegible]

नं. २११ सामान्य मनुष्य

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	
१ अवि.	१ स प	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४

णियमा पुरिसवेदेसु चेव उप्पज्जंति ण अण्णवेदेसु, तेण पुरिसवेदो चेव भणिदो। चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ। तं जहा—णेरइया असंजदसम्माइट्ठिणो पढम-पुढवि आदि जाव छट्ठी-पुढवि-पज्जवसाणासु पुढवीसु ट्ठिदा कालं काऊण मणुस्सेसु चेव अप्पप्पणो पुढवि-पाओग्ग-लेस्साहि सह उप्पज्जंति त्ति किण्ह-णील-काउलेस्सा लब्भंति। देवा वि असंजदसम्मा-इट्ठिणो कालं काऊण मणुस्सेसु उप्पज्जमाणा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि सह मणुस्सेसु उववज्जंति, तेण मणुस्स-असंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले छ लेस्साओ हवंति। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

मणुस्स-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

नियमसे पुरुषवेदी मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यवेदवाले मनुष्योंमें नहीं, इससे एक पुरुषवेद ही कहा है। वेद आलापके आगे चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। अविरतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त मनुष्योंके छहों लेश्याएं होनेका कारण यह है कि प्रथम पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवी पर्यंत पृथिवियोंमें रहनेवाले असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी मरण करके मनुष्योंमें अपनी अपनी पृथिवीके योग्य लेश्याओंके साथ ही उत्पन्न होते हैं इसलिये तो उनके कृष्ण, नील और कापोत-लेश्याएं पाई जाती हैं। उसीप्रकार असंयतसम्यग्दृष्टि देव भी मरण करके मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए अपनी अपनी पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं, इसलिए मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें छहों लेश्याएं बन जाती हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत सामान्य मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक

नं. ११२   सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	३	१	४	३	१	३	द्र. २	१	२	१	२	२
अवि.	सं. अ.	अ.			म.	पं.	त्रस.	औ. मि. कार्म.	पु.		मति. श्रुत. अव.	अस.	के. द. विना.	का. शु. भा. ६	भ.	क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

संपहि पमत्तसंजद-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघालावो अणूणो अणहिओ वत्तव्वो । मणुस्स-पज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मणुस्सोघभंगो । अथवा इत्थिवेदेण विणा दो वेदा वत्तव्वा एत्तियमेत्तो चेव विसेसो ।

संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पीत, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अब प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक न्यूनता और अधिकतासे रहित मूल ओघालाप कहना चाहिये, अर्थात्, गुणस्थानोंकी अपेक्षा जो आलाप छठे गुणस्थानसे लेकर चौदहवें गुणस्थान तक कह आये हैं वे ही यहां मनुष्योंके छठे गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके समझना चाहिये, क्योंकि छठेसे आगेके सभी गुणस्थान मनुष्योंके ही होते हैं इसलिये सामान्य कथनमें और इस कथनमें कोई विशेषता नहीं है ।

मनुष्य पर्याप्तकोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक मनुष्य सामान्यके आलापोंके समान आलाप जानना चाहिये । अथवा वेद आलाप कहते समय स्त्रीवेदके विना दो वेद ही कहना चाहिये, क्योंकि सामान्य मनुष्योंसे पर्याप्त मनुष्योंमें इतनी ही विशेषता है ।

विशेषार्थ—जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंकी विवक्षा न करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सामान्यसे सभी पर्याप्त मनुष्योंका ग्रहण किया जाता है तब पर्याप्त मनुष्योंमें तीनों वेद

नं. ११३　　　　सामान्य मनुष्य संयतासंयतोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, एत्थ आहार-आहारमिस्सकायजोगा णत्थि । किं कारणं ? जेसिं भावो इत्थिवेदो दव्वं पुण पुरिसवेदो, ते वि जीवा संजमं पडिवज्जंति । दव्वित्थिवेदा संजमं ण पडिवज्जंति, सचेलत्तादो । भावित्थिवेदाणं दव्वेण पुंवेदाणं पि संजदाणं णाहाररिद्धी समुप्पज्जदि दव्व-भावेहि पुरिसवेदाणमेव समुप्पज्जदि तेणित्थिवेदे वि णिरुद्धे आहारदुगं णत्थि, तेण एगारह जोगा भणिया । इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, एत्थ भाववेदेण पयदं ण दव्ववेदेण । किं कारणं ?

वालोंका ग्रहण हो जाता है, अतः इस अपेक्षासे पर्याप्त मनुष्योंके आलाप सामान्य मनुष्योंके समान बतलाये गये हैं। परन्तु जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंमेंसे पर्याप्त मनुष्योंका ग्रहण किया जाता है तब पर्याप्त मनुष्योंसे पुरुष और नपुंसक वेदी मनुष्योंका ही ग्रहण होता है, क्योंकि स्त्रीवेदी मनुष्योंका स्वतन्त्र भेद गिनाया है। मनुष्यके अवान्तर भेदोंमें पर्याप्त शब्द पुरुष और नपुंसकवेदी मनुष्योंमें ही रूढ है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहते समय स्त्रीवेदको छोड़कर आलाप कहे हैं।

मनुष्यनी (योनिमती) स्त्रियोंके आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तथा अयोगरूप भी स्थान है। इन मनुष्यनियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये दो योग नहीं होते हैं।

शंका—मनुष्य स्त्रियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होनेका क्या कारण है ?

समाधान—यद्यपि जिनके भावकी अपेक्षा स्त्रीवेद और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेद होता है वे (भावस्त्री) जीव भी संयमको प्राप्त होते हैं। किन्तु द्रव्यकी अपेक्षा स्त्रीवेदवाले जीव संयमको नहीं प्राप्त होते हैं, क्योंकि, वे सचेल अर्थात् वस्त्रसहित होते हैं। फिर भी भावकी अपेक्षा स्त्रीवेदी और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेदी संयमधारी जीवोंके आहारऋद्धि उत्पन्न नहीं होती है, किन्तु द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षासे पुरुषवेदवाले जीवोंके ही आहारऋद्धि उत्पन्न होती है। इसलिए स्त्रीवेदवाले मनुष्योंके आहारकऋद्धिके विना ग्यारह योग कहे गए हैं। योग आलापके आगे स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। यहां भाववेदसे प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। इसका कारण यह है कि यदि यहां द्रव्यवेदसे

'अवगदवेदो वि अत्थि' त्ति वयणादो । चत्तारि कसाय, अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जवणाणेण विणा सत्त णाण, परिहारसंजमेण विणा छ संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी वि अत्थि, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा" ।

तासिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग णव वा अजोगो वि अत्थि, इत्थिवेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, छ संजम, चत्तारि दंसण,

प्रयोजन होता तो अपगतवेदरूप स्थान नहीं बन सकता था, क्योंकि, द्रव्यवेद चौदहवें गुणस्थानके अन्ततक होता है। परन्तु 'अपगतवेद भी होता है' इस प्रकारका वचन निर्देश नौवें गुणस्थानके अवेदभागसे किया गया है, जिससे प्रतीत होता है कि यहां भाववेदसे ही प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। वेद आलापके आगे चारों कषाय, तथा अकषाय स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना छह संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्यारूप भी स्थान होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व, संज्ञिनी तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी, तथा साकार और अनाकार उपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होतीं है।

उन्हीं मनुष्यनियोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन चार योगोंके विना ग्यारह योग, अथवा, उपर्युक्त चार और औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाययोग इन छह योगोंके विना नौ योग तथा अयोग स्थान भी होता है। स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। चारों कषाय, तथा अकषाय स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके

नं. ११४

मनुष्यनी स्त्रियोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	२ म. प. म. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	२ स्त्री. अपग.	४ अकषा.	७ मनः. विना.	६ परिहा. विना.	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणीओ णेव सण्णिणी णेव असण्णिणी, आहारिणी, अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा" ।

तासिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, दो अण्णाण केवलणाणेण तिण्णि णाण, असंजमो जहाक्खादेण दोण्णि संजम,

बिना छह संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या स्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व, संज्ञिनी, तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी विकल्पसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोपयोगिनी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होती हैं।

विशेषार्थ— पर्याप्त सामान्य मनुष्योंके तेरह अथवा दश योगोंके होनेका स्पष्टीकरण ऊपर कर आये हैं, उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्यनियोंके ग्यारह अथवा नौ योगोंके सबन्धमें भी जान लेना चाहिये। यहां इतनी विशेषता है कि स्त्रीवेदियोंके आहारक ऋद्धि नहीं होती है, अतएव इनके आहारक और आहारमिश्र ये दो योग नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार स्त्रीवेदियोंके पर्याप्त अवस्थामें ग्यारह अथवा नौ योग ही होते हैं।

उन्हीं मनुष्यनियोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है। कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा सयोगकेवली गुणस्थानकी अपेक्षा केवल ज्ञान, इसप्रकार तीन ज्ञान, असंयम और यथाख्यातविहारशुद्धि ये दो संयम, चक्षु, अचक्षु और केवल ये तीन दर्शन,

नं. ११९   मनुष्यनी स्त्रियोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	१ स प	६	१०	४ क्षीणसं.	१ म	१ पं	१ त्र	११ पूर्वोक्त ९ म ८ व ८ औ १ अयो.	१ स्त्री.	४ अकषा.	७ मन. विना	६ परि. विना	४	द्र ६ भा ६ अले.	२ भ अ	६	१ सं अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

केवलदंसणेण तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा सुक्कलेस्साए चत्तारि वा, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्त, सासणसम्मत्त, खइयसम्मत्तेण तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणीओ अणुभयाओ वा, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा [1]।

[2]मणुसिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या अथवा शुक्ललेश्याके साथ उक्त तीनों लेश्याएं मिलकर चार लेश्याएं होती हैं। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और क्षायिकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिनी और अनुभय अर्थात् संज्ञिनी असंज्ञिनी विकल्प रहित स्थान भी होता है। आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी तथा उभय उपयोगोंसे उपयुक्त होती हैं।

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, और संज्ञी अपर्याप्त, ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो

नं. १९६ मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	२	३	द्र. २	२	३	१	२	२
मि. सा. अ.	सं. अ.	अ.			म.	पं.	त्र.	औमि. कार्म.	स्त्री.		कुम. कुश्रु. क.	असं. यथा.	चक्षु. अच. के.	का. शु. भा. ४ अशु. ३ शु. १	भ. अ.	मि. सा. क्षा.	सं. अनु.	आहा. अना.	साका. अनाका. युग. उ.

नं. १९७ मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६प. ६अ.	१० ७	४	१	१	१	११	१	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	१	२	२
मि.	सं. प. सं. अ.				म.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ औमि. १ का. १	स्त्री.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ. अ.	मि.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा।

मिच्छाइट्ठि पज्जत्त मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा [११८]।

मिच्छाइट्ठि अपज्जत्त मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी तथा अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग तथा औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

नं. ११८　　मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	२	द्र. ६ भा. ६	२	१	१	१	२
मि.	सं. प.				म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.		भ. अ.	मि.	सं.	आहा.	साका. अना.

काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा"।

मणुसिणी सासणसम्माइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजम, दो दसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण नील और कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चार, संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. ११९ मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६अ	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	२	१	१	२	२
मि	सं अ				म	पं	त्रस	औ मि कार्म	स्त्री		कुम कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु भा ३ अशु	भ अ	मि	सं	आ अना	साका अना

नं. १२० सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६ प ६ अ	१० ७	४	१	१	१	११	१	४	३	१	२	द्र. ६ भा ६	१	१	१	२	२
सा	सं प सं अ				म	पं	त्रस	म ४ व ४ औ २ का १	स्त्री		अज्ञा	अस	चक्षु अच		भ	सासा	सं	आहा अना	साका अना

पज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

अपज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

पर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अपर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोप

नं. १२१   सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.				म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		अज्ञा.	अ.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

सण्णिणी, आहारिणी अणाहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

मणुसिणी सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[2]।

मणुसिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

योगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनु

नं. १२२ सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अचक्षु	द्र २ का शु भा ३ अशु	१ भ	१ सास	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १२३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	१ म	१ पंच	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आ	२ साका अना

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ताओ वा [१४]।

[१५] मणुसिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ,

---

ष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

संयतासंयत मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक

नं. १७४　　असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. १७५　　संयतासंयत मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	२ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ णव जोग, इत्थिवेद णवुंसयवेदाणमुदए आहारदुग मणपज्जवणाण परिहारसुद्धिसंजमा च णत्थि। इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहारसण्णाए विणा तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी,

ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

प्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं। नौ योगोंके होनेका कारण यह है कि स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होने पर आहारककाययोग, आहारकमिश्रकाययोग मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होते हैं। योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अप्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार संज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिक

नं. १२८

प्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के.द. विना	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणी, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[17]।

[18] मणुसिणी-अपुव्वकरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, सण्णिणी,

काययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व,

नं. १७७ अप्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं. प.	६	१०	३ आहा. विना	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १७८ अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अपू.	१ सं. प.	६	१०	३ आहा. विना	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणुसिणी पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहार-भयसण्णाहि विणा दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणी, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा" ।

मणुसिणी विदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण

संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार और भयसंज्ञाके विना शेष दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या,

---

नं. १२२   अनिवृत्तिकरण प्रथमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	२	१	१	१	९	१	४	३	२	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
अनि.	सं. प.			मै. परि.	म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	स्त्री.		मति. श्रुत. अव.	सामा. छेदो.	के. द. विना.	भा. १ शु.	भ.	औप. क्षा.	सं.	आहा.	साका. अना.

सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[3] ।

मणुसिणी-तदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय विणा तिण्णि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषायके विना शेष तीन कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. १३० अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ द्वि भा.	१ सं. प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १३१ अनिवृत्तिकरणके तृतीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ. तृ. भा.	१ प. प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	३ क्रोध. विना.	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मणुसिणी चउत्थ अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, दो कसाय, तिण्णि णाण, अग्गि दड्ढ बीए अंकुरो व्व इत्थि णवुंसय वेदोदय दूसिय जीवे वेदोदए फिट्टे वि ण मणपज्जवणाणमुप्पज्जदि । दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

मणुसिणी पंचम अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं। यहांपर स्त्रीवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अग्निसे दग्ध हुए बीजमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसीप्रकार स्त्री और नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिये यहां पर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पञ्चम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

नं. १३२   अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि.	१ सं. प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	२ माया लोभ	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

जोग, अवगदवेदो, लोभकसाओ, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणी, आहारिणी, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

[1]मणुसिणी सुहुमसापराइयाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, तिण्णि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्त,

और ओदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और ओदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सूक्ष्म साम्परायशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्य

नं. १३३ अनिवृत्तिकरणके पंचमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अ प भा	१ सं प	६	१०	१ परि	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	० अप	१ लो	३ मति श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द विना	द ६ भा १ शु	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना.

नं. १३४ सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सू	१ सं प	६	१०	१ सू प	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	० अप	१ सूक्ष्म लोभ	३ मति श्रुत अव	१ सूक्ष्म-सां	३ के द विना	द ६ भा १ शु	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मणुसिणीसु उवसंतकसायाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, तिण्णि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्त, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१] ।

मणुसिणीसु खीणकसायाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, खीणकसाओ, तिण्णि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण,

---

सिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक उपशान्तकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकषाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

क्षीणकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक क्षीणकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्षीणकषाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके

नं. १३५ उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ उप.	१ सं. प.	६	१०	० उप. सं.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	० उप.	३ मति. श्रुत. अव.	१ यथा.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

एवं मणुसगदी समत्ता ।

[14] देवगदीए देवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, णउंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण,

चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार मनुष्योंके आलाप समाप्त हुए।

देवगतिमें सामान्य देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान,

नं. १३९ लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६अ	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	सं. अ.				म.	पं.	त्रस.	औ. मि. कार्म.	न.		कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. १४० देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	२	६प	१०	४	१	१	१	११	२	४	६	१	३	द्र. ६	२	६	१	२	२
मि. सा. स. अ.	सं. प. सं. अ.	६अ	७		दे.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ वै. २ का. १	स्त्री. पु.		अज्ञा. ३ ज्ञान ३	असं.	के. द. विना.	भा. ६	भ. अ.		सं.	आहा. अना.	साका. अना.

णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति।

मणुसिणी अजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एओ पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति[1]।

लद्धि-अपज्जत्त मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे

विकल्पोंसे विमुक्त, आहारिणी, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

अयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोगस्थान, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अलेश्यास्थान, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं।

लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद,

---

नं. १३८ अयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अयो.	१ पर्या.	६ "	१ आयु.	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	० अयोग	अपग.	० अकषा.	१ के.	१ यथा.	१ के. द.	द्र. ६ भा. ०	१ भ.	१ क्षा.	० उभ. विना.	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ.

किण्हा भमरसवण्णा णीला पुण णीलगुलियसकासा ।
काओ कओदवण्णा तेऊ तवणिज्जवण्णा य ॥ २२३ ॥

पम्मा पउमसवण्णा सुक्का पुण कासकुसुमसकासा ।
किण्हादि-दव्वलेस्सा-वण्णविसेसो मुणेयव्वो ॥ २२४ ॥

भावलेस्सा-लिंग थोरुच्चएण एसा गाहा जाणावेई —

णिम्मूलखंधसाहुवसाहं वुचित्तु वाउ-पडिदाइ ।
अब्भतरलेस्साणं भिंदइ एदाइ वयणाइं ॥ २२५ ॥

कृष्णलेश्या भौंरेके समान अत्यन्त काले वर्णकी होती है, नीललेश्या नीलकी गोलीके समान नीलवर्णकी होती है, कापोतलेश्या कपोतवर्णवाली होती है, तेजोलेश्या सोनेके समान वर्णवाली होती है, पद्मलेश्या पद्मके समान वर्णवाली होती है और शुक्ललेश्या कासके फूलके समान श्वेतवर्णकी होती है। इसप्रकार कृष्णादि द्रव्यलेश्याओंके वर्ण विशेष जानना चाहिए ॥ २२३,२२४ ॥

भावलेश्याओंके स्वरूपका थोड़ेमें संग्रहरूपसे यह गाथा ज्ञान करा देती है—

जड़ मूलसे वृक्षको काटो, स्कन्धसे काटो, शाखाओंसे काटो, उपशाखाओंसे काटो फलोंको तोड़कर खाओ और वायुसे पतित फलोंको खाओ, इसप्रकारके ये वचन अभ्यन्तर अर्थात् भावलेश्याओंके भेदको प्रकट करते हैं ॥ २२५ ॥

विशेषार्थ—गोम्मटसार जीवकाण्डमें उक्त अर्थ इस प्रकारसे स्पष्ट किया गया है कि फलोंसे लदे हुए वृक्षको देखकर कृष्णलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको जड़ मूलसे उखाड़कर फलोंको खाना चाहिये। नीललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको स्कन्ध अर्थात् मूलसे ऊपरके भाग को काटकर फलोंको खाना चाहिये। कापोतलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी शाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये। तेजोलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी उपशाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये। पद्मलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके फलोंको तोड़कर खाना चाहिये। शुक्ललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके वायुसे गिरे हुए फलोंको खाना चाहिये। उक्त प्रकारके भावोंसे छहों लेश्याओंके तारतम्यको जान लेना चाहिये।

१ 'णीला पुण' इति स्थाने 'आ, क' प्रत्योः 'णारायण' इति पाठः । 'अ' प्रतौ 'णीलायण' इति पाठः ।

२ पंचसं १, १८३ १८४ (दि हस्तलिखित)

३ णिम्मूलखंधसाहुवसाहं छित्तु चिणित्तु पडिदाइं । खाउ [illegible] इदि ज वयणं वयणं हवे कम्मा ॥ गो जी ५०८

असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ। एत्थ सिस्सो भणदि—देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो छ लेस्साओ हवंति त्ति एदं ण घडदे, तेसिं पज्जत्तकाले भावदो छ लेस्साभावादो। मा भवतु देवाणं भावदो छ लेस्साओ, दव्वदो पुण छ लेस्सा भवंति चेव, दव्व-भावाणमेगत्ताभावादो। इदि एदं पि वयणं ण घडदे, जम्हा जा भावलेस्सा तल्लेस्सा चेव ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरणोकम्म-परमाणवो आगच्छंति। तं कधं णव्वदि त्ति भणिदे सोधम्मादिदेवाणं भावलेस्साणुरूव-दव्वलेस्सापरूवणादो णव्वदि। ण च देवाणं पज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ मोत्तूणण्णलेस्साओ अत्थि, तम्हा देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि होदव्वमिदि। एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ—

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, (यहां तीन अशुभ लेश्याएं अपर्याप्तकालकी अपेक्षा जानना चाहिये।) भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं।

शंका—यहांपर शिष्य कहता है कि देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं यह वचन घटित नहीं होता है, क्योंकि, उनके पर्याप्तकालमें भावसे छहों लेश्याओंका अभाव है। यदि कहा जाय कि देवोंके भावसे छहों लेश्याएं मत होवें, किन्तु द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती ही हैं, क्योंकि, द्रव्य और भावमें एकताका अभाव अर्थात् भेद है। सो ऐसा कहना भी नहीं बनता है, क्योंकि, जो भावलेश्या होती है उसी लेश्यावाले ही औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरसंबन्धी नोकर्म परमाणु आते हैं। यदि यह कहा जाय कि उक्त बात कैसे जानी जाता है, तो उसका उत्तर यह है कि सौधर्म आदि कल्पवासी देवोंके भावलेश्याके अनुरूप ही द्रव्य लेश्याका प्ररूपण किये जानेसे उक्त बात जानी जाती है। तथा देवोंके पर्याप्तकालमें तेज, पद्म और शुक्ल इन तीन लेश्याओंको छोड़कर अन्य लेश्याएं होती नहीं हैं। इसलिये देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यकी अपेक्षा भी तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होना चाहिए। इस प्रकरणमें निम्न गाथाएं उपयुक्त हैं—

> किण्हा भमरसवण्णा णीला पुण णीलगुलियसंकासा[1] ।
> काओ कओदवण्णा तेऊ तवणिज्जवण्णा य ॥ २२३ ॥
>
> पम्मा पउमसवण्णा सुक्का पुण कासकुसुमसंकासा ।
> किण्हादि-दव्वलेस्सा-वण्णविसेसो मुणेयव्वो[2] ॥ २२४ ॥

भावलेस्सा-लिंगं थोरुच्चएण एसा गाहा जाणावेइ —

> णिम्मूलखंधसाहुवसाहं वुच्चित्तु वाउ-पडिदाइं ।
> अब्भंतरलेस्साणं भिंदइ एदाइं वयणाइं[3] ॥ २२५ ॥

कृष्णलेश्या भौंरेके समान अत्यन्त काले वर्णकी होती है, नीललेश्या नीलकी गोलीके समान नीलवर्णकी होती है, कापोतलेश्या कपोतवर्णवाली होती है, तेजोलेश्या सोनेके समान वर्णवाली होती है, पद्मलेश्या पद्मके समान वर्णवाली होती है और शुक्ललेश्या कासके फूलके समान श्वेतवर्णकी होती है । इसप्रकार कृष्णादि द्रव्यलेश्याओंके वर्ण विशेष जानना चाहिए ॥ २२३,२२४ ॥

भावलेश्याओंके स्वरूपका थोड़ेमें संग्रहरूपसे यह गाथा ज्ञान करा देती है—

जड़ मूलसे वृक्षको काटो, स्कन्धसे काटो, शाखाओंसे काटो, उपशाखाओंसे काटो, फलोंको तोड़कर खाओ और वायुसे पतित फलोंको खाओ, इसप्रकारके ये वचन अभ्यन्तर अर्थात् भावलेश्याओंके भेदको प्रकट करते हैं ॥ २२५ ॥

विशेषार्थ—गोम्मटसार जीवकाण्डमें उक्त अर्थ इस प्रकारसे स्पष्ट किया गया है कि फलोंसे लदे हुए वृक्षको देखकर कृष्णलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको जड़ मूलसे उखाड़कर फलोंको खाना चाहिये । नीललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको स्कन्ध अर्थात् मूलसे ऊपरके भागको काटकर फलोंको खाना चाहिये । कापोतलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी शाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । तेजोलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी उपशाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये । पद्मलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके फलोंको तोड़कर खाना चाहिये । शुक्ललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके वायुसे गिरे हुए फलोंको खाना चाहिये । उक्त प्रकारके भावोंसे छहों लेश्याओंके तारतम्यको जान लेना चाहिये ।

१ 'णीला पुण' इति स्थाने 'आ, क' प्रत्योः 'णीलापण' इति पाठः । 'अ' प्रतौ 'णीलापण' इति पाठः ।

२ पंचसं. १, १८३, १८४ (दि. हस्तलिखित)

३ णिम्मूलखंधसाहुवसाहं छित्तुं चिणित्तु पडिदाइं । खाउं फलाइं इदि जं मणेण वयणं हवे कम्मं ॥ गो. जी. ५०८

तेऊ तेऊ तेऊ पम्मा पम्मा य पम्म-सुक्का य ।
सुक्का य परमसुक्का लेस्सासमासो मुणेयव्वो[1] ॥ २२६ ॥
तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च ।
एत्तो य चोद्दसण्हं लेस्साभेदो मुणेयव्वो[2] ॥ २२७ ॥

एत्थ परिहारो उच्चदे—ण ताव एदाओ गाहाओ तो पक्खं साहेंति, उभय पक्ख साहारणादो । ण तो उत्त जुत्ती वि घडदे, ण ताव अपज्जत्तकालभावलेस्समणुहरइ दव्व लेस्सा, उत्तमभोगभूमि मणुस्साणमपज्जत्तकाले असुह ति लेस्साणं गउरवण्णाभावप्पसंगा। ण पज्जत्तकाले भावलेस्सं पि णियमेण अणुहरइ पज्जत्त दव्वलेस्सा, छव्विह भावलेस्सासु परियट्टंत तिरिक्ख मणुसपज्जत्ताणं दव्वलेस्साए अणियमप्पसंगादो । धवलवण्ण बलायाए

तीनके तेजोलेश्याका जघन्य अंश, दोके तेजोलेश्याका मध्यम अंश, दोके तेजोलेश्याका उत्कृष्ट एवं पद्मलेश्याका जघन्य अंश, छहके पद्मलेश्याका मध्यम अंश, दो के पद्मलेश्याका उत्कृष्ट एवं शुक्ल लेश्याका जघन्य अंश, तेरहके शुक्ललेश्याका मध्यम अंश तथा चौदहके परमशुक्ललेश्या होती है। इस प्रकार तीनों शुभ लेश्याओंका भेद जानना चाहिये ॥ २२६, २२७ ॥

विशेषार्थ—भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क इन तीन जातिके देवोंके जघन्य तेजोलेश्या होती है। सौधर्म और ऐशान इन दो स्वर्गवाले देवोंके मध्यम तेजोलेश्या होती है। सानत्कुमार और माहेन्द्र इन दो स्वर्गवाले देवोंके उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या होती है। ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र और महाशुक्र इन छह स्वर्गवालोंके मध्यम पद्मलेश्या होती है। शतार और सहस्रार इन दो स्वर्गवालोंके उत्कृष्ट पद्मलेश्या और जघन्य शुक्ललेश्या होती है। आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयक इन तेरह विमानवालोंके मध्यम शुक्ललेश्या होती है। इसके ऊपर नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर इन चौदह विमानवालोंके उत्कृष्ट या परमशुक्लेश्या होती है।

समाधान—शंकाकारकी पूर्वोक्त शंकाका अब परिहार करते हैं—ऊपर कही गई ये गाथाएं तो तुम्हारे पक्षको नहीं साधन करती हैं, क्योंकि, वे गाथाएं उभय पक्षमें साधारण अर्थात् समान हैं। और न तुम्हारी कही गई युक्ति भी घटित होती है। जिसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—द्रव्यलेश्या अपर्याप्तकालमें होनेवाली भावलेश्याका तो अनुकरण करती नहीं है अन्यथा अपर्याप्तकालमें अशुभ तीनों लेश्यावाले उत्तम भोगभूमिया मनुष्योंके गौर वर्णका अभाव प्राप्त हो जायगा। इसीप्रकार पर्याप्तकालमें भी पर्याप्त जीवसंबन्धी द्रव्यलेश्या भावलेश्याका नियमसे अनुकरण नहीं करती है, क्योंकि, वैसा मानने पर छह प्रकारकी भावलेश्याओंमें निरन्तर परिवर्तन करनेवाले पर्याप्त तिर्यंच और मनुष्योंके द्रव्यलेश्याके अनियम

१ गो. जी. ५३५ पर तत्र चतुर्थचरणस्त्वयम्–' मरणतिया पुण्णगे असुहा '। प्रतिषु प्रथमपंक्तौ 'तेऊ तेऊ तह तेऊ पम्म पम्मा य ' इति पाठः

२ गो. जी. ५३४ पर तत्र चतुर्थचरणस्त्वयम्–' लेस्सा भवणादिदेवाणं '।

भावदो सुक्कलेस्सप्पसंगादो। आहारसरीराणं धवलवण्णाणं विग्गहगदि-ट्ठिय सव्वजीवाणं धवलवण्णाणं भावदो सुक्कलेस्सावत्तीदो चेव। किं च, दव्वलेस्सा णाम वण्णणामकम्मो-दयादो भवदि, ण भावलेस्सादो। ण च दोण्हमेगत्तं णाम, वण्णणाम-मोहणीयाणं अघादि-घादीणं पोग्गल-जीवविवाईणं एगत्त-विरोहादो। विस्ससोवचयवण्णो भावलेस्सादो भवदि, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं वण्णा वण्णणामकम्मादो भवंति, अदो ण एस दोसो। इदि ण, 'चंडो ण मुयदि वेरं' इच्चादि-बाहिरकज्जुप्पायणे ट्ठिदि-बंधे पदेसबंधे च भावलेस्सा-वावार-दंसणादो। अदो दव्वलेस्साए ण कारणं भावलेस्सा त्ति सिद्धं। तदो वण्णणामकम्मोदयदो भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं दव्वदो छ लेस्साओ भवंति, उवरिमदेवाणं तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति। पंच-वण्ण-रस-कागस्स कसण-ववएसो व्व एगवण्ण-ववहार-विरोहाभावादो। भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया

पनेका प्रसंग प्राप्त हो जायगा। और यदि द्रव्यलेश्याके अनुरूप ही भावलेश्या मानी जाय, तो धवल वर्णवाले बगुलेके भी भावसे शुक्ललेश्याका प्रसंग प्राप्त होगा। तथा धवलवर्णवाले आहारक शरीरोंके और धवलवर्णवाले विग्रहगतिमें विद्यमान सभी जीवोंके भावकी अपेक्षासे शुक्ललेश्याकी आपत्ति प्राप्त होगी। दूसरी बात यह भी है कि द्रव्यलेश्या वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होती है, भावलेश्यासे नहीं। इसलिये दोनों लेश्याओंको एक कह नहीं सकते, क्योंकि, अघातिया और पुद्गलविपाकी वर्णनामा नामकर्म, तथा घातिया और जीवविपाकी (चारित्र) मोहनीय कर्म इन दोनोंकी एकतामें विरोध है। यदि कहा जाय कि कर्मोंके विस्रसोपचयरूप वर्ण तो भावलेश्यासे होता है, और औदारिक, वैक्रियिक, आहारकशरीरोंके वर्ण वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होते हैं, इसलिए हमारे कथनमें यह उक्त दोष नहीं आता है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, 'कृष्णलेश्यावाला जीव चंडकर्मा होता है, वैर नहीं छोड़ता है' इत्यादि रूपसे बाहरी कार्योंके उत्पन्न करनेमें, तथा स्थितिबन्ध और प्रदेशबन्धमें ही भावलेश्याका व्यापार देखा जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध होती है कि भावलेश्या द्रव्यलेश्याके होनेमें कारण नहीं है। इसप्रकार उक्त विवेचनसे यह फलित हुआ कि वर्णनामा नामकर्मके उदयसे भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, तथा भवनत्रिकसे ऊपरके देवोंके तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होती हैं। जैसे पांचों वर्ण और पांचों रसवाले कागके अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त कागके कृष्ण व्यपदेश देखा जाता है, उसी प्रकार प्रत्येक शरीरमें द्रव्यसे छहों लेश्याओंके होने पर भी एक वर्णवाली लेश्याके व्यवहार करनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

१ प्रतिषु 'वण्णणाम' इति पाठो नास्ति।

अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे तेज, पद्म और शुक्लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषाय, विभंगज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १५१ देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा स अ	१ सं प	६	१०	४	१ दे	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	६ अज्ञा ३ ज्ञान ३	१ असं	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	२ भ अ	६	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. १५२ देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा अ	१ सं अ	६ अप	७ अप	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ मि सासा औ क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

देव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो,

---

मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. १८३ मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प.	१०	४	१	१	१	११	२	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	१	२	२
मि.	सं.प.	६अ.	७		दे.	पंचे.	त्रस.	म. ४	स्त्री.		अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा. ६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
	सं.अ.							व. ४	पु.				अच.		अ.			अना.	अना.
								वै. २											
								का. १											

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा["] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

देव-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

भव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान,

नं. १८४ मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १८५ मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै.मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अभ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४६]।

[१४७]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण

संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और

नं. १४६   सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प	१०	४	१	१	१	११	२	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सासा.	सं. प. सं. अ.	६अ	७		दे.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. २ का. १	स्त्री. पु.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. १४७   सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.				दे.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. १	स्त्री. पु.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ३ शुभ.	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

तेउ पम्म सुक्कलेस्सा वा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्क-लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

देव सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो

अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज,

नं. १४८　　सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	२	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं. अ.	अ.			दे.	पं.	त्र.	वै. मि. कार्म.	स्त्री. पु.		कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ६	भ.	सा.	सं.	आहा. अना.	साका. अनाका.

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

देव-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १४९   सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सम्य	सं प	प			दे	पंचे	त्रस	म ४ व ४ वै १	स्त्री पु		अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	अस	चक्षु अच	भा ३ शुभ	भ	सम्य	सं	आहा	साका अना

नं. १५०   असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६ प ६ अ	१० ७	४	१	१	१	११	२	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	२	२
अवि	सं प सं अ				दे	पंचे	त्रस	म ४ व ४ वै २ का १	स्त्री पु		मति श्रुत अव	अस	के द विना	भा ३ शुभ	भ	औप क्षा क्षायो	सं	आहा अना	साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो,

---

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

---

नं. १७१　　असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ जहण्णा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भवनवासी, वाणव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १५२ असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	२	२
अवि	सं अ	अ			दे	पं	त्र	वैमि कार्म	पु		मति श्रुत अव	असं	के द बिना	का शु भा ३ शुभ	भ	औप क्षा क्षायो	सं	आहा अना	साका अना

नं. १५३ भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	२	६	१०	४	१	१	१	११	२	४	६	१	३	द्र ६	२	५	१	२	२
मि सा मि अ	सं प सं अ	प ६ अ	७		दे	पं	त्रस	म ४ व ४ वै २ का १	स्त्री पु		ज्ञा ३ अज्ञा ३	असं	के द बिना	भा ४ अशु ३ तेजो १	भ अ	क्षायि बिना	सं	आहा अना	साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्त,

उन्हीं भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासा-

नं. १७३ भवनत्रिक देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा स अ	१ सं प	६ प	१	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा १ ते	२ भ अ	५ क्षायि विना	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवमिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इस प्रकार ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मिथ्यादृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोतलेश्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १५५ भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ मि सा	१ सं अ	६ अप	७	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	२ वैमि कार्म	२ स्त्री पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	२ मि सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १५६ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ कार्म १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ४ अशु ३ तेज १	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

उन्हीं भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिक काययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण

नं. १९७ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ तेज.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १९८ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा जहण्णा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा जघन्य तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १७९   भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सासा	२ सं प, सं अ	६ प, ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ का १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ४ अशु ३ तेज १	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणा-

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. १६०   भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	२	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सासा.	सं. प.				दे.	पं.	त्रस.	म. ४ व. ४ वै. १	स्त्री. पु.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. १ तेज.	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

हारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण जहण्णिया तेउ-लेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

सासारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहने पर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६१　　भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१ सा	१ सं अ	६ अप	७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अचक्षु	द्र २ का शु भा ३ अशु	१ भ	१ सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १६२　　भवनत्रिक सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं. प	६ प	१०	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ तेज	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा,

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण काययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो

नं. १७१ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६ प	१०	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ तेज भा १ तेज	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. १७२ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	२ वै मि कार्म	२ स्त्री पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ तेज	१ भ	१ सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अनाका

भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सोधम्मीसाण-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७३] ।

सोधम्मीसाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम,

अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान,

नं. १७३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६ प	१०	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ वै १	२ स्त्री पु	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ त. भा १ तेज	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क मज्झिमतेउलेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८] ।

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १७८ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ स. प. स. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ तेज.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. १७९ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६ प.	१	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. १ तेज. भा. १ तेज.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त। देवासंजदसम्माइट्ठीणं कधमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि? वुच्चदे—वेदगसम्मत्तमुवसामिय उवसमसेढि-मारुहिय पुणो ओदरिय पमत्तापमत्तसंजद-असंजद-संजदासंजद-उवसमसम्माइट्ठि-ट्ठाणेहि मज्झिम-तेउलेस्सं परिणमिय कालं काऊण सोधम्मीसाणदेवेसुप्पण्णाणं अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। अध ते चेव उक्कस्स-तेउलेस्सं वा जहण्ण-पम्मलेस्सं वा परिणमिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सणक्कुमार-माहिंदे उप्पज्जंति। अध ते चेव उवसमसम्माइट्ठिणो मज्झिम-पम्मलेस्सं परिणमिय कालं करेंति तो बम्ह-बम्होत्तर-लांतव-काविट्ठ-सुक्क-महासुक्केसु उप्पज्जंति। अध उक्कस्स-पम्मलेस्सं वा जहण्ण-सुक्कलेस्सं वा परिणमिय जदि ते कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सदार-सहस्सारदेवेसु उप्पज्जंति।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं।

शंका—असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व कैसे पाया जाता है?

समाधान—वेदकसम्यक्त्वको उपशमा करके और उपशमश्रेणी पर चढ़कर फिर वहांसे उतर कर प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, असंयत और संयतासंयत उपशमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंसे मध्यम तेजोलेश्याको परिणत होकर और मरण करके सौधर्म ऐशान कल्प-वासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। तथा, उपर्युक्त गुणस्थानवर्ती ही जीव उत्कृष्ट तेजोलेश्याको अथवा जघन्य पद्मलेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ सनत्कुमार और महेन्द्र कल्पमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव मध्यम पद्मलेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र और महाशुक्र कल्पोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव उत्कृष्ट पद्मलेश्याको अथवा जघन्य शुक्लेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ शतार,

अध उवसमसेढिं चडिय पुणो ओदिण्णा चेव मज्झिमसुक्कलेस्साए परिणदा संता जदि कालं करंति तो उवसमसम्मत्तेण सह आणद पाणद आरणच्चुद णवगेवज्जविमाणवासियदेवेसुप्पज्जंति। पुणो ते चेव उक्कस्ससुक्कलेस्सं परिणमिय जदि कालं करंति तो उवसमसम्मत्तेण सह णवाणुदिस पंचाणुत्तरविमाणदेवेसुप्पज्जंति। तेण सोधम्मादि-उवरिम सव्व देवासंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि त्ति। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

इत्थि-पुरिसवेदाणमालावो समत्तो।

एवं चेव पुरिसवेददेवाणमालावो वत्तव्वो। णवरि जत्थ दो वेदा वुत्ता तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव वत्तव्वो। एवं सोधम्मीसाणदेवीण पि वत्तव्वं। णवरि जत्थ

सहस्रार कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, उपशमश्रेणी पर चढ़ करके और पुनः उतर करके मध्यम शुक्ललेश्यासे परिणत होते हुए यदि मरण करते हैं तो उपशमसम्यक्त्वके साथ आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयकविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, पूर्वोक्त उपशमसम्यग्दृष्टि जीव ही उत्कृष्ट शुक्ललेश्याको परिणत होकर यदि मरण करते हैं, तो उपशमसम्यक्त्वके साथ नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। इसकारण सौधर्म स्वर्गसे लेकर ऊपरके सभी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है।

सामान्य आलापके आगे—संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसप्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भेद न करके सौधर्म और ऐशान स्वर्गके देवोंके सामान्य आलाप समाप्त हुए।

सौधर्म ऐशान कल्पके देवोंके सामान्य आलापोंके समान ही पुरुषवेदी देवोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि सामान्य आलाप कहते समय जहां पर पहले स्त्रीवेद और पुरुषवेद ये दो वेद कहे गये हैं, वहां पर केवल एक पुरुषवेद ही कहना चाहिये। इसीप्रकार सौधर्म ऐशान स्वर्गकी देवियोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि

नं. २३१   असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

[illegible]
[illegible]

पुरिसवेदो वुत्तो तत्थ इत्थिवेदो चेव वत्तव्वो। असंजदसम्माइट्ठिस्स इत्थिवेदम्हि उप्पत्ती णत्थि त्ति तस्स पज्जत्तालावो एक्को चेव वत्तव्वो। पज्जत्तालावे उच्चमाणे वि खइयसम्मत्तं णत्थि त्ति वत्तव्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो।

सणक्कुमार-माहिंददेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क उक्कस्सतेउ[1]-जहण्णपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

पुरुषवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुषवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए। यहां इतना और समझना चाहिये कि असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंकी स्त्रीवेदमें उत्पत्ति नहीं होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त आलाप ही कहना चाहिए। और पर्याप्त आलाप कहते समय भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके (देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं, ऐसा कहना चाहिए; क्योंकि, देवोंमें दर्शनमोहनीय कर्मके क्षपणका अभाव है। सौधर्म और ऐशानके पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य आलापोंसे इतनी ही विशेषता है।

सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गोंके देवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट पीत और जघन्य पद्मलेश्या, भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ प्रतिषु 'उक्कस्सतेउ' इति पाठो नास्ति

नं. १७७ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा स अ	२ स प स अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पं	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ का १	१ पु	४	६ ज्ञा ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र ४ का शु ते प भा २ ते उ प ज	२ भ अ	६	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा । एत्तियमत्तो चेव विसेसो । सदार-सहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो । णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ । पज्जत्त-काले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ । अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ । आणद-पाणद-आरणच्चुद-सुदंसण-अमोघ-सुप्पबुद्ध-जसोधर-सुभद्द-सुविसाल-सुमण-सउमणस-पीदिंकरमिदि एदेसिं चदु-णव-कप्पाणं सदार-सहस्सार-भंगो । णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमसुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा । पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा । अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा ।

[2]अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-विजय-

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्मलेश्या होती है । इतनीमात्र ही विशेषता है ।

शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती है, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती है, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती है।

आनत, प्राणत, आरण, अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुभद्र, सुविशाल, सुमनस्, सोमनस और प्रीतिंकर इन चार और नौ इस प्रकार तरह कल्पोंके आलाप शतार सहस्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहने पर—द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याएं होती है, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

१ 'सुमद्द' इति पाठः । त. रा. वा. पृ. १६७

२ अच्ची य अच्चिमालिणि वइरं वइरायणा अणुद्दिसगा । सोमा य सोमरूवं अंकं फलिहं य आइच्चं ॥ त्रि. सा. ४५६. तत्रानुदिशविमानानि येषामेव एकः इन्द्रको नाम विमानप्रस्तारः । तत्र दिक्षु विदिक्षु च चत्वारि चत्वारि श्रेणिविमानानि । प्राच्यां दिशि अर्चिविमानं, अपाच्यामर्चिमालां, प्रतीच्यां वैरोचनं, उदीच्यां प्रभासं मध्ये आदित्याख्यं । विदिक्षु पुष्पप्रकीर्णकानि चत्वारि । पूर्वदक्षिणस्यामर्चिप्रभं । दक्षिणापरस्यां अर्चिर्मध्यं । अपरोत्तरस्यां अर्चिरावर्त । उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्विशिष्टं । त. रा. वा. पृ. १६७. त्रैलोक्यसारमवधु अनुदिशविमानानामुल्लेखो नास्ति ।

वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिद्धि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि उक्क-

नौ अनुदिश विमानोंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि इन पांच अनुत्तर विमानोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-

नं. १८० नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं.प सं.अ	६प ६अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ वै २ कार्म.१	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ असं	३ के द विना	द्र ३ का शु अ उ भा १ शु उ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

स्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त । केण कारणेण उवसमसम्मत्त णत्थि ? वुच्चदे— तत्थ ट्ठिदा देवा ण ताव उवसमसम्मत्त पडिवज्जंति, तत्थ मिच्छाइट्ठीणमभावादो । भवदु णाम मिच्छाइट्ठीणमभावो, उवसमसम्मत्त पि तत्थ ट्ठिदा देवा पडिवज्जंति, को तत्थ विरोधो ? इदि ण, 'अणंतर पच्छदो य मिच्छत्त ' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो । ण तत्थ ट्ठिद-वेदगसम्माइट्ठिणो उवसमसम्मत्त पडिवज्जंति, मणुसगदि-वदिरित्तण्णगदीसु वेदगसम्माइट्ठिजीवाणं दंसणमोहुवसमणहेदुपरिणामाभावादो । ण य वेदगसम्माइट्ठित्त पडि मणुस्सेहिंतो विसेसाभावादो मणुस्साण च

सम्यक्त्वके बिना दो सम्यक्त्व होते हैं ।

शंका— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंके पर्याप्तकोंमें औपशमिक सम्यक्त्व किस कारणसे नहीं होता है ?

समाधान— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंमें विद्यमान देव तो औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते नहीं हैं, क्योंकि वहां पर मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव है ।

शंका— भले ही वहां मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव रहा आवे, किन्तु यदि वहां रहने वाले देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त करें, तो इसमें क्या विरोध है ?

समाधान— ऐसा कहना भी युक्ति युक्त नहीं है, क्योंकि, औपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर ही औपशमिकसम्यक्त्वका पुनः ग्रहण करना स्वीकार करने पर 'अनादि मिथ्यादृष्टि जीवके प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्तिके अनन्तर पश्चात् अवस्थामें ही मिथ्यात्वका उदय नियमसे होता है । किन्तु जिसके द्वितीय तृतीयादि बार उपशमसम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई है, उसके औपशमिक सम्यक्त्वके अनन्तर पश्चात् अवस्थामें मिथ्यात्वका उदय भाज्य है, अर्थात् कदाचित् मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्व या उपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है, कदाचित् सम्यग्मिथ्यादृष्टि होकरके वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होता है इत्यादि '। इस कषायप्राभृतके गाथासूत्रके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध आता है । यदि कहा जाय कि अनुदिश और अनुत्तर विमानोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, मनुष्यगतिके सिवाय अन्य तीन गतियोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके कारणभूत परिणामोंका अभाव है । यदि कहा जाय कि वेदकसम्यग्दृष्टिके प्रति मनुष्योंसे अनुदिशादि विमानवासी देवोंके कोई विशेषता नहीं है, अतएव जो दर्शनमोहनीयके उपशमन योग्य परिणाम मनुष्योंके पाये जाते हैं वे

१ सम्मत्तपढमलंभस्साणंतर पच्छदो य मिच्छत्त । लंभस्स अपढमस्स दु भजियव्वो पच्छदो होदि ॥ (कसाय पाहुड) सम्मत्तस्स जो पढमो लंभो अणादियमिच्छाइट्ठिविसओ तस्साणंतर पच्छदो अणंतरपच्छिमसमए मिच्छत्तमेव होइ । तत्थ जाव पढमट्ठिदिचरिमसमओ त्ति ताव मिच्छत्तोदयं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो । लंभस्स अपढमस्स दु जो खलु अपढमो सम्मत्तपडिलंभो तस्स पच्छदो मिच्छत्तोदयो भजियव्वो होइ । जयध. अ. पृ. ९६१

दमणमोहुवसमणजोगपरिणामेहि तत्थ णियमेण होदव्वं, मणुस्स-संजम उवसमसेढिसमा-रुहणजोगत्तणेहि भेददंसणादो। उवसमसेढिम्हि काल काऊणुवसमसम्मत्तेण सह देवे-सुप्पण्णजीवा ण उवसमसम्मत्तेण सह छ पज्जत्तीओ समाणेंति, तत्थतणुवसमसम्मत्त-कालादो छ-पज्जत्तीण समाणकालस्स बहुत्तुवलभादो। तम्हा पज्जत्तकाले ण एदेसु देवेसु उवसमसम्मत्तमत्थि त्ति सिद्ध। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमे नियमसे होना चाहिए। सो भी कहना युक्ति सगत नहीं है, क्योंकि संयमको धारण करनेकी तथा उपशमश्रेणीके समारोहण आदिकी योग्यता मनुष्योंके ही होनेके कारण अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें और मनुष्योंमे भेद देखा जाता है। तथा उपशमश्रेणीमें मरण करके औपशमिक सम्यक्त्वके साथ देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव औपशमिक सम्यक्त्वके साथ छह पर्याप्तियोंको समाप्त नहीं कर पाते है, क्योंकि, अपर्याप्त अवस्थामे होनेवाले औपशमिक सम्यक्त्वके कालसे छहों पर्याप्तियोंके समाप्त होनेका काल अधिक पाया जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध हुई कि अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है।

विशेषार्थ—उपशमसम्यग्दृष्टि जीव औपशमिक सम्यक्त्वसे पुन औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त नहीं होता है किंतु यदि उसके मिथ्यात्वका उदय हो जावे तो मिथ्यादृष्टि हो जाता है, यदि सम्यग्मिथ्यात्वका उदय हो जावे तो सम्यग्मिथ्यादृष्टि हो जाता है, यदि सम्यक्प्रकृतिका उदय हो जावे तो वेदकसम्यग्दृष्टि हो जाता है और यदि अनन्तानुबन्धीमेंसे किसी एक प्रकृतिका उदय हो जावे तो सासादनसम्यग्दृष्टि हो जाता है। इस नियमके अनुसार जो अनुदिश और पाच अनुत्तरोंमे उत्पन्न हुआ उपशमसम्यग्दृष्टि जीव फिरसे उपशमसम्यक्त्वको तो ग्रहण कर नहीं सकता है और मिथ्यात्व गुणस्थान उसके होता नहीं है, क्योंकि, अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको छोड़कर उसके दूसरे कोई गुणस्थान नहीं पाये जाते है, इसलिए मिथ्यात्वसे भी पुन वह उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण नहीं कर सकता है। वेदकसम्यक्त्वसे कदाचित् उसके उपशमसम्यक्त्व माना जाय सो ऐसा मानना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, वेदकसम्यक्त्वसे उपशमश्रेणीके सन्मुख मनुष्योंके ही उपशम (द्वितीयोपशम) सम्यक्त्व होता है अन्य गतियोंमें नहीं। तथा पूर्व पर्यायसे आया हुआ उपशमसम्यक्त्व अपर्याप्त अवस्थामें ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि, उपशमसम्यक्त्वके कालसे छह पर्याप्तियोंके पूरा करनेका काल अधिक होता है। इसप्रकार इतने कथनसे यह निष्कर्ष निकला कि जो अनुदिश और पाच अनुत्तरोंमें उत्पन्न हुआ उपशमसम्यग्दृष्टि जीव नियमसे वेदकसम्यग्दृष्टि ही हो जाता है और जो वेदकसम्यग्दृष्टि उत्पन्न होता है वह भी अन्त तक

१ प्रतिषु ' छ पज्जत्ताओ ' इति पाठ ।

२ उवसमसम्मत्तद्धा छावलिसेसो दु समयमेत्तो त्ति । अवसिट्ठे आसाणो अणअण्णदरुदयदो होदि ॥
अंतोमुहुत्तमद्ध सव्वोवसमेण होदि उवसमो । तेण परं उदओ खलु मिच्छत्तादीण कम्माण ॥
ल क्ष १००, १०२

अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'' । एवं देवगदी समत्ता ।

सिद्धगदीए सिद्ध-भंगो ।

एवं गदिमग्गणा समत्ता ।

वेदकसम्यग्दृष्टि ही रहता है।

सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं। इसप्रकार देवगतिके आलाप समाप्त हुए।

सिद्ध गतिके आलाप सिद्धोंके ओघालापके समान जानना चाहिये।

इसप्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

नं. १८१ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. १ भा. १ शु.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १८२ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वैमि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ शु.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

इंदियाणुवादेण अणुवादो मूलोघो। णवरि अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीद-जीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, सिद्धगदी वि अत्थि, अणिंदिया वि अत्थि, अकाया वि अत्थि, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अत्थि। एदे आलावा ण वत्तव्वा, सिद्धाणमेइंदियादि-जादिणाम-कम्मस्सुदयाभावादो।

सामण्णेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्ख-गदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, पुढवि-वणप्फइ अस्सिदूण सरीरस्स छ लेस्साओ हवंति। भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादमें आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, सिद्धगति, अनिन्द्रिय, अकाय, संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक रहित स्थान इतने आलाप नहीं कहना चाहिए क्योंकि, सिद्धजीवोंके एकेन्द्रियादि जाति नामकर्मका उदय नहीं पाया जाता है।

सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर पर्याप्त, बादर-अपर्याप्त, सूक्ष्म पर्याप्त और सूक्ष्म अपर्याप्त ये चार जीवसमास, मन पर्याप्ति और भाषापर्याप्तिके विना चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालमें—स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अपर्याप्तकालमें श्वासोच्छ्वासके विना तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावर काय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं, क्योंकि, पृथिवी और वनस्पतिकायिक जीवके शरीरकी अपेक्षा शरीरकी छहों लेश्याएं पायी जाती हैं। भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १८३ सामान्य एकेन्द्रियोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	४	४	४	४	१	१	५	३	१	४	२	१	१	द्र. ६	२	१	१	२	२
मि	बा प बा अ सू प सू अ	प ४ अ ४	३		ति	एके	त्रस विना	औ २ का १	नपुं		कुम कुश्रु	असं	अच	भा ३ अशु	भ अ	मि	असं	आहा अना	साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त,

उन्हीं सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर पर्याप्त और सूक्ष्म पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर अपर्याप्त और सूक्ष्म अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

नं. १४ सामान्य एकेन्द्रियोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ बा.प. सू.प.	४	४	४	१ ति.	१ एके.	५ स्थाव. विना.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'' ।

बादरेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'' ।

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर पर्याप्त और बादर अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १८० सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ बा.अ. सू.अ.	४ अ	३	४	१ ति	१ एके.	५ त्रस विना	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. १८६ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ बा.प. बा.अ.	४प ४अ	४ ३	४	१ ति	१ बा.ए. जाति	५ त्रस विना	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, ओरालियकायजोगो, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउलेस्सा[1], भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाय, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खु-

---

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान,

---

1 प्रतिषु 'काउसुक्कलेस्सा' इति पाठः । 2 सव्वेसिं सुहुमाणं कावोदा गो. जी. ४९७

नं. १९० सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सू.प.	४	४	४	१ ति.	१ सू.ए. जाति	५ त्रस विना	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	१ अच.	द्र. १ का. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा"।

एवं पज्जत्त-णामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्ताण पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं एओ अपज्जत्तालावो।

बेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अप-ज्जत्तीओ, छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-असच्चमोसवचिजोगा इदि चत्तारि जोग, णवुंसयवेद,

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके एक अपर्याप्त आलाप जानना चाहिए।

द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय-पर्याप्त और द्वीन्द्रिय अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये छह प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त छह प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासो-च्छ्वासके विना चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग और असत्यमृषावचनयोग ये चार योग, नपुंसक

नं. १९१ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा.	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सू अ	४ अ	३	४	१ ति	१ सू ए जाति	५ त्रस विना	२ औ मि कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, मनःपर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९२ द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ द्वी प द्वी अ	५ प ५ अ	६ ४	४	१ ति	१ द्वी	१ त्रस	४ औ २ का १ व १ अनु.	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

नं. १९३ द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ द्वी प	५	६	४	१ ति	१ द्वी	१ त्रस	२ व १ अनु औ १	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५७]।

एवं बीइंदियपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं बीइंदियपज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। बेइंदिय लद्धिअपज्जत्तणामकम्मोदय-सहिदाणं एगो आलावो वत्तव्वो।

तेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी,

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, कायबल और आयु ये चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे द्वीन्द्रियजाति और पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। द्वीन्द्रियजाति और लब्ध्यपर्याप्तक नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप ही कहना चाहिए।

त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, त्रीन्द्रिय पर्याप्त और त्रीन्द्रिय अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय, वचनबल कायबल, आयु, और श्वासोच्छ्वास ये सात प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त सात प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासो-

नं. १९४　　द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ द्वी. अ.	५ अ.	४	४	१ ति.	१ द्वीं.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खु दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

[1] 'तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा,

च्छ्वासके विना शेष पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभय वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षु

नं. १९५ त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	५प	७	४	१	१	१	४	१	४	२	१	१	द्र ६	२	१	१	२	२
मि	त्री प त्री अ	५अ	५		ति	त्री	त्रस	व १ अनु औ २ का १	न		कुम कुश्रु	अस	अच	भा ३ अशु	भ अ	मि	असं	आहा अना	साका अना

नं. १९६ त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	५	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र ६	२	१	१	१	२
मि	त्री प				ति	त्री	त्रस	व १ अनु औ १	न		कुम कुश्रु	अस	अच	भा ३ अशु	भ अ	मि	असं	आहा	साका अना

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, पंच पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९७] ।

एवं तीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धि-अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्त णामकम्मोदयाणं एगो आलावो वत्तव्वो ।

चउरिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ

दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, आदिकी तीन इन्द्रियां, कायबल और आयु ये पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, त्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले त्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरि

नं. १९७ त्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ त्री अ	५ अ	५	४	१ ति	१ त्री जा	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना

पंच अपज्जत्तीओ, अट्ठ पाण उप्पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ¹।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो,

न्द्रिय पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मन पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, कायबल, वचनबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये आठ प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त आठ प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना शेष छह प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त आठ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिक काययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अना-

नं. १९८ चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ च. प. च. अ.	५ प. ५ अ.	८ प. ६ अ.	४	१ ति.	१ चतु.	१ त्रस.	४ व. १ अनु. औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, छप्पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो. सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच अपर्याप्तियां, आदिकी चार इन्द्रियां, कायबल और आयु ये छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९९   चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	५	८	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. ६	२	१	१	१	२
मि	च प				ति	च जा	त्रस	व १ अनु औ १	न		कुम कुश्रु	अस	चक्षु अच	भा ३ अशु	भ अ	मि	अस	आहा	साका अना.

नं. २००   चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	५	६	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	२	१	१	२	२
मि	च अ	अ			ति	च जा	त्र	औ मि कार्म	न		कुम कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु भा ३ अशु	भ अ	मि	अस	आहा अना	साका अना

एवं चउरिंदियाणं पज्जत्त णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। चउरिंदियाणमपज्जत्त णामकम्मोदयाणं एओ आलावो वत्तव्वो।

पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण एय पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि

इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले लब्ध्यपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी पर्याप्त जीवोंके छहों पर्याप्तियां, संज्ञी अपर्याप्त जीवोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मन पर्याप्तिके विना पांच पर्याप्तियां, असंज्ञी अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके दशों प्राण, संज्ञी अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, असंज्ञी पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनोबलके विना नौ प्राण, असंज्ञी अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, सयोगिकेवली जिनके वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, केवलिसमुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें आयु और कायबल ये दो प्राण, और अयोगिकेवली भगवान्‌के एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

---

नं. २०१ पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	४ सं. प. सं. अ. अस. प. असं. अ.	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ.	१०, ७ ९, ७ ४, २ १	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अलेश्य.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[°] ।

असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं २०७ पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	२ सं प अ.प	६ ५	१० ९ ४स १ज	४ क्षीणसं	४	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ १ अयो	३ अपग	४ अकषा	८	७	४	द्र ६ भा ६ अले	२ भ अ	६	२ सं असं अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा ।

पंचिंदिय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, तथा सयोगकेवलि समुद्घातके अपर्याप्तकालमें दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है। आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पूर्वोक्त चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचे

नं. २०३ पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. अ. प्र. स.	२ सं. अ. असं. अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४ क्षीणसं.	४	१ पं.	१ त्रस.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	३ अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मनः. विना	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सा. औप. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदीओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एग गुणट्ठाण, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

न्द्रियाके पाच पर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया, सज्ञी पचेन्द्रियाके दशो प्राण, सात प्राण, असज्ञी पचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण; चारों सज्ञाए, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सज्ञिक, असज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

उन्हीं पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त और असज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया; पाच पर्याप्तिया, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सज्ञिक, असज्ञिक, आहारक,

नं २०८ पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४ स प स अ अस प अस अ	६प ६अ ५प ५अ	१० ७ ९ ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[९]।

पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असज्ञी पचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २०८　　असज्ञी पचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ अस प	५	९	४	१ ति	१ पं	१ त्र	२ व १ अनु औ १	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	१ आहा	२ साका अना

नं. २०९　　असज्ञी पचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ अस अ	५ अ	७	४	१ ति	१ पं	१ त्र	२ औ मि कार्म	३	४	२ कुम [illegible]	१ असं	२ [illegible]	द्र २ भा [illegible]	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा [illegible]	२ साका अना

संपहि पंचिंदियलद्धिअपज्जत्ताणं अपज्जत्त णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदि तिरिक्खगदीओ त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा''।

सण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त णामकम्मोदयाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व,

नं. २१० पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं अ असं अ	६अ ५अ	७ ७	४	२ म ति	१ पंचे	१ त्रस	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

असण्णिपंचिंदिय लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउ-लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

अणिंदियाणं सिद्ध-भंगो।

एवं इंदियमग्गणा समत्ता।

संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिन्द्रिय जीवोंके आलाप सिद्धोंके आलापोंके समान समझना चाहिए।

इसप्रकार दूसरी इन्द्रिय मार्गणा समाप्त हुई।

नं. २११ संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	सं. अ.	अ.	अ.		म. ति.	पंचे.	त्रस.	औ. मि. कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. २१२ असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	५	७	४	१	१	१	२	१	४	२	१	२	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	असं. अ.	अ.			ति.	पंचे.	त्रस.	औ. मि. कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहा. अना.	साका. अना.

कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे[1] अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो वा तिण्णि वा, चत्तारि वा छव्वा, छव्वा णव वा, अट्ठ वा बारह वा, दस वा पण्णारह वा, बारस वा अट्ठारह वा, चोद्दस वा एक्कवीस वा, सोलस वा[2] चउवीस वा, अट्ठारह वा सत्तावीस वा, वीस वा तीस वा, बावीस वा तेत्तीस वा, चउवीस[3] वा छत्तीस वा, छव्वीस वा एगुणचालीस वा, अट्ठावीस वा बायालीस[4] वा, तीस वा पंचेतालीस वा, बत्तीस वा अट्ठ-तालीस वा, चउतीस वा एक्कवण्णास वा, छत्तीस वा चउवण्णास वा, अट्ठत्तीस वा सत्तवण्णास वा जीवसमासा। दो जीवसमासेत्ति भणिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सव्वे जीवा दुविहा भवंति, अदो दो जीवसमासा वुच्चंति। तिण्णि जीवसमासेत्ति वुत्ते णिव्वत्तिपज्जत्ता णिव्वत्ति अपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा हवंति। चत्तारि वा इदि वुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चत्तारि जीवसमासा। छव्वा इदि वुत्ते दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं छ जीवसमासा। अथवा थावर-

कायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान होते हैं। दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दश अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इक्कीस, सोलह अथवा चौबीस, अठारह अथवा सत्तावीस, बीस अथवा तीस, बावीस अथवा तेतीस, चौवीस अथवा छत्तीस, छब्बीस अथवा उनचालीस, अट्ठावीस अथवा बयालीस, तीस अथवा पनालीस, बत्तीस अथवा अडतालीस, चौतीस अथवा एकावन, छत्तीस अथवा चौपन, अडतीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं। आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं—

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे सभी जीव दो प्रकारके होते हैं, अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं। तीन जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर निर्वृत्तिपर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इसप्रकार तीन जीवसमास होते हैं। चार जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार जीवसमास कहे जाते हैं। छह जीवसमास होते हैं ऐसा कहने पर त्रस और स्थावरके दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दो निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दो लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। अथवा, स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके

१ प्रतिषु 'ओघालावे भण्णमाण' इति पाठो नास्ति। २ प्रतिषु 'अट्ठावीस वा' इति पाठः। ३ प्रतिषु 'चौवीस वा तेत्तीस वा' इति पाठव्युत्क्रमः। अत्र उपरि प्रतिषु 'चउतीस वा' इति पाठोऽधिकः। ४ प्रतिषु 'एयालीस' इति पाठः।

काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया, सगलिं-दिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीव-समासा। तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया वियलिंदिया त्ति, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं अट्ठ जीवसमासा। चत्तारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं बारस जीव-समासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिंदिया, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अप-ज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा हवंति। पंच णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपज्जत्त

होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। पंचेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीवसमास होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं। बादर स्थावर-कायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चार निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्मकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पंचेन्द्रिय और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय)। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, संज्ञी

जीवसमासा पंच लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं पण्णारस जीवसमासा हवंति । पुढवि-काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फइ-काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं बारस जीवसमासा हवंति । छ णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा छ णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा छ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता त्ति एवं चोद्दस जीवसमासा हवंति । सत्त णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्त णिव्वत्तिअपज्जत्ता सत्त लद्धिअपज्जत्ता एदे सव्वे घेत्तूण

पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पांच निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और पांच लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार पन्द्रह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। तैजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रस कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं। छहों कायिक जीवोंकी अपेक्षा छह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, छह निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और छह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार अठारह जीवसमास होते हैं। एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। द्वीन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रीन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। चतुरिन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार चौदह जीवसमास होते हैं। बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय इन सात प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा सात निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सात निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और सात लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलकर इक्कीस जीवसमास होते हैं। पृथिवी

एक्कम्मि जीवसमासा हवंति। पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवं सोलस जीवसमासा हवंति। णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा अट्ठ, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठ, अट्ठण्हमपज्जत्तजीवसमासाणं मज्झे अट्ठ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा हवंति एवं चउवीस जीवसमासा। पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोद-पदिट्ठिदा बादरणिगोदअपदिट्ठिदा चेदि, बादरणिगोदपदिट्ठिदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता,

कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। तेजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार सोलह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा आठ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, आठ निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवसमास और आठ अपर्याप्तक जीवसमासोंमें आठ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं। इसप्रकार सब मिलाकर चौबीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक। जलकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अग्निकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदप्रतिष्ठित और बादरनिगोदअप्रतिष्ठित। बादरनिगोदप्रतिष्ठित जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक।

बादरणिगोदपडिट्ठिदवदिरित्त पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारण-सरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा वियलिंदिया सयलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति। णव णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा णव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा णव लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा[1] एदे सव्वे वि घेत्तूण सत्तावीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल-अट्ठारस-जीवसमासाब्भंतरे साधारण वणप्फइपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय साधारणवणप्फइकाइया दुविहा णिच्चणिगोदा चदुगदिणिगोदा चेदि। णिच्चणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चदुगदिणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि जीवसमासे पक्खित्ते वीस जीवसमासा हवंति। दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दस णिव्वत्ति अपज्जत्तजीवसमासा दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हवंति। पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फइकाइया एदे सव्वे दुविहा

बादरनिगोदप्रतिष्ठितसे भिन्न अर्थात् बादरनिगोद-अप्रतिष्ठितप्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये अठारह जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय इन नौ प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा नौ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, नौ निर्वृत्यपर्याप्तक जीव समास और नौ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर सत्ताईस जीवसमास होते हैं। पूर्वमें कहे गये अठारह जीवसमासोंमेंसे साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर साधारणवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद। नित्यनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। चतुर्गतिनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलाने पर बीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, नित्य निगोद, चतुर्गतिनिगोद, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय इन दश प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा दश निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दश निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दश लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पांचों कायके जीव दो दो प्रकारके होते हैं, बादर

१ प्रतिषु 'णवलद्धि समासा' इति पाठो नास्ति।

बादरा सुहुमा त्ति, सव्वे बादरा सव्वे च सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चउव्विहा हवंति, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवमेदे बावीस जीवसमासा। णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह, णिव्वत्ति अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारह एवं तेत्तीस जीवसमासा हवंति। बावीस-जीवसमासा-णमब्भंतरे तसपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय तसकाइया दुविहा हवंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अमणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एदे चत्तारि पक्खित्ते चउवीस जीवसमासा हवंति। बारस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा बारस णिव्वत्ति अपज्जत्तजीवसमासा बारस लद्धि अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल चउवीसण्हं मज्झे अमणाणं पज्जत्त-अपज्जत्त-दो-जीवसमासे अवणिय अमणा दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि पक्खित्ते छव्वीस जीवसमासा हवंति। तेरस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तेरस णिव्वत्तिअपज्जत्तजीव-

और सूक्ष्म। ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं। इसप्रकार प्रत्येक एक एक कायके जीव चार चार प्रकारके हो जाते हैं। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार ये सब मिलाकर बावीस जीवसमास हो जाते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद होते हैं और त्रसकायिक इन ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और ग्यारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त बावीस जीवसमासोंमेंसे त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (सञ्ज्ञी) और अमनस्क (असञ्ज्ञी)। समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक, अपर्याप्तक। अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलाने पर चौबीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद और समनस्क त्रसकायिक तथा अमनस्क त्रसकायिक इन बारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा बारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, बारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और बारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त चौबीस जीवसमासोंमेंसे अमनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इन चार जीवसमासोंके मिला देने पर छब्बीस जीवसमास होते हैं। पांचों स्थावरकायिक जीवोंके बादर और

समासा तेरस लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सव्वे घेत्तूण एगूणचालीस जीवसमासा हवंति। छव्वीसण्हं मज्झे वणप्फइकाइयाणं चत्तारि जीवसमासे अवणिय वणप्फइकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्ठावीस जीवसमासा हवंति। चोद्दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा चोद्दस लद्धि अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे बायालीस जीवसमासा। अट्ठावीसण्हं मज्झे पत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ता दो जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोयजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, तेवि सव्वे दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि एदे चत्तारि भंगे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवंति। णिव्वत्ति-पज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, लद्धि अपज्जत्तजीव-

सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा विकलेन्द्रिय, असमनस्क पचेन्द्रिय और समनस्क पचेन्द्रिय इन तेरह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तेरह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर उनतालीस जीवसमास होते हैं। छब्बीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास निकाल कर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारण शरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं बादर और सूक्ष्म। ये दोनों प्रकारके जीव भी दो दो प्रकारके होते हैं पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये छह जीवसमास मिला देने पर अट्ठाईस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, विकलेन्द्रिय, समनस्कपचेन्द्रिय और असमनस्कपचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा चौदह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चौदह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर ब्यालीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त अट्ठाईस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक और बादरनिगोदअयोनिक। वे भी सब दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इस प्रकार ये चार भंग मिला देने पर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पति और अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पति, विकलेन्द्रिय, असमनस्कपचेन्द्रिय और समनस्कपचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पन्द्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास

समासा पण्णारस एवमेदे सव्वे वि पचेदालीस जीवसमासा हवंति। पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-साधारणसरीरवणप्फइकाइया पत्तेयं पत्तेयं बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विहा हवंति, पत्तेयसरीरा बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचिंदिय-सण्णिपंचिंदिया पत्तेयं पत्तेयं पज्जत्ता अपज्जत्ता दुविहा हवंति एदे सव्वे मिलिदे बत्तीस जीवसमासा हवंति। सोलस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलस णिव्वत्ति अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्त-जीवसमासा च मेलिदे अट्ठतालीस जीवसमासा हवंति। बत्तीस जीवसमासेसु पत्तेयसरीर दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोत्तीस जीवसमासा हवंति। सत्तारस णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिव्वत्ति अपज्जत्ता सत्तारस लद्धि-अपज्जत्ता एदे सव्वे एक्कावण जीवसमासा हवंति। पुढवि-आउ तेउ वाउ णिच्चणिगोद-चउगदिणिगोदा बादरा

इसप्रकार ये सब मिलाकर पतालीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीरवनस्पतिकायिक ये पांच प्रकारके जीव पृथक् पृथक् बादर, सूक्ष्म और उनमें भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार चार प्रकारके होते हैं। प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय और संज्ञी पचेन्द्रिय ये छहों प्रत्येक प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। इसप्रकार ये सब मिलाने पर बत्तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय और संज्ञी पचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सोलह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सोलह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सोलह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिला देने पर अडतालीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त बत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबंधी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक (प्रतिष्ठित) और बादरनिगोद अप्रतिष्ठित। वे दोनों पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। ये चार जीवसमास मिला देने पर चौतीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठितप्रत्येक वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञिपचेन्द्रिय और संज्ञिपचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सत्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास सत्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सत्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर इक्यावन जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद

सुहुमा च पज्जत्तापज्जत्तभेएण दुविहा हवंति, पत्तेयवणप्फदि-बेइंदिय तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णिपंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्तभेएण एदे वि पत्तेय दुविहा हवंति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवसमासा हवंति। अट्ठारह णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्तिअपज्जत्त-जीवसमासा वि अट्ठारह, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारह सव्वेदे एगट्ठे कदे चउवण्ण जीवसमासा। पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेय-सरीरबादरणिगोद-पदिट्ठिदापदिट्ठिद[1]-पज्जत्तापज्जत्त-सण्णिद-चदुसु जीवसमासेसु पक्खित्तेसु अट्ठत्तीस जीवसमासा हवंति। एत्थ एगुणवीस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा हवंति, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि तेत्तिया

साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोदसाधारणवनस्पतिकायिक ये छहों प्रकारके जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे बारह प्रकारके होते हैं। और वे प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय और संज्ञी पचेन्द्रिय जीव ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। इसप्रकार उक्त चौबीस और ये बारह ये सभी जीवसमास मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, नित्य निगोद साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्म भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय और संज्ञी पचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अठारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, उतने ही अठारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और अठारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब इकट्ठे करने पर चोवन जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त छत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकाल कर प्रत्येकशरीरसबन्धी बादरनिगोद प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित इन दोनोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक इन चार जीवसमासोंके मिलाने पर अड़तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्म भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पचेन्द्रिय और संज्ञी पचेन्द्रिय जीवोंसबन्धी उन्नीस निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास होते हैं, उन्नीस ही निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं और उन्नीस ही लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं। ये सब मिलाकर सत्तावन जीवसमास होते

---

१ प्रतिषु 'पदिट्ठिद-पज्जत्ता—' इति पाठ।

दुवजुत्ता वा[२१२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अट्ठ वा णव वा दस वा एक्कारह वा बारह वा तेरह वा चउद्दस वा पण्णारह वा सोलस वा सत्तारस वा अट्ठारह वा एगुणवीस वा जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त,

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबधी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसम्बन्धी एक, अथवा दो, अथवा तीन, अथवा चार, अथवा पांच, अथवा छह, अथवा सात, अथवा आठ, अथवा नौ, अथवा दश, अथवा ग्यारह, अथवा बारह, अथवा तेरह, अथवा चौदह, अथवा पन्द्रह, अथवा सोलह, अथवा सत्रह, अथवा अठारह, अथवा उन्नीस जीवसमास होते हैं, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और चार पर्याप्तियां, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसबन्धी दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग और अयोग स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और

नं. २१३ षट्कायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	५७	प अ ६ ६ ५,५ ४,४	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२ १	४ क्षीणसं.	४	५	६	१५ अयोग	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

चेव सव्वेदे सत्तावण्ण जीवसमासा हवंति। एदे' जीवसमासभेया' सव्व-ओघेसु वत्तव्वा।

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगव

६। ये उपर्युक्त जीवसमासोंके भेद समस्त ओघालापोंमें कहना चाहिए।

जीवसमास आलापके आगे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालमें और अपर्याप्तकालमें छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलत्रय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्त कालमें क्रमशः पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः नौ प्राण, सात प्राण; चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः सात प्राण, पांच प्राण; द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः छह प्राण, चार प्राण एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार प्राण, तीन प्राण; सयोगकेवली जिनोंके चार प्राण, तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें दो प्राण और अयोगकेवली जिनोंके एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है,

१ प्रतिषु 'बीए' इति पाठः।

२ सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविगलसयलचरिमदुगे। इंदियकाए चरिमस्स य दुतिचदुपणगभेदजुदे ॥ पणजुगले तससहिये तसस्स दुतिचदुरपणगभेदजुदे। छद्दुगपत्तेयम्हि य तसस्स तियचदुरपणगभेदजुदे ॥ सगजुगलम्हि तसस्स य पणभंगजुदेसु होंति उणवीसा। एयादुणवीसोत्ति य इगिबितिगुणिदे हवे ठाणा ॥ सामण्णेण तिपंती पढमा बिदिया अपुण्णगे इदरे। पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पंती ॥ गो. जी. ७५-७८.

दुवजुत्ता वा[११]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अट्ठ वा णव वा दस वा एक्कारह वा बारह वा तेरह वा चउद्दस वा पण्णारह वा सोलस वा सत्तारस वा अट्ठारह वा एगुणवीस वा जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छक्काया, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त,

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं षट्‌कायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबंधी आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी एक, अथवा दो, अथवा तीन, अथवा चार, अथवा पांच, अथवा छह, अथवा सात, अथवा आठ, अथवा नौ, अथवा दश, अथवा ग्यारह, अथवा बारह, अथवा तेरह, अथवा चौदह, अथवा पन्द्रह, अथवा सोलह, अथवा सत्रह, अथवा अठारह, अथवा उन्नीस जीवसमास होते हैं, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और चार पर्याप्तियां, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी दशा प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और एक प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और

नं. २१३   षट्‌कायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	५७	प अ ६ ६ ५,५ ४,४	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२ १	४ क्षीणसं.	४		६	१५ अयोग	३ अपग	४ अकषा	८	७	४	द्र ६ भा ६ अल	२ भ अ	६	२ स अस अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एगो वा दो वा, दोण्णि[1] वा चत्तारि वा, तिण्णि वा छच्चा, चत्तारि वा अट्ठ वा, पंच वा दस वा, छच्चा बारस वा, सत्त वा चोद्दस वा, अट्ठ वा सोलस वा, णव वा अट्ठारह वा, दस वा वीस वा, एक्कारस वा बावीस वा, बारस वा चउवीस वा, तेरस वा छव्वीस वा, चोद्दस वा अट्ठावीस वा, पण्णारस वा तीस वा, सोलस वा बत्तीस वा, सत्तारस वा चोत्तीस वा, अट्ठारस वा छत्तीस वा, एगुणवीस वा अट्ठत्तीस वा जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच

असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— ऊपर सत्तावन जीवसमास बतला आये हैं उनमें उन्नीस जीवसमास पर्याप्तसंबन्धी हैं और अड़तीस अपर्याप्तसंबन्धी। उनमेंसे यहां पर्याप्तसंबन्धी उन्नीसका ही ग्रहण करना चाहिये। जिनका मूलतम 'एक अथवा दो' इत्यादि रूपसे उल्लेख किया गया है।

उन्हीं षट्‌कायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये अपर्याप्तक जीवोंसंबन्धी एक अथवा दो, दो अथवा चार, तीन अथवा छह, चार अथवा आठ, पांच अथवा दश, छह अथवा बारह, सात अथवा चौदह, आठ अथवा सोलह, नौ अथवा अठारह, दश अथवा बीस, ग्यारह अथवा बाईस, बारह अथवा चौबीस, तेरह अथवा छब्बीस, चौदह अथवा अट्ठाईस, पन्द्रह अथवा तीस, सोलह अथवा बत्तीस, सत्रह अथवा चौंतीस, अठारह अथवा छत्तीस, उन्नीस अथवा अड़तीस जीवसमास होते हैं। छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह

१ प्रतिषु 'तिण्णि' इति पाठः।

नं. २१८

षट्कायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	१९	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४ ४ १	४ क्षीणसं.	४	५	६	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ १	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र ६ भा ६ अले.	२ भ अ	६	२ सं अस अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढविकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा[११]।

प्राण, पाच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, चारों सज्ञाएं तथा क्षीणसज्ञास्थान भी है, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मण ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभगावधि और मन - पर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार सयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पाच सम्यक्त्व, सज्ञिक, असज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और उभय उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते है।

विशेषार्थ — ऊपर जो सत्तावन जीवसमास कहे है उनमें अपर्याप्त सामान्यके उन्नीस है जिनका यहा पर 'एक अथवा दो, दो अथवा चार, इत्यादि सख्याओंके कथनमें आई हुई पूर्ववर्ती सख्याओंका एक, दो, तीन इत्यादि सख्याओंसे निर्देश किया है। अपर्याप्तके निर्वृत्त्य-पर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त ऐसे दो भेद कर लेने पर उनका निर्देश दो, चार, छह इत्यादि सख्याओंके द्वारा किया गया है। यहा पर इतना और समझ लेना चाहिये कि पूर्व पूर्ववर्ती सख्याएं जीवसमासोंको सामान्यरूपसे और उत्तर उत्तरवर्ती सख्याएं उनको विशेषरूपसे बतलाती है। इसका यह अभिप्राय हुआ कि किसी भी सख्याके द्वारा सपूर्ण अपर्याप्त जीव सग्रहीत कर लिये गये हैं। भिन्न भिन्न सख्याएं केवल उनके भेद प्रभेदोंको सूचित करनेके लिये ही दी गई

नं २१७ षट्कायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५	२८	६अ	७ ७	४	४	५	६	४	३	४	६	४	४	द्र. २	२	५	२	२	२
मि सा अ प्र स		५ ,, ४ ,,	६ ५ ४ ३ २	क्षीणसं.				औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	अपग.	अकषा.	विभ. मन. विना	अस. सामा. छेदो. यथा.		का. शु. भा. ६	भ. अ.	सम्य. विना	स. अस. अनु.	आहा. अना.	साका. अना. यु. उ.

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अकाया त्ति मूलोघ भंगो । णवरि मिच्छाइट्ठिस्स तिण्हं पि कायाणुवाद-मूलोघब्भुत्तजीवसमासा वत्तव्वा । णत्थि अण्णत्थ विसेसो ।

[11]पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ

हैं। पर्याप्त जीवसमासके उन्नीस विकल्पोंमें भी यहाँ क्रम जान लेना चाहिये। गोम्मटसार जीवकाण्डमें जीवसमासोंको बतलाते हुए तीन पंक्तियां कर दी हैं। पहली पंक्तिमें एक, दो, आदि उन्नीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन सामान्यकी अपेक्षा किया है। दूसरी पंक्तिमें दो, चार आदि अड़तीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त और अपर्याप्त इन दो भेदोंकी अपेक्षा किया है। तथा तीसरी पंक्तिमें तीन छह आदि सत्तावनतक जीव समास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त इन तीन भेदोंकी अपेक्षा किया है।

सामान्य षट्कायिक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अकायिक अर्थात् सिद्ध जीवों तकके आलाप मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इन तीनों ही प्रकारके मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते समय कायानुवादके मूलोघालापमें कहे गये सभी जीवसमास कहना चाहिए। इनके अतिरिक्त अन्यत्र अन्य कोई विशेषता नहीं है।

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त, बादरपृथिवीकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण

नं. २१६　　पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	४	४	४	४	१	१	१	३	१	४	२	१	१	द्र. ६	२	१	१	२	२
मि.	बा. प. ,, अ. सू. प. ,, अ.	प. ४ अ. ४	प. ४ अ. ३		ति.	एके.	पृ.	औ. २ कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहा. अना.	साका. अना.

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा चत्तारि वि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदिय-जादी, पुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा"।

नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर-एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये दो जीवसमास, अथवा शुद्ध बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त शुद्ध सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त, खर बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और खर सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ — ऊपर पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार जीवसमास बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमास बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परंतु विकल्पसे जो चार जीवसमास बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं एक तो यह कि गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकामें जीवसमासोंका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके शुद्धपृथिवी और खरपृथिवी ऐसे दो भेद किये हैं। ये दो भेद बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। इसप्रकार पर्याप्त अवस्था विशिष्ट इन चारों भेदोंके ग्रहण करने पर चार

नं. २१७ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	४	४	४	१	१	१	१	१	४	२	१	१	द्र ६	२	१	१	१	२
मि	बा प सू प ४				ति	ए	पृ	औदा	न		कुम कुश्रु	असं	अच	भा ३ अशु	भ अ	मि	असं	आहा	साका अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त,

---

जीवसमास हो जाते हैं। दूसरा कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेनस्वामीने स्वयं बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके अतिरिक्त बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इसप्रकार तीन प्रकारके आलाप और बतलाये हैं। इनमेंसे प्रथम सामान्यालापमें पर्याप्तक, निर्वृत्त्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन तीनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव हो जाता है और निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्यालापमें पर्याप्तक और निर्वृत्त्यपर्याप्तक इन दो प्रकारके जीवोंके आलापोंका ही अन्तर्भाव होता है। दूसरे पर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम और द्वितीय दोनों पर्याप्तालापोंमें वास्तवमें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, निर्वृत्तिसे पर्याप्तक जीव ही दोनों जगह पर्याप्तरूपसे ग्रहण किये गये हैं। अपर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम अपर्याप्तालापमें निर्वृत्त्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन दोनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव होता है। परंतु निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके अपर्याप्तालापमें केवल एक निर्वृत्त्यपर्याप्तक कालसम्बन्धी आलापोंका ही ग्रहण होता है। इनमेंसे निर्वृत्तिपर्याप्तककी अपर्याप्तावस्थामें पर्याप्तनामकर्मका उदय तो रहता है परन्तु उसकी पर्याप्तियां पूर्ण न होनेके कारण वह अपर्याप्त कहा जाता है। इसप्रकार निर्वृत्त्यपर्याप्तक पर्याप्तनामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त भी है। प्रतीत होता है कि इसी विवक्षाको ध्यानमें रखकर वीरसेनस्वामीने यहां पर चार आलाप कहे हैं। यद्यपि प्रथम कल्पना गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकाके आधारसे की गई है परन्तु उसकी यहां पर मुख्यता प्रतीत नहीं होती है, क्योंकि, आगे जलकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान बतलाये हैं। परन्तु जल आदिके उसी टीकामें शुद्ध आदि भेद नहीं किये हैं। अथवा इसी बातको ध्यानमें रखकर उक्त टीकामें केवल पृथिवीके चार भेद किये गये हों। इसप्रकार पृथिवीकायिक जीवोंके दो या चार जीवसमास जान लेना चाहिये।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक अपर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चारों अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

बादरपुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादर-पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २१८ पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	४	३	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
मि	बा.अ. सू.अ.	अ			ति	एके	पृ	औ.मि. कार्म	नपुं		कुम कुश्रु	अस	अच	का. शु. भा. ३ अशु	भ. अ	मि	अस	आहा अना	साका अना

नं. २१९ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	४	४	४	१	१	१	३	१	४	२	१	१	द्र. ६	२	१	१	२	२
मि	बा.प. ,, अ	प ४ अ	३		ति	एके	पृ	औ. २ कार्म. १	नपुं		कुम कुश्रु	अस	अच	भा. ३ अशु	भ अ	मि	अस	आहा अना	साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढवि-

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व; असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग

नं. २२०   बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	४	४	४	१	१	१	१	१	४	२	१	१	द्र. ६	२	१	१	१	२
मि	बा प.				ति	एकें	पृ	औदा	नपुं		कुम कुश्रु	असं	अच	भा ३ अशु	भ अ	मि	असं	आहा	साका अना

नं. २२१   बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	४	३	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
मि	बा अ	अ			ति	एकें	पृ	औमि कार्म	नपुं		कुम कुश्रु	असं	अच	का शु भा ३ अशु	भ अ	मि	असं	आहा अना	साका अना

काओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

एवं बादरपुढविणिव्वत्तिपज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तव्वा। बादरपुढविलद्धि-अपज्जत्तस्स बादरेइंदिय-अपज्जत्त-भंगो। सुहुमपुढवीए सुहुमेइंदिय-भंगो। णवरि सुहुम-पुढविकाइओ त्ति वत्तव्वं।

आउकाइयाणं पुढवि-भंगो। णवरि सामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दव्वेण काउ-सुक्क-फलिहवण्ण-लेस्साओ वत्तव्वाओ। तेसिं चेव पज्जत्तकाले दव्वेण सुहुमआऊणं काउलेस्सा वा बादरआऊणं फलिहवण्णलेस्सा। कुदो? घणोदधि घणवलयागास-पदिद-पाणीयाणं धवलवण्ण दंसणादो। धवल-किसण-णील पीयल रत्ताअव-पाणीय-दंस-णादो ण धवलवण्णमेव पाणीयमिदि के वि भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? आयारभावे

और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये। बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता यह है कि 'सूक्ष्म एकेन्द्रिय' के स्थानपर 'सूक्ष्म पृथिवीकायिक' ऐसा आलाप कहना चाहिए।

अप्कायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय 'पृथिवीकायिक' के स्थानपर 'अप्कायिक' और लेश्या आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं और पर्याप्तकालमें स्फटिकवर्णवाली अर्थात् शुक्ल लेश्या कहना चाहिए। उनमें सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत लेश्या कहना चाहिए। तथा बादरकायिक जीवोंके स्फटिकवर्णवाली शुक्ल लेश्या कहना चाहिए, क्योंकि, घनोदधिवात और घनवलयवात द्वारा आकाशसे गिरे हुए पानीका धवलवर्ण देखा जाता है। यहां पर कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि, धवल, कृष्ण, नील, पीत, रक्त और आताम्र वर्णका पानी देखा जानेसे पानी धवलवर्ण ही होता है, ऐसा कहना नहीं बनता है? परन्तु उनका यह

मट्टियाए संजोगेण जलस्स बहुवण्णववहार दंसणादो । आऊणं सहावयण्णो पुण धवलो चेव ।

एवं चेव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा। णवरि पज्जत्तकाले दव्वेण फलिहलेस्सा एक्का चेव। णत्थि अण्णत्थ विसेसो। बादरआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्ताण पि तिण्णि आलावा एवं चेव वत्तव्वा। बादरआउलद्धिअपज्जत्ताण बादरआउणिव्वत्ति अपज्जत्त भंगो। सुहुमआउकाइयाण सुहुमपुढविकाइय-भंगो। सुहुमआउकाइयणिव्वत्ति पज्जत्तापज्जत्ताण सुहुमआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताण च सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो।

तेउकाइयाण तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताण बादरतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताण च पज्जत्त णामकम्मोदयतेउकाइयाणं[1] तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताण बादर-तेउलद्धिअपज्जत्ताण च, आउकाइयाण तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताण बादरआउकाइयाण तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताण पज्जत्तणामकम्मोदयआउकाइयाण तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताण

कहना युक्ति-संगत नहीं है। क्योंकि, आधारके होने पर मट्टीके संयोगसे जल अनेक वर्णवाला हो जाता है ऐसा व्यवहार देखा जाता है। किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवल ही है।

इसप्रकार बादर अप्कायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि उनके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुक्ल लेश्या ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अप्कायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है। इसीप्रकार बादर अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिए। बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक, सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्त्यपर्याप्तक और सूक्ष्म अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके समान जानना चाहिए।

तेजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, बादरतैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं बादरतेजस्कायिक पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, पर्याप्त नामकर्मके उदय वाले तेजस्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्त अपर्याप्त भेदोंके तथा बादर तैजस्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, बादर अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, पर्याप्त नामकर्मके उदय वाले अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, तथा बादर अप्कायिक

---

[1] प्रतिषु ' पज्जत्तापज्जत्तणामकम्मोदयाण ' इति पाठः ।

बादरआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताण च जहाकमेण भंगो। णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण काउ-सुक्क-तवणिज्जलेस्साओ। तेसिं चेव पज्जत्ताणं दव्वेण काउ-तवणिज्जलेस्साओ[1]। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं दोण्हं पि वत्तव्वं। बादरकाइयाणं तेउ-भंगो। एवं चेव तेसिं-पज्जत्ताणं। णवरि दव्वेण तवणिज्जलेस्सा। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं पि दव्व लेस्सा वत्तव्वा।

सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुम भंगो। वाउकाइयाणं तेउ-भंगो। णवरि दव्वेण काउ सुक्क-गोमुत्त-मुग्गवण्णलेस्साओ[2]। तेसिं पज्जत्ताणं काउ गोमुत्त-

---

लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए।

विशेषार्थ—तैजस्कायिक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं, इस बातके ध्वनित करनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सदृश' ऐसा कोई पाठ नहीं दिया है। परंतु पहले अप्कायिक जीवोंके सपूर्ण भेद प्रभेदोंके आलाप कह आये हैं और यहां तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके कथन करनेका प्रकरण है इसलिये प्रकृतमें तेजस्कायिक जीवोंके भेद प्रभेदोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके भेद प्रभेदोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना चाहिए। मूलमें आये हुए 'जहाकमेण' पदसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है।

विशेष बात यह है कि तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और तपनीय लेश्या होती है। तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोतलेश्या और पर्याप्तक बादर-जीवोंके तपनीय लेश्या होती है। इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सामान्य और पर्याप्त इन दोनोंही प्रकारके तेजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेश्या कहना चाहिए। बादर तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सामान्य तेजस्कायिकके आलापोंके समान जानना चाहिए। इसीप्रकार बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं। विशेषता यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय अर्थात् शुक्लेश्या होती है। इसीप्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके भी द्रव्यलेश्या कहना चाहिए।

सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। वायुकायिक जीवोंके आलाप तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, गोमूत्र और मूगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्म जीवोंके कापोतलेश्या और बादर पर्याप्त जीवोंके गोमूत्र

---

१ बादरआउतेऊ सुक्का तेऊ य××। गो जी ४९७

२ तत्र घनोदधयो मुद्गसन्निभा, घनवाता गोमूत्रवर्णा, अव्यक्तवर्णास्तनुवाताः। त. रा. वा. ३. १. ७ ×× वायुकायाणं। गोमुत्तमुग्गवण्णा कमसो अव्वत्तवण्णो य। गो जी ४९७ गोमुत्तमुग्गणाणावण्णाण घणुदधि-तणूण हवे। वादाण वलयतय रुक्खस्स तय व लोगस्स॥ त्रि सा १२३

मुग्गवण्णलेस्साओ। एवं बादरवाऊणं तेसिं पज्जत्ताणं च दव्वलेस्साओ हवंति। जदि वि मुग्गा अणेयवण्णा, तो वि रूढिवसा सामलवण्णो मुग्गवण्णो त्ति घेप्पदि। सुहुम वाऊणं सुहुमतेउ-भंगो।

"वणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बारस जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्ख-गदी, एइंदियजादी, वणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो

और मूंगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। इसीप्रकार बादर वायुकायिक सामान्य जीवोंके और उन्हीं बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंके द्रव्य लेश्याएं होती हैं। यद्यपि मूंग अनेक वर्णवाली होती है, तो भी रूढिके वशसे 'श्यामलवर्ण' ही मूंगका वर्ण प्रकृतमें ग्रहण किया गया है। सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए।

वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, और बारह जीवसमास होते हैं, जिनमें सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक पर्याप्त, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक अपर्याप्त, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक पर्याप्त, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक अपर्याप्त, इसप्रकार प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास होते हैं। बादरनित्यनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक पर्याप्त, बादरनित्य निगोद साधारणवनस्पतिकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक अपर्याप्त बादरचतुर्गतिनिगोद साधारण वनस्पतिकायिक पर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक अपर्याप्त, सूक्ष्म चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद साधारण वनस्पतिकायिक अपर्याप्त, इसप्रकार साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके आठ जीवसमास होते हैं। चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं तिर्यंच गति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान,

नं. २२८ वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	उ
१ मि	१२ साधा ८ प्रत्ये ४	४प ४अ	४ ३	४	१ ति	१ एके	१ वन	३ औ २ का १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	[illegible]	[illegible]	२	२ साका

अण्णाण, असजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फइकाओ, दो जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण

असयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें बताये गये बारह जीवसमासोंमेंसे पर्याप्तकसम्बन्धी छह जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें कहे गये बारह जीवसमासोंमेंसे छह अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति

नं. ७७३ वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	६ साधा. ४ प्रत्ये २	४	४	४	१ ति	१ एके	१ वन	१ औदा	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	१ आहा	२ साका अना

अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं णिव्वत्तिपज्जत्तस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धिअपज्जत्ताणं पि एगो आलावो पत्तेयवणप्फइ-अपज्जत्ताणं जहा तहा वत्तव्वो । जहा पत्तेयसरीराणं, तहा बादरणिगोदपदिट्ठिदाणं पि वत्तव्वं ।

साहारणवणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, अट्ठ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साहारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,

आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार निर्वृत्तिपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। लब्ध्यपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंका एक अपर्याप्त आलाप प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके आलापके समान कहना चाहिए। तथा, जिसप्रकार अभी प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप कहे हैं, उसीप्रकारसे बादरनिगोद प्रतिष्ठितवनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप कहना चाहिए।

साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद इन दोनोंके बादर और सूक्ष्म ये दो दो भेद तथा इन चारोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे आठ जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारण वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन; द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक;

नं. २२७ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ प्र अ	४ अ	३	४	१ ति	१ एकें	१ वन	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र. २ का शु भा. ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[ ]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[ ]।

मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद पर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद पर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं; भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २२८ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	८	४प ४अ	४ ३	४	१ ति	१ एके	१ वन	३ औ २ का १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अचक्षु	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. २२९ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४	४	४	४	१ ति	१ एके	१ वन	१ औदा	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फइकाओ, बे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

बादरसाधारणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद अपर्याप्त, बादर चतुर्गतिनिगोद अपर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादर साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद पर्याप्त, बादर नित्यनिगोद अपर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे

नं. २३०

साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४	४ अ	३	४	१ ति	१ ए	१ व	२ औ मि कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फइकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर नित्यनिगोद पर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २३१ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४	४ प ४ अ	४ ३	४	१ ति	१ एक	१ वन	३ औ २ कार्म १	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. २३२ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२	४	४	४	१ ति	१ एक	१ वन	१ औदा	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	१ अच	द्र ६ भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ असं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरणिगोद-वणप्फइकाओ, बे जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, अचक्खु-दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्त, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-वजुत्ता वा [१]।

एवं साधारणसरीरबादरवणप्फईणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। लद्धि अपज्जत्ताणं पि एगो अपज्जत्तालावो वत्तव्वो। सव्वसाधारणसरीरसुहुमाणं सुहुम-पुढविभंगो। णवरि चत्तारि जीवसमासा, सुहुमसाहारणसरीरवणप्फइकाओ त्ति वत्तव्वो। चउगदिणिगोदाणं साधारणसरीरवणप्फइकाइयभंगो। तेसिं बादराणं बादरसाधारणसरीर

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर नित्यनिगोद अपर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादर निगोद वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। लब्ध्यपर्याप्तक साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंका भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए। सभी सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंको आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि जीवसमास आलाप कहते समय 'चार जीवसमास' और काय आलाप कहते समय 'सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकाय' ऐसा कहना चाहिए। चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप साधारणशरीर वन

नं. २३३ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२	४ अ	३	४	१ ति	१ ए.	१ वन	२ औ मि कार्म	१ नपुं	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	१ अस	२ आहा अना	२ साका अना

वणप्फदि-भंगो। तेसिं चेव सुहुमाणं सभेदाणं साधारणसरीरसुहुमवणप्फइकाइय-भंगो। णवरि चउगदिणिगोदो त्ति वत्तव्वं। एवं णिच्चणिगोदाणं पि, णवरि एत्थ णिच्चणिगोदो त्ति वत्तव्वं।

[२४]तसकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, बेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण,

स्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। उन्हीं बादर चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप बादर साधारणशरीर वनस्पतिकायके आलापोंके समान होते हैं। सामान्य पर्याप्त अपर्याप्त भेदसहित उन्हीं सूक्ष्म चतुर्गति निगोद जीवोंके आलाप साधारणशरीर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि साधारण शरीरके साथमें 'चतुर्गति निगोद' इतना और कहना चाहिए। इसीप्रकार नित्यनिगोद साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि यहां पर 'नित्यनिगोद' इस पदको कहना चाहिए।

त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—चौदहों गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

नं. २३४ त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१४	१०	६ प ६ अ ५ प ५ अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,२,१	४ क्षीणसं.	४	४ द्वी. त्री चतु पंचे	१ त्रस	१५ अयोग	३ अपग	४ अकषा	८	७	४	द्र ६ भा ६ अलेश्य	२ भ अ	६	२ सं असं अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदी, बेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो

लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णा खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग चत्तारि वा, तिण्णि वेद अवेदो वा, चत्तारि कसाय अकसाओ

है, आहारक अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ — त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलापोंका वर्णन करते समय उन्हें अनाहारक भी कहनेका कारण यह है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके प्रतर और लोकपूरणरूप अवस्थाओंमें नोकर्म वर्गणाओंके नहीं आनेके कारण जीव अनाहारक तो होता है परंतु उस समय पर्याप्त नामकर्मका उदय और वर्तमान शरीरके पूर्ण होनेके कारण वह पर्याप्त भी है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त अवस्थामें भी अनाहारकता बन जाती है। इन्द्रिय मार्गणामें पंचेन्द्रिय मार्गणाके आलापोंका कथन करते हुए पर्याप्त आलापोंका कथन करते समय इसीप्रकार अनाहारक कहा है। वहां पर भी अनाहारक कहनेका ऊपर कहा हुआ कारण जान लेना। इसीप्रकार दूसरे स्थलोंमें भी जानना चाहिए।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी तीन योग अथवा चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि

नं. २३६　　त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५	५	६ अ	७	४	४	४	१	४	३	४	६	४	४	द्र. २	२	५	२	२	२
मि	द्वी अ	५ ,,	७	क्षीणसं.		द्वी	त्रस	औ मि	अपग.	अकषा.	विभ	अस		का	भ	मि	सं	आहा	साका
सा	त्री ,,		६			त्री		वै मि			मन	सामा		शु	अ	सा	अस	अना	अना
अ	च ,,		५			च		आ मि			विना	छेदो		भा ६		औप	अनु	अनु.	यु उ
प्र	अ ,,		४			प		कार्म				यथा				क्षा			
स	स ,,		२													क्षायो			

वा, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएणुवजुत्ता वा ।

तसकाइय मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि

और मनःपर्यय ज्ञानके बिना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक सम्यग्मिथ्यात्वके बिना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभय स्थान भी है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— यहां पर निर्वृत्त्यपर्याप्त भेदसे तीन अथवा चार योग बतलाये हैं इसका कारण यह है कि जन्मके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तपर्यंत औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्र ये दो योग होते हैं और विग्रहगतिमें कार्मणकाययोग होता है इसलिये ये तीनों योग अपर्याप्त अवस्थामें बन जाते हैं। परन्तु आहारकमिश्रकाययोग आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्त अवस्थामें होता तो अवश्य है। फिर भी औदारिकशरीरकी अपेक्षा यहां पर्याप्तता भी है, इसलिये जब छठवें गुणस्थानमें होनेवाले आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्तताकी अविवक्षा कर दी जाती है तब तीन योग कहे जाते हैं, और जब उसकी विवक्षा कर ली जाती है तब अपर्याप्त अवस्थामें चार योग भी कहे जाते हैं।

त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पर्याप्त अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके छह पर्याप्तियां और छह अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण

नं. २३७　　त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१० द्वी. २ त्री. २ चतु. २ अस. २ स. २	६प ६अ ५प ५अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४	४	४	४ द्वी. त्री. च. प.	१ त्रस.	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ [illegible]	२ [illegible]	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, पच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्व भावेहि छ लेस्सा,

---

और सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पाच प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातिया, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सज्ञिक, असज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सज्ञी और असज्ञी पचेन्द्रिय जीवसबन्धी पाच पर्याप्त जीवसमास, सज्ञी पचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तिया, असज्ञी पचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पाच पर्याप्तिया, सज्ञी पचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवों तक क्रमसे दश प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, और छह प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातिया, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, चक्षु

न ७३८　　त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ मि	५द्वी प त्री ,, च ,, अस ,, स ,,	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४	४	४ द्वी त्री च प	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका. अना

चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, बीइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, बे जोग, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण अणुवादो मूलोघ भंगो। णवरि विसेसो तेरह गुणट्ठाणाणि, अजोगि गुणट्ठाणं अदीदगुणट्ठाणं च णत्थि, तदो जाणिऊण मूलोघालावा वत्तव्वा ।

मणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण । केई वचि कायपाणे अवणेंति, तण्ण घडदे, तेसिं सत्ति संभवादो ।

पांच प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

योगमार्गणाके अनुवादसे आलापोंका कथन मूल ओघ आलापोंके समान जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि यहां पर तेरह ही गुणस्थान होते हैं, अयोगिगुणस्थान और अतीतगुणस्थान नहीं होता है सो आगमाविरोधसे जानकर मूल ओघालाप कहना चाहिए ।

मनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण होते हैं । कितने ही आचार्य मनोयोगियोंके दश प्राणोंमेंसे वचन और काय प्राण कम करते हैं, किन्तु उनका ऐसा करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, मनोयोगी जीवोंके वचनबल और कायबल इन दो प्राणोंकी [illegible] पाई जाती है.

नं. २४१ त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके

वचि कायबलणिमित्त-पुग्गल-खंधस्स अत्थित्त पेक्खिअ पज्जत्तीओ होंति त्ति सरीर-वचि-पज्जत्तीओ अत्थि । चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा [४४]।

मणजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

इसलिये ये दो प्राण उनके बन जाते हैं। उसीप्रकार वचनबल और कायबल प्राणके निमित्तभूत पुद्गलस्कन्धका अस्तित्व देखा जानेसे उनके उक्त दोनों पर्याप्तियां भी पाई जाती हैं इसीलिये उक्त दोनों पर्याप्तियां भी उनके बन जाती हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ये चार मनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो

नं. २४२   मनोयोगी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१३ अयो विना	१ स प	६	१०	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३ अपग	४ अकषा	८	७	४	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ स अनु	१ आहा	२ साका अना यु उ

दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

मणजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, (तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [2]।

मणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,

नं. २४३ मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २४४ मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जी[illegible]

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द
१ सासा	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	३ अज्ञा	१ अस	[illegible]

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय,[1]) तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

" मणजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-

1 कोष्ठकान्तर्गतपाठः प्रतिषु नास्ति।

नं. २८५ मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २८६ मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औ क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणजोगि संजदासजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[?] ।

मणजोगि पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त,

---

पयोगी होते हैं ।

मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यग्गति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक

नं. २४७　　　　मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश[?]	१ सं प[?]	६	१०	४	२ ति म	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणजोगि-अप्पमत्तसजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो इदि दो मणजोगा वत्तव्वा। सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि, णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि वारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान ही हैं, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय बारहवें गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए। किन्तु सयोगिकेवलीके सत्यमनोयोग और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए।

सत्यमनोयोगियोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मूल ओघालापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसीप्रकारसे असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोगियोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृषा मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए।

मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृषामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है।

नं. २४८　　　　मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	१ सं प	६	१०	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	४ मनो	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

कसाय अकसाओ वि अत्थि, केवलणाणेण विणा सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मणजोगि-भंगो। णवरि एक्को चेव मोसमणजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं।

वचिजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, मण सरीर पज्जत्तीहिंतो उप्पण्णसत्तीओ सरीर मणबलपाणा उच्चंति। ताओ वि उप्पण्णसमयदो जाव चरिमसमओ त्ति ताव ण विणस्सति। जेण मण-वचि-कायजोगा पाणेसु ण गहिदा

चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मृषामनोयोगी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान है। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक मृषामनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसीप्रकार सत्यमृषामनोयोगियोंके भी आलाप कहना चाहिए।

वचनयोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पचेन्द्रिय जीवसंबन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, संज्ञी पचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण सात प्राण और छह प्राण होते हैं। मन पर्याप्ति और शरीरपर्याप्तिसे उत्पन्न हुई शक्तियोंको मनोबलप्राण और कायबलप्राण कहते हैं। वे शक्तियां भी उनके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जीवनके अन्तिम समयतक नष्ट नहीं होती हैं। और जिसकारणसे मनोयोग वचनयोग और काययोग प्राणोंमें नहीं ग्रहण किये गये हैं, इसलिये वचनयोगियोंके वचनयोगसे निरुद्ध अर्थात् युक्त अवस्थाके होने पर भी दशों

नं. ६४९

मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१२ सया. अया. विना	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१ मृषा	३ अपग	४ अकषा	७ के ज्ञा विना	७	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तेण वचिजोग णिरुद्धे वि दस पाणा हवंति। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[१]।

वचिजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदी चत्तारि जादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कपाय तथा अकपायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय जीवोंसे लगाकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तकके जीवोंकी अपेक्षा पांच पर्याप्त जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद, चारों कपाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य

नं. २५०　　वचनयोगी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३	५	६	१०	४	४	४	१	४	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	१	२
अयो.	द्वी. प.	५	९	क्षीणसं.		द्वी.	त्रस.	वच.	अपग.	अकषा.				भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
विना	त्री. प.		८			त्री.									अ.		अस.		अना.
	चतु. प.		७			च.											अनु.		यु. उ.
	असं. प.		६			प.													
	सं. प.																		

भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगीणं भंगो। णवरि चत्तारि वचिजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो त्ति भवदि। सच्चवचिजोगस्स सच्चमणजोग-भंगो। णवरि जत्थ सच्चमणजोगो तत्थ तं अवणेऊण सच्चवचिजोगो वत्तव्वो। मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो। णवरि मोसवचिजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसवचिजोगस्स वि वत्तव्वं। असच्चमोसवचिजोगस्स वचिजोग भंगो। णवरि असच्चमोसवचिजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके वचनयोगी जीवोंके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वचनयोग आलाप कहते समय चार वचनयोग कहना चाहिए। सयोगिकेवली जिनके सत्यवचनयोग और असत्यमृषावचनयोग ये दो ही वचनयोग होते हैं। सत्यवचनयोगके आलाप सत्यमनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि आलाप कहते समय जहां पहले सत्यमनोयोग कहा गया है वहां उसे निकाल करके उसके स्थानमें सत्यवचनयोग कहना चाहिए। मृषावचनयोगके आलाप भी मृषामनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि मृषामनोयोगके स्थान पर मृषावचनयोग कहना चाहिए। इसीप्रकारसे सत्यमृषावचनयोगके भी आलाप कहना चाहिये, अर्थात् उभयवचनयोगके आलाप सत्यमृषा मनोयोगके आलापोंके समान जानना चाहिए। असत्यमृषावचनयोगके आलाप वचनयोग सामान्यके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि असत्यमृषावचनयोग आलाप कहते समय एक असत्यमृषावचनयोग ही कहना चाहिए।

नं. २५१ वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	५ द्वी. प. त्री. ,, च. ,, अस. ,, सं. ,,	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४	४	४ द्वी. त्री. च. प.	१ त्रस.	४ वच.	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. अस.	१ आहा.	२ साका. अना.

कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, सत्त कायजोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[१]।

काययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चोदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां दश प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण तीन प्राण, चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, सातों काययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २७२　　काययोगी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१३ अयो विना	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२	४ क्षीणसं.	४	५	६	७ काय	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियादी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ जोग तिण्णि वा, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो आहारिणो चेव वा, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा [1]।

उन्हीं काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तसम्बन्धी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना छह काययोग अथवा औदारिक काययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये तीन काययोग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक अथवा आहारक ही होते हैं, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालमें जो वैक्रियिकमिश्रके विना छह अथवा तीन योग बतलाये हैं। इसका कारण यह है कि छठवें और तेरहवें गुणस्थानमें आहारकसमुद्घात और केवलिसमुद्घातके समय भी विवक्षाभेदसे जब पर्याप्तता स्वीकार कर

नं. ५१३

काययोगी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४ ४	४ क्षीणसं.	४	५	६	६ व.मि. विना अथवा ३	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना. अथवा १ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

'तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच' गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि, चत्तारि कसाय अकसाओ वा, छण्णाण, चत्तारि संजम,

ली जाती है तब उसकी अपेक्षा पर्याप्त अवस्थामें भी छहों योग बन जाते हैं और जब अपर्याप्तता मान ली जाती है तब पर्याप्त अवस्थामें औदारिक, आहारक और वैक्रियिक ये तीन योग ही बनते हैं। इसीप्रकार आहारमार्गणाके कथनमें पहले आहारक और अनाहारक ये दो आलाप बतलाये हैं अनन्तर एक आहारक आलाप ही बतलाया है। इसका भी कारण यह है कि तेरहवें गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके समय भी पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेसे आहारक और अनाहारक दोनों आलाप बन जाते हैं। परंतु कपाट, प्रतर और लोकपूरण अवस्थामें केवल अपर्याप्तताके स्वीकार कर लेने पर अनाहारक आलाप काययोगियोंकी पर्याप्त अवस्थामें नहीं बनता है। इसका यह तात्पर्य हुआ कि जब काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें छह योग कहे जावें, तब आहारक और अनाहारक ये दोनों ही आलाप कहना चाहिए और जब केवल तीन योग ही कहे जावें तब एक आहारक आलाप ही कहना चाहिए। सातों संयमोंके सम्बन्धमें भी यही विवक्षा भेद जान लेना चाहिये।

उन्हीं काययोगी जीवोंके अपर्याप्त कालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और दो प्राण चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और

१ प्रतिषु 'चत्तारि' इति पाठः।

न २०४ काययोगी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा अ प्र स	७ अपर्या	६ अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ क्षीणसं	४	५	६	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	३ अपग	४ अकषा	६ विभं मन विना	४ अस सामा छेदो यथा	४	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ सम्य विना	२ स असं अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा ।

कायजोगि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, पंच कायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २५१ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ. ४ प. ४ अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	५ औ. २ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत,

नं. २५६   काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	२ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ¹।

"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

- -

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिक काययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग,

नं. २५९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	२	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा	सं प					पंच	त्रस	औ १ वै १			कुम कुश्रु विभं	असं	चक्षु अच	भा ६	भ	सा	सं	आहा	साका अना

नं. २६० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	३	१	१	३	३	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा	सं अ	अ			ति म दे	पंचे	त्रस	औ मि वै मि कार्म			कुम कुश्रु	असं	चक्षु अच	का शु भा ६	भ	सा	सं	आहा अना	साका अना

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

कायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२]।

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २९७   काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अपर्या.	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि. वै मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. २९८   कायोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा.	२ सं. प. सं. अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्रस.	५ औ. २ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

[२]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिक काययोग ये दो योग तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग,

नं. २५९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	२ औ १ वै १	३	४	३ कुम कुश्रु विभं	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २६० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्रस	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	१ भ	१ सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

कायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [२]।

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २१७   काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	७	६अ	७	४	४	५	६	३	३	४	२	१	२	द्र. २	२	१	२	२	२
मि.	अपर्या.	५अ ४अ	७ ६ ५ ४ ३					औ. मि. वै. मि. कार्म.			कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. शु. भा. ६	भ. अ.	मि.	सं. असं.	आहा. अना.	साका. अना.

नं. २१८   काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	४	१	१	५	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सा.	सं. प. सं. अ.	प. ६ अ.	७			पं.	त्रस.	औ. २ वै. २ का. १			अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं

त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकायवोग और कार्मणकाययोग ये पांच योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके

नं. २६२　　　　काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प.	१०	४	४	१	१	५	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	३	१	२	२
अवि.	सं. प.	६अ.	७			पंचे.	त्रस.	औ. २			मति.	असं.	के. द.	भा. ६	भ.	औप.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.							वै. २			श्रुत.		विना.			क्षा.		अना.	अना.
								का. १			अव.					क्षायो.			

नं. २६३　　　　काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	४	१	१	२	३	४	३	१	३	द्र. ६	[illegible]	३	१	१	२
अवि.	सं. प.					पंचे.	त्रस.	औ. १			मति.	असं.	के. द.	भा. ६	भ.	औ.	सं.	आहा.	साका.
								वै. १			श्रुत.		विना.			क्षा.			अना.
											अव.					क्षायो.			

तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा [१] ।

कायजोगि असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ,

वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण सात प्राण चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

नं. २६१　　　　काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	२	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सम्य.	सं. प.					पंचे.	त्रस.	औ. १ वै. १			ज्ञान ३ अज्ञा. मिश्र.	अस.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका. अना.

पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं

त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये पांच योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके

नं. २६२ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	५ औ. २ वै. २ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. २६३ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२६५]।

कायजोगि-पमत्तसजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि[1] णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२६६]।

तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु 'तिण्णि' इति पाठः।

नं. २६५　　　　काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	१	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
देश	सं प				ति म	पंचे	त्रस	औ			मति श्रुत अव	देश	के द विना	भा ३ शुभ	भ	औप क्षा क्षायो	सं	आहा	साका अना

नं. २६६　　　　काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	१	१	१	३	३	४	४	३	३	द्र ६	१	३	१	१	२
प्रम	सं प सं अ	प ६ अ	७		म	पंचे	त्रस	औ १ आहा २			केव विना	सामा छेदो परि	के द विना	भा ३ शुभ	भ	औप क्षा क्षायो	सं	आहा	साका अना

छ लेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असजम, तिण्णि दसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४७]।

कायजोगि सजदासजदाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, सजमासजमो, तिण्णि दसण,

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

नं. २६४ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[265]।

कायजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्सा इदि तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि[1] णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[266]।

तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इसप्रकार तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ प्रतिषु ' तिण्णि ' इति पाठः ।

नं. २६५ काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पंच	१ त्रस	१ औ	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २६६ काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	३ औ १ आहा २	३	४	४ केव विना	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

कायजोगि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२६७]।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव कायजोगीणं मूलोघ-भंगो। णवरि ओरालियकायजोगो चेव सव्वत्थ वत्तव्वो।

कायजोगि-केवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो दो वा, छ पज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय ओरालियमिस्स कम्मइयकायजोगो इदि तिण्णि जोग, अवगदवेदो,

काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक काययोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि काययोग आलाप कहते समय सर्वत्र केवल एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए।

काययोगी केवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, अथवा समुद्धातकी अपेक्षा पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, चार प्राण और केवलिसमुद्धातकी अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा दो प्राण; क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययो[illegible] [illegible]दारिकमिश्रकाय

नं. २६७ काययोगी

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे
१	१	६	१०	३	१	१	१	१	३
अप्र.	सं. प.			आहा. विना	म.	पंचे.	त्रस.	औ.	

अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति ¹।

ओरालियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता

योग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

औदारिककाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तक जीवोंके सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है,

नं. २६८ काययोगी केवली जिनके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सयो	१ प २ प अ	६	४ २	० क्षीणसं.	१ म	१ पं	१ त्र	३ औ २ कार्म	० अपग	० अकषा	१ के	१ यथा	१ क द	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	१ क्षा	० अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[२६९]।

ओरालियकायजोगि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७०]।

आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिक काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २६९　　　　औदारिक काययोगी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१२ अयो. विना	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४ अक्षीण.	२ ति. म.	५	६	१ औ.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

नं. २७०　　　　औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	२ ति. म.	५	६	१ औ.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

ओरालियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजम, दो दसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा "।

"ओरालियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद,

नं. २७१ औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पंचे	१ त्रस	१ औ	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २७२ औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पंचे	१ त्रस	१ औ	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ओरालियकायजोगि असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव कायजोगि-भंगो। णवरि सव्वत्थ ओरालियकायजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । सजोगिकेवली च पज्जत्ता आहारि त्ति भणिदव्वा ।

चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिककाययोगी जीवोंके संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप काययोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सर्वत्र योग आलाप कहते समय एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए। और सयोगिकेवलीके जीवसमास कहते समय पर्याप्तक जीवसमास, तथा आहार आलाप कहते समय आहारक, इसप्रकार कहना चाहिए।

नं. २७३ औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्रस.	१ औ.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

ओरालियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीव-समासा, सण्णि-असण्णीहिंतो सजोगिकेवली वदिरित्तो त्ति अदीदजीवसमासेण सजोगिणा होदव्वं? ण, दव्वमणस्स अत्थित्तं भावगद-पुव्वगइं च अस्सिऊण तस्स सण्णित्तब्भुवगमादो। पुढवी-आउ-तेउ-वाउ-पत्तेय-साहारणसरीर-तस-पज्जत्तापज्जत्त-चोद्दस-जीवसमासाणं सत्त-अपज्जत्तजीवसमासेसु सजोगि-सत्तब्भुवगमादो वा। एसो अत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो। छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, ओरालियमिस्स-कायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, विभंग-मणपज्जवणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा। किं कारणं? मिच्छाइट्ठि-सासण-असंजद-

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा सात अपर्याप्त जीवसमास होते हैं।

शंका—जब कि सयोगिकेवली जिनेन्द्र संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों ही व्यपदेशोंसे रहित हैं, इसलिए सयोगी जिनको अतीत जीवसमासवाला होना चाहिए?

समाधान—नहीं, क्योंकि, द्रव्यमनके अस्तित्व और भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके आश्रयसे सयोगिकेवलीके संज्ञीपना माना गया है। अथवा, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तसम्बन्धी चौदह जीवसमासोंमेंसे सात अपर्याप्त जीवसमासोंमें कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्धातगत सयोगिकेवलीका सत्त्व माना जानेसे उन्हें अतीत जीवसमासवाला नहीं कहा जा सकता है। यही अर्थ सर्वत्र कहना चाहिए।

जीवसमास आलापके आगे छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और सयोगिकेवलीके कपाटसमुद्घातके कालमें दो प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंच-गति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधि और मनःपर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, यथाख्यात विहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन और द्रव्यसे कापोतलेश्या होती है।

शंका—द्रव्यसे एक कापोतलेश्या ही होनेका क्या कारण है?

भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगि असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, जहा देव मिच्छाइट्ठि-

सिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या और भावसे छहों लेश्याएं होती हैं । यहां पर भावसे छहों लेश्या

नं. २८७.   औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	२ ति म	१ पं	१ त्रस	१ औ मि	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ का भा ३ अशु	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सासणसम्मादिट्ठिणो तेउ पम्म सुक्कलेस्सासु वट्टमाणा णट्ठ-लेस्सा होऊण तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणा उप्पण्ण-पढम समए चेव किण्ह-णील-काउलेस्साहि सह परिणमंति सम्माइट्ठिणो तहा ण परिणमंति, अंतोमुहुत्त पुव्विल्ल-लेस्साहि सह अच्छिय अण्णलेस्सं गच्छंति। किं कारणं? सम्माइट्ठीण बुद्धि-ट्ठिय परमेट्ठीण मिच्छाइट्ठीण मरणकाले संकिलेसाभावादो। णेरइय सम्माइट्ठिणो पुण चिराण-लेस्साहि सह मणुस्सेसुप्पज्जंति।

श्याओंके होनेका कारण यह है कि जिसप्रकार तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याओंमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देव तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते समय नष्टलेश्या होकरके अर्थात् अपनी अपनी पूर्व शुभ लेश्याओंको छोड़कर (तिर्यंच और मनुष्योंमें) उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही कृष्ण, नील और कापोत लेश्यारूपसे परिणत हो जाते हैं, उसप्रकारसे सम्यग्दृष्टि देव अशुभ लेश्यारूपसे नहीं परिणत होते हैं किन्तु तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेके प्रथमसमयसे लगाकर अन्तर्मुहूर्ततक पूर्व भवकी लेश्याओंके साथ रह कर पीछे अन्य लेश्याओंको प्राप्त होते हैं, अतएव यहांपर छहों लेश्याएं बन जाती हैं।

शंका—तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले सम्यग्दृष्टि देव अन्तर्मुहूर्ततक अपनी पहली लेश्याओंको नहीं छोड़ते हैं, इसका क्या कारण है?

समाधान—इसका कारण यह है कि बुद्धिमें स्थित है परमेष्ठी जिनके अर्थात् परमेष्ठीके स्वरूप चिन्तवनमें जिनकी बुद्धि लगी हुई है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके मरणकालमें मिथ्यादृष्टि देवोंके समान संक्लेश नहीं पाया जाता है, इसलिये अपर्याप्तकालमें उनकी पहलेकी शुभ लेश्याएं ज्योंकी त्यों बना रहती हैं।

विशेषार्थ—'सम्माइट्ठीण बुद्धि ट्ठिय परमेट्ठीण मिच्छाइट्ठीण मरणकाले संकिलेसाभावादो' इस वाक्यके दो अर्थ संभव हैं। एक तो यह कि मरणके समय मिथ्यादृष्टियोंको जिसप्रकार संक्लेश होता है उसप्रकार जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित हैं ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंको मरणके समय संक्लेश नहीं होता है। तथा दूसरा अर्थ इसप्रकारसे होता है कि सम्यग्दृष्टि देवोंके और जिनकी बुद्धिमें परमेष्ठी स्थित हैं ऐसे मिथ्यादृष्टि देवोंके मरणके समय संक्लेश नहीं पाया जाता है। प्रथम अर्थ करते समय 'मिच्छाइट्ठीण' पदके आगे 'इव' पदकी अपेक्षा है और दूसरा अर्थ करते समय 'च' पदकी। परन्तु 'मिच्छाइट्ठीण' इस पदके आगे इन दोनों पदोंमेंसे कोई भी पद नहीं पाया जाता है और प्रकरणको देखते हुए पहला अर्थ संगत प्रतीत होता है, इसलिये ऊपर अर्थमें पहले अर्थका ही ग्रहण किया है।

किन्तु नारकी सम्यग्दृष्टि तो अपनी पुरानी चिरन्तन लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं।

अ इंदिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्त, ... सागारुवजुत्ता वा" ।

... सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ ... आउ-कायबलपाणा दो चेव होंति, पंचिंदियपाणा णत्थि, ... खओवसम लक्खण भाविंदियाभावादो । ण च दव्विंदिएण ... अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थित्त पदुप्पायण-सुत्त-दंसणादो । ... तत्थ णत्थि, मण-वचि-उस्सासपज्जत्ती सण्णिद पोग्गलखंध

शंका - नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मरते समय अपनी पुरानी कृष्णादि अशुभ लेश्याओंको क्यों नहीं छोड़ते हैं?

समाधान— इसका कारण यह है कि नारकी जीवोंके जातिविशेषसे ही अर्थात् स्वभावतः संक्लेशकी अधिकता होती है, इसकारण मरणकालमें भी वे उन्हें नहीं छोड़ सकते हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं। किन्तु पांच इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं, क्योंकि, जिनके ज्ञानावरणादि कर्म नष्ट हो गये हैं ऐसे क्षीणावरण सयोगिकेवलीमें आवरण कर्मोंका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है, और इसलिये उनके क्षयोपशम लक्षण भावेन्द्रियां भी नहीं पाई जाती हैं। तथा इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंसे प्रयोजन है नहीं; क्योंकि, अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रिय प्राणोंके अस्तित्व प्रतिपादन करनेवाला सत्प्ररूपणाका सूत्र देखा जाता है। मनोबलप्राण, वचनबलप्राण, और श्वासोच्छ्वासप्राण भी औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके नहीं होते हैं, क्योंकि, मनः पर्याप्ति, वचन पर्याप्ति और आनापान पर्याप्ति संज्ञिक पौद्गलिक स्कन्धोंसे निर्मित

---

१ स सू ३७, ६१, ७६

नं २८७ औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	१	१	४	३	१	३	द्र १	१	२	१	१	२
अवि	सं अ	अ			ति म	पं	त्र	औ मि			मति	अस	के द विना	का भा ६	भ	क्षा क्षायो	सं	आहा	साका अना

णिव्वत्तिद-सपाणसण्णा सजुत्तसत्तीणं कवाडगद-केवलिम्हि अभावादो। अहवा तेसिं कारणभूद-पज्जत्तीओ अत्थि त्ति पुणो उवरिम-छट्ठसमयप्पहुडिं वचि उस्सासपाणाण समणा भवदि चत्तारि वि पाणा हवंति। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

स्वप्राण संज्ञाओंसे अर्थात् मन, वचन और श्वासोच्छ्वास प्राणोंसे संयुक्त शक्तियोंका कपाट समुद्घात गत केवलीमें अभाव पाया जाता है। अथवा, समुद्घातगत केवलीके वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राणोंकी कारणभूत वचन और आनापान पर्याप्तियां पाई जाती हैं, इसलिये लोकपूरणसमुद्घातके अनन्तर होनेवाले प्रतरसमुद्घातके पश्चात् उपरिम छठे समयसे लेकर आगे वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राणोंका सद्भाव हो जाता है, इसलिये सयोगिकेवलीके आहारमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी होते हैं।

विशेषार्थ — समुद्घातगत केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें आयु और काय ये दो प्राण होते हैं शेष आठ प्राण नहीं होते हैं। उनमेंसे पांचों इन्द्रिय प्राण तो इसलिये नहीं होते हैं कि उनके ज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है। कदाचित् यह कहा जा सकता है कि केवलीके पांचों द्रव्येन्द्रियां पाई जाती हैं इसलिये द्रव्येन्द्रियोंकी अपेक्षा उनके पांच प्राण मान लेना चाहिये। परंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका उपचारसे ही ग्रहण किया है, मुख्यतासे नहीं। यदि इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका मुख्यतासे ग्रहण करना स्वीकार किया जावे तो अपर्याप्तकालमें पांच इन्द्रिय प्राणोंका सद्भाव नहीं बन सकता है। परंतु अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रियप्राण होते हैं ऐसा आगमवचन है, इसलिये यह सिद्ध हुआ कि इन्द्रिय प्राणोंमें मुख्यतासे पांच भावेन्द्रियोंका ही ग्रहण किया गया है और ये भावेन्द्रियां केवलीके होती नहीं हैं, इसलिये उनके पांचों इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं। उसीप्रकार केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वास ये तीन प्राण भी नहीं होते हैं, क्योंकि, इन तीनों प्राणोंकी कारणभूत मन, वचन और आनापान ये तीन पर्याप्तियां हैं। परंतु अपर्याप्त अवस्थामें ये तीनों पर्याप्तियां होती नहीं हैं, इसलिये पर्याप्तियोंके अभावमें उनके उक्त तीनों प्राण भी नहीं पाये जाते हैं। इसप्रकार इन आठ प्राणोंके अतिरिक्त केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें शेष दो प्राण पाये जाते हैं। अथवा, केवलीके विद्यमान शरीरकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्राणोंकी कारणभूत पर्याप्तियां रहती ही हैं, इसलिये छठे समयसे वचनबल और श्वासोच्छ्वास ये दो प्राण और माने जा सकते हैं। इसप्रकार पूर्वोक्त दोनों प्राणोंमें इन दोनों प्राणोंके मिला देने पर केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी कहे जा सकते हैं। मन पर्याप्तिके रहने पर भी केवलीके मन प्राण नहीं माना है, इसका कारण यह है कि मन प्राणमें भावमन और मन पर्याप्ति ये दोनों कारण हैं, इस लिये इनमेंसे जहां केवल एक कारण होता है वहां मन प्राण नहीं कहा गया है। केवलीके भावमन नहीं पाया जाता है, इसलिये मन पर्याप्तिके रहने पर भी मन प्राण नहीं कहा गया है और शेष सभी जीवोंके अपर्याप्त अवस्थामें भावमनका अस्तित्व होते हुए भी मन पर्याप्ति

ओरालियमिस्सकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण काउलेस्सा, मूलसरीरस्स छ लेस्साओ संति ताओ किण्ण उच्चंति त्ति भणिदे ण, चोद्दस रज्जु आयामेण सत्त रज्जु-वित्थारेण एक्क-रज्जुमादिं कादूण वड्ढिद वित्थारेण वा हिद जीव पदेसाणं पुव्वसरीरेण संखेज्जंगुलोगाहणेण संबंधाभावादो। भावे वा जीवपदेस परिमाणं सरीरं होज्ज। ण च एवं, पबंधरूवस्स[1] सरीरस्स वेत्तियमेत्तद्धाणं पसरण सत्ति-अभावादो, ओरालियमिस्सकायजोगत्तणाणुववत्तीदो वा। ण चिराण सरीरेण कवाडगद-केवलिस्स संबंधो अत्थि। भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव

नहीं पाई जाती है, इसलिये मन प्राण नहीं माना गया है।

प्राण आलापके आगे क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, और द्रव्यसे कापोत लेश्या होती है।

शंका—सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी तो छहों लेश्याएं होती हैं, फिर उन्हें यहां क्यों नहीं कहते हैं?

समाधान—नहीं, क्योंकि, कपाटसमुद्घातके समय चौदह राजु आयाम (लम्बाई) से और सात राजु विस्तारसे अथवा चौदह राजु आयामसे और एक राजुको आदि लेकर बढ़े हुए विस्तारसे व्याप्त जीवके प्रदेशोंका संख्यात अंगुलकी अवगाहनावाले पूर्व शरीरके साथ संबन्ध नहीं हो सकता है। यदि संबन्ध माना जायगा, तो जीवके प्रदेशोंके परिमाणवाला ही औदारिक शरीरको होना पड़ेगा। किन्तु ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि, विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले शरीरके पूर्वोक्त प्रमाणरूपसे पसरने (फैलने) की शक्तिका अभाव है। अथवा, यदि मूलशरीरके कपाटसमुद्घात प्रमाण प्रसरणशक्ति मानी जाय तो फिर उनकी औदारिकमिश्रकाययोगता नहीं बन सकती है। तथा कपाटसमुद्घातगत केवलीका पुराने मूलशरीरके साथ संबन्ध है नहीं, अतएव यही निष्कर्ष निकलता है कि सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी छहों लेश्याएं होनेपर भी कपाटसमुद्घातके समय उनका ग्रहण नहीं किया जा सकता है। किन्तु औदारिकमिश्रकाययोग होनेके कारण एक कापोतलेश्या ही कही गई है।

विशेषार्थ—पूर्वाभिमुख केवलीके समुद्घात करने पर कपाटसमुद्घातमें जीवके प्रदेश ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और उत्तर दक्षिण सात राजु फैल जाते हैं। तथा उत्तराभिमुख केवलीके कपाटसमुद्घातके समय ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं और पूर्व पश्चिम एक राजुको आदि लेकर बढ़े हुए विस्तारके अनुसार फैल जाते हैं, परंतु मूलशरीर संख्यात अंगुलकी अवगाहना प्रमाण ही होता है, इसलिये मूलशरीरको लेश्या औदारिकमिश्रकाययोगमें नहीं ली जा सकती है। किन्तु उस समय जो नोकर्मवर्गणाएं आती हैं उन्हींकी लेश्या ली जायगी। अतः केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगकी अवस्थामें द्रव्यसे कापोतलेश्या कही है।

1 प्रतिषु 'ण बधरूव' इति पाठः।

सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो,सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२७८]।

वेउव्वियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी देवगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७९]।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २७८ औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सयो	१ अप	६ अ	२ अथवा ४	० क्षीणसं	१ म	१ पंचे	१ त्रस	१ औ मि	० अपग	० अकषा	१ केव	१ यथा	१ के द	द्र १ का भा १ शुक्ल	१ भ	१ क्षा	० अनु	१ आहा	२ साका अना

नं. २७९ वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा सम्य अवि	१ सं प	६	१०	४	२ न दे	१ पंचे	१ त्रस	१ वै	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	१ आहा	२ साका अना

वेउव्वियकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेउव्वियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों

नं. २८० वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	२ न दे	१ पंच	१ त्रस	१ वै	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. २८१ वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१	४	२ न दे	१ पंच	१ त्रस	१ वै	३	४	३ [illegible]	१ असं	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	१ आहा	२ साका

तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

वेउव्वियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८]।

वेउव्वियकायजोगि असजदसम्माइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असजमो,

---

वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाए, नरकगति और देवगति ये दो गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है

वैक्रियिककाययोगी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाए, नरकगति और देवगति ये दो गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

नं २८२　　वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ.	स.	सज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	२	१	१	१	३	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सम्य	स प				न दे	पचे	त्रस	वै			अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	अस	चक्षु अच	भा ६	भ	सम्य	स	आहा	साका अना

तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८३]।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८४]।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २८३ वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	१	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
अवि	सं प				न दे	पं	त्रस	वै			मति श्रुत अव	असं	के द विना	भा ६	भ	औप क्षा क्षायो	सं	आहा	साका अना

नं. २८४ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३	१	६	७	४	२	१	१	१	३	४	५	१	३	द्र १	२	५	१	१	२
मि सा अवि	सं अ	अ			न दे	पं	त्रस	वै मि			कुम कुश्रु मति श्रुत अव	असं	के द विना	का भा ६	भ अ	मि सासा औ क्षा क्षायो	सं	आहा	साका अना

वेउव्वियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८] ।

[२८]वेउव्वियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी[1], पंचिंदियजादी,

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति,

१ ण सासणो णारयापुण्णे । गो. जी. १२८

नं. २८५ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	१	३	४	२	१	२	द्र. १	२	१	१	१	२
मि.	सं. अ.	अ.			न. दे.	पं.	त्रस.	वै. मि.			कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. भा. ६	भ. अ.	मि.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. २८६ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	१	२	४	२	१	२	द्र. १	१	१	१	१	२
सा.	सं. अ.	अ.			दे.	पं.	त्रस.	वै. मि.	स्त्री. पु.		कुम. कुश्रु.	अस.	चक्षु. अच.	का. भा. ६	भ.	सा.	सं.	आहा.	साका. अना.

तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८३]।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८४]।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २८३ वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	२ न दे	१ पं	१ त्र	१ वै	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

नं. २८४ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा अवि	१ सं अ	६ अ	७	४	२ न दे	१ पं	१ त्र	१ वै मि	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द १ का भा ६	२ भ अ	५ मि सासा औ क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

वेउव्वियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजम, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

"वेउव्वियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी,

---

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति,

१ ण सामण्णा णारयापुण्णे। गो. जी. १२८

नं. २८५ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	२	१	१	१	३	४	२	१	२	द्र. १	२	१	१	१	२
मि.	सं. अ.	अ.			न. दे.	पं.	त्रस.	वै. मि.			कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	का. भा. ६	भ. अ.	मि.	सं.	आहा.	साका. अना.

नं. २८६ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	१	२	४	२	१	२	द्र. १	१	१	१	१	२
सा.	सं. अ.	अ.			दे.	पं.	त्रस.	वै. मि.	स्त्री. पु.		कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	का. भा. ६	भ.	सा.	सं.	आहा.	साका. अना.

तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगि असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, वे गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, पुरिस-णवुंसयवेदा त्ति दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे जघन्य कापोत लेश्या और तेज, पद्म तथा शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २८७ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	अ	७	४	२ न दे	१ पंचे	१ त्र	१ वै मि	२ पु न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र १ का भा ४ का ते प शु	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-विभंगणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खाद-विहारसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, अहवा छहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-पुव्वसरीरं पेक्खिऊणुवयारेण दव्वेण छ लेस्साओ हवंति। भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, णोकम्मग्गहणाभावादो। कम्मग्गहणमत्थित्तं पडुच्च आहारित्तं किण्ण उच्चदि त्ति भणिदे ण उच्चदि; आहारस्स तिण्णि-समय-विरहकालोवलद्धीदो। सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[११०]।

है, मनःपर्ययज्ञान और विभंगावधिज्ञानके विना छह ज्ञान, यथाख्यात विहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या होती है। अथवा, केवलीके छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त पूर्व शरीरको देखकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं। भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। अनाहारक होते हैं। आहारक नहीं होनेका कारण यह है कि कार्मणकाययोगी जीव नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण नहीं करते हैं।

शंका—कार्मणकाययोगकी अवस्थामें भी कर्मवर्गणाओंके ग्रहणका अस्तित्व पाया जाता है, इस अपेक्षा कार्मणकाययोगी जीवोंको आहारक क्यों नहीं कहा जाता?

समाधान—ऐसा शंकाकारके कहने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि उन्हें आहारक नहीं कहा जाता है, क्योंकि, कार्मणकाययोगके समय नोकर्मणाओंके आहारका अधिक से अधिक तीन समयतक विरहकाल पाया जाता है।

आहार आलापके आगे साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २९०　　कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सासा अवि सयो	७ अप	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३,२	४ क्षीणसं	४	५	६	१ कार्म.	३ अपग	४ अकषा	६ मन विभ विना	२ असं यथा	४	द्र. १ शु अथ ६ भा. ६	२ भ अ	५ मि सा क्षा क्षायो औप	२ सं असं अनु	१ अना	२ साका अना यु उ

आहारमिस्सकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सकायजोगो, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजमा, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा[१], भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८९]।

कम्मइयकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सजोगिकेवलिं पडुच्च दो पाण, सेसाणं सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसे लेकर एकेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; प्रतर और लोकपूरण समुद्घातगत सयोगिकेवलीकी अपेक्षा आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं तथा शेष जीवोंके क्रमशः सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी

---

१ प्रतिषु 'काउ सुक्कलेस्सा' इति पाठः।

नं. २८९ आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्र	१ सं अ	६ अ	७	४	१ म	१ पं	१ त्रस	१ आ मि	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र १ का भा ३ शुभ	१ भ	२ क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव विभंगणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खाद-विहारसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, अहवा छहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-पुव्वसरीरं पेक्खिऊणुवयारेण दव्वेण छ लेस्साओ हवंति। भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, णोकम्मग्गहणाभावादो। कम्मग्गहणमत्थित्तं पडुच्च आहारित्तं किण्ण उच्चदि त्ति भणिदे ण उच्चदि, आहारस्स तिण्णि-समय-विरहकालोव-लद्धीदो। सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदु-वजुत्ता वा[२९०]।

है, मन पर्ययज्ञान और विभंगावधिज्ञानके विना छह ज्ञान, यथाख्यात विहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या होती है। अथवा, केवलीके छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त पूर्व शरीरको देखकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं। भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। अनाहारक होते हैं। आहारक नहीं होनेका कारण यह है कि कार्मणकाययोगी जीव नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण नहीं करते हैं।

शंका—कार्मणकाययोगकी अवस्थामें भी कर्मवर्गणाओंके ग्रहणका अस्तित्व पाया जाता है, इस अपेक्षा कार्मणकाययोगी जीवोंको आहारक क्यों नहीं कहा जाता?

समाधान—ऐसा शंकाकारके कहने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि उन्हें आहारक नहीं कहा जाता है, क्योंकि, कार्मणकाययोगके समय नोकर्मणाओंके आहारका अधिक से अधिक तीन समयतक विरहकाल पाया जाता है।

आहार आलापके आगे साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २९०   कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सासा. अवि. सयो.	७ अप.	६ अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३,२	४ क्षीणसं.	४	५	६	१ कार्म.	३ अपग.	४ अकषा.	६ मन. विभं. विना	२ असं. यथा.	४	द्र. १ शु. अथ. ६ भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सा. क्षा. क्षायो. औप.	२ सं. असं. अनु.	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ.

आहारमिस्सकायजोगाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सकायजोगो, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो सजमा, तिण्णि दसण, दव्वेण काउलेस्सा[1], भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा ।

कम्मइयकायजोगाण भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सजोगिकेवलिं पडुच्च दो पाण, सेसाण सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, एक सज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सज्ञाए, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रकाययोग पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याए, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कामणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, सज्ञी पचेन्द्रिय जीवोंसे लेकर एकेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया, चार अपर्याप्तिया प्रतर और लोकपूरण समुद्धातगत सयोगिकेवलीकी अपेक्षा आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं तथा शेष जीवोंके क्रमश सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पाच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं। चारों सज्ञाए तथा क्षीणसज्ञास्थान भी है, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कामणकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी

---

१ प्रतिषु 'काउ सुक्कलेस्सा' इति पाठ ।

न २८९

आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप

गु.	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ल	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	१	१	१	१	१	४	३	२	३	द्र १	१	२	१	१	२
प्र	स अ	अ			म	प	त्रस	आ मि	पु		मति श्रुत अव	सामा छेदो	के द विना	का भा ३ शुभ	भ	क्षा क्षायो	स	आहा	साका अना

सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

कम्मइयकायजोग-असंजदसम्माइट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्टाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, दो वेद, इत्थिवेदो णत्थि, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है। चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

न २९२   कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ स अ	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्रस	१ कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ शु भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	१ अना	२ साका अना

न २९३   कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ स अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्रस	१ कार्म	२ न पु	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र १ शु भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ अना	२ साका अना

कम्मइयकायजोग मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

कम्मइयकायजोग-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया,

---

कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों

नं. २९१ कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	१ काम.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ अना.	२ साका. अना.

अवगदवेदो, अकसाओ, अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति त्ति एदे आलावा ण वत्तव्वा। केवलणाण, केवलदंसण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो च अवणेदव्वा। अणिंदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तव्वा।

"इत्थिवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, मणपज्जव-केवलणाणेहि विणा छ णाण, परिहार-सुहुमसांपराइय-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमेहि विणा चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभव-

---

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त स्थान, इतने आलाप नहीं कहना चाहिए। तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम इतने आलाप भी निकाल देना चाहिए। और अनिन्द्रिय भी होते हैं, अकायिक भी होते हैं, ये आलाप भी नहीं कहना चाहिए।

स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमके विना शेष चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व,

---

नं. २९५　　स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	४	६प	१० ७	४	३	१	१	१३	१	४	६	४	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
आदिके	सं. प.	६अ	९ ७		न.	पं.	त्र.	आ. २ यो.	स्त्री.		मन.	परि.	केद.	भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.	५प			वि.			विना			केव.	सू.	विना		अ.		असं.	अना.	अना.
	असं. प.	५अ									विना	यथा.							
	असं. अ.											विना							

कम्मइयकायजोग सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ अपज्जत्तीओ, दो पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा चेव, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा [१]।

सुगममजोगीणं ।

एवं जोगमग्गणा समत्ता ।

वेदाणुवादेण अणुवादो जहा मूलोघो णीदो तहा णेदव्वो[१]। णवरि णव गुणट्ठाणाणि त्ति वत्तव्वं, वेदे णिरुद्धे उवरिमगुणट्ठाणाभावादो । अत्थि खीणसण्णा, अवगदजोगो,

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलियोंके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, अथवा औदारिकशरीरकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, किन्तु भावसे शुक्ललेश्या ही होती है। भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगी जीवोंके आलाप सुगम ही हैं।

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादसे कथन करने पर आलापोंका कथन जैसा मूल ओघालापमें किया गया है वैसा यहां पर भी लेना चाहिये। विशेष बात यह है कि यहां आदिके नौ गुणस्थान होते हैं ऐसा कहना चाहिए, क्योंकि वेदनिरुद्ध अवस्थामें अर्थात् वेदोंसे युक्त रहने पर ऊपरके गुणस्थानोंका अभाव है। तथा यहां पर क्षीणसंज्ञा, अपगतयोग, अपगतवेद, अकषाय, अलेश्य,

१ अ प्रतौ 'त न्हा णेदव्वा' क प्रतौ 'ज जहा णेदव्वा' आ प्रतौ 'तम्हा णेदव्वा' इति पाठः ।

नं. २९९ कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	२	०	१	१	१	१	०	०	१	१	१	द्र. १	१	१	०	१	२
सयो.	अप.	अप.	आयु. काय.	क्षीणसं.	म.	पं.	त्रस.	कार्म.	अपग.	अकषा.	केव.	यथा.	के.	शु. अथ. ६ भा. १ शु.	भ.	क्षा.	अनु.	अना.	साका. अना. यु. उ.

रा दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण और सात प्राण, नौ प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. २९३ स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	२ सं. अप. असं. अप.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	३ न. वि.	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	१	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२	२ मि. सा.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. २९४ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ सं. प. असं. प. सं. अ. असं. अ.	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ.	१० ७ ९ ७	४	३ न. वि.	१ पं.	१ त्र.	१३ आ. द्वि. विना.	१	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि वे गुणट्ठाणाणि, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो,

संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

नं. २९६　　　　स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ आदिके	२ सं प असं प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ स्त्री	४	६ मन पर्य विना	४ असं देश सामा. छेदो.	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

[1] प्रतिषु 'तेउ' इत्यधिकः पाठः समस्ति।

नं. ३०० स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.अप. असं.अप.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	३ नि. म. दे.	१ पं.	१ त्रस	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अ.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३०१ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पंच.	१ त्रस	१३ आहा. द्विक विना	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[299]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,

---

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

नं. २९९　　　　स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प अस प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दे	१ पंच	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [03]।

इत्थिवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [4]।

इत्थिवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुण

न. ३०३ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्रस	३ ओ मि वै मि कार्म	१ स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	१ भ	१ सा	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

न. ३०४ स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्रस	१० म ४ व ४ ओ १ वै १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो,

---

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

---

१ प्रतिषु 'तेउ' इत्याधिकः पाठः समस्ति।

नं. ३०२ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	२	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.				ति. म. दे.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	स्त्री.		अज्ञा.	अस.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा.	साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

---

अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुण

न. २०३　　　स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	७	४	३	१	१	३	१	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा	सं अ	अ			ति	पं	त्रस	औ मि	स्त्री		कुम	अस	चक्षु	का शु	भ	सा	सं	आहा	साका
					म			वै मि			कुश्रु		अच	भा ३				अना	अना
					दे			कार्म						अशु					

न. २०४　　　स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सम्य	सं प				ति	पंचे	त्रस	म ४	स्त्री		अज्ञा	अस	[illegible]	भा ६	भ	सम्य	सं	आहा	साका
					म			व ४			३								अना
					दे			औ १			ज्ञान								
								वै. १			मिश्र								

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

१ प्रतिषु 'तेउ' इत्यधिकः पाठः समस्ति।

नं. ३०२   स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	१	२
सा.	सं. प.				ति. म. दे.	पं.	त्र.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	स्त्री.		अज्ञा.	अस.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सा.सा.	सं.	आहा.	साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

इत्थिवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [२]।

इत्थिवेद-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अवि [illegible]

नं. ३०३ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि
१	१	६	७	४	३	१	१	३	१	४	२	१	२	द्र २	१	१	१
सा	सं अ	अ			ति म दे	पं	त्रस	औ मि वै मि कार्म	स्त्री		कुम कुश्रु	अस	चक्षु अच	का शु भा ३ अशु	भ	सा	सं

नं. ३०४ स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१
सम्य	सं प				ति म दे	पं	त्रस	म ४ व ४ औ १ वै १	स्त्री		३ ज्ञान मिश्र	अस	चक्षु अच	भा ६	भ	सम्य	सं	आ

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [५]।

[११] इत्थिवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

स्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ३०५ स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ अ	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३०६ स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

इत्थिवेद-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, आहारदुगं णत्थि। इत्थिवेदो, चत्तारि कसाय, मणपज्जवणाणेण विणा तिण्णि णाण, परिहारसंजमेण विणा दो संजम, कारणं आहारदुग-मणपज्जवणाण-परिहारसंजमेहि वेददुगोदयस्स विरोहादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं किन्तु आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञानके विना आदिके तीन ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना आदिके दो संयम होते हैं। यहांपर आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके नहीं होनेका कारण यह है कि आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके साथ स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होनेका विरोध है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी

नं. ३०७ स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [५]।

[११] इत्थिवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

स्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ३०५

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३०६

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, वेदगेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

इत्थिवेद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९]।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३०९ स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अपू	१ सं प	६	१०	३ आ. विना	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३१० स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनि	१ सं प	६	१०	२ मै प	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

इत्थिवेद अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ

और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. ३०८　　स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अप्र.	१ सं प	६	१०	३ आहा. विना	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	१ स्त्री	४	३ मति श्रुत अव	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२]।

[१३]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक;

नं. ३१२ पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ आदिके	२ स प अस प	६ ५	१० ०	४	३ ति म द	१ प	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आहा १	१ पु	४	७ केव विना	५ अस देश सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

नं. ३१३ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा अवि प्रम	२ सं अ असं अ	६अ ५अ	७ ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्रस	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	१ पु	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	३ अस सामा छेदो	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ सम्य विना	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

पुरिसवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त,

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, पुरुषवेद चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारक काययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य

नं ३११

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९	४	६प	१०	४	३	१	१	१५	१	४	७	५ असं	३	द्र ६	२	६	२	२	२
आदिके	सं प	६अ	७		ति	पं	त्रस		पु		केव	देश	के द	भा ६	भ		सं	आहा	साका
	सं अ	५प	९		म						विना	सामा	विना		अ		असं	अना	अना
	असं प	५अ	७		दे							छेदो							
	असं अ											परि							

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [11]।

[111]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ३१२ पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ मि. से अनि.	२ सं. प. असं. प.	६ ५	१० ९	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आहा. १	१ पु.	४	७ केव. विना.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३१३ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अवि. प्रम.	२ सं. अ. असं. अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	१ पु.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पुरिसवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं,

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य

नं. ३११

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	४	६प	१०	४	३	१	१	१५	१	४	७	५ असं	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
आदिके	सं. प.	६अ.	७		ति.	पं.	त्र.		पु.		केव.	देश.	के.द.	भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.	५प.	९		म.						विना	सा.मा.	विना		अ.		असं.	अना.	अना.
	असं. प.	५अ.	७		दे.							छेदो.							
	असं. अ.											परि.							

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[312] ।

[313]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

नं. ३१२ पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ आदिके	२ सं प असं प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आहा १	१ पु	४	७ केव विना	५ अस देश सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३१३ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा अवि प्रम	२ सं अ असं अ	६अ ५अ	७ ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	१ पु	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	३ असं सामा छेदो	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ सम्य विना	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पुरिसवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

---

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त, संज्ञी अपर्याप्त, असंज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये चार जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और असंज्ञी पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दश प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो

नं. ३१४ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	४ सं प सं अ अस प अस अ	६प ६अ ५प ५अ	१० ७ ९ ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१३ आहा द्विक विना	१ पु	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्त और असंज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पञ्चेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३१५ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं प असं प	६ ५	१० ९	४	३ ति म दे	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ पु	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं असं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३१६ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं अ असं अ	६ अ. ५ ,,	७ ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि. कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

पुरिसवेद-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव पढम अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। सासण-सम्मामिच्छा-असंजदसम्माइट्ठीणं तिण्णि गदीओ वत्तव्वाओ।

[1] णवुंसयवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी णत्थि, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तेरह जोग, णवुंसयवेद,

पुरुषवेदी जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए। तथा सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके गति आलाप कहते समय नरकगतिके विना शेष तीन गतियां कहना चाहिए।

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसे लगाकर एकेन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः पर्याप्त अपर्याप्तकालमें दश प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां होती हैं परंतु नपुंसकवेदी जीवोंके देवगति नहीं होती है। एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान

नं. ३१७ नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ आदिके	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	३ न ति म	५	६	१३ आहा द्विक विना	१ नपुं	४	६ मन कव विना	४ अस देश सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

चत्तारि कसाय, छण्णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३१८]।

और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम; आदिके तीन दर्शन द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, पर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३१८ नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९	७	६	१०	४	३	५	६	१०	१	४	६	४	३	द्र ६	२	६	२	१	२
आदिके	पर्या	५ ४	९ ८ ७ ६ ४		न ति म			म ४ व ४ औ १ वै १	न		मन केव विना	असं देश सामा छेदो	केद विना	भा ६	भ अ		सं असं	आहा	साका अना

पुरिसवेद-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव पढम अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ भंगो। णवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। सासण सम्मामिच्छा-असंजदसम्माइट्ठीणं तिण्णि गदीओ वत्तव्वाओ।

"णवुंसयवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी णत्थि, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तेरह जोग, णवुंसयवेद,

पुरुषवेदी जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए। तथा सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके गति आलाप कहते समय नरकगतिके विना शेष तीन गतियां कहना चाहिए।

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसे लगाकर एकेन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः पर्याप्त अपर्याप्तकालमें दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां होती हैं परंतु नपुंसकवेदी जीवोंके देवगति नहीं होती है। एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान

नं. ३१७ नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ आदिके	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७ ६,४ ४,३	४	३ न ति म	५	६	१३ आ२ विना	१ नपुं	४	६ मन कव विना	४ अस देश सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

चत्तारि कसाय, छण्णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, चत्तारि संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३१८]।

और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, पर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, और चार प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३१८ नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ आदिके	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न. ति. म.	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ न.	४	६ मन. केव. विना.	४ असं. देश. सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासण-खइय-वेदगमिदि चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११९]।

णवुंसयवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छह पाण

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादन, क्षायिक और वेदक इसप्रकार चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण;

नं. ३१९ नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सा. अ.	७ अ.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	३ न. ति. म.	५	६	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	१ न.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	४ मि. सासा. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि
सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय
तेरह जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व
भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो
आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[320]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ
पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण
छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच
जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि
अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया

सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना
शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय
आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान
असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक
मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी
होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक
मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार
पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों
संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय
आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग
ये दश योग, नपुंसकवेद; चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य
और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक

नं. ३२०　　नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१	१४	६प	१०,७	४	३	५	६	१३	१	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	२	२
मि.		६अ	९,७		न.			आहा.	नपुं.		अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा. ६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
		५प	८,६		ति.			द्विक					अच.		अ.		असं.	अना.	अना.
		५अ	७,५		म.			विना											
		४प	६,४																
		४अ	४,३																

मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तिण्णि जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह णील काउ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२१ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न ति म	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ न	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

नं. ३२२ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अप	६ अ ५ अ ४ अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	३ न ति म	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

णवुंसगवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एग गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, सासणगुणेण जीवा णिरयगदीए ण उप्पज्जंति तेण वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि । णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विक, और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना शेष बारह योग होते हैं। यहां पर वैक्रियिकमिश्रके नहीं होनेका कारण यह है कि सासादन गुणस्थानसे मर कर जीव नरकगतिमें नहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए यहां पर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. ३२३ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	२	६	१०	४	३	१	१	१२ म ४	१	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	२	२
सा.	सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	७		न. ति. म.	पं.	त्र.	व. ४ औ. २ वै. १ का. १	न.		अज्ञा.	असं.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सासा.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, देव णिरयगदी णत्थि । पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि । णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां होती हैं किन्तु देवगति और नरकगति नहीं होती है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण काययोग ये दो योग होते हैं, किन्तु यहां पर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२८ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१	४	३ ति म नि म	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ नपुं	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३२९ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	२ ति म	१ पं	१ त्रस	२ औमि कार्म	१ न	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ३ अशु	१ भ	१ सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

णवुंसयवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

णवुंसयवेद असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि । णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ,

नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाय-योग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग होते हैं। किन्तु यहां पर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक

नं. ३२६   नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
१	१	६	१०	४	३	१	१	१०	१	४	३	१	२	द्र ६	१	१	१	१	२
सम्य.	सं. प.				न. ति. म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	न.		अज्ञा. ३ ज्ञान मिश्र.	अस.	चक्षु. अच.	भा. ६	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका. अना.

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, णवुंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [२८]।

और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२७ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	३ न ति म	१ पं	१ त्रस	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ कार्म १	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ३२८ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	३ न ति म	१ पं	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ क द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लब्भदि। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

णउंसयवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, णउंसयवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, होते हैं। यहां पर क्षायोपशमिक सम्यक्त्वके होनेका कारण यह है कि कृतकृत्यवेदककी अपेक्षासे यहां पर क्षायोपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं. ३२९　　नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	१ न.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

णउंसयवेद-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव पढम-अणियट्टि त्ति ताव इत्थिवेद-भंगो। णवरि सव्वत्थ णउंसयवेदो वत्तव्वो।

अवगदवेदाणं भण्णमाणे अत्थि छ गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणो वि अत्थि, परिग्गहसण्णा खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्त पि अत्थि, तसकाओ अकायत्त पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो,

औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप स्त्रीवेदी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक नपुंसकवेद ही कहना चाहिए।

अपगतवेदी जीवोंके आलाप कहने पर—अनिवृत्तिकरणके अवेद भागसे लेकर अन्ततकके छह गुणस्थान और अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमास स्थान भी होता है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी होता है, दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी होता है, परिग्रहसंज्ञा तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी होती है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी होता है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी होता है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी होता है, अपगतवेद, चारों कषाय

१ प्रतिषु 'पंचिंदिय अणिंदियत्त अत्थि' इति पाठः।

नं. ३३०

नपुंसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	१ न	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, चत्तारि संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, दो सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[331]।

णिदिय-अणियट्टिप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

एवं वेदमग्गणा समत्ता।

कसायाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा। णवरि दस गुणट्ठाणाणि वत्तव्वाणि। अदीदगुणट्ठाणं, अदीदजीवसमासो, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी,

तथा अकषायस्थान भी होता है, मतिज्ञान आदि पांचों ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात ये चार संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी होता है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अपगतवेदी जीवोंके अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागसे लेकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई।

कषायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि कषायमार्गणामें दश गुणस्थान कहना चाहिए। यहां पर अतीतगुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अनिन्द्रियत्व, अकायत्व,

नं. ३३१ अपगतवेदी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
६ अनि से अयो अती गु	२ सं प सं अ अती जी	६प ६अ अती प	१०,४ २,१ अती प्रा	१ प क्षीणसं	१ म सिद्धग	१ पं अनि	१ त्र अका	११ म ४ व ४ ओ २ कार्म १ अयो	० अपग	४ अकषा	५ मति श्रुत अव मन केव.	४ सा छे सू य अनु	४	द्र ६ मा १ शु अले	१ भ अनु	२ औ क्षा	१ सं अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

अणिंदियत्तं अकायत्तं, अजोगो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्साओ, णेव भवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा चि णत्थि ।

कोधकसायाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाय, सत्त णाण, पंच संजम सुहुम जहाक्खादसंजमा णत्थि, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११२] ।

अयोग, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्यत्व, भव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त इतने स्थान नहीं होते हैं।

क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, पांच संयम होते हैं, किन्तु यहां पर सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयम नहीं होते हैं, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ आ प्रतौ 'अणियट्टियत्त पि अत्थि ' इति पाठ ।

नं. ३३२   क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ आदिके	१४	६ प ६ अ ५ प ५ अ ४ प ४ अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१५	३ अप	१ क्रो	७ केव विना	५ सूक्ष्म यथा विना	३ क द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाओ, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ,

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके नौ गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकाल भावी ग्यारह योग, तीनों वेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिक

नं. ३३३ क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ आदिके	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ १	३ अपग.	१ क्रो.	७ केव. विना.	५ सूक्ष्म. यथा. विना.	३ केद. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ''।

कोधकसाय मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियआदि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ,

---

मिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान; असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दश प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

नं. ३३४   क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा अवि प्रम	७ अप	६ अ ५ अ ४ अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	३	१ क्रो	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	३ अस सामा छेदो	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ सम्य विना	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२५ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१४	६प	१०,७	४	४	५	६	१३	३	१	३	१	२	द्र ६	२	१	२	२	२
मि		६अ	९,७					आहा २		क्रो	अज्ञा	अस	चक्षु	भा ६	भ	मि	स	आहा	साका
		५प	८,६					विना					अच		अ		अस	अना	अना
		५अ	७,५																
		४प	६,४																
		४अ	४,३																

नं. ३२६ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	७	६	१०	४	४	५	६	१०	३	१	३	१	२	द्र ६	२	१	२	१	२
मि	पर्या	५	९					म ४		क्रो	अज्ञा	अस	चक्षु	भा ६	भ	मि	स	आहा	साका
		४	८					व ४					अच		अ		अस		अना
			७					औ १											
			६ ४					वै १											

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[337]।

कोधकसाय-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो,

उन्हीं क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

नं. ३३७ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६ अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	३	१ क्रो.	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों

नं. ३३८　　क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ साप्ता	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आहा २ विना	३	१ क्रो	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ३३९　　क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सासा	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	१ क्रो	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४०]।

कोधकसाय सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४१]।

सख्यापं, नरकगतिको छोड कर शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३४० क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं. अ.	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पंचे	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	१ क्रो	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ३४१ क्रोधकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	१ क्रो	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

कोधकसाय असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

नं. ३४२ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचें.	१ त्रस.	१३ आहा. २ विना	३	१ क्रो.	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

अणागारुवजुत्ता वा[१३] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद इत्थिवेदो णत्थि, कोधकसाओ, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४] ।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, किन्तु यहां पर स्त्रीवेद नहीं होता है; क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३४३   क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	१ क्रो	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३४४   क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	६अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	२ पु न	१ क्रो	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

कोधकसाय-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४५]।

कोधकसाय-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, (मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ[१],) चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भव-

क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं,

१ प्रतिषु कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति।

नं. ३४५ क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	१ क्रो.	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४६]।

कोधकसाय-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाओ, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४७]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३४६ क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	२ सं. प. सं. अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ आ. २	३	१ क्रो.	४ मति. श्रुत. अव. मन.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३४७ क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं. प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	१ क्रो.	४ मति. श्रुत. अव. मन.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

कोधकसाय-अपुव्वयरणाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [४८]।

[४९]कोधकसाय पढमअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाण, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, दो सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग,

क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, तीनों

नं. ३४८ क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अपू	१ सं प	६	१०	३ आहा विना	१ म	१ पंचें	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	१ क्रो	४ मति श्रुत अव मन	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ३४९ क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अनि प्रथम	१ सं प	६	१०	२ मै प	१ म	१ पंचें	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	१ क्रो	४ मति श्रुत अव मन	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तिण्णि वेद, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कोधकसाय विदियअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, कोधकसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

एवं माण मायाकसायाणं पि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति वत्तव्वं। णवरि जत्थ कोधकसाओ तत्थ माण मायाकसाया वत्तव्वा। लोभकसायस्स कोधकसाय भंगो। णवरि ओघालावे भण्णमाणे दस गुणट्ठाणाणि, छ संजम, लोभकसाओ च वत्तव्वो।

वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहने पर—एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसीप्रकारसे मानकषायी और मायाकषायी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतकके आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि कषाय आलाप कहते समय जहां ऊपर क्रोधकषाय कहा है, वहांपर मानकषाय और मायाकषाय कहना चाहिए। लोभकषायके आलाप क्रोधकषायके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि लोभ कषायके ओघालाप कहने पर आदिके दश गुणस्थान, संयम आलाप कहते समय यथाख्यातसंयमके

नं. ३५०   क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. द्वि.	१ सं. प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	१ क्रो.	४ मति. श्रुत. अव. मनः	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

[1]'अकसायाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस चत्तारि दो एगं पाण अदीदपाणो वि अत्थि, खीणसण्णा, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खादविहार-सुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो

विना छह संयम और कषाय आलाप कहते समय लोभकषाय कहना चाहिए।

अकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है; दशों प्राण, सयोगिकेवलीके सम्भवित चार प्राण और दो प्राण, अयोगिकेवलीके सम्भवित एक प्राण और सिद्ध जीवोंकी अपेक्षासे अतीतप्राणस्थान भी है; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, पांचों सम्यग्ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम तथा संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान भी है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा

१ आ प्रतौ "एग १०-४-२-१" इति पाठः ।

नं. ३५१   अकषायी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ.
४	२	६प	१०,४	०	१	१	१	११	०	०	५	१	४	द्र ६	१	२	१	२	२
अत अतो गु	सं प सं अ अती जीव	६अ अती पर्या	२,१ अती प्राण	क्षीणसं.	म सि	पं अनि	त्र अका.	म ४ व ४ औ २ कार्म १ अयो	अपग	अकषा	मति श्रुत अव मनः केव	यथा अनु		भा १ शुक्ल अले	भ अनु	औ क्षा	सं अनु	आहा अना	साका अना यु उ

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा (सागार-अणागारेहि जुगवदु वजुत्ता वा ।)

उवसंतकसायप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ओघ-भंगो ।

एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भंगा ।

[1] मदि-सुदअण्णाणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त

संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अकषायी जीवोंके उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लगाकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप ओघालापके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार कषायमार्गणा समाप्त हुई।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

मति श्रुत अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण;

१ प्रतिषु कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति ।

नं. ३४२ मति श्रुत अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ मि सा	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	२ मि सासा	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

[1] तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

चार प्राण तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति श्रुत अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक;

नं. ३५२ मति श्रुत अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२	७	६	१०	४	४	५	६	१०	३	४	२	१	२	द्र ६	२	२	२	१	२
मि	पर्या	५	९					म ४			कुम	अस	चक्षु	भा ६	भ	मि	स	आहा	साका
सा		४	८					व ४			कुश्रु		अच		अ	सा	अस		अना
			७					औ १											
			६					वै १											
			४																

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३५४]।

मदि-सुदअण्णाण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके दो गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय; औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मति-श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात

नं. ३५४

मति-श्रुत अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	७ अप.	६ अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	२ मि. सा.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५५]।

'तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच

प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों

न ३५५　　मति श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६ प ६ अ ५ प ५ अ ४ प ४ अ	१० ७ ९ ७ ८,६ ७,५ ६,४ ४ ३	४	४	५	६	१३ आ. द्वि. विना	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

न ३५६　　मति श्रुत अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

विभंगणाणि सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[113]।

आभिणिबोहिय सुदणाणाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो

विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारो

नं. ३६३   विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सासा	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	१ विभ	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, दो णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११५]।

पयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३६४ मति श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षीण.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	४	१ पं.	१ त्र.	१५	३ अपग.	४ अकषा.	२ मति श्रुत	७	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३६५ मति श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षी.	१ सं. प.	६	१०	४ क्षीणसं.	४	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	२ मति श्रुत	७	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [३६६]।

आभिणिबोहिय सुदणाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त,

---

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

---

नं. ३६६ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्रस	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	२ मति श्रुत	३ असं. सामा. छेदो.	३ के. द. विना	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३६७ मति श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१३ आ द्वि विना	३	४	२ मति श्रुत	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ.	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना.

नं. ३६८ मति श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	२ मति श्रुत	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, दो णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।[३६९]।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि आभिणि-बोहिय सुदणाणाणि वत्तव्वाणि। एवमोहिणाणं पि वत्तव्वं। णवरि ओहिणाणं एक्कं चेव भाणिदव्वं। णाण-दंसणमग्गणाओ जेण खओवसममस्सिऊण ट्ठिआओ तेण मदि सुदणाणेसु णिरुद्धेसु दोहि तीहि चउहि वा ओहि मणपज्जवणाणेसु णिरुद्धेसु तीहि

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मति श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञान ही कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधिज्ञानके आलाप जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहां पर पूर्वोक्त दो ज्ञानोंके स्थानमें एक अवधिज्ञान ही कहना चाहिए।

शंका—जब कि मतिज्ञानादि क्षायोपशमिक ज्ञानमार्गणा और चक्षुदर्शनादि क्षायोपशमिक दर्शनमार्गणाएं अपने अपने आवरणीय कर्मोंके क्षयोपशमके आश्रयसे स्थित हैं, तब मतिज्ञान और श्रुतज्ञान निरुद्ध आलापोंके कहने पर दो, तीन अथवा चार ज्ञान; तथा अवधिज्ञान

नं. ३६९ मति श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	६अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि काम	२ पु न	४	२ मति श्रुत	१ अस	३ क द विना	द्र २ का शु भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

चउहि वा णाणेहि होदव्वमिदि सच्चमेदं, किंतु इयरेसु संतेसु वि ण विवक्खा कया, तेण विवक्खिय-णाण वदिरित्त णाणाणमगणयणं कय ।

मणपज्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, आहारदुगेण विणा णव जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जवणाणं, परिहारसजमेण विणा चत्तारि सजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, वेदगसम्मत्त-पच्छायद उवसमसम्मत्तसम्माइट्ठिस्स[1] पढमसमए वि मणपज्जवणाणुवलंभादो। मिच्छत्त-

और मन पर्ययज्ञान निरुद्ध आलापोंके कहने पर तीन अथवा चार ज्ञान होना चाहिए ?

विशेषार्थ— शंकाकारके कहने का यह भाव है कि जब मतिज्ञान आदि चार ज्ञान क्षायोपशमिक होनेके कारण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञान और मन पर्ययज्ञान हो सकते हैं; तब विवक्षित किसी भी ज्ञानमार्गणाके आलाप कहते समय अपने सिवाय शेष ज्ञानोंको भी कहना चाहिए। अर्थात् छद्मस्थ जीवोंके कमसे कम मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान तो होते ही हैं, तथा इनके साथ अवधिज्ञान, अथवा मनःपर्ययज्ञान अथवा दोनों ही ज्ञान हो सकते हैं, इसलिये मति श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय मति और श्रुत ये दो अथवा मति, श्रुत और अवधि ये तीन अथवा, मति, श्रुत और मन पर्यय ये तीन अथवा, मति, श्रुत, अवधि और मन पर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधि-ज्ञानी और मन.पर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय--क्रमश मति, श्रुत और अवधि ये तीन तथा मति, श्रुत और मन पर्यय ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत, अवधि और मन पर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए।

समाधान— आपका यह कहना सत्य है, किन्तु विवक्षित ज्ञानके साथ इतर ज्ञानोंके होने पर भी उनकी विवक्षा नहीं कि गई है। इसलिये विवक्षित ज्ञानसे अतिरिक्त अन्य ज्ञानोंको नहीं गिनाया गया है।

मन.पर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषाय तकके सात गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मन पर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके बिना चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, तीन सम्यक्त्व होते हैं। मन पर्ययज्ञानीके औपशमिकसम्यक्त्व कैसे होता है, इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि जो

१ उवसमचरियाहिमुहो वेदगसम्मो अण विजोयित्ता। अंतोमुहुत्तकाल अधापमत्तो पमत्तो य ॥ तदा तियरणविहिणा दंसणमोहं सम खु उवसमदि। ल क्ष २०३, २०४

पच्छायद-उवसमसम्माइट्ठिम्मि मणपज्जवणाणं ण उवलब्भदे, मिच्छत्तपच्छायदुक्कस्सुव समसम्मत्तकालादो वि गहियसंजमपढमसमयादो सव्वजहण्णमणपज्जवणाणुप्पायण संजमकालस्स बहुत्तुवलंभादो। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु

वेदकसम्यक्त्वसे पीछे द्वितीयोपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस उपशमसम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि जीवमें मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टिके उत्कृष्ट उपशमसम्यक्त्वके कालसे भी ग्रहण किये गये संयमके प्रथम समयसे लगाकर सर्व जघन्य मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेवाला संयमकाल बहुत बड़ा है।

विशेषार्थ—ऊपर मनःपर्ययज्ञानीके तीनों सम्यक्त्व बतलाये गये हैं। क्षायिक और क्षायोपशमिकसम्यक्त्वके साथ तो मनःपर्ययज्ञान इसलिये होता है कि मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें जो विशेष संयम हेतु पड़ता है वह विशेष संयम इन दोनों सम्यक्त्वोंमें हो सकता है। अब रही औपशमिकसम्यग्दर्शनकी बात, सो उसके प्रथमोपशमसम्यक्त्व और द्वितीयोपशमसम्यक्त्व ऐसे दो भेद हैं। उनमें प्रथमोपशमसम्यक्त्वको अनादि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि ही उत्पन्न करता है और उसके रहनेका जघन्य अथवा उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त ही है। यह अन्तर्मुहूर्तकाल, संयमको ग्रहण करनेके पश्चात् मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेके योग्य संयममें विशेषता लानेके लिये जितना काल लगता है उससे छोटा है। इसलिये प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति न हो सकनेके कारण मनःपर्ययज्ञानके साथ उसके होनेका निषेध किया गया है। द्वितीयोपशमसम्यक्त्व उपशमश्रेणीके अभिमुख विशेष संयमीके ही होता है, इसलिये यहांपर अलगसे मनःपर्ययज्ञानके योग्य विशेष संयमको उत्पन्न करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है और यही कारण है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है। अथवा जिस संयमीने पहले वेदकसम्यक्त्वके कालमें ही मनःपर्ययज्ञानको ग्रहण कर लिया है उसके भी उपशमश्रेणीके अभिमुख होनेपर द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी प्राप्ति हो जाती है, इसलिये भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें मनःपर्ययज्ञान पाया जा सकता है। ऊपर टीकामें 'पढमसमए वि' में जो अपि शब्द आया है उससे यह ध्वनित होता है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके द्वितीयादिक समयमें वर्द्धमान चारित्र रहता है इसलिये वहां तो मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न हो ही सकता है, किन्तु प्रथम समयमें भी संयममें इतनी विशेषता पाई जाती है कि वह मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें कारण हो सकता है। इस कथनका तात्पर्य यह हुआ कि प्रथमोपशमसम्यक्त्वके अनन्तर या उसके साथ संयमकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उसमें तो मनःपर्ययज्ञान नहीं उत्पन्न हो सकता है। परन्तु द्वितीयोपशमसम्यक्त्व संयमीके ही होता है, इसलिये उसमें मनःपर्ययज्ञानके उत्पन्न होनेमें कोई विरोध नहीं है। इसप्रकार मनःपर्ययज्ञानके साथ तीनों सम्यक्त्व तो होते हैं, किन्तु औपश

वजुत्ता वा[३७]।

मणपज्जवणाणं पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि मणपज्जवणाणं एक्कं चेव वत्तव्वं। परिहारसुद्धिसंजमो वि णत्थि त्ति भाणिदव्वं।

केवलणाणाणं भण्णमाणे अत्थि वे गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्तीओ वि अत्थि, चत्तारि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाणा वि अत्थि, खीणसण्णाओ, मणुसगदी सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियं पि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेद, अकसाओ, केवलणाण, जहाक्खादसुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि

मिकसम्यक्त्वमें द्वितीयोपशमका ही ग्रहण करना चाहिए, प्रथमोपशमका नहीं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके आलाप मूल ओघालापके समान है। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय एक मनःपर्ययज्ञान ही कहना चाहिए। तथा संयम आलाप कहते समय परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए।

केवलज्ञानी जीवोंके आलाप कहने पर—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये दो गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अथवा एक पर्याप्त जीवसमास है तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी होता है, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अथवा समुद्घातगत अपर्याप्तकालमें आयु और कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवलीके एक आयु प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पचे न्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण काययोग ये सात योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात

नं. ३७०

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
७	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	१	४	३	द्र. ६	१	३	१	१	२
प्रम. से क्षीण.	सं. प.			क्षीणसं.	म.	पंचे.	त्रस.	म. ४ व. ४ औ. १	पु.	अकषा.	मन.	सामा. छेदो. सूक्ष्म. यथा.	के. द. विना.	भा. ३ शुभ.	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

अत्थि, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[1] ।

सजोगि अजोगि सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा ।

एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस सत्त चत्तारि दो एक्क पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग अजोगो वि

विहारशुद्धिसंयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे शुक्लेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिकसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल आघालापके समान कहना चाहिए।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना शेष तेरह योग तथा अयोग

नं. ३३१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ सयो अयो अतीतगु	२ पर्या अप अतीतजी	६प ६अ अतीतप	४ २ १ अतीतप्रा	० क्षीणसं	१ म सिद्धग	१ पं अतीं	१ त्र अका	७ म २ व २ औ २ कार्म १ अयो	० अपग	० अकषा	१ केव	१ यथा अनुभय	१ के द	द्र ६ भा १ शुक्ल अले	१ भ अनु	१ क्षा	० अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, पंच संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति''।

पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि

स्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मतिज्ञानादि पांचों सुज्ञान, सामायिकादि पांचों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

संयममार्गणाकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

---

नं. ३३२ संयमी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचें.	१ त्रस.	११ ४ म. ४ व. औ. १ आ. २	३	४	४ मति श्रुत अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के.द. विना	द्र. ६ भा. ३ शुभ	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ आहारसण्णा णत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ भंगो।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, भय, मैथुन और परिग्रह ये तीन संज्ञाएं होती हैं किन्तु यहां पर आहारसंज्ञा नहीं है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकादि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक संयमी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं।

---

[१] नं ३७२ संयमकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत;

सामाइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, सामाइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ भंगो। एवं छेदोवट्ठावण-संजमस्स वि वत्तव्वं ।

परिहारसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ

सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामायिकशुद्धिसंयतोंके आलाप मूल ओघालापके समान है। विशेष बात यह है कि संयम आलाप कहते समय एक सामायिकशुद्धिसंयम ही कहना चाहिए। इसीप्रकार छेदोपस्थापना-संयमके भी आलाप जानना चाहिए, किन्तु संयम आलाप कहते समय एक छेदोपस्थापना संयम ही कहना चाहिए।

परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये

नं. ३७१ सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ प्र अप्र अपू अनि	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ म	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ आ २	३ अपग	४	४ मति श्रुत अव मन	१ सामा	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

ओहिदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसम्बन्धी ग्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ३५३ अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	२	६प.	१०	४	४	१	१	१५	३	४	४	७	१	द्र. ६	१	३	१	२	२
अवि. से क्षीण.	सं. प. सं. अ.	६अ.	७	क्षीणसं.		पं.	त्र.		अपगतवे.	अकषा.	मति. श्रुत. अव. मनः.		अव.	भा. ६	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

सामाइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, सामाइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो । एवं छेदोवट्ठावण-संजमस्स वि वत्तव्वं ।

परिहारसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ

सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामायिकशुद्धिसंयतोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि संयम आलाप कहते समय एक सामायिकशुद्धिसंयम ही कहना चाहिए । इसीप्रकार छेदोपस्थापना-संयमके भी आलाप जानना चाहिए, किन्तु संयम आलाप कहते समय एक छेदोपस्थापना संयम ही कहना चाहिए ।

परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये

नं. ३७१ सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ प्रम. अप्र. अपू. अनि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ आ. २	३ अपग.	४	४ मति. श्रुत. अव. मन.	१ सामा.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग आहाराहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण मणपज्जवणाण णत्थि, कारण आहारदुग मणपज्जवणाण परिहारसुद्धिसजमो एदे जुगवदेव ण उप्पज्जंति। परिहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त विणा दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

पमत्त-अप्पमत्त परिहारसुद्धिसंजदाण पुध पुध भण्णमाणे ओघ भंगो। णवरि आहारदुग-मणपज्जवणाण उवसमसम्मत्त-सामाइय छेदोवट्ठावणसुद्धिसजमा च णत्थि। परिहारसुद्धिसजमो एक्को चेव सजमट्ठाणे। वेदट्ठाणे पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो।

दो गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाय योग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहांपर आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होते हैं। पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहांपर मन पर्ययज्ञान नहीं है; क्योंकि, आहारकद्विक, मन पर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसयम ये तीनों युगपत् नहीं उत्पन्न होते हैं। ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुद्धिसयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसयत परिहारविशुद्धिसयत और अप्रमत्तसयत परिहारविशुद्धिसयत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहने पर उनके आलाप ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि यहां पर आहारककाययोगद्विक, मन पर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुद्धिसयम और छेदोपस्थापनाशुद्धिसयम इतने आलाप नहीं होते हैं। सयमस्थान पर एक परिहार विशुद्धिसयम ही होता है। तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए।

---

1 प्रतिषु 'पुदाजा' इति पाठ ।

न ३७६ परिहारविशुद्धिसयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ प्र अ	१ स प	६	१०	४	१ म	१ प	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ परि	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	२ क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे मूलोघ-भंगो ।

जहाक्खादसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस चत्तारि दो एक्क पाण, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाण, जहाक्खाद-सुद्धिसंजमो, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[°°] ।

उवसंतकसायप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो । संजदासंजदाण-

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर उनके आलाप मूल ओघाला-पके समान ही जानना चाहिए ।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचन योग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; अपगतवेद, अकषाय, मतिज्ञानादि पांचों सुज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक, वेदकस-म्यक्त्वके विना शेष दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकके यथाख्यातविहार

नं. ३७७ यथाख्यात शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ उ क्षी स अ	२ सं प अप	६प ६अ	१० ४ २ १	० क्षीणसं	१ म	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ २ का १	० अपग	० अकषा	५ मति श्रुत अव मन केव	१ यथा	४	द्र ६ भा १ शुक्ल अले	१ भ	२ औप क्षा	१ सं अनु	२ आहा अना	२ साका अना यु उ

मोघ-भगो ।

असजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असजमो, तिण्णि दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३७८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा,

---

शुद्धिसयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

सयतासयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं ।

असयत जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पाच पर्याप्तियां, पाच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों सज्ञाएं, चारों गतियां एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग द्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सज्ञिक, असज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असयत जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान,

---

नं ३७८ असयत जीवोंके आ[illegible]

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सं	[illegible]	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	१४	६प	१०,७	४	४	५	६	१३	३	४	६	१		२	६	२	२	२
मि		६अ	९,७					आ द्वि			अज्ञा	अ[illegible]						
सा		५प	८,६					विना			३		६	भ		सं	आहा	साका
मि		५अ	७,५								ज्ञान			अ		अस	अना	अना
अ		४प	६,४								३							
		४अ	४,३															

छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९९]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय,

सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, पाच पर्याप्तिया चार पर्याप्तिया, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातिया पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, सज्ञिक, असज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असयत जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया चार अपर्याप्तिया, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पाच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, एकेन्द्रियजाति आदि पाचों जातिया, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके

न ३७९ असयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
४ मि सा स अ	७ पया	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

पच णाण, असजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८] ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असजदसम्माइट्ठि त्ति मूलोघ-भंगा ।

एव सजममग्गणा समत्ता ।

दसणाणुवादेण ओघालावा मूलोघ-भगो ।

चक्खुदसणीण भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पच पज्जत्तीओ पच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ,

तीन ज्ञान ये पाच ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याए, भावसे छहों लेश्याए; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पाच सम्यक्त्व, सज्ञिक, असज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तकके असयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए ।

इसप्रकार सयममार्गणा समाप्त हुई ।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, असज्ञीपचेन्द्रिय पर्याप्त, असज्ञीपचेन्द्रिय अपर्याप्त, सज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्त और सज्ञीपचेन्द्रिय अपर्याप्त ये छह जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया; पाच पर्याप्तिया, पाच अपर्याप्तिया; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाए तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है चारों गतिया,

न ३८० असयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
३ मि सा अ	७ अप	६ अ ५ ,, ४ ,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ अस	३ क द बिना	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	५ सम्य बिना	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

चउरिंदियजादि-आदी बे जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी दो जादीओ, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारु-

चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त ये तीन जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ३८१ चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षी.	६ च. प. च. अ. असं. प. असं. अ. सं. प. सं. अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१०,७ ९,७ ८,६	४ क्षीणसं.	४	२ च. पं.	१ त्र.	१५	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

वजुत्ता वा[१८१] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी बे जादीओ, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, चक्खुदंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८२] ।

असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान; चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां; चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां; त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३८१ चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१२ मि. मि. क्षी.	३ च. प. असं. प. सं. प.	६ ५	१० ९ ८	४ क्षीणसं.	४	२ च. पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३८२ चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि. सा. अ. प्र.	३ च. अ. असं. अ. सं. अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७ ६	४	४	२ च. पं.	१ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	१ चक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२	५	२ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

चक्खुदंसण मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी बे जादीओ, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी बे जादीओ, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्त ये छह जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद,

नं. ३८८ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	६ च प	६ प	१०,७	४	४	२	१	१३	३	४	३	१	१	द ६	२	१	२	२	२
मि	च अ	६ अ	९,७			च	त्र	आ द्वि			अज्ञा	अस	चक्षु	भा ६	भ	मि	सं	आहा	साका
	असं प	५ प	८,६			पं		विना							अ		असं	अना	अना
	असं अ	५ अ																	
	सं प																		
	सं अ																		

कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८५]।

[३८६]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, चक्खुदंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो

चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय अपर्याप्त ये तीन जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों

नं. ३८५ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	३ च प अस प स प	६ ५	१० ९ ८	४	४	२ चतु पचे	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	१ चक्षु	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

नं. ३८६ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	३ च अ अस अ स अ	६अ ५अ	७ ७ ६	४	४	२ च प	१ त्र	३ औमि वैमि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	१ चक्षु	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

चक्खुदंसण सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति मूलोघ-भंगो, णवरि चक्खुदंसण ति भाणिदव्वं।

''अचक्खुदंसणाणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

चक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलापमें 'चक्षुदर्शन' ऐसा कहना चाहिए।

अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक,

नं. २८७

अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१४	६प.	१०,७	४	४	५	६	१५	३	४	७	७	१	द्र. ६	२	६	२	२	२
मि.		६अ.	९,७	क्षीणसं.					अपग.	अकषा.	केव.		अच.	भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
सा.		५प.	८,६								विना				अ.		असं.	अना.	अना.
क्षीण.		५अ.	७,५																
		४प.	६,४																
		४अ.	४,३																

छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, अचक्खुदंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३८८] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण,

नं. ३८८ अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षी.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४ क्षीणसं.	४	५	६	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ[1], एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व-भावेहिं छ

छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, अपर्याप्तकालभावी चार योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान,

१ प्रतिषु 'चत्तारि गदीओ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ३८९. अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अवि. प्र.	७ अ.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७, ७, ६, ५, ४, ३	४	४	५	६	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढविकायादी छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं

नं ३९० अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१० ७ ९,७ ८,६ ७ ५ ६ ४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

नं ३९१ अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	१ अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

मिच्छत्तं सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, अचक्खुदंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३९२]।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि अचक्खुदंसणं ति भाणिदव्वं।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय 'अचक्षुदर्शन' ही कहना चाहिए।

नं. ३९२ अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

ओहिदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, सत्त संजम, ओहिदंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति

अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है; चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है; आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसम्बन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है; चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है; आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ४०३

अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षीण.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	४	१ पं.	१ त्र.	१५	३ अपगतवे.	४ अकषा.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	७	१ अव.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

अणागारुवजुत्ता वा[३९४] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, ओहिदंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[३९५] ।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अवधिदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३९४ अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
९ अवि. से क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	४ केव. विना.	७	१ अव.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३९५ अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
२ अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	१ अव.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव ओहिणाण भंगो । णवरि ओहिदंसणं ति भाणिदव्वं ।

केवलदंसणस्स केवलणाण भंगो ।

एवं दंसणमग्गणा समत्ता ।

लेस्साणुवादेण ओघालावो मूलोघ भंगो । णवरि अजोगिगुणट्ठाणेण विणा तेरह गुणट्ठाणाणि अत्थि, तेण अजोगिजिण सिद्धे च पडुच्च जे आलावा ते ण भाणिदव्वा।

किण्हलेस्सालावे भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ,

अवधिदर्शनी जीवोंके असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके आलाप अवधिज्ञानके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अवधिज्ञानके स्थान पर अवधिदर्शन कहना चाहिए।

केवलदर्शनके आलाप केवलज्ञानके समान होते हैं।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि अयोगिकेवली गुणस्थानके विना तेरह गुणस्थान ही होते हैं, इसलिये अयोगिकेवलीजिन और सिद्धभगवान्‌की अपेक्षासे जो आलाप होते हैं वे नहीं कहना चाहिए।

कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं,

नं. ३९६

कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१४	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ. ४ प. ४ अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान ३	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, देवगई णत्थि, देवाणं पज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साभावादो । पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो,

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण लेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां, यहांपर देवगति नहीं है, क्योंकि, देवोंके पर्याप्तकालमें अशुभ तीन लेश्याओंका अभाव है। पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों

नं. ३९७ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४	७	६	१०	४	३	५	६	१०	३	४	६	१	३	द्र ६	२	६	२	१	२
मि	पर्या	५	९		न			म ४			ज्ञान	अस	के द	भा १	भ		सं	आहा	साका
सा		४	८		ति			व ४			३		विना	कृष्ण	अ		असं		अना
स			७		म			औ १			अज्ञा								
अ			६					वै १			३								
			४																

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं वेदगसम्मत्तं च भवदि, छट्ठीदो पुढवीदो किण्हलेस्सा-सम्माइट्ठिणो मणुसेसु जे आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि त्ति । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और वेदकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्व होनेका कारण यह है कि छठी पृथिवीसे जो कृष्णलेश्यावाले अविरतसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्योंमें आते हैं, उनके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्वके साथ कृष्णलेश्या पाई जाती है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २९८　　　　कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा अवि	७ अप.	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ अस	१ के द विना	द्र २ का शु भा १ कृष्ण	२ भ अ	३ मि सा क्षायो	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

किण्हलेस्सा मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ,

कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

नं. ३११ कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

न्न काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा'।

'तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम,

नं. ४००　　कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	१ न ति म	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४०१　　कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अप.	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

किण्हलेस्सा सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ[1], पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो

आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय,

१ प्रतिषु 'चत्तारि गदीओ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ४०२ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ कृष्ण	१ भ	१ सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदिय जादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण लेश्या; भव्यसिद्धिक सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं ४०३　　कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	३ न म ति	१ पचे	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अर्स	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ कृष्ण	१ भ	१ सा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं ४०४　　कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ कृष्ण	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

किण्हलेस्सा सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

किण्हलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण

कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर—एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. ४०७ कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र	१ अ.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ कृ.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

-

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

-

नं. ४०६   कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्रस.	१२ म. ४ व. ४ औ. २ वै. १ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४०७   कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा, भवसिद्धिया वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०८]।

णीललेस्साए भण्णमाणे ओघादेसालावा किण्हलेस्सा-भंगा। णवरि सव्वत्थ णीललेस्सा वत्तव्वा।

काउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नीललेश्याके आलाप कहने पर—ओघ और आदेश आलाप कृष्णलेश्याके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि लेश्या आलाप कहते समय सर्वत्र नीललेश्या कहना चाहिए।

कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं,

नं. ४०८ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ	१ सं अ.	६अ	७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ कृष्ण.	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, छ णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त,

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ४०९ कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सासा सम्य अवि	१४	६ प ६ अ ५ प ५ अ ४ प ४ अ	१०, ७ ९ ७ ८, ६ ७ ५ ६ ४ ४ ३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ क द विना	द ६ भा १ कापो	२ भ अ	६	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, चत्तारि सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये चार सम्यक्त्व; संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४१० कापोतलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि सा सम्य अवि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न ति म	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	६ ज्ञान ३ अज्ञा ३	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा १ कापो	२ भ अ	६	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४११ कापोतलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
३ मि सा अवि	७ अ	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	५ कुम कुश्रु मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा १ कापो	२ भ अ	४ मि सा क्षा क्षायो	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

काउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[412]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों

नं. ४१२ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१४	६प	१० ७	४	४	५	६	१३	३	४	३	१	२	द्र. ६	२	१	२	२	२
मि		६अ	९ ७					आ द्वि			अज्ञा.	अस.	चक्षु.	भा. १	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
		५प	८,६					विना					अच.	कापो.	अ.		असं.	अना.	अना.
		५अ	७ ५																
		४प	६,४																
		४अ	४,३																

छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[13]।

[14] तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण,

संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

नं. ४१३ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न ति म	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ कापो	२ भ अ	१ मि	२ सं अस	१ आहा	२ साका अना

नं. ४१४ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अप.	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ कापो	२ भ अ	१ मि	२ सं अस	२ आहा अना	२ साका अना

दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

काउलेस्सा सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

नं. ४१५　　कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ कापो.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

'तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगई णत्थि । पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं; भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां होती हैं, किन्तु नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक,

नं. ४१६ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ कापो.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४१७ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

वीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, णिरयगदी णत्थि, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां हैं किन्तु नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये

नं. ४२६　　　तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञान	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ ते	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४२७　　　तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अ	६ अ	७	४	१ देव	१ प	१ त्र	२ वै मि कार्म	२ पु स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ ते	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

जोग, दो वेद, णवुंसयवेदो णत्थि, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्ज-

---

दो योग, पुरुष और स्त्री ये दो वेद होते हैं, किन्तु नपुंसकवेद नहीं होता है। चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने

नं. ४२८   तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ ते	१ भ	१ सा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

त्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२९]।

[१३०]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो

पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, चारों संज्ञाएं नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग

नं. ४२९ तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पंचे	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ ते	१ भ	१ सा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४३० तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६अ	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	२ पु स्त्री	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ ते	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

जोग, णवुंसयवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[??] ।

ये दो योग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४३१ तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ ते	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा अप्पमत्तसजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४०] ।

पम्मलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ,

---

तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, आदिके तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके सात गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों

नं. ४३७

तेजोलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं. प.	६	१०	३ भय मै. परि.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मन.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ ते.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८]।

[४९]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, सत्त णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो,

योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके सात गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसम्बन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और

नं. ४३८　　पद्मलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
७ मि. सा. अप्र.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१५	३	४	७ केव. विना.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ प.	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४३९　　पद्मलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
७ मि. से अप्र.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३	४	७ केव. विना.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ प.	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[440] ।

पम्मलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसम्बन्धी चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष ग्यारह योग,

नं. ४४०　　　　पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	२ दे. म.	१ पं.	१ त्र.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	१ पु.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ प.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

[2]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

---

तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारो-

---

नं. ४४१ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ४४२ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५५] ।

पम्मलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

पयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं,

नं. ५५२

पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै.मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ प.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"" ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्म लेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

न ४४४ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

न ४४५ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४६]।

[४४७]पम्मलेस्सा सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि,

उन्हीं पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसवन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक सञ्ज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सञ्ज्ञाए, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याए, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सञ्ज्ञी पर्याप्त जीवसमास छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सञ्ज्ञाए, नरकगतिके विना शेष तीन गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-

न ४४६   पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	१ दे	१ पं	१ त्र	२ वै मि कार्म	१ पु	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा १ प	१ भ	१ सासा.	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

न ४४७   पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पंच	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ प	१ भ	१ सम्यग्	१ सं	१ आहा	२ साका अना

असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पम्मलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

काययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

नं. ४४८　　　　पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ अस.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. १ प.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्म-लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक;

न ४४९ पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा १ प	१ भ	३ औप क्षा क्षायो.	१ सं	१ आहा	२ साका अना

न ४५० पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अ	१ सं अ	६ अ	७	४	२ दे म	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि काम	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा १ प	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

पम्मलेस्सा संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, उत्तं च पिंडियाए[1]—

लेस्सा य दव्व भाव कम्मं णोकम्ममिस्सियं दव्वं ।
जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥ २२८ ॥

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पम्मलेस्सा पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रस काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या होती है। पिंडिका नामके ग्रन्थमें कहा भी है —

लेश्या दो प्रकारकी है, द्रव्यलेश्या और भावलेश्या। नोकर्मवर्गणाओंसे मिश्रित कर्मवर्गणाओंको द्रव्यलेश्या कहते हैं। तथा जीवका कषाय और योगके निमित्तसे होनेवाला जो आत्मिक परिणाम है, वह भावलेश्या कहलाती है ॥ २२८ ॥

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण,

[1] आ प्रतौ 'पिंडियाए' इति पाठ ।

नं ४५१

पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा १ प	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

[२] पम्मलेस्सा अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

- - -

सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धिसंयम ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदा

- - -

नं. ४१२ पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ १ आ २	३	४	४ केव विना	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा १ प	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४१३ पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अप्र	१ सं प	६	१०	३ भय मै परि	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ केव विना	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा १ प	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सुक्कलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि अजोगिं विणा तेरह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा ।

रिक्तकाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्लेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अयोगिकेवली गुणस्थानके विना आदिके तेरह गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण तथा सयोगिकेवलीकी अपेक्षा चार प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. ४५४

शुक्लेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१३ अयो विना	२ प प सं अ	६ प ६ अ	१० ७ ४ २	४ क्षीणसं.	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१५	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र ६ भा १ शु	२ भ अ	६	१ सं अनु	२ आहा अना	२ साका अना तथा यु उ

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, पुरिसवेद अवगदवेदो वि अत्थि,

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसम्बन्धी ग्यारह योग तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चारों कषाय, तथा अकषायस्थान भी होता है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं शुक्लेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तविरत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसम्बन्धी चारों योग, पुरुषवेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा

नं. ४५१

शुक्लेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ मि. से सयो. तक	१ सं. प.	६	१० ४	४ क्षीणसं.	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	६	१ सं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा'[1]।

'[2]सुक्कलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगेण विणा बारह जोग, तिण्णि वेद,

अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पञ्चेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद,

नं. ४५६ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अवि. सम. सयो.	१ सं. अ.	६ अ.	७ २	४ क्षीणसं.	२ दे. म.	१ पं.	१ त्र.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	१ पु. अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मन. विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. १ शु.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा युग. उ.

नं. ४५७ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भवेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७८] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण असंजमो, दो दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ,

चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं शुक्लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर--एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं शुक्लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और

नं. ४५८

शुक्लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ शु	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६२] ।

सुक्कलेस्सा सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया,

---

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्लेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्लेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे

नं. ४६२ शुक्लेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै.मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ शु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सम्मामिच्छत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११३] ।

सुक्कलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११४] ।

शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्लेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४६३ शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा ३ ज्ञान मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४६४ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देव मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं,

---

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक,

---

नं. ४९५ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

सुक्कलेस्सा-संजदासजदाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, सजमासजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७] ।

सुक्कलेस्सा-पमत्तसजदाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, दो जीवसमासा, छ

साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्लेश्यावाले संयतासयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाए, तिर्यंचगति और मनुष्य गति ये दो गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक काययोग ये नो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी ओर अनाकारोपयोगी होते हे।

शुक्ललेश्यावाले प्रमत्तसयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसयत गुण

नं ४६६　　शुक्ललेश्यावाले असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ.
१ अवि	१ स अ	६ अ	७	४	२ दे म	१ प	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	१ पु	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का. शु भा १ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

नं ४६७　　शुक्ललेश्यावाले सयतासयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ देश	१ स प	६	१०	४	२ ति म	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि सजम, तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८८]।

[८९]सुक्कलेस्सा अपमत्तसजदाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पचिंदियजादी, तसकाओ, णव

स्थान, सज्ञी पर्याप्त और सज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सज्ञाए, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहार विशुद्धि ये तीन सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे शुक्ललेश्या, भव्य सिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

शुक्ललेश्यावाले अप्रमत्तसयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसयत गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, आहारसज्ञाके विना शेष तीन सज्ञाए, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग

न ४६८ शुक्ललेश्यावाले प्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ प्रम	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	१ म	१ प	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ आ २	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदा परि	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

न ४६९ शुक्ललेश्यावाले अप्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ अप्र	१ सं प	६	१०	३ भय मै परि.	१ म	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदा परि	३ के द विना	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो, तेसु सुक्कलेस्सा-वदिरित्तण्णलेस्साभावादो । अलेस्साणं अजोगि-सिद्धाणं ओघ भंगो चेव ।

एवं लेस्सामग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघ भंगो । णवरि भवसिद्धिया त्ति वत्तव्वं ।

अभवसिद्धियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

---

और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके शुक्ललेश्यावाले जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान ही होते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्याको छोड़कर अन्य लेश्याओंका अभाव है ।

लेश्यारहित अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापोंके ही समान होते हैं ।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंके आलाप कहने पर मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि भव्य आलाप कहते समय एक भव्यसिद्धिक आलाप ही कहना चाहिए ।

अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

छहों लेश्याएं, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४७०

अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१४	६प ६अ ५प ५अ ४प ४अ	१०,७ ९,७ ८ ६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ अ	१ मि	२ सं असं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ४७१

अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ पर्या	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ अ	१ मि	२ सं असं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[७२]।

णेव-भवसिद्धिय-णेव-अभवसिद्धियाणमोघ-भंगो ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि, बे जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ

उन्हीं अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान जानना चाहिए ।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमास-

---

नं. ४७२

अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अ.	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	१ अ	१ मि	२ स अस	२ आहा अना	२ साका अना

चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा चोद्दह जोग अहवा एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[४७४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

गतियां पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना चौदह योग अथवा तीनों मिश्र योग और कार्मणकाययोगके विना शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— छठवें गुणस्थानकी आहारकसमुद्धात अवस्थामें और तेरहवें गुणस्थानकी केवलिसमुद्धात अवस्थामें पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाय ये तीन योग पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं। इसीप्रकार सयोगकेवलीके दो प्राणोंके सबन्धमें भी समझ लेना चाहिए।

उन्हीं सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पचेन्द्रिय-

नं ४७४ सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
११ अवि. स. अयो.	१ सं. प.	६	१० ४ २ १	४ क्षीणसं.	४ –	१ पंच.	१ त्र.	१४ वै. मि. विना अथवा ११म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	५	७	४	द. ६ भा. ६ अलेश्या.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा[475]।

उवरि असजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो; तेसिं सव्वेसिं सम्मत्तसंभवादो।

जाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है, मति, श्रुत, अवधि और केवलज्ञान ये चार ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—यहांपर सम्यक्त्वमार्गणाके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए भावसे छहों लेश्याएं बतलाई गई हैं, और गोमट्टसार जीवकाण्डके आलापाधिकारमें सम्यक्त्वमार्गणाके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए एक कापोत और तीन शुभ इसप्रकार चार लेश्याएं ही बतलाई हैं। परन्तु गोमट्टसारमें ऐसा कथन क्यों किया यह कुछ समझमें नहीं आता, क्योंकि, आगे उसीमें वेदकसम्यक्त्वके अपर्याप्त आलाप बतलाते हुए छहों लेश्याएं कहीं गई हैं। संभव है यह लिपिकारकी भूल है जो बराबर यहां तक चली आई है। अस्तु, धवलाका कथन ठीक प्रतीत होता है।

ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं; क्योंकि, उन सभी गुणस्थानवर्ती जीवोंके सम्यक्त्व पाया जाता है।

नं. ४७५

सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ अवि. प्रम. सयो.	१ सं. अ.	६ अ.	७ २	४ क्षीणसं.	४	१ पं.	१ त्र.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	२ पु. न. अपग.	४ अकषा.	४ मति. श्रुत. अव. केव.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

खइयसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दस पाण सत्त पाण चत्तारि दो एक्क पाण अदीदपाणो वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ सिद्धगई वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[४७६]।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयमसे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. ४७६ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
११ अवि से अयो तक अती	२ सं प सं अ अती जी	६प ६अ ८ अती	१० ७ ४ २ १ अती प्रा	४ क्षीणसं	४ सिद्धग	१ प अनिंद्रि	१ त्र अकाय	१५ अयोग	३ अपग	४ अकषा	५ मति श्रुत अव मन केव	७ अनु	४	द्र. ६ भा ६ अले	१ भ अनु	१ क्षा	१ सं अनु	२ आहा अना	२ साका अना. तथा यु उ

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस चत्तारि एग पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, पंच णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[७७०] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद अवगदवेदो वि अत्थि,

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक ग्यारह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों सम्यग्ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद तथा

नं. ४७७ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
११ अवि. से अयो.	१ सं. प.	६	१० ४ १	४ क्षीणसं.	४	१ पं.	१ त्र.	११म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. मन. केव.	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा युग. उ.

चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, चत्तारि सजम, चत्तारि दसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णकाउ तेउ-पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्त, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा[४७८]।

[४७९]खइयसम्माइट्ठीण असंजदाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, अस-

अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति, श्रुत, अवधि और केवल ज्ञान ये चार ज्ञान, असयम, सामायिक छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसयम ये चार सयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, सज्ञिक तथा अनुभयस्थान, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त और सज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

नं ४७८　　क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
३	१	६अ	७	४	४	१	१	४	२	४	४	४	४	द्र २ का	१	१	१	२	२
अवि प्रम सयो	स अ			क्षीणस		प	त्र	औमि वैमि आमि कार्म	पु न अपग	अकषा	मति श्रुत अव केव	असं सामा छेदो यथा		शु भा ४ ज का तेज पद्म शुक्ल	भ	क्षा	स अनु	आहा अना	साका अना तथा यु उ

नं ४७९　　क्षायिकसम्यग्दृष्टि असयत जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	२	६प	१०	४	४	१	१	१३	३	४	३	१	३	द्र ६	१	१	१	२	२
अवि	स प स अ	६अ	७			प	त्र	आ द्वि विना			मति श्रुत अव	अस	के द विना	भा ६	भ	क्षा	स	आहा अना	साका अना

जमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८०]।

आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८० क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४८१ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अ	१ सं अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	२ पु न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र २ का शु भा ४ का तेज पद्म शुक्ल	१ भ	१ क्षा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण जहण्णकाउ तेउ पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८१]।

खइयसम्माइट्ठीणं संजदासंजदाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं,

---

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक,

नं. ४८१ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. २ का. शु. भा. ४ का. तेज. पद्म शुक्ल	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१]।

खइयसम्माइट्ठीणं पमत्तसंजदप्पहुडि सिद्धावसाणाणं मूलोघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ खइयसम्मत्तं चेव वत्तव्वं।

[२]वेदगसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पंच संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं,

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सिद्ध जीवों तकके प्रत्येक स्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र एक क्षायिकसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक चार गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पांच संयम, आदिके

नं. ४८२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ क्षा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४८३ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ अवि दे अप्र	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१५	३	४	४ मति श्रुत अव मनः	५ असं देश सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

मण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, पच सजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८४] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, देवगदि-मणुसगदी । कद-करणिज्ज वेदगसम्माइट्ठिं पडुच्च णिरय तिरिक्खगईओ लब्भति । पंचिंदियजादी, तसकाओ,

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है ।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसयत गुणस्थान तकके चार गुणस्थान, एक सज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, असयम, देशसयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पाच सयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसयत ये दो गुणस्थान, एक सज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तिया, सात प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया होती है, क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें देवगति और मनुष्यगति तो पाई ही जाती हैं, किन्तु कृतकृत्य वेदकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षासे नरकगति और तिर्यंचगति भी पाई जाती हैं। पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार

न ४८४　　　वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ अवि से अप्र	१ सं प	६	१०	४	४	१ प	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	५ अस देश सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

चत्तारि जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८५]।

वेदगसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८६]।

योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

न. ४८५ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि सम	१ सं अ	६अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	४ औ मि वै मि आ मि कार्म	२ पु न	४	३ मति श्रुत अव	३ अस सामा छेदो	३ के द विना	द्र २ का शु भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

न. ४८६ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ क्षायो	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८७]।

[४८८]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुष और नपुंसक ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान,

नं. ४८७ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४८८ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेदगसम्माइट्ठि संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[८९] ।

वेदगसम्माइट्ठि पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण,

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग,

नं. ४८९ वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९०]।

वेदगसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९१]।

तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४९० वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्र	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	१ म	१ पंचे	१ त्रस	११ म ४ व ४ औ १ आ २	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ४९१ वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अप्र	१ सं प	६	१०	३ भय मै परि	१ म	१ पंचे	१ त्रस	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

उवसमसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ उवसंतपरिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्स-आहार आहारमिस्सेहि विणा बारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, परिहारसंजमेण विणा छ संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ उवसंतपरिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक आठ गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन तीन योगोंके विना शेष बारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा उपशान्तकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना शेष छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक आठ गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा

नं. ४९२

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
८ अवि. से उप.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४ उप.	४	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३ अप.	४ उप.	४ मति. श्रुत. अव. मन.	६ परि. विना	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

कसाय उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाण, छ संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२३]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२४]।

उपशान्तकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना शेष छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४२२

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
८ अवि. से उप.	१ सं. प.	६	१०	४ [illegible]	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३ [illegible]	४ [illegible]	४ मति श्रुत अव. मन.	६ परि. विना	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४२३

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	३ [illegible]	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. २ का. शु. भा. ३ शुभ	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ [illegible]	[illegible]

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

उवसमसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ५२७ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र. २	१	१	१	२	२
अवि.	सं. अ.	अ.			दे.	पं.	त्र.	वैमि. कार्म.	पु.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. शु. भा. ३ शुभ.	भ.	औप.	सं.	आहा. अना.	साका. अना.

उवसमसम्माइट्ठि-असजदाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११५]।

[१]तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस

उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त और सज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया; दशों प्राण, सात प्राण, चारों सज्ञाएं, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण; चारों सज्ञाएं चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक

नं ४९५ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ १ वै २ का १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ औप	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं ४९६ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्रस	१०म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	१ औप	१ सं	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९७] ।

उवसमसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं; भव्य-सिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ४९७   उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. २ का. शु. भा. ३ शुभ	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९८]।

उवसमसम्माइट्ठि पमत्तसजदाण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीव समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, मणपज्जवणाणेण सह उवसम सेढीदो ओयरिय पमत्तगुण पडिवण्णस्स उवसमसम्मत्तेण सह मणपज्जवणाण लब्भदि, ण मिच्छत्तपच्छागद उवसमसम्माइट्ठि पमत्तसजदस्स, तदुप्पत्ति संभवाभावादो । दो संजम, परिहारसजमो णत्थि । कारण, ण ताव मिच्छत्तपच्छागद उवसमसम्माइट्ठि संजदा

औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सयमासयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याए; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसयत गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाए, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान होते है। उपशमसम्यग्दृष्टिके मन पर्ययज्ञान होता है इसका कारण यह है कि मन पर्ययज्ञानके साथ उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मन पर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसयत जीवके मन पर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है; क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसयतके मन पर्ययज्ञानकी उत्पत्ति सभव नहीं है। ज्ञान आलापके आगे सामायिक, और छेदोपस्थापना ये दो सयम होते है; किन्तु परिहारविशुद्धिसयम नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए प्रथमोपशम सम्यग्दृष्टि सयत जीव तो परिहारविशुद्धिसयमको प्राप्त होते नहीं है, क्योंकि, सर्वोत्कृष्ट भी

नं ४९८ उपशमसम्यग्दृष्टि सयतासयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ देश	१ स प	६	१०	४	२ ति म	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ औप	१ स	१ आहा	२ साका अना

परिहारसजमं पडिवज्जंति; अट्ठ-उवसमसम्मत्तकालब्भंतरे तदुप्पत्तिणिमित्तगुणाण संभवाभावादो। णो उवसमसेढिं चढमाणा, तत्थ पुव्वमेवमतोमुहुत्तमत्थि त्ति उवसंहरिद-विहारादो। ण तत्तो ओदिण्णाण पि तस्स सभवो, णट्ठे उवसमसम्मत्तेण विहारस्सासमवादो। तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१११]।

उवसमसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाण भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, दो संजम, परिहारसंजमो

प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालके भीतर परिहारविशुद्धिसंयमकी उत्पत्तिके निमित्तभूत विशिष्टसंयम, तीर्थंकर चरणमूल वसति, प्रत्याख्यानपूर्व महार्णवपठन आदि गुणोंके होनेकी संभावनाका अभाव है। और न उपशमश्रेणीपर चढनेवाले द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके भी परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना है, क्योंकि, उपशमश्रेणिपर चढनेके पूर्व ही जब अन्तर्मुहूर्तकाल शेष रहता है तभी परिहारविशुद्धिसंयमी अपने गमनागमनादि विहारको उपसंहरित अर्थात् संकुचित या बन्द कर लेता है। और उपशमश्रेणीसे उतरे हुए भी द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीवोंके परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना नहीं है, क्योंकि, श्रेणि चढनेके पूर्वमें ही परिहारविशुद्धिसंयमके नष्ट हो जानेपर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयमीका विहार संभव नहीं है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं, किन्तु, परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है।

नं ५११

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्रम	१ सं प	६	१०	४	१ म	१ प	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	४ मति श्रुत अव मन	२ सामा छेदो	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	१ औप	१ सं	१ आहा	२ साका. अना.

णत्थि । उत्तं च—

> मणपज्जवपरिहारा उवसमसम्मत्त दोण्णि आहारा ।
> एदेसु एक्कपयदे णत्थि त्ति य सेसय जाणे[1] ॥ २२९ ॥

तिण्णि दसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धि
उवसमसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कहा भी है—

मन पर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसयम, प्रथमोपशमसम्यक्त्व, आहारककाययोग अ
आहारकमिश्रकाययोग इनमेंसे किसी एकके प्रकृत होनेपर शेषके आलाप नहीं होते है, ऐ
जानना चाहिए ॥ २२९ ॥

विशेषार्थ—गोमट्टसार जीवकाण्डमें भी यही गाथा पाई जाती है, परन्तु उ
'उवसमसम्मत्त' के स्थानमे 'पढमुवसम्मत्त' पाठ पाया जाता है जो सगत प्रतीत होता
क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यक्त्वके साथ मन पर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसयम और आहारद्विक
सबके होनेका विरोध है औपशमिकसम्यक्त्वके साथ नहीं। यद्यपि औपशमिकसम्यक्त्वके स
परिहारविशुद्धिसयम और आहारद्विक नहीं होते हैं फिर भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी अपे
औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मन पर्ययज्ञानका होना सभव है, इसलिये गाथामें 'उवस
सम्मत्त' ऐसा सामान्य पद रखनेसे औपशमिकसम्यक्त्वके साथ भी मन पर्ययज्ञानके होने
निषेध हो जाता है जो आगम विरुद्ध है। तो भी 'उवसमसम्मत्त' पदका अर्थ प्रथमोपश
सम्यक्त्व कर लेने पर कोई दोष नहीं आता है यही समझकर पाठमें परिवर्तन नहीं किया है।

सयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याए, भावसे तीन शु
लेश्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाका
पयोगी होते हैं।

[1] मणपज्जव परिहारो पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा । एदेसु एक्कपगदे णत्थि त्ति असेसय जाण ॥
गो जी ७२९.

न ५००   उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	३	१	१	१	९	३	४	४	२	३	द्र ६	१	१	१	१	२
अप्र	स प			आहा विना	म	प	त्र	म ४ व ४ औ १			मति श्रुत अव मन	सामा छेदो	के द विना	भा ३ शुभ	भ	औप	सं	आहा	साका अना

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति ताव ओघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ उवसमसम्मत्तं भाणियव्वं।

मिच्छत्त सासणसम्मत्त सम्मामिच्छत्ताणं ओघ मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-भंगो।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

पाधण्णपदे अवलंबिज्जमाणे सव्वाणुवादाणं मूलोघ-भंगो होदि; तत्थ सव्वनियप्प संभवादो। गुणणामे अवलंबिज्जमाणे ण होदि। पाधण्णपदे अणवलंबिज्जमाणे असंजमादीण कधं गहणं? ण; वदिरेगमुहेण संजमादि-परूवणट्ठं तप्परूवणादो। तेण दोण्णि वि वक्खाणाणि अविरुद्धाणि। एसत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र उपशमसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके आलाप क्रमशः मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके आलापोंके समान जानना चाहिए।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

प्राधान्य पदके अवलंबन करनेपर सभी अनुवादोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं, क्योंकि, मूल ओघालापमें विधि प्रतिषेधरूप सभी विकल्प संभव हैं। किन्तु गौणनाम पदके अवलंबन करनेपर सभी विकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, इस नामपदकी दृष्टिसे गुण नामोंके भंगोंके ही आलाप कहे जायेंगे, दूसरोंके नहीं।

शंका—तो फिर प्राधान्यपदके अवलंबन नहीं करनेपर संयमादिके प्रतिपक्षी असंयमादिका ग्रहण कैसे किया जा सकता है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, व्यतिरेकद्वारसे संयमादि विकल्पोंकी प्ररूपणाके लिए ही असंयमादि विपक्षी विकल्पोंकी प्ररूपणा की जाती है। तभी विवक्षित मार्गणाद्वारा समस्त जीवोंका मार्गण हो सकता है, अन्यथा नहीं। इसलिए संयमादि अन्वयरूप और असंयमादि व्यतिरेकरूप दोनों ही व्याख्यान अविरुद्ध हैं। यही अर्थ सभी मार्गणाओंके विषयमें कहना चाहिए।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंके आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो त्ति अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ त्ति अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

[2] तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ त्ति अत्थि, सत्त णाण, सत्त संजम, तिण्णि दंसण, दव्व भावेहिं छ

त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है. चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं ५०१

सज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१२ मि से क्षी	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४ क्षीणसं	४	१ प	१ त्र	१५	३ अपग	४ अकषा	७ केव विना	७	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

न ५०२

सज्ञी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि.	आ	उ
१२ मि से क्षी	१ सं प	६	१०	४ क्षीणसं	४	१ प	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ वै १ आ १	३ अपग	४ अकषा	७ केव विना	७	३ के द विना	द्र ६ भा ६	२ भ अ	६	१ सं	१ आहा	२ साका अना

लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, पंच णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

सण्णि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

---

अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसम्बन्धी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत, और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग-

---

नं. ५०३

संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
४ मि. सासा. अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६अ	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [५]।

द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०४ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ५०५ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ असं	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	२ भ अ	१ मि	१ सं	१ आहा	२ साका अना

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

"(सण्णि-) सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण,

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग-

१ प्रतिषु नान्यत्र कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्तीति ज्ञेयम् ।

नं. ५०६ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१ सं अ	६ अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	२ भ अ.	१ मि	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ५०७ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ सं प सं अ	६ प ६ अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना.

असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण

छिकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान,

---

नं. ५०८ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी.	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

काउ सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[509]।

(सण्णि-)सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[510]।

असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिक काययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०९　　　　संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	३ औ मि वै मि कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र २ का शु भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	२ आहा अना	२ साका अना

नं. ५१०　　　　संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

(सण्णि-) असजदसम्माइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असजमो, तिण्णि दसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

'तेसिं चेव पज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पचिंदियजादी, तसकाओ,

सज्ञी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त और सज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारक काययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सज्ञी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक

न ५११ सज्ञी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ अवि	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ पं	१ त्र	१३ आ द्वि विना	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	२ आहा अना	२ साका अना

न ५१२ सज्ञी असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इ	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ स प	६	१०	४	४	१ प	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र ६ भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ स	१ आहा	२ साका अना

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोग, दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

कामयोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके संज्ञी जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापोंके समान होते हैं।

नं. ५१३

संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	३ औ. मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति श्रुत अव.	१ अस.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

असण्णीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बारह जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादीओ, छ काय, चत्तारि जोग असच्चमोसवचिजोगो ओरालिय ओरालियमिस्सकायजोगा कम्मइयकायजोगो चेदि, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, विभंगणाणेण विणा दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह णील काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादी, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि

असंज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्तके विना शेष बारह जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पांचों जातियां, छहों काय, असत्यमृषावचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना शेष दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमासोंमेंसे एक संज्ञी पर्याप्तके विना शेष छह पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पांचों जातियां, छहों काय, अनुभयवचनयोग, और औदारिककाययोग ये

नं. ५१४ असंज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	१२ सं प सं अ विना.	५प ५अ ४प ४अ	९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	१ ति	५	६	४ व अनु १ औ २ कार्म १	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ३ अशु	१ भ	१ मि	१ अ	२ आहा अना	२ साका अना

कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, पंचिंदियजादी, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी अपर्याप्तके विना शेष छह अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, छहों काय, *औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग,* तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५१५

असंज्ञी जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	६ पर्या. सं. प. विना	५ ४	९ ८ ७ ६ ४	४	१ ति.	५	६	२ व. अनु. १ औ. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५१६

असंज्ञी जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	६ अप. सं. अ. विना	५ अ. ४ अ.	७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति.	५	६	२ औ. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

णेव सण्णि णेव-असण्णीणं सजोगि अजोगि-सिद्धाण ओघ-भंगो ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण[1]) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण चत्तारि पाण दो पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, चोद्दस जोग कम्मइयकायजोगो णत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[९] ।

संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित सयोगिकेवली, अयोगिकेवली और सिद्ध भगवान्‌के आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं।

इसप्रकार संज्ञी मार्गणा समाप्त हुई।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण, सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; सयोगिकेवलीके चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चौदह योग होते हैं, क्योंकि, यहांपर कार्मणकाययोग नहीं होता है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

१ प्रतिषु कोष्टकान्तर्गतपाठो नास्ति ।

नं. ५१७

आहारक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१३ मि. से सयो.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२	४ क्षीणसं.	४	५	६	१४ कार्म. विना	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, एगारह जोग, ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगा णत्थि। तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाण, सत्त संजम, चत्तारि दंसण, दव्व भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्तं, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[५१८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दोण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

उन्हीं आहारक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—आदिके तेरह गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग होते हैं, क्योंकि, यहांपर औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग नहीं होते हैं। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं आहारक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान; सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी

नं. ५१८

आहारक जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ मि. से सयो. तक	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४ ४	४ क्षीणसं.	४	५	६	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, तिण्णि जोग, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाण, चत्तारि संजम, चत्तारि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा (सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[1])।

आहारि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण (णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण[1]) पंच पाण छ पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, बारह जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि। तिण्णि

है, चारों गतियां पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और आहारकमिश्र काययोग ये तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है चारों कषाय तथा अकषाय स्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण, आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण, छह प्राण चार प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग होते हैं, किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। तीनों

---

१ कोष्ठकान्तर्गतपाठो नास्ति।

नं. ५१९

आहारक जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि सा अवि प्रम सयो	७ अप.	६अ ५अ ४अ	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ क्षीणसं.	४	५	६	३ औ.मि. वै.मि. आ.मि.	३ अपग.	४ अकषा.	६ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव. केव.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. १ का. भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सासा. औप. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दस पाण णव पाण अट्ठ पाण सत्त पाण छ पाण चत्तारि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [2]।

वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५२० आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	१४	६प	१०,७	४	४	५	६	१२	३	४	३	१	२	द्र ६	२	१	२	१	२
मि		६अ	९,७					म ४			अज्ञा	अस	चक्षु	भा ६	भ	मि	सं	आहा	साका
		५प	८,६					व ४					अच		अ		असं		अना
		५अ	७,५					औ २											
		४प	६,४					वै २											
		४अ	४,३																

नं. ५२१ आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१	७	६	१०	४	४	५	६	१०	३	४	३	१	२	द्र ६	२	१	२	१	२
मि	पर्या	५	९					म ४			अज्ञा	अस	चक्षु	भा ६	भ	मि	सं	आहा	साका
		४	८					व ४					अच		अ		असं		अना
			७					औ १											
			६, ४					वै १											

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काय, दो जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा "।

"आहारि सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ,

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों

नं. ५२२ आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अप	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	२ औ मि वै मि	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ का भा ६	२ भ अ	१ मि	२ स अस	१ आहा	२ साका अना

नं. ५२३ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	२ स प स अ	६प ६अ	१० ७	४	४	१ प	१ त्र	१२ म ४ व ४ औ २ वै २	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ स	१ आहा	२ साका अना

पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असंजमो, दो दसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि अण्णाण, असजमो, दो दसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, दो

मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये वारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और

नं. ५२४ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्रस	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ अज्ञा	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण काउ-लेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

आहारि सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [१]।

वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग और वैक्रियिक काययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५२५ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	२ औ मि वै मि	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ का भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं. ५२६ आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सम्य	१ सं प	६	१०	४	४	१ पं	१ त्र	१० म ४ व ४ औ १ वै १	३	४	३ ज्ञान ३ अज्ञा मिश्र	१ अस	२ चक्षु अच	द्र ६ भा ६	१ भ	१ सम्य	१ सं	१ आहा	२ साका अना

आहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाण, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोग, तिण्णि वेद चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

'तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, सज्ञी पर्याप्त और सज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, छहों अपर्याप्तिया, दशों प्राण, सात प्राण, चारों सज्ञाए, चारों गतिया, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याए, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, सज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

उन्हीं आहारक असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक सज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तिया, दशों प्राण,

न ५२७ आहारक असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं.	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	२	६प	१०	४	४	१	१	१२	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
अवि	स प स अ	६अ	७			प	त्र	म ४ व ४ औ २ वै २			मति श्रुत अव	अस	के द विना	भा ६	भ	औप क्षा क्षायो	स	आहा	साका अना

न ५२८ आहारक असयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप

गु	जी	प	प्रा	स	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	सय	द	ले	भ	स	सज्ञि	आ	उ
१	१	६	१०	४	४	१	१	१०	३	४	३	१	३	द्र ६	१	३	१	१	२
अवि	स प					प	त्र	म ४ व ४ औ १ वै १			मति श्रुत अव	अस	के द विना	भा ६	भ	औप क्षा क्षायो	स	आहा	साका अना

दस जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोग, इत्थिवेदेण विणा दो वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारि संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, दो गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक सम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्य

नं. ५२९ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	४	१	१	२	२	४	३	१	३	द्र. १	१	३	१	१	२
अवि.	सं. अ.	अ.				पं.	त्र.	औ. मि. वै. मि.	पु. न.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. भा. ६	भ.	औप. क्षा. क्षायो.	सं.	आहा.	साका. अना.

जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, संजमासंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ पम्म सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा।

आहारि पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोग, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, चत्तारि णाण, तिण्णि संजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया,

गति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहने पर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और आहारककाययोगद्विक ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

नं ५२०

आहारक संयतासंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ देश	१ सं प	६	१०	४	२ ति म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	३	४	३ मति श्रुत अव	१ देश	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

नं ५२१

आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ प्र	२ सं प सं अ	६प ६अ	१० ७	४	१ म	१ पं	१ त्र	११ म ४ व ४ औ १ आ २	३	४	४ मति श्रुत अव मन	३ सामा छेदो परि	३ के द विना	द्र ६ भा ३ शुभ	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ आहा	२ साका अना

भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सेस-चदुण्हमणियट्टीणं ओघ-भंगो ।

आहारि सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, सुहुमलोहकसाओ, चत्तारि णाण, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा [1] ।

आहारि उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, उवसंतपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

सिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके शेष चार भागोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं।

आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप कहने पर—एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय आदिके चार ज्ञान, सूक्ष्म साम्परायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक उपशान्तकषायी जीवोंके आलाप कहने पर— एक उपशान्तकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग,

नं. ५३५ आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सूक्ष्म	१ सं. प.	६	१०	१ परि.	१ म	१ पं	१ त्र	९ म ४ व ४ औ १	० अपग.	१ सूक्ष्म लो.	४ मति श्रुत अव मन	१ सूक्ष्म	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. १ शुक्ल	१ भ	२ औप क्षा	१ स	१ आहा	२ साका अना

जोग, अवगदवेदो, उवसंतलोहकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

आहारि-खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, अवगदवेदो, अकसाओ, चत्तारि णाण, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजम, तिण्णि दंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्त, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अपगतवेद, उपशान्तलोभकषाय, आदिके चार ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक क्षीणकषायी जीवोंके आलाप कहने पर—एक क्षीणकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, अकषाय, आदिके चार ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५३६ आहारक उपशान्तकषायी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ उप.	१ सं. प.	६	१०	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	० उपशा.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	१ यथा.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५३७ आहारक क्षीणकषायी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	० अकषा.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	१ यथा.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

आहारि सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, छ जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि, अवगदवेदो, खीणकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा [२८]।

एवं पज्जत्तापज्जत्तालावा वत्तव्वा। एवं सव्वत्थ वत्तव्वं।

अणाहारीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, अट्ठ

आहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, तथा कायबल और आयु ये दो प्राण; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दो वचनयोग, औदारिककाययोग और औदारिकमिश्रकाययोग ये छह योग होते हैं; किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। अपगतवेद, क्षीणकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसीप्रकारसे सयोगिकेवलीके पर्याप्त और अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए। इसी प्रकार सर्वत्र कहना चाहिए।

अनाहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, सात अपर्याप्त और अयोगिकेवली गुणस्थानसंबन्धी एक पर्याप्त इसप्रकार आठ जीव

नं. ५३८　　　　आहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प	४	०	१	१	१	६	०	०	१	१	१	द्र. ६	१	१	०	१	२
सयो.	प. अ.	६अ.	२	क्षीणसं.	म.	पं.	त्र.	म. २ व. २ औ. २	अपग.	अकषा.	केव.	यथा.	के.द.	भा. १ शु.	भ.	क्षा.	अनु.	आहा.	साका. अना. यु. उ.

जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्ज-त्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाण वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धगई वि अत्थि, पंच जादीओ अदीदजादी वि अत्थि, छ काय अकाओ वि अत्थि, कम्मइयकायजोगो अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाणाणि, दो संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदु-वजुत्ता वा[11]।

समास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पांचों जातियां तथा अतीतजातिस्थान भी है, छहों काय तथा अकायस्थान भी है, कार्मणकाययोग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि तथा मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम और यथाख्यातसंयम ये दो संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनों से रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. ५३९

अनाहारक जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. अवि. सयो. अयो. अ.गु.	८ अप. ७ अपर्या. प. १ केवली अतीत	६ प. ६ अ. ५ ,, ४ ,, अती. प.	७ ७ ६ ५ ४ ३ २ १	४ क्षीणसं.	४ सिद्धग.	५ अती. जा.	६ अकाय	१ कार्म. अयोग	३ अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मनः. विना	२ असं. यथा. अनु.	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ. अनु.	५ सम्य. विना	२ सं. असं. अनु.	१ अना.	२ साका. अना. तथा युग.

आहारि सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण दो पाण, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, छ जोग, कम्मइयकायजोगो णत्थि, अवगदवेदो, खीणकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसण, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[६८]।

एवं पज्जत्तापज्जत्तालावा वत्तव्वा। एवं सव्वत्थ वत्तव्वं।

अणाहारीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, अट्ठ

आहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, तथा कायबल और आयु ये दो प्राण; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दो वचनयोग, औदारिककाययोग और औदारिकमिश्रकाययोग ये छह योग होते हैं, किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। अपगतवेद, क्षीणकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसीप्रकारसे सयोगिकेवलीके पर्याप्त और अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए। इसी प्रकार सर्वत्र कहना चाहिए।

अनाहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहने पर—मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, सात अपर्याप्त और अयोगिकेवली गुणस्थानसंबन्धी एक पर्याप्त इसप्रकार आठ जीव

नं. ५३८ आहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सयो	२ प अ	६प ६अ	४ २	० क्षीणसं	१ म	१ पं	१ त्र	६ म २ व २ औ २	० अपग	० अकषा	१ केव	१ यथा	१ क द	द्र ६ भा १ शुक्ल	१ भ	१ क्षा	० अनु	१ आहा	२ साका अना यु उ

जीवसमासा अदीदजीवसमासा वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण दो पाण एग पाण अदीदपाण वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धगई वि अत्थि, पंच जादीओ अदीदजादी वि अत्थि, छ काय अकाओ वि अत्थि, कम्मइयकायजोगो अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाय अकसाओ वि अत्थि, छ णाणाणि, दो संजम णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसण, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, पंच सम्मत्त, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[५३९] ।

समास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पांचों जातियां तथा अतीतजातिस्थान भी है, छहों काय तथा अकायस्थान भी है, कार्मणकाययोग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि तथा मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम और यथाख्यातसंयम ये दो संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनों से रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

नं. ५३९ अनाहारक जीवोंके सामान्य आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
५ मि सा अवि सयो अयो अ गु	८ अप ७ अया प १ अता जीव	६ प ६ अ ५ ,, ४ ,, अती प	७ ७ ६ ५ ४ ३ २ १	४ क्षीणसं	४ सिद्धग	५ अती जा	६ अकाय	१ कार्म अयोग	३ अपग	४ अकष	६ विभ मन विना	२ अस यथा अनु	४	द्र ६ भा ६ अले	२ भ अ अनु	५ सम्य विना	२ सं असं अनु	१ अना	२ साका अना तथा यु उ

अणाहारि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छ पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काय, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण, असंजमो, दो दंसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा"।

"अणाहारि सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगदी णत्थि; पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेद, चत्तारि कसाय, दो अण्णाण,

अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, अनाहारक साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां होती हैं, किन्तु यहांपर नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

नं. ५४० अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ मि	७ अप	६अ ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	१ कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ शु भा ६	२ भ अ	१ मि	२ सं असं	१ अना	२ साका अना

नं. ५४१ अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सा	१ सं अ	६ अ	७	४	३ ति म दे	१ पं	१ त्र	१ कार्म	३	४	२ कुम कुश्रु	१ अस	२ चक्षु अच	द्र १ शु भा ६	१ भ	१ सासा	१ सं	१ अना	२ साका अना

असंजमो, दो दसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्त, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अणाहारि-असजदसम्माइट्ठीण भण्णमाणे अत्थि एय गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, इत्थिवेदेण विणा दोण्णि वेदा, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाण, असजमो, तिण्णि दसण, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्त, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अणाहारि सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाण, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दोण्णि पाण, मण वचि-उस्सासपाणा णत्थि, खीणसण्णा, मणुसगदी, पचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं,

कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कपाय, आदिके दो अज्ञान, असयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहने पर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं; किंतु यहांपर मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राण नहीं हैं। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धि

नं. ७३२ अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अवि	१ सं अ	६अ	७	४	४	१ पं	१ त्र	१ कार्म	२ पु न	४	३ मति श्रुत अव	१ अस	३ के द विना	द्र १ शु भा ६	१ भ	३ औप क्षा क्षायो	१ सं	१ अना	२ साका. अना

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा[1], भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सरीरणिप्पायणट्ठं णोकम्मपोग्गलाभावादो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति[2]।

"अणाहारि-अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एक्को पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण

संयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्ल अथवा छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, शरीर निष्पादनके लिये आने वाली नोकर्म पुद्गलवर्गणाओंके अभाव हो जानेसे अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

विशेषार्थ—ऊपर अनाहारक सयोगिकेवलियोंके लेश्या आलापका कथन करते समय सभी प्रतियोंमें ' दव्वेण छ लेस्साओ ' इतना ही पाठ पाया जाता है परंतु पूर्वमें कार्मण काययोगी सयोगिकेवलीके आलाप बतलाते समय द्रव्यसे शुक्लेश्या अथवा छहों लेश्याएं कहीं गई हैं, इसलिये यहांपर भी उसीके अनुसार सुधार कर दिया गया है।

अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप कहने पर—एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन,

१ प्रतिषु ' दव्वेण छ लेस्साओ ' इति पाठः।

नं. ५४३ अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ सयो	१ अप	६ अप	२	० क्षीणसं	१ म	१ प	१ त्र	१ कार्म	० अपग	० अकषा	१ केव	१ यथा	१ केद	द्र. ६ शु. अ ६ भा. १ शु	१ भ	१ क्षा	० अनु	१ अना	२ साका अना यु उ

नं. ५४४ अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
१ अयो	१ प	६	१ आयु	० क्षीणसं	१ म	१ प	१ त्र	० अयोग	० अपग	० अकषा	१ केव	१ यथा	१ केद	द्र. ६ भा. ० अले	१ भ	१ क्षा	अनु	१ अना	२ साका अना यु ह

छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा।

अणाहारि-सिद्धाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीदजीवसमासा, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणा, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अदीदजादी, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहिं अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[५५५]।

एवं आहारमग्गणा समत्ता।

तदेव च

संत-परूवणा समत्ता।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अलेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अनाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप कहने पर--अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अतीतजाति, अकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, संयम, असंयम और संयमासंयम विकल्पोंसे निर्मुक्त, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसप्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई। और इसीप्रकार उसके साथ

सत्प्ररूपणा भी समाप्त हुई।

---0---

नं. ५५५

अनाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं	का	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द	ले	भ	स	संज्ञि	आ	उ
० अती गु	० अती जी	० अती प	० अती प्रा	० क्षीणसं	० सिद्धग	० अती जा	० अकाय	० अजोग	० अपग	० अकषा	१ केव	० अनु	१ के द	० अलेश्य	० अनु	१ क्षा	० अनु	१ अना	२ साका अना यु उ



परिशिष्ट

(यहां उन्हीं शब्दोंका संग्रह किया गया है जिनकी निर्दिष्ट पृष्ठपर परिभाषा पाई जाती है ।)

१ पारिभाषिक-शब्द-सूची

(यहां उन्हीं शब्दोंका संग्रह किया गया है जिनकी निर्दिष्ट पृष्ठपर परिभाषा पाई जाती है।)

१ पारिभाषिक-शब्द-सूची

२ अवतरण-गाथा-सूची

३ प्रतियोंके पाठ-भेद

पृष्ठ	पंक्ति	अ	आ	क	स	मुद्रित
४११	४	सण्णि-असण्णीसु	सण्णीसु	असण्णीसु	सण्णि-असण्णीसु	सण्णि असण्णीसु
४११	६	पण्णत्ती	पज्जत्ती	पण्णत्ती	पज्जत्ती	"
४१२	५	-मापेक्षया	-मापेक्ष्य	"		-मापेक्षया
४१२	११	-यस्यैकत्वाभावाच्च	यस्य चैकत्वाभावात्	"		-यस्य चेकत्वाभावात्
४१३	३	-सज्ञाया	"	"		-सज्ञाया
४१३	४	लोभोदयस्य	लोभोदय	"		लोभोदय-
४१३	७	सज्ञान-	सज्ञाज्ञान-			स ज्ञा-
४१४	१	-सज्ञाना	"	-सज्ञाया		-सज्ञाना
४१४	८	मायाप्रेमयो-	"	"	मायालोभयो-	"
४१४	१०	-प्रभावा	"	"	-प्रभवा	"
४१५	६	इंदिया	"	"	पइंदिया	"
४१६	४	प	पदे	प	पदे	"
४१७	३	-गत-	-मल-	-गल-	"	"
४१७	४	-घद्-	-गद-	"		-घड-
४१८	३	-आणापाणेहि	"	"	-आणापाणापाणेहि	आणापाणपाणेहि
४१८	८	पज्ज-	अपज्ज-	"	"	"
४१८	११	-पज्जत्तस्स	"	"		पज्जत्तयस्स
४१९	३	पदासिं	पदेसिं	पदासिं		पदासिं
४२०	३	-विसिट्ठे	"	-विसेसे		-विसिट्ठे
४२०	११	-भावेण	"	"	-भावेहि	"
४२१	२	छण्ण भेद	छलेस्साभेद	छ भेद	छण्भेद	"
४२१	८	सच्च पाण	"	"	सच्च पाण २	सत्त पाण सत्त पाण
४२२	९	भणदि	भणिदे	"		भण्णदे
४२५	४	-त्ताणे	-त्ताण		-चोये	"
४२६	६	-जुत्ता वि अत्थि	" "	जुत्ता वि होंति		-जुत्ता वि अत्थि
४२६	७	-णमोघालावे भण्णभाणे	-ण भण्णमाणे मोघालावे	-णमोघालाये		" "
४३६	८	अपज्ज—	"	"	पच्च	"
४२८	५	अणाहारिणो	"	अणाहा०		आहारिणो
४३०	२	पज्जत्तीओ	"	"		अपज्जत्तीओ
४३०	७	-जीवाणं	जीवा ण	-जीवाण		जीवा ण
४३३	१	×	-मोघालावे	"		-मोघालावे

४३३	२	दसण	,,	,,	सण्णाओ	,,
४३६	३	अत्थि	,,	,,	णत्थि	,,
४३९	१०	-दयाण सदि	,,	,,	-दयो णस्सदि	,,
४३८	४	-माण-	,,	,,	-माया-	,,
४४३	२	णिव्वत्त-	,,	णिव्वत्त	,,	,,
४४४	४	भवति	हवति	भवति		भणति
४४४	३	भवन्ति	हवति	भवति		,,
४४६	२	अत्थि	णत्थि	,		,,
४४७	३	लेव-	णेर-	मेव-		लेच-
४४८	८	करणेत्ति	,,	,,	मण्णेत्ति	कण्हेत्ति
४ ३	२	णाण	,,	,,	,,	अण्णाण
४५८	३	पज्ज०	,,	अपज्जत्तीओ		,,
४५९	४	काउसुक्क-	,,	,,		काउ-
४६०	१	काउसुक्क-	,,	,,		काउ-
४६०	४	पज्ज०	,,	,,		अपज्जत्तीओ
४७०	-	तदिय—	,,	,,	एव तदिय—	,,
४७०	३	इंदियाण	,,	,,		इदयाण
४७१	१	एदो ओदो	,,	एदाओ दो		,,
४७१	४	पंचिंदिय-अपज्जत्ता				पंचिंदियतिरिक्ख अपज्जत्ता
४७	८	अणाहारिणो	,,	,		आहारिणो
४७९	८	सत्त पाण	,,	,,	दस पाण सत्त पाण	,,
४७८	२	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
४७८	६	सम्मामित्थाइट्ठीण	सम्माइट्ठीण	,,	सम्मामिच्छाइट्ठीण	,,
४८१	३	-ज्जमाण	-जमाणाण	ज्जमाण		-ज्जमाण
४८०	७	पंचिंदियतिरिक्खाण	पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ताण	पंचिंदियतिरिक्ख०		पंचिंदिय-तिरिक्खाण
४८५	७	×	खइयसम्मत्त	खइयसम्माइट्ठी	खइयसम्मत्त	,,
४८८	७	आहारिणो	,,	,,		आहारिणो अणाहारिणो
४९२	७	पाव पाण	,,	,,		णव पाण सत्त पाण
४९७	४	दव्वभावेहि	दव्वभावेण	दव्वभावेहि		,,
४९८	२	असण्णिणीओ	,,	,,	सण्णिणीओ	,,
४९८	७	-काउसुक्कलेस्साणि	-काउसुक्कलेस्साओ	-काउसुक्कले		काउलेस्साओ
५००	८	सत्त पाण	,,	,,	सत्त पाण २	सत्त पाण सत्त पाण
५०२		अजोगी	अजोगो	,,		,,
५०२	७	असण्णिणो वि अत्थि	असण्णिणो अणुभया वा	असण्णिणो वि अत्थि		णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि

५०८	४	पच णाण केघलणाणेण छ णाण	पच णाण केवलणाणेण विणा छ णाण	मणपज्जवकेवल णाणेण विणा छ णाण		पच णाण केवलणाणेण छ णाण
५१०	९	पज्ज-	,,	,,	अपज्ज-	अपज्जत्तीओ
५११	६	-लेस्साओ	,,	,,		-लेस्साहि
५१२	४	सागारु० होंति अणा० वा	,,	सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति।		सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा
५१२	५	सम्मत्तसजदप्पहुडि	,,	,,	पमत्तसजदप्पहुडि	,,
५१३	७	वेदोपि	,,	,,		-वेदे पि
५१५	८	तासिं	तस्सेव	तासिं		,,
५१५	५	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५१५	६	×	×	×	चत्तारि कसाय	,,
५१८	८	सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा	सागारअणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा	सागार अणागारेहिं अणुभओ वा।		सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा
५२८	२	मणुसिणी-उवसत	मणुसिणीसु-उवसंत-	,,		,,
५३०	६	णेव सण्णिणीओ	,,	,,		णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ,
५३१	५	देवगदीए	देवगदीण	देवगदीए		देवगदीए
५३२	६	एद ण घडदे	एद घडदे	एद ण घडदे		,,
५३३	१	णीलायण- णीलगुलिय-	णीलायण- णीलगुणिय-	णीलायण- णीलगुलिय-		णीला पुण णीलगुलिय-
५३३	३	पउवसवण्णा	,,	,,	पउमसवण्णा	,,
५३३	६	सुचिन्तु	सुचिन्तु	,,		सुचित्तु
५३३	७	-लेस्साण	-लेस्साइ	-लेस्साण		-लेस्साण
५३५	१	भावादो	,,	,,	भावदो	,,
५३९	१	दो गदि	,,	,,		देवगदी
५४२	७	पज्ज-	,,	,,		अपज्ज-
५५२	२	आहारिणो अणाहारिणो	,,	,,		आहारिणो
५'२	५	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५५८	७	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५५५	४	णाण	,,	,,	अण्णाण	,,
५'५	५	दव्वेण काउ सुक्क मज्झिमा तेउलेस्सा भावेण	दव्वेण काउसुक्क मज्झिमा तेउ लेस्सा भावेण मज्झिमा तेउ-लेस्साओ	दव्वेण काउसुक्क० मज्झिमा तेउले० भावेण।		दव्वेण काउ-सुक्क मज्झिम-तेउलेस्सा भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा।

४३३	२	दसण	,,	,,	सण्णाओ	,,
४३६	३	अत्थि	,,	,,	णत्थि	,,
४३६	१०	-दयाण सदि	,,	,,	-द्यो णस्सदि	,,
४३८	४	-माण-	,,	,,	-माया-	,,
४४३	२	णि-चत्त-	,,	णिच्चत्त	,,	,,
४४४	४	भवति	हवति	भवति		भणंति
४४४	७	भवति	हवति	भवति		,,
४४६	२	अत्थि	णत्थि	,		,,
४४७	३	लेघ-	णेव-	सेव-		लेव-
४४८	८	घरणोत्ति	,,	,,	सण्णोत्ति	कण्णेत्ति
४ २	३	णाण	,,	,,	,,	अपणाण
४५८	३	पज्ज०	,,	अपज्जत्तीओ		,,
४५९	४	काउसुक-	,,	,,		काउ-
४६०	१	काउसुक-	,,	,,		काउ-
४६०	४	पज्ज०	,,	,,		अपज्जत्तीओ
४७०	२	तदिय—	,,	,,	एव तदिय—	,,
४७०	३	इन्दियाण	,,	,,		इदयाण
४७१	१	पदो ओदो	,,	पदाओ दो		,,
४७१	४	पंचिंदिय-अपज्जत्ता				पंचिंदियतिरिक्ख अपज्जत्ता
४७	८	अणाहारिणो	,,	,		आहारिणो
४७६	८	सत्त पाण	,,	,,	दस पाण सत्त पाण	,,
४७८	२	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
४७८	६	सम्मामित्थाइट्ठीण	सम्माइट्ठीण	,,	सम्मामिच्छाइट्ठीण	,,
४८१	३	-ज्जमाण	-जमाणाण	ज्जमाण		-ज्जमाण
४८२	७	पंचिंदियतिरिक्खाण	पंचिंदियति- रिक्खअपज्जत्ताण	पंचिंदियतिरिक्ख०		पंचिंदिय-तिरिक्खाण
४८५	७	×	खइयसम्मत्त	खइयसम्माइट्ठी	खइयसम्मत्त	,,
४८८	७	आहारिणो	,,	,,		आहारिणो अणाहारिणो,
४९२	७	णव पाण	,,	,,		णव पाण सत्त पाण
४९७	४	दव्वभावेहि	दव्वभावेण	दव्वभावेहि		,,
४९८	२	असण्णिणीओ	,	,,	सण्णिणीओ	,,
४९८	७	-काउसुक्कलेस्साचि	-काउसुक्कलेस्साओ	-काउसुक्कले		काउलेस्साओ
५००	८	सत्त पाण	,,	,,	सत्त पाण २	सत्त पाण सत्त पाण
५०२	'	अजोगी	अजोगो	,,		,,
५०२	७	असण्णिणो वि अत्थि	असण्णिणो अणुभया वा	असण्णिणो वि अत्थि		णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि

५०८	८	पच णाण केवलणाणेण छ णाण	पच णाण केवलणाणेण विणा छ णाण	मणपज्जवकेवल णाणेण विणा छ णाण		पच णाण केवलणाणेण छ णाण
५१०	९	पज्ज-	,,	,,	अपज्ज-	अपज्जत्तीओ
५११	६	-लेस्साओ	,,	,,		-लेस्साहि
५१२	४	सागारु० होंति अणा० वा	,,	सागार अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा होंति।		सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा
५१२	५	सम्मत्तसजदप्पहुडि	,,	,,	पमत्तसजदप्पहुडि	,,
५१३	७	वेदोपि	,,	,,		-वेदे पि
५१५	४	तासिं	तस्सेव	तासिं		,,
५१५	५	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५१५	६	×	×	×	चत्तारि कसाय	,,
५१८	८	सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा	सागारअणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा	सागार अणागारेहिं अणुभओ वा।		सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा
५२८	२	मणुसिणी-उवसत-	मणुसिणीसु-उवसत	,,		,,
५३०	६	णेव सण्णिणीओ	,,	,,		णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ,
५३१	५	देवगदीए	देवगदीण	देवगदीए		देवगदीए
५३२	६	एद ण घडदे	एद घडदे	एद ण घडदे		,,
५३३	१	णीलायण- णीलगुलिय-	णीलायण- णीलगुणिय-	णीलायण- णीलगुलिय-		णीला पुण णीलगुलिय-
५३३	३	पउवसवण्णा	,,	,,	पउमसवण्णा	,,
५३३	६	सुचित्तु	सुचित्तु	,,		सुचित्तु
५३३	७	-लेस्साण	-लेस्साइ	-लेस्साणं		-लेस्साणं
५३५	१	भावादो	,,	,,	भावदो	,,
५३९	१	दो गदि	,,	,,		देवगदी
५४२	७	पज्ज-	,,	,,		अपज्ज-
५५२	२	आहारिणो अणाहारिणो	,,	,,		आहारिणो
५५२	५	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५५८	७	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५७०	४	णाण	,,	,,	अण्णाण	,,
५७५	५	दव्वेण काउ सुक्क मज्झिमा तेउलेस्सा भावेण	दव्वेण काउसुक्क मज्झिमा तेउलेस्सा भावेण मज्झिमा तेउलेस्साओ	दव्वेण काउसुक्क० मज्झिमा तेउले० भावेण।		दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिम-तेउलेस्सा भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा।

५५८	१	दव्वेण काउसुक्क	दव्वेण काउसुक्क लेस्सा	दव्वेण काउसुक्क मज्झिमा तेउलेस्सा		दव्वेण काउ सुक्क मज्झिम तेउलेस्सा
५५९	६	-यारुहिय	,,	,,	-माहहिय	,,
५६०	१	पुणोहिणा	पुणोहीण।	पुणोहिणा	पुणोदिण्णा	,,
५६१	७	-सुक्क-उक्कस्स- जहण्ण—	,,	,,	सुक्क-जहण्ण	दव्वेण काउ-सुक्क उक्कस्स तेउ जहण्ण-
५६४	६	-पार्दिकर-	,,	पीदिंकर-		,,
५६८	६-७	एव देवगदीए सिद्धभगो	,,	,,		एव देवगदी। सिद्ध गदीए सिद्धभगो।
५६९	३	णेय असजदा सजदा वि	,,	,,		णेव असजदा णेव सजदासजदा वि।
५६९	४	कायव्वा	,,	,,	वत्तव्वा	,,
५६९	९	पुढइ वणप्फइ	पुढविवणप्फइ	पुढइ वणप्फइ		पुढइ-वणप्फई
५७०	५	सण्णिणो	,,	,,		असण्णिणो
५७१	६	आहारिणो	,,	,,		आहारिणो अणाहारिणो
५७४	१	सण्णिणो	,,	,,		असण्णिणो
५७५	०	असजमोस-	,,	,,	असच्चमोस-	,,
५८१	२	एव चउरिंदिय अपज्जत्ताण	तेसिंचेव अपज्जत्ताण	,,		,,
५८३	६	दव्वेण छलेस्सा	,,	,,	,	दव्व-भावेहि छ लेस्सा
५८६	३	पज्जत्तीओ	,,	,	अपज्जत्तीओ	,,
५९१	१	कायाणुवादेण	,,	,		कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे
५९१	३	अट्ठावीस वा	,	,,		सोलस वा
५९१	४	चोत्तीस वा तेतीस वा चउतीस वा	,,	,		तेतीस वा, चउवीस वा
५९१	७	पतालीस	,,	,,		वायालीस
५९२	३	णिव्वत्तिपज्जत्त-	,,	णिव्वत्तिअपज्जत्त-		,,
५९२	१०	तसकाइया पंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। पंच दिया दुविहा सण्णी असण्णी सण्णी दुविहा पज्जत्ता अप ज्जत्ता। असण्णी दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता।	तसकाइया दुविहा पंचि दिया दुविहा पज्जत्ता अप ज्जत्ता सण्णि णो असण्णिणो दुविहो २ पज्जत्ता अप ज्जता।	तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो अस ण्णिणो। सण्णि० दुविहो० पज्ज० अपज्ज असण्णि दुविहो पज्ज० अपज्ज०।		तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिं दिया। पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो। सण्णि णो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। असण्णि णो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता।
५९८	८	पत्तेय	पत्तेय पत्तेय	पत्तेय		,,

६००	१	थीए	,,	,,	ए	एदे
६०२	३	तिण्णि	,,	,,		दोण्णि
६०३	४	अक्साथा	,,	अक्साओ		,,
६०४	७	मूलोघ भुउ जीव-	,,	,,	मूलोघ भुत्तजीव-	,,
६०६	७	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
६०६	,,	तिण्णिगदी	,	तिरि० गदि		तिरिक्खगदी
६०९	३	आहारिणो	,,	,,		आहारिणो अणाहारिणो,
६०९	१२	-मुवसाणिय-	,,	,,	-मेव पाणिय-	,,
६१०	३	एद	,,	,,	एव	,,
६१०	६	-काइयणिव्वात्ति पज्जत्ता-	-काइयाण पज्जत्ता-	,, ×	,,	-काइयणिव्वत्ति- पज्जत्तापज्जत्ताण
६१०	९	पज्जत्तापज्जत्तणा- मक्म्मोदयाण	,,	,,		पज्जत्तणामकम्मोदय- तेउकाइयाण
६११	७	वणिज्ज-	,,	,,	ववणिज्ज-	,,
६११	,,	पज्जत्ताण	,,	पज्जत्तापज्जत्ताण		पज्जत्ताण
६१२	२	अण्णेयवण्णालारे गुलिवसा।	,,	,,	अणेयवण्णा तोवि मद्दिवसा	,,
६१८	७	भवसिद्धिया	,,	,,		भवसिद्धिया अभव सिद्धिया,
६१[illegible]	८	पज्जत्तीओ	,,	,,	अपज्जत्तीओ	,
६२०	१०	तेसिं ?	तेसिं	तेसिं २		तेसिं
६२१	१	वण्णफद्दकाओ त्ति भंगो	वण्णफद्द भंगो	,,		,,
६२[illegible]	३	सत्त पाण	,,	सत्त पाण ✓		सत्त पाण सत्त पाण
६२७	[illegible]	-इंद्रिप्पहुडि	-इंद्रियप्पहुडि	इंद्रियपहुडि		,,
६२८	३	चदुगदिगदाओ	चउगदिगदीओ		चउगदिमदीदो	,,
६२७	५	दव्व भावेहि छलेस्साओ	,,	,,	दव्व भावेहि अलेस्सा	,
६३३	८	इंद्रिदो	,,	,,	इंदि दो	,,
६३८	८	-जोगीण भंगो	-जोगीभंगो	,,		जोगि भंगो
६३८	८	ताजोवि	,,	,,	ताओ वि	,,
६४३	३	सण्णित्तिन्भु	,,	सण्णितम्भु		,,
६४३	७	जोगोव उत्ताण	जोगेव उज्जत्ताण	जोगेव उत्ताण	-जोगे वट्टत्ताण	-जोगे वट्टत्ताण
६४३	१	छ वण्णकालिय- परमाणाण	,,	,,	छ वण्णेकालिय परमाणूण	,,
६४४	७	परमाणादि सद्दामिलिदाण	,,	,,	परमाणूहि सद्द मिलिदाण	,,

		कालोद-			कायोद-	,,
६५४	७	-केवलि	,,	,,	,,	केवलिस्स
६५८	४	अयोग-	,,	,,		आयु
६५९	२	समणा	सभणा	समणा	समत्तो	समणा
६६०	५	पवध-	,,	,,	वध-	,,
६६९	६	विरहाकालाव-	,,	,,	विरहकालोव-	,,
६७२	८	तजहा णेदव्वा	तम्हा णेदव्वा	जं जहा णेदव्वा	जहा मूलोघो णीदो त जहा णेदव्वा	जहा मूलोघो णीदो तहा णेदव्वा
६८४	८	सण्णिणो	,,	,,	,,	सण्णिणो असण्णिणो
७००	१	अणिंदियस्स	अणियट्टियत्त पि अत्थि	अणियट्टित्त		अणिंदियत्त
७००	२	छ लेस्साओ	,,	,,	अलेस्साओ	,,
७०५	८	आहारिणो अणाहारिणो	,,	,,		आहारिणो
७१२	१०	मुण मुए	,,	,,	माण-माया-	,,
७१३	३	×	१०८२१	×		×
७२६	७	-णाणाण वत्तव्वाण	,,	,,	-णाणाणि वत्तव्वाणि	,,
७२६	८	तिण्णि	,,	,,	तेण	,,
७२७	१	इयक्केसु सत्तीसु	,,	,,	इयरेसु सतेसु	,,
७२७	२	-विवक्खियाणाण-	,,	,,	,,	विवक्खियणाण-
७२७	७	-त पिच्छायद-	,,	,,	-त पच्छायद-	-त्तपच्छायद-
७३०	४	मूलोघोव्व	मूलोघोव्व	मूलोघो		मूलोघो व्व
७३३	७	विवट्टिदो वट्टावण-	,,	,,	एव छेदोवट्ठावण-	,,
७५०	१	खीणसण्णाविओ	,,	खीणकसाओ		,,
७५१	२	किण्ह-णील काउलेस्साओ	किण्णलेस्साओ	किण्ण-णील०		किण्हलेस्सा
७५४	२	भावेण विपव	भावेण छ लेस्साओ	,,		भावेण किण्हलेस्सा
७६३	७	पंचिंदियजादि	,,	,	पच जादीओ	,,
७७८	४	×	पिंडियाए	×	पिंडियाए	,,
७९४	६	तिव्व लाहाण	,,	,,	तिव्वलोहाण	,,
८०१	४	अजोगि केवलि	जोगि-केवलि	अजोगिकेवलि	×	सजोगिकेवलि
८०१	५	अण्णलेस्साण	,,	,,		अलेस्साण
८१६	८	वेदगसम्माइट्ठि प्पहुडि	,,	,,	वेदगसम्माइट्ठि पमत्त-	,,

८२२	७	ओरालिय	,,	ओयरिय	,,	,,
८२२	८	तत्थुप्पत्तिहि- भवा-	तत्थुप्पत्तीहिं- भवा-	,,	तत्थुप्पत्ति सभवा-	,,
८२२	९	पाच्छगद-	,,	पछागद		पच्छागद-
८२३	१	पडिवज्जति	,,	,,	पटिवज्जति	,,
८२३	२	उवसघटिद-	उवसहारिद-	,,		,,
८२३	३	तह्लो उदिण्णाण	,,	,,	तत्तो ओदिण्णाण	,,
८२४	३	-सेसपज्जाणे	,,	,,	सेसय जाणे	,,
८२५	९	पसत्था वत्तव्वा	,,	,,	पसत्थो वत्तव्वो	,,
८२९	६	सासणसम्मा-	,,	,,		सण्णिसासणसम्मा-
८३४	८	चत्तारि जोग सव्वजोगो	चत्तारि जोग असजमो सव्वजोगो	चत्तारि जोग सव्व जोगो		चत्तारि जोग असच्चमोसवचि जोगो

---

४ प्रतियोमे छूटे हुए पाठ.

पृष्ठ	पंक्ति	प्रति	कहांसे	कहांतक
८'५	२	अ		ओरालियकायजोगो
४५२	२	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ,
५०८	७	अ	मणुस्स सम्मामिच्छाइट्ठीण	अणागारुवजुत्ता वा।
५२८	७	आ	मणुसिणी विदिय-	अणागारुवजुत्ता वा।
५२९	१	आ	दव्वेण छ लेस्साओ	केवलदसण,
५४३	६	आ	×	खइयसम्मत्तेण विणा
५५८	१	आ	तेसिं चेव पज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
५६०	७	क	एवमित्थिपुरिस-	आलावो वत्तव्वो
५६३	१०	अ आ क	पज्जत्तकाले	पम्मलेस्सा,
५६६	३	अ	मिच्छाइट्ठीण-	को तत्थ
५७०	९	अ आ क	भावेण	काउलेस्सा,
५७८	५	अ क		तसकाओ,
५८९	३	अ आ क		सत्त पाण,
५९२	५	अ आ	तसकाइया	चियलिंदिया त्ति

६००	५	क	पइंदियजादि आदी	अवगदवेदो वि अत्थि,
६३०	५	अ आ क	तिण्णि अण्णाण	चत्तारि कसाय,
६३६	७	अ आ क	असच्चमोस-	णवरि
६५४	९	अ	कवाडगद्-	चेव भवदि,
६५६	३	आ	ओरालियमिस्सकायजोगि	तसकाओ,
६६२	१	क	वेउव्वियकायजोगि-	अणागारुवजुत्ता वा।
६७८	१	अ	तेसिं चेव पज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
६८७	३	अ	तेसिं चेव अपज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
६९८	५	अ आ क	दो जीवसमासा	-समासो वि अत्थि
७०४	९	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ,
७०९	७	अ आ क	मणुसगदी	कोधकसाओ,
७१२	४	आ	कोधकसाय विदिय-	अणागारुवजुत्ता वा।
७१२	१०	अ	लोभकसायस्स	वत्तव्वो
७१४	१	अ आ क	सागार-	-दुवजुत्ता वा।
७१६	४	अ आ क		चत्तारि गदीओ,
७१८	६	अ आ क		चत्तारि गदीओ,
७३६	३	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ,
७४५	१	अ आ क		चत्तारि गदीओ,
७५५	४	अ आ क		चत्तारि गदीओ,
७६४	४	अ आ क		छ अपज्जत्तीओ
७६९	२	आ	तेसिं चेव पज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
७७९	३	अ आ	तेउलेस्सा-अप-	अणागारुवजुत्ता वा।
७८४	१	अ	सागारुव-	-रुवजुत्ता वा।
७८४	२	क	तेसिं चेव पज्जत्ताण	अणागारुवजुत्ता वा।
७८५	८	अ आ क	तिण्णि णाणाणि	असजमो,
८१६	८	अ	वेदकसम्माइट्ठि-पमत्त	अणागारुवजुत्ता वा।
८१७	३	अ	वेदकसम्माइट्ठि-अप्प-	अणागारुवजुत्ता वा।
			अणाहारि-असजद्-	अणागारुवजुत्ता वा।

५ विशेष टिप्पण (पुस्तक १)

पृ०

२ "ण च सतमत्थमागमो ण परूवेइ तस्स अत्थावयत्तप्पसगादो" में आये हुए 'अत्थावयत्तप्पसगादो' का अर्थ 'अर्थापदत्व अर्थात् अनर्थकपदत्वका प्रसंग प्राप्त हो जायगा' ऐसा किया गया है। जयधवला अ प्र पृ ५१२ में भी 'ण च सतमत्थ ण परूवेदि सुत्त, तस्स अव्वावयत्तदोसप्पसगादो' इस प्रकारका वाक्य पाया जाता है। जिसमें आये हुए 'अव्वावयत्तदोसप्पसगादो' का अर्थ 'अव्यापकत्वदोषका प्रसग प्राप्त हो जायगा' होता है। धवलाके पाठसे जयधवलाका पाठ शुद्ध प्रतीत होता है।

(पुस्तक २)

५ पदासिं विधि पुध पुध उवसदरिसणा परूवणा।
जयध अ पृ ६३१

४ उदीरणाए चेव उदयो उदीरणोदओ त्ति।
जयध अ पृ ५२६

इस पंक्तिके अनुसार 'उदीरणामें ही होनेवाले उदयको उदीरणोदय कहते हैं' ऐसा अर्थ होता है। परन्तु हमने अर्थ करते समय उदीरणोदयका उदीरणा तथा उदय ऐसा अर्थ किया है। इसका कारण यह है कि आठवें गुणस्थानके अन्तिम समयमें भय प्रकृतिकी उदीरणा व्युच्छित्ति तथा उदय व्युच्छित्ति होती है।

८ १ 'णिरया किण्हा' गो जी ४९६ णेरइया ण भते! सव्वे समवण्णा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—णेरइया नो सव्वे समवन्ना। गोयमा! णेरइया दुविहा पन्नत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धवन्नतरागा, तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धवन्नतरागा। प्रज्ञा १७ १ ३

श्री

धवला-टीका-समन्वितः

षट्खंडागमः

जीवस्थान - सत्प्ररूपणा २

खंड १ भाग १

पुस्तक २



सम्पादक

हीरालाल जैन